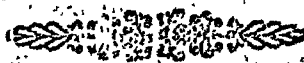


हफ़ीज़ुल्लाहखांकाहज़ारा



पहिला भाग व दूसरा भाग ॥

जिसमें

रसिकशिरोमणि श्रीकृष्णचन्द आनन्दकन्द व श्रीलाडिलीराधिकाजी महारानी के लीलाविषयक प्रत्येकभांति व नानाप्रकारके कवित्त व सवैया अत्युत्तम अलबेले रंगीले, परमचुहचुहे रसीले, अत्यन्त चुट-पुटे चटकीले, अर्थात् रसिकमित्रों व रंगीनमहाशयों व ईश्वरभक्त महात्मा सज्जनों के चित्तविनोदार्थ सैकड़ों पुस्तकों से छांट कर लिखे गये हैं जिसके अवलोकनसे हरएक सुजन पुरुषों का चित्त आनन्द को प्राप्त होजाता है ॥

जिसको

महाशयों के कृपाभिलाषी चरणसेवक स्वर्गवासि हफ़ीज़ुल्लाहखां सांडीनिवासी मुदर्रिस मदर्सा बघापुर थाना बघौली ज़िला हरदोई मुल्के अवधने बड़े परिश्रम से संग्रहकर निर्मित किया ॥

चौथीबार

लखनऊ

मुंशीनवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने में छपी.

जून सन् १९०५ ई० ॥

महाशयो !

इस चरणसेवक की पुस्तकें भी छपकर तैयार हैं जिनको नीचे लिखे पते से डाक द्वारा दाम भेजकर मँगा सक्ते हैं ॥ या मेलों पर तलाश करैं ॥

१ नवीनसंग्रह ॥

जिसमें कवित्त, सवैया, भजन, होली, दोहा आदि अत्युत्तम छांटकर लिखे हैं मतबामुंशीनवलकिशोरसाहब लखनऊ मिलसक्ता है ॥

२ मनमोहनी

जिसमें हज़ारों तरह के राग चुहचुहाते लिखे देखे विना कहे नहीं कहा जाता कोई चीज़ गाने को नहीं जो उसमें न हो ॥ यह भी वहीं है ॥

सूचीपत्र हजारा का ॥

वर्ष होगये सब जानते कि जिस धोजा नागरी प्र

सूचीपत्र हज़ारा का ॥

हज़ारा की भूमिका ॥

दो॰ बन्दौं राधारमण पद कोटि काम कमनीय।
गोपसुता के प्राणधन रसिक रासरमनीय ॥

प्रथम श्रीसर्वशक्तिमान् कृपासिंधु दयानिधान जगदीश्वर सच्चिदानन्द परमेश्वरको साष्टांग दण्डवत् कर अपने सर्व शुभो- पमायोग्य मित्रों रँगीले परमप्रिय सुजनों रसिकप्रेमी महाशयों से निवेदन करताहूं कि मुझ मतिमन्द आपलोगों के चरणसेवक का नाम हफ़ीज़ुल्लाहखां है मैं कौम अफ़गान का करज़ई क़सबै सांडी मुहल्ला ऊंचाटीला निकट दरियाय गर्रा ज़िला हरदोई मुल्क अवधका निवासी २० वर्ष की अवस्था से मदर्सा बन्नापुर डाकख़ाना बघौली ज़िला हरदोई का अध्यापक हूं जिसको दश वर्षके क़रीब यहां व्यतीत होगये ॥ ख़ैर यह तो मेरा समाचार होगया अब कुछ मुख्य वार्त्ता भी सुन लीजिये अर्थात् आपलोग सब जानते हैं कि हिन्दीभाषाकाव्यकी मनहरणतरंगें ऐसी नहीं हैं कि जिनके अवलोकनही से मुद्दतोंकादुःख मनुष्यके हृदय से न धोजाये और इस परमसोहावनि मृगनयनी शीलवन्त पिकबयनी नागरीभाषाके ऐसे वचन नहीं हैं कि जिनके एकबार भी कानमें पड़नेसे हरएक सुजन महाशयका चित्त गद्गद न होजावे या उसकी ओर टकटकी बांधकर न रहजाये मनुष्यका जन्म लेकर जिसको इस अमृतरूपी हिन्दी काव्यके पढ़ने पढ़ाने सुनने सुना- नेकी ओर जिस में कि हमारे प्राणप्यारे भक्त भयहारी कुंजवि-

हारी रसिकशिरोमणि श्रीकृष्णचन्द आनन्दकन्द और श्रीलाड़िली राधिकाजी महारानी ब्रजईश्वरी के विशेष लीलाविषय का चरणोदक भी मिलाहुआ होताहै रुचि और उसको सच्चे पवित्र दिलसे ग्रहणकर पान करनेकी इच्छा न हुई तो मेरे विचारमें उस से बढ़कर कोई दुष्ट चाण्डाल महामूर्ख संसार में न होगा हम तुम सबको उचितहै कि अपनी इस फुलवारीरूपी देहके बग़ीचे में अवश्य श्रीराधाकृष्ण के प्रेमका वृक्ष लगा उसको सुशोभितकर इन्हींके लीलाविषयक काव्यके जलसे गुणानुवादकर सींचाकरें तो महाहर्षकी बात है नहीं तो सब वृथाहै इन्हीं बातोंको विचार कर इसमतिमन्दने यह संग्रह बड़े परिश्रम से सैकड़ों काव्य इकट्ठा कर उसमें से छांट २ दोभागों में निर्मितकिया जिसके प्रथम भाग में १०२२ व द्वितीयमें ११६२ चुनेहुये कवित्त व सवैया ऐसे ऐसे अत्युत्तम लिखेहैं कि जिनके देखतेही श्रीराधाकृष्णलीला के प्रेम की तरंग हृदयमें लहरा उठती है जिसको निश्चय न हो ध्यानकर के देखले कि साक्षात् वह मनमोहनी स्वरूप आकर निर्मल हृदय में विराजमान होता है कि नहीं परन्तु मूर्ख दुष्ट पाषाण निर्दयी हृदयवालोंकी मैं नहींकहताहूं उनकीतो आंखिसेही फूटीहोती हैं॥ श्रीराधाकृष्णजी के कमलरूपी चरणों की प्रीति से सबका हृदय परमेश्वर सुशोभित रक्खैं॥

प्रकट हो कि इसके बनाने में जो कुछ हमारी सहायता हमारे शीलसागर कृपानिधान यशस्वी गुणखानि परोपकारी परमसुजान सर्वशुभोपमायोग्य महाशय श्री ठाकुर रघुनाथसिंह साहब गहरवार वंश नम्बरदार थावर थाना मलिहाबाद ज़िला लखनऊ और उनके पुरोहित व हमारेमित्र परमसुशील सकल

गुणनागर अतिकृपालु सर्व्वोपरि विराजमान रसिक छबीले मति गुणअबीले मनहरण त्रिकवयन सत्यवादी कटाक्षनयन मान्यवर श्री महाराज शिवप्रसादजी साहबने दीहै उसका धन्यवाद छोटा मुँह बड़ी बातहै श्रीठाकुर साहब जब कभी अपनी ससुराल बन्ना-पुरमें आते हैं उन दिनों की चुहल हँसी दिल्लगीकी बातें देखने योग्य होती हैं ईश्वर अच्छी तरह उनको रक्खे और विशेषकर हमारे प्राणाधिक प्रिय मदर्से के विद्यार्थी अर्थात् स्वस्तिश्री अप्पा महिपालसिंह व दिक्पालसिंह व रेवानसिंह व गुमानसिंह गौर केशवपुरनिवासी व बैजनाथसिंह व जगरूपसिंह व भीष्मसिंह व मकरन्दसिंहआदिने इस संग्रह के लिखनेमें हमारा बड़ाही हाथ बटायाहै सच्चिदानन्द परमेश्वर इनसबको चिरंजीवकरे हम आशा करते हैं कि जितने हमारे सच्चे और परमप्रिय शीलसागर मित्र होंगे वे हमारे इन दोनों संग्रहों को देखकर जिसमें कि श्री महाराज कुंजविहारी व श्री वृषभानुनन्दिनी जी महारानी के लीला विषयकी तरंगें हरएक ईश्वर भक्त महात्मा सुजनों को-मल हृदय वालों के चित्त को अतिआनन्ददेकर कैसा कैसा सुख उपजारही हैं यदि हमारी प्रशंसा न करेंगे तो हमको बुरा भी न कहेंगे परन्तु जितने मुखके चिकनेचुपड़े पेटके मैले केवल मनुष्य की खाल ओढ़नेवाले मूर्ख दुष्टजन होंगे वह इसको देखते ही जीतेजी ईर्षाकी पावकसे बरसाती गीले ईंधनकी तरह से सुलग सुलगकर रहजावेंगे क्योंकि श्रीमहाभारतपुराण में लिखा है कि मूर्खोंको सदा यही तलाश रहती है कि हरमनुष्यकी वार्त्ता और बनाईहुई पुस्तकों में ऐबही निकालाकरें जिसतरह से कुत्ते को चाहे जितनी चीजें रक्खीहों केवल मैलेही की ओर उनकी रुचि

होगी और सुगन्धित वस्तुकी तरफ मुखभी न उठावैंगे खैर चाहे जैसाहो अपना तो इसीपर विश्वासहै ॥

दो० जो तोको कांटा बवै ताहि बोय तू फूल।
तोको फूल के फूल हैं वाको हैं तिरशूल ॥

सचहै कि सुजन सब को अच्छा और दुर्जन दुष्ट सबको बुरा ही जानते हैं ॥

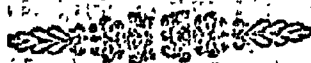
दो० हाफ़िज़ जी संसार में ज्वारी चोर लबार।
जानति हैं प्रतिएक को निजस्वभाव अनुसार ॥

सब का चरणानुगामी और प्रेमाभिलाषी { स्वर्गवासी हफ़ीजुल्लाहखां मुदर्रिस मदर्सा बन्नापुर डाकखाना बघौली ज़िला हरदोई मुल्क अवध



हफ़ीज़ुल्लाहखां का

हज़ारा ॥



पहिला भाग ॥

श्रीपरमात्माकी वन्दनाके कवित्त व सवैया ॥

क० । सधना कसाई व्याध केवट कबीर दास इनके समीप प्रेमरस भीजियतुहै । सेनानाऊ नामदेव नानक अजामिल से रैदास चमारेसो गिनाई दीजियतु है ॥ चूड़ामणि ऐसे ऐसे पावत परमधाम जिनहीसों तेरो नाम नाम लीजियतुहै । सेरीनहींलाजतोहि धरम जहा-जकहा राजनीचजातिहीके काज कीजियतुहै १ ॥

तथा । पूरण पुराण परमानँद परेश तू है पारावार हूंते परे प्रकृति प्रधान में । घटघट तेरोवास सदा तू स्व-यंप्रकाश तेरीचिदाभास सो न बनत बखान में ॥ बिधि औ निषेध भावाभाव ते रहित तू है शुद्धबुद्ध तूहै ध्याता ध्येया और ध्यान में । तूहै निहसङ्ग तोमें गुणके प्रसङ्ग ऐसे जैसे रङ्ग देखियत फटिकपषानमें २ ॥

तथा। तौलगितूसुखी तौलौंदुखीनिधनीधनीहै तौलौं तोहिं बिषमादहरष अपारहै। तौलौंतोहिं घेरेहैं उपाधि आधि ब्याधिसबै तौलौंतोहिं लागो नातगोतपरिवारहै॥ हित अनहित छोटो बड़ो तौलौं जानत है तौलौं जीव ईश ब्रह्म तीनों निरधारहै। तौलौं तोहिं पुण्य पाप लागत शरापताप जौलगि तू आपनोनकरतबिचारहै ३॥

तथा। पृथ्वी नहिं पानीनहिं पावकपवनतूहै नातू है अकाश जिन्हैं आपकरि जान्यो है। नातू है करन ना तू अन्तःकरण नातू जनन मरन भेद भावमें समान्यो है॥ नातूहै शबदअसपर्श रूपरसगंध कारण न कारज न करता बखान्यो है। साखी इन सबको तू अनन्य चैतन्य ब्रह्म कहाकहौं आपुहीते भ्रमत भुलान्यो है ४॥

तथा। भूलिभूलिभरिभरिभ्रमहीतेभस्यो उज्ज्वलअनूपनिजरूपबिसरायोहै। पायोपंचभौतिकशरीरको शरण ताते आपुहीमें जीवनमरण ठहरायोहै॥ भयोदीनदूबरो मलीनसब बिद्याहीन याबिधि अबिद्याबश जीवतू कहायोहै। नातोकछूबन्धन न बन्धनको करनिहारो आपकोतू आपबिन बन्धन बँधायोहै ५॥

तथा। आपकी अधीनछीन छोटीमानिलीन्ह्यो कहा बड़ोजानि काके तू करत गुणगानहै। कहा जानि सूदर दुख्यो वै दूरहीते अरु कहाजानि द्विज तू करत सनमानहै॥ मायाके बनाये रूप राजत अनेकभांति एक बहु आतमा तौ सब में समान है। जैसे सोन रूपलोह माटी के घटनबीच देखि तु बराबर बिराजिरह्यो भानहै ६॥

तथा। असनवसनछोड़ि आसनकरोअनेक धरोत्या-गि धरोजाय ध्यान निरमोही में। तीरथअटन करो वेद कोरटनकरो जटन बढ़ाय तपोजाय गिरिखोहीमें॥ तेरी यात्र तापकी तौ तपनि मिटैगी तबै जबै मन डूबैगो अनन्तधार ओहीमें। कह्योमैं पुकारि देखि आप तू विचार येरे तेरी करिव्याधि की उपाय अत्र तोही में ७॥

तथा। पटिगो अँध्यारही सो फटिगो उज्यारी फैल मेल कै अमैल ज्ञान गैल ते वे हटिगो। हटिगो चमतकार चेतन अपारमहा उज्ज्वलअनूप निजरूपते उघटिगो॥ घटिगो घनोसुख सिमिटिगो घनेरोदुःख आप को न जान्यो आपु याविधि उलटिगो। लटिगो सुगुद ह्वैकै सटिगो विषय में यह आत्मा उचटि माया नटी सों लपटिगो ८॥

तथा। पाय प्रभुताई कछु कीजिये भलाई इहां नाहीं थिरताई बैन मानिय कविनके। यश अपयश रहिजात बीच पुहुमीके मुलुकखजाना वेनी साथ गये किनके॥ और महिपालनकी गिनती गिनावै कौन रावणसे ह्वैगये त्रिलोकीवश जिनके। चोपदारचाकर चमूपति चँवरदार मन्दिर मतङ्ग ये तमाशे चारदिनके ९॥

स०। आलसनींदमें मातोसदा अरु उद्यमहीन कुबेर खवैया। प्यासलगै नहिं पानी भरौं अरुपासधरो उठिकै न पिवैया॥ ऐसे निकम्मनके शुकदेव कृपाकेधाम्हो पेट भरैया। भोरते सांझ अरु सांझते भोरलौं मोसों कुपूत न तोसों दिवैया १०॥

तथा। चाहै सुमेरुकोछार करै अरु छारको चाहै सुमेरु बनावै। चाहै तौ रंकते राव करै चहै रावको द्वारहि द्वार फिरावै॥ रीतियही करुणानिधि की कविदेवकहै बिनती मोहिंभावै। चींटीके पायँमें बांधि गयन्दहि चाहै समुद्रके पारलगावै ११॥

तथा। स्थावर जंगम रूपजिते सबनानाभांतिनरूप धरे हैं। तामें सच्चिदानन्द महाप्रभु आतमएकप्रकाश करे हैं॥ सो बिनुजानेते सिन्धुसमान औ जानेते गोपद बिन्दु तरे हैं। बन्दितताहि सदाशुकदेव जो ब्रह्मचराचर रूप परे हैं १२॥

तथा। जब दांत न थे तब दूधदियो जब दांतभये तो अनाजहि देई। जीववसै थल औ जलमें तिनकी सुधि लेइतौ तेरिहुलेई॥ जानको देत अजानकोदेत जहानहिं देत सो तोहुंकदेई। क्योंअब शोचकरै मन मूरख शोच करै कछु आज न देई १३॥

क०। जिनहीं सरितान अरु पोखरिन जल सोंकिलीन्ह्यो तेई सरितान में फेरि जल भरि हैं। जिनहीं तरुवरनको पत्रफल बिहीन कीन्हों तेई तरुवरन में फेरिपत्र फरि हैं॥ जिनहीं बलिराजजूको स्वर्गतजि पतालराखो तेई बलिराज फेरि इन्द्रपदवी करि हैं। कहैछत्रशालवीर येरेमनधरैधीर जिनहींउपराजीपीर तेईपीरहरि हैं १४॥

स०। हौं कबको रट लागिरह्यो गहि दीनस्वभावमनै बच कायक। दीनके बन्धु कहावतहौ हरि काहे ते होत न आनि सहायक॥ काहे से ढीलकरी करुणामय कृष्ण

कहै प्रभु हौ सब लायक। जानिपरी तुमहूं को कछू अब ब्यारलगी जगकी जगनायक १५ ॥

तथा। ह्वै अतिआरत मैं बिनती बहुबार करी करुणा रसभीनी। कृष्ण कृपानिधि दीनके बन्धु सुनी असुनी तुम काहेक कीनी ॥ रीझते रंचकही गुण सों वह बानि बिसारि मनों अबदीनी। जानिपरी तुमहूं प्रभुजी कलिकालके दानिनकी गतिलीनी १६ ॥

तथा। हौं उनकी गिनतीन में हौं प्रभु जे तुम तारे ते आपनी गोहीं। कृष्णकहै गिनते न बनै कछु पापिन की परमावधि होहीं ॥ होनी है जो कछु ह्वैहै वहै गति मेरी यहचाल कुचाल न होहीं। खेल न है प्रभु मेरोउधारिबो भूल न कीजै वृथा हठयोहीं १७ ॥

क०। हाथी के दांतनके खिलौना बनैं भांति भांति बाघनकी खाल तपीशिव मनभाई है। मृगनकी खालन को ओढ़तहैं योगी यती छेरीकी खाल थोड़ापानी भरि लाई है ॥ साबरकी खालनको बांधत सिपाहीलोग गैंड़न की खाल राजारायन सोहाई है। कहै कविदयाराम राम के भजनबिन मानुषकीखाल कछुकामनहिंआई है १८ ॥

स०। जापजप्यों नहिं मन्त्रथप्यों नहिं बेद पुराण सुन्यों न बखानो। बीतिगये दिन योंहीं सबै रस मोहन मोहनके न बिकानो ॥ चेरो कहावत तेरो सदा पुनि और न कोऊ मैं दूसरो जानो। कैतो गरीबकोलेहु निवाज न तो छोड़ो गरीबनिवाज को बानो १९ ॥

तथा। सेवकचूककरै बहुधा प्रभुताहि न क्रोध बिरोध

निचारो। पूत कपूतीकरै कितलों पितु मातु नहीं दुख भाव निहारो॥ पालनपोषण नित्त करै मुदमोद समेत हमेश दुलारो। बूड़त पापसमुद्र पवांर दया करिकै अब वेगि उबारो २०॥

क०। पतितउधारन कहतसबकोऊ सोऊ सांच झूंठ अब ठहरायगो बनायकै। कहै कविकृष्ण जिन और के भरम भूले हौंतौ गुरुपापी मनबचअरुकायकै॥ ताख्यो है पखेरू एकगीध तामें गीधे तुम सोही यश राख्यो है जगत पगरायकै। कौन भांति राखिहौ निहारि अब देखिये जू कठिन बनीहै अबगीधे मोसों आयकै २१॥

तथा। तोसों एकतूही और दूसरो न राजा राम तेरेही रचे हैं लोक सुर नर नागरे। सोई बीतराग जिन कीने तपजपजाप सोईबड़भाग जाकोतोसों अनुरागरे॥ आप तन देखिये न देखो करतूति मेरी अधम उधारिबेकी तेरे शिर पागरे। मोसे अपराधी हैं न तोसे हैं सहनहार मोसे निरगुणी हैं न तोसे गुणआगरे २२॥

तथा। मैंतो हूं अनाथ नाथ तूही एकनाथ मेरो दूजो और कौन ताको राखों कछु भावरे। धर्म अर्थ काम मोक्ष चारोंको दाता सुनि तासों तो नित्त मोहिं चित्त बढ्यो चावरे॥ गणनके नायक वरदायक सदाके आप तेरीही आशापै एतो सब उछावरे। आधी तौ ये आयु आछी बीतचुकी शरण तुव आधी और रही ताकी लाज राखु रावरे २३॥

स०। दीरघता जो गनैअपनी तो गनावों कहांलग

केतेप्रहारहैं। श्वास खलांयत यों भरते अरु बोलतो म-
ण्डुक काक हुँकारहैं॥ कूकर शूकर भोगकरैं मुखकान औ
नैन मनो भुवि गारहैं। जे न भजैं यदुनन्दन को ते वृथा
जग जीवत भूमिके भारहैं २४॥

तथा। याजगजालकी जीवनको यश क्यों इक आनन
गाइ अघैये। त्योंपदमाकर मारगहै बहु द्वैपद पाइ किते
कित जैये॥ नाम अनन्त अनन्त कहैं ते कहैं न परै
कहिकाहि जतैये। रामकी रूरी कथा सुनिवे को करोरन
कान कहो कहँ पैये २५॥

क०। आनँदकेकन्द जगज्यावन जगतबन्द दशरथ
नन्दके निबाहेई निबहिये। कहै पदमाकर पवित्र पन
पालिबे को चोरै चक्रपाणिके चरित्रनको चहिये॥ अ-
वधविहारी के विनोदन में वीधि वीधि गीधा गुह गीधे
के गुणानुवाद गहिये। रैनि दिन आठो याम राम राम
रामराम सीताराम सीताराम सीताराम कहिये २६॥

तथा। आवतहूं जातखात खेलत खुलतगात छींक-
त छकात चुपचाप ह्वै न रहिये। कहै पदमाकर परेहूपर-
भातप्रेम पागत परात परभातमैं न जहिये॥ बैठतउठत
जात जागत जँभात सुख सोवतहूं शाप नैन औरेनाघ
नहिये। रैनि दिन आठोयाम राम राम राम राम सीता
राम सीताराम सीताराम कहिये २७॥

तथा। गोदावरी गोकरण गङ्गाहू गयाहू यह येही
कोटितीरथ कियेको लाभ लहिये। कहैपदमाकर सुज्ञान
यहै ध्यान यहै यही सुखस्यान सरबस्व मानि रहिये॥

येही जप येही तप येही यज्ञ योग यहै येही भवरोगको उपाय एक अहिये । रैनि दिन आठो याम राम राम राम राम सीताराम सीताराम सीताराम कहिये २८ ॥

तथा । काहेको बघम्बरको ओढ़िकरो आडम्बर काहे को दिगम्बर ह्वै दूब खाय रहिये । कहै पदमाकर त्यों कायके कलेशहित सीकर सभीत शीतबात तापसहिये ॥ काहेको जपो ये जप काहेको तपो ये तप काहेको प्रपञ्च पञ्च पावकमें दहिये । रैनि दिन आठोयाम राम राम राम राम सीताराम सीताराम सीताराम कहिये २९ ॥

स० । घोसकी रातिकरै जो चहै चहि रातिहूंको करि घोसदिखावै । त्यों पदमाकर शील को सिन्धु पिपीलिका के बल फील फिरावै ॥ यों समरत्थ तनय दशरत्थ को सोईकरै जो कछू मनभावै । चाहे सुमेरु को राईकरै रचि राईको फेरि सुमेरु बनावै ३० ॥

क० । येरे जड़ जीव जान राखु बेद भेद यहै स्मृत पुराण राखी यही ठहराई है । कहै पदमाकर सुमाया पर पञ्चन को पेख परपञ्च पेखने को सब भाई है ॥ ताते भज दशरथनन्द रामचन्द्रजूको आनँदको कन्द कौशलेश रघुराई है । जा दिना परैगो काम यमके यसूसनिसों ता दिना तिहारे काम रामनाम आईहै ३१ ॥

तथा । योग जप सन्ध्या साधु साधन सबेई तज्यो कीन्हें अपराध जे अगाध मनभावते । तेते तजि औगुणअनन्त पदमाकर तो कौन गुणलैके महाराजहिरिझावते ॥ जैसेअब तैसे पै तिहारे बड़ेकामकेहैं नाहींतोनयेते

बैन कबहूं सुनावते। पाउते न मोसों जोपै अधम कहूं तो राम कैसे तुम अधम उधारन कहावते ३२॥

तथा। हानि अरु लाभ ज्यान जीवन अजीवन हूं भोगहू वियोगहू संयोगहू अपारहै। कहै पद्माकर इतेपै और केतो कहों तिनको लख्यो न बेदहू में निरधारहै॥ जानियत याते रघुरायकी कलाको कहूं काहू पार पायो कोऊ पावत न पारहै। कौनदिन कौनछिन कौनघरी कौन ठौर कौन जानै कौनको कहाधों होनिहारहै ३३॥

तथा। प्रलयके पयोनिधिलों लहरैं उठनलागीं लहरालग्यो त्यों होन पौन पुरवैयाको। भीरभरी भावरी बिलोकि मँझधारपरी धीर ना धरात पद्माकर खेवैयाको॥ कहांवार कहांपार जानी है न जात कछू दूसरो देखात ना रखैया और नैयाको। बहन न पैहै घेरिघाटहीलगैहै ऐसो अमिट भरोसो मोहिं मेररघुरैयाको ३४॥

तथा। जाटहूधनाके सदना के शुद्धसाथी भये हाथीहू उबारत न बारमनलाये हैं। कहै पद्माकर कहै न परेते जग जेते कपिऋक्षनको बिरदबढ़ाये हैं॥ साधनकेहेत तन पाल्यो प्रहलादहूको याद करो जाय शबरी के बेर खाये हैं। राखतहैं राखैंगे रखैया रघुनाथजन आपने की बात सदा राखतेई आये हैं ३५॥

स०। पातकीपावन हौ तुमराम रहैं हम पापही में मद माते। दीनकेबंधु दयालइके तुमहो हम दीनदशा नाहिंपाते॥ पालकहौ तुम बिप्रनके हमहूंपदमाकर बिप्रसुहाते। यातेरटौं न हटौं प्रभुपासते हैं तुमते हमते बहुनाते ३६॥

तथा। वैस बिलासिन जातचही उमहीछिनही छिन गंग कि धारसी। त्यों पदमाकर पेखनिया अजहूं न भजै दशरत्थ कुमारसी॥ वा रिपु के थके अंग सबै सठि मीच गरेई परी हर हारसी। देखैदशा छिन आपनी तू अब हाथ के कंगन को कहा आरसी ३७॥

श्रीगणेशजीकी स्तुति आदिके कवित्व व सवैया॥



क०। बन्दौं मैं अनन्दकन्द कीरति अमन्द चन्द दरनकुफन्द द्वन्दघायक कुमतिके। सिद्धिबुद्धिदायकबि-नायक सकललोक सोहैं सर्वलायक औ नायकसुमतिके॥ कोमल अमलछाति अरुणसरोज ओज लखि लज्जित मनोज दानि शुभगतिके। बिघनहरण मुद मंगल करन वारे अशरण शरण चरण गणपति के १॥

तथा। मंगल सदन गजवदन लसतभाल बालइन्दु छवि देखि मनहरषतहै। राजतहै दन्तएक भ्राजतहै चारिभुज छाजतहै तिलकसिंदूर सुसजतहै॥ ऋद्धि सि-द्धिसम्पति बिद्याबिधान शिवसुत आदिदेवजाहि निग-

मागम भनतहै । कहै अमरेश करसम्पुट विनयसुनाय कीजै पूरोकाम मनमोरे जो वसतहै २ ॥

तथा । रामगुणगावै निजहिये हुलसावै मनभावै फल पावै रामनाम के प्रतापको । पापकोशरीर मन आवत न धीरहिये व्यापीभवपीर ताते भूलिगयोआपको॥कहत दिवानो कउकहत सयानो अतिमोहिंसनमानो प्रभुमेटितिहूंतापको । विनयअमरेशकी हमेशहि गणेशपहँ रहिये दयालु भूलि मेरेसबपापको ३ ॥

तथा । सिद्धिके सदन गजवदन विशालतनु दरश कियेते वेगिहरत कलेशको । अरुणपरागको लिलाट मोंतिलकसोहै वुद्धिके निधान रूपतेज ज्यों दिनेशको ॥ मङ्गलकरण भवहरण शरणगये उदितप्रभाव जाको विदित महेशको । जेते शुभकाज तामें पूजिये प्रथम ताहि ऐसो जगवन्दन सो नन्दन महेशको ४ ॥

तथा । वारिज से नयन सोहैं एकई रदन जाके सुषमासदन सो सहायकरि सतिके । दारिद दहन सुरतरु को ग्रहण सोहै मूषकवहन विहगन खलमतिके ॥ सब सुखसागर उजागर गुणाकर हैं बुद्धिवर नागर देवैया शुभगतिके । विमलकरन ज्ञान ध्यान धरि शिवनाथ मङ्कटहरण ये चरण गणपतिके ५ ॥

श्रीरामचन्द्रजीकीप्रशंसा व चरित्र आदि के कबित्त व सवैया ॥

क० । भूपदशरथ्यको नवेलो अलबेलोरण रेलोरूप झेलोदल राकसनिकरको । मानकवि कीरति उमण्डी

देखो तसवीर नम्बर २ ॥

हज़ारा।

खलखण्डी चण्डीपतिसोघमण्डी कुलकण्डी दिनकर को॥ इन्द्रगजमञ्जनको भञ्जनप्रभञ्जनतनै ताकोमनरञ्जन निरञ्जन भरणको। शमगुणज्ञाता मनवाञ्छितकोदाता हरि दासनकोत्राता धन्यभ्राता रघुबरको १॥

तथा। ध्रुवकोधरनि जैसी जैसीकीन्हीप्रहलाद तैसी करेकौनतहां बुद्धिहूधसाईके। तारीमुनिनारी पतिरूप जोबिगारी शक्र गीधउपकारी तस्यो रावणै खँसाईके॥ तारिबे गदाधर तिहारे तहां जेतेनाहीं तेतेतरे निज पुण्यराशरीरसाईके। सोहूं आवैभाईभाई आपुकीदसाई देखि पुरुषदसाईतारे सदनकसाईके २॥

तथा। हंसनकेछौनास्वच्छसोहत बिछौनाबीच होत गतिमोतिनकीज्योति जोन्ह यामिनी। सत्यकैसी ताग सीता पूरण सुहाग भरी चलीजयमालले मराल मन्द गामिनी॥ जोईउरबसी सोईमूरतिप्रत्यक्षलसी चिन्ता मणिदेखिहँसी शङ्करकी स्वामिनी। मानोंशरदचन्द्र च- न्द्रमध्य अरबिन्द अरबिन्दमध्य बिद्रुमबिदारि कढ़ी दामिनी ३॥

तथा। जटाकेजमाले कहा नदीनदन्हायेकहा कन्द मूलखाये कहा बनोबासकेकिये। मूड़के मुड़ायेकहा द्वार- काकेजायेकहा छापकेलगायेकहा तुलसीकियेगये॥ ति- लक चढ़ायेकहा मालाके फिरायेकहा तीरथनहायेकहा दानदत्तकेदिये। एतोसबकिये कहा कोटिनामलियेकहा जानकीको जीवनजोपै केवल नहींकिये ४॥

तथा। तबनाबिचाखोपाप गीधसों सुगतिदीनो तब

नाबिचारयोपाप गणिकाउधारी है। तब ना बिचारयो पापशबरीकेफलखाये तबना बिचारयो पाप शाप तिय हारीहै॥ कहैंकबिमान पुनि तबना बिचारयो पाप बानर निशाचर बनाये अधिकारी है। भईजरवारी सो भरोसो मोहिं भारी अब अवधबिहारी सुधिलीजिये हमारीहै ५॥

तथा। प्रफुलितभयेहैं सब अवधपुरी के बासी प्रफुलितसरयूकी शोभा सरसाई है। नाचैं नर नारी अति आनँदअपारभये घूरत निशान मुरलीधरसुखदाई है॥ देवता बिमाननते फूलनकी बृष्टिकरैं बन्दी सूत मागध अनेक निधि पाई है। चलिक्यों न देखैआली रामको जनमभयो दशरथ के द्वारबाजै आनँद बधाई है ६॥

स०। बृक्षनबल्ली चढ़ीकरिचोप अलीअलिनी मधुपी मदकारी। कोकिलशारिका कीरकपोत करैंध्वनिमाधुरी काननचारी॥ फूलेसबै बनबाग तड़ाग भरेअनुरागपिया अरु प्यारी। चैत सें चारुबिहारुकरैं दशरत्थकुमार बिदेहकुमारी ७॥

क०। पापनते पीनअतिबिषयलवलीन निशिदिवस मलीन फँसो जगतके जालमें। निजकृत भोगकिधौं संसृतकुरोग किधौं लिख्योना बिरंचिहीं भलाई कछुभाल में॥ आनुमनधीर भजुसियरघुबीर जाते मिटै भवपीर ततोजरादुःखव्याल में। मुनिनबिचार कीन्ह्यों बेदअनुसारकह्यो नामही अधार असरेश कलिकाल में ८॥

तथा। काहूको है धनबल काहूको धरणिबल काहू निजबल बलकाहै बारबारहै। काहूकोहै गुणबल काहूको

है पुण्यबल काहूको है कुनबल सुन्दर बिचार है ॥ काहू बलभूप काहूसुन्दरस्वरूप अतिजानतअनूप रूपराशि करसारहै । कहै अमरेश मोहिं देशहू बिदेशहू में जानौं सत्यभाव एक नाम के अधारहै ६ ॥

तथा । नामको प्रतापकलिदापनहिं व्याप हिय छूटत है पाप तेजबढ़तहै तनको । नामजपै आनन जो गुणसुनै काननते मानतहैं बातसुख बासव सदनको ॥ तज्यो निजधाम जप्यो नाम आठौयाम ध्रुवपायो ध्रुवधाम फल नाम के रटनको । छोड़िझूंठो नेह कररामते सनेह ताते यहै शिषदेत अमरेश निज मनको १० ॥

तथा । नामहीके बल सहसानन धराधरत नामबल रचै चतुरानन जगतको । नामहीके बल शिव शिव को प्रभावसब नामही अधार एक केवल भगतको ॥ नामही के आश जन मेटै भवत्रासंसब नामबल होत्यो न तो रूप को लखतको । नामकी रटन निशिदिन अमरेशकरु नाम को बिसारि कत धावत अनतको ११ ॥

तथा । नामके प्रभाव बालमीकिकी सुधरिगई मरा मरा कहे गतिपायो भलीभांतिसों । नामहीके ओटशबरीको सब खोटगयो कीन्हों ना बिचार कछुऊंची नीची जातिसों ॥ नामलेत अघ गणिकाकोसब दूरिभयो पायो शुभमुनिगति खगसमपातिसों । नामके जपत अमरेश है अनन्दबड़ो जगसुखदुखहोत जातादिनरातिसों १२ ॥

स० । रकार मकार पुकार सदा श्रुतिसार बिचार अधारधराको । काल कराल के जाल बिशालते नामधरे

फँसिजाय मराको ॥ भाय कुभायहुते हरिनाम जपे भवसिन्धु न पार तराको । अमरेशकहैं जपते जपतेफल एकहि होतहै राममराको १३ ॥

क० । रामनाम जपत महेश शेश औ गणेश नाम जपि उमा आवागमन मिटाव है । रामनामजपत अनन्त सन्तसनकादि नाम जपि ध्रुवधाम अचल सो पावहै ॥ रामनामजपि मुनि बालमीकि ब्रह्मभये बड़ोई प्रभाव बेद नेति कहि गावहै । कहै रघुनाथ सोई राम नाम मल मध्य ताहि जो विदूषै सो तो मूढ़न को रावहै १४ ॥

तथा । गजकी चलनि कहाजानै खर कूकर औ भोगी कहाजानै योगरङ्क सुखराव को । गोमलको जीव कहाजानै बास पंकजको कोलखत दासी पतिव्रता केरे भावको ॥ कूपकेरे दादुरते जानै कहा सागर को नरकी सोरङ्ग काक हंसके स्वभावको । कहै रघुनाथ ऐसे कूर नर मूढ़ जौन तौन कहाजानै रामनामके प्रभावको १५ ॥

स० । रामके नामके अक्षर द्वै महिमाकहि शेषसकैं न करोरी । जासु प्रसाद सुरासुर में हर हर्षि हलाहल पान करोरी ॥ जनरघुनाथके माथसोई जो सजीवनसार सुधारसकोरी । रकार श्रीराजकुमार उदार मकार सो श्री मिथिलेशकिशोरी १६ ॥

तथा । सत्य रकार रहै जो सदा अरु चित्त अकार सचेतन जोरी । आनँदरूप मकार मिदं हरिनाम सच्चिदानन्द कहोरी ॥ जनरघुनाथके माथ सोई शिवबाक्य

महारामायणकोरी। रकार श्रीराजकुमार उदार मकार सो श्रीमिथिलेशकिशोरी १७॥

तथा। नाम प्रभाव गुनै न सुनै फुर फेरि न देखिये तामुख ओरी। और बिलोकत खोरिलगै इमि ब्रह्मपुराण के माहिं लिखोरी॥ जनरघुनाथ के माथसोई जो करै शुधि शीघ्र सुलम्पटकोरी। रकार श्रीराजकुमार उदार मकार सो श्रीमिथिलेशकिशोरी १८॥

तथा। जो फल ना कुरुक्षेत्रमें बिप्रन कम्पनको भुव दान दियेते। जो फल योग औ यज्ञ किये नहिं जो फल धूमहूं पानकियेते॥ जो फलदामहि दानदिये सब तीरथहू परिकर्म्म कियेते। जो फल वंशी सो कोटि उपाय से सो फल रामको नाम लियेते १९॥

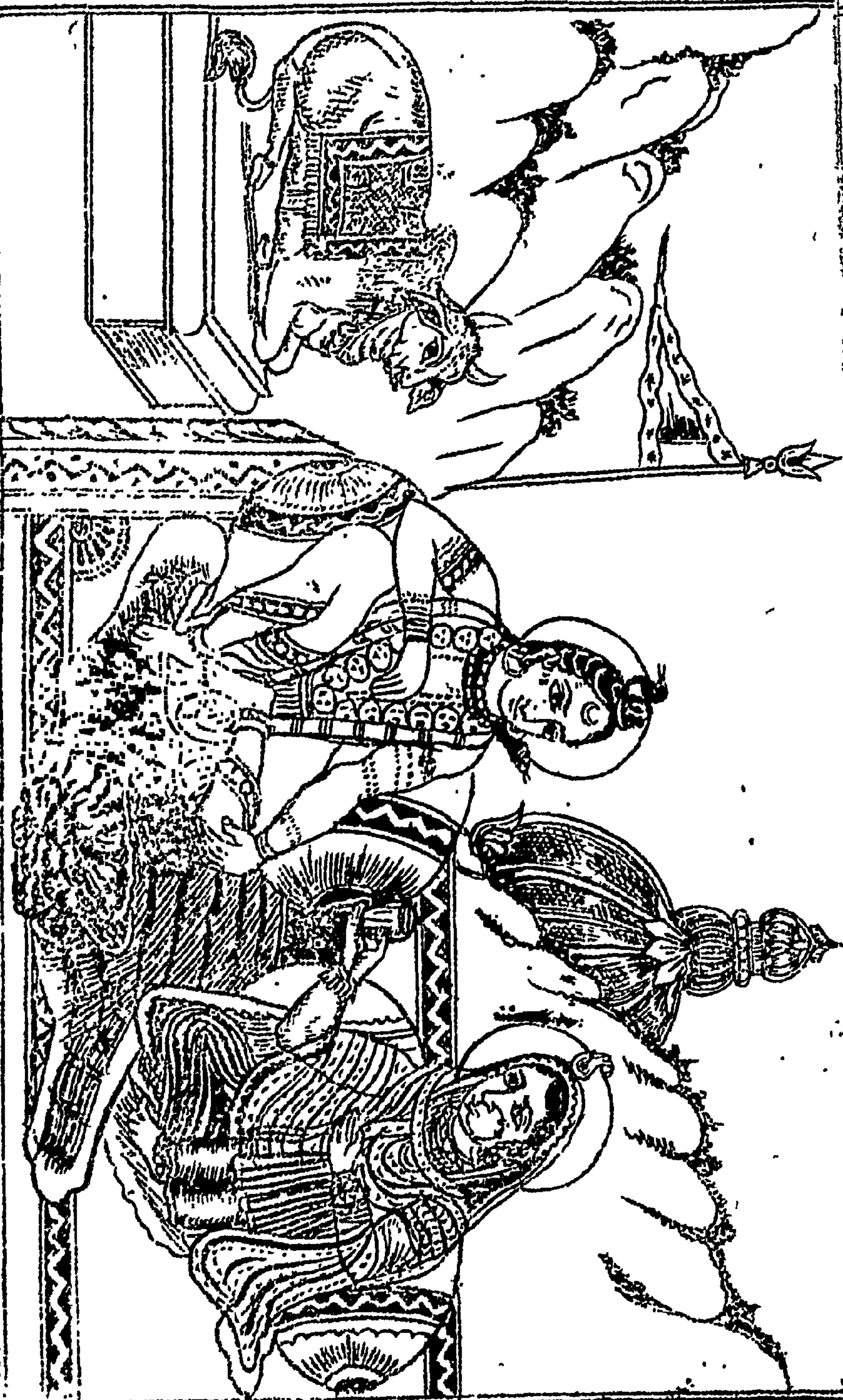
क०। जिन्हैं तू मगन तेरेतिन्हैं ताकि देखो नर नजल कै निकारिके चढ़ायबेको जीताहै। सपनेकी सम्पदा सुलभसाथ सबहीके सोई हितलाग्यो हरिनाम आनि हीताहै॥ कहै मिश्रवंशी कबहू न आई मतिवैसी जैसी चहूं छहूं ठहराय गावैगीताहै। चेतनहीं परैगो पैतरी ताके चलो अबसीतारामजपिले जनमजात बीताहै २०॥

श्रीमहादेवजीकी स्तुति आदिके कवित्त व सवैया ४॥

तथा। दाहिनेचरण में बिभूतिभूतिभूषमान बायेंपग जावक जमाते कांतिसों भरी। आधे अङ्ग अम्बर बघम्बर बिराजमान आधे अङ्गसारी जरतारी छबिसों जरी॥ आधे गरे व्याल आधे हीरन के माल लहैं आधेसाल

देखो तसवीर नम्बर ३॥

हज़ारा तसवीर नं. २ मुतअल्लिके सफ़ा २२



महादेव व पार्वती जी की मूर्त्ति.

चन्द्र आधेटीका आड़ केसरी। गिरिजा गिरीश यहरूप गिरिधर भनै मोपर महेशजू महेश्वरी कृपाकरी १॥

तथा। तूही खगधार निराधार को अधार तूही तूही धराधरको अधारह्वै अटति है। सुभटसमूहनमें आय जन आपनेको तूहीरणरूपकी फतूह प्रकटति है॥ भनत कवीन्द्र तेरीमूरति त्रिलोकमयी तूही सब मूरतिह्वै पूरति पटति है। जहां देवबृन्दनको परति न राटी भीर तहां अम्ब तेरी एलपाटी निपटति है २॥

तथा। शोभा सुर सम्पतिकी राशि जे प्रकाश करि अन्तर में आवतही तमको हरतहैं। जापर अनंग रिपु नयन पतंग कैसे दीपक के रंगभूलि भांवरे भरत हैं॥ देत मनकामना जे परसन्नभये अम्ब दरशनही ते दुख दारिदहरतहैं। निकट न आवैं तिन्हैं आपदाकी चिन्ता जेतिहारे पदचिन्ता मन चिन्तन करतहैं ३॥

तथा। काके पास जाते दौरि निपट निराश ह्वय आशको पुजावतो गरीबनके मनकी। आपद के भारमें सम्हार कौन लेतो औ गोहार कौन करतो अधीन जनगनकी॥ आहित्राहिसुनि बांहगहिको उठावतो यों गावतोकहांलों ऊंचेटेक निजपनकी। होते जौन शम्भुरानी पदबरदानी तेरे तौपैकौन सुनतो कहानी दीनजनकी ४॥

तथा। लोभझकझोरनते मदनहिलोरनते भारी भ्रमभोरनते कैसे थिर रहती। दुख द्रुम डारनते पातक पहारनते कुमति करारनते कैसेकैनिबहती॥ जराजन्तु औकनके चिन्ताजल ठोकनके रोगसों गढोकनके झाक

कैसे सहती। होते जौन अम्बतेरे चरनकरनधार मैया यहनैया मेरी कैसे पार लहती ५ ॥

स०। मारिमृगागज देतप्रियै अरुमौक्तिकदन्तनसों शुभचालहैं। आपु न लेत सदा परिधानको आसन को मन मुदित खालहैं ॥ माल मणीन की देत प्रिये नित आपलपेटत अंगन व्यालहैं। भावन भावती के सुख-दायक शंकरसों कहु कौन दयालहैं ६ ॥

क०। पियो जब सुधा तब पीवेको कहाहै और लियो शिव नाम तब लेबेको कहा रह्यो। जान्यो निज रूप तब जानेको कहाहै और त्याग्यो मनआशा तबत्यागिवो कहारह्यो ॥ भनै शिवसिंह तुममनमें बिचारिदेखो पायो ज्ञान धन तब पाइबो कहारह्यो। भये शिवभक्त तब ह्वैबे को कहाहै और आयो मनहाथतबआयबोकहारह्यो ७ ॥

तथा। काली तेरीकीरति है छाई तीनोंलोकबीच करै को बखान तेरो महाबल भारोहै। देवनको किह्यो पच्छ बिश्वपर तेरीरक्ष भया उतपाती दैत्य तिनको संहारीहै॥ एक अर्ज मातु मेरी गरज लगी है तोसों शत्रुनचबाय डारो बिनती हमारी है। भूत प्रेत डाकिनी औ शाकिनी पिशाच जेते कहै रामलाल कुल शत्रुको उखारी है ८ ॥

तथा। बड़ेबड़े दैत्य यहिजगमा प्रकटभये लैकैशम-शेर हस्त असुरन झारी है। चढ़िकै गजारि जब ली-न्होंहै कुलिशपाणि कीन्हों बहुजंगमचमूतो सबमारीहै ॥ अहोजगदम्बा तेरेपकरेकदम्बामातु होतहै गहरुममतनु

त्राण कारीहै। भूत प्रेत डाकिनी औ शाकिनी पिशाच जेते कहै रामलालकुल शत्रुको उखारी है ९ ॥

तथा। शम्भु बैठेहैं शिवाला पिये भांगभरि प्याला नितरहै मतवाला अहि अङ्गपै चढ़ाये हैं। गलसोहैमुंड माला कर डमरू विशाला रहैं ओढ़े मृगछाला भस्म देहमें लगायेहैं ॥ साथ सुरभी सुतवाला करै जक्त प्रतिपाला मृत्युहरत है अकाला शीश जटाको बढ़ायेहैं। कहै रामलाला मोको करो तुम निहाला हरो गिरिजापति कसाला जैसे कामको जलायेहैं १० ॥

स०। चन्द्र विराजत भाल हवै अरु हाथ त्रिशूल औभस्म लगाये। बैलनकी असवारी हवै शिव ओढ़े बघम्बर काम जलाये॥ भांग धतूरेके भोजनहैं शिव देहमें सर्प अनेक चढ़ाये। रमलाल पुकारिकहै कलि जक्त में छूटत पाप महेशकेगाये ११ ॥

क०। वही ज्ञानज्ञाता वही सुमतिको दाता करमति दरशाता अङ्ग व्याल लपटायके। गरे मुण्डमालकण्ठ कालहूकोकाल शीश सोहतहै भाल रीझै डमरूबजायकै॥ ऐसेसमय महिमा बखानैको महेशजूकी वादेराम ध्यायो गुणकवितबनायकै। सकल सुमति सुखसम्पतिसहित दैकै सांकरेमेंशंकर सहाय करो आयकै १२ ॥

स०। शम्भुको वाहन बैलबली बनिताहूको बाहन सिंहहि पेषिकै। मूसेको बाहनहै सुतएक सो दूजोमयूरके पक्ष विशेषिकै॥ भूषणहै कवि चैनफणीन्द्रके बैर परे सब

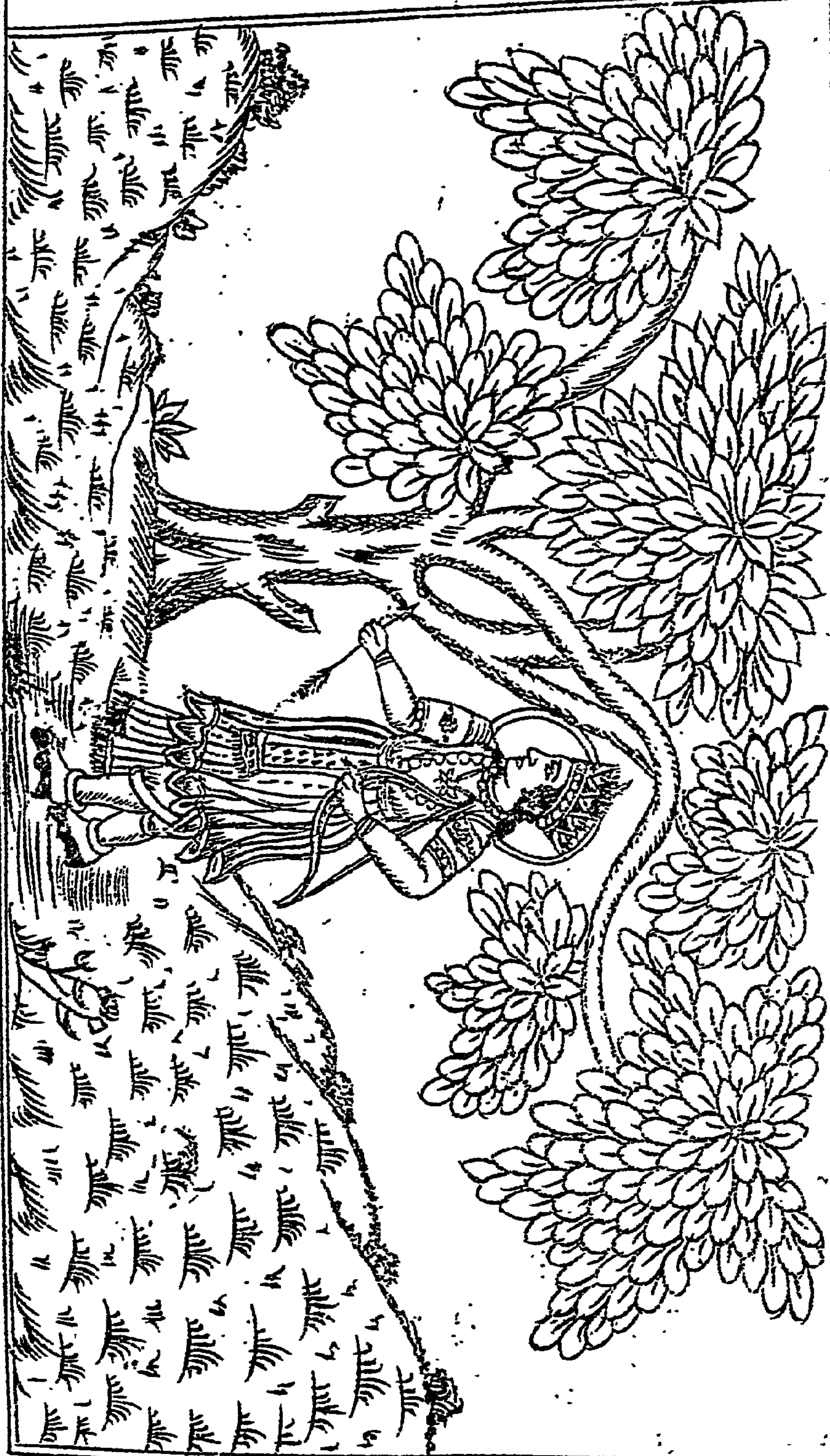
तेसब लेखिके। तीनहुलोकके ईशगिरीश सो योगिभये घरकी गतिदेखिके १३॥

तथा। शुम्भ निशुम्भ बिनाशिनि पासिनि बासिनि बिन्ध्य गिरीश कि रानी। शङ्कर संग बिलासिनि अंग हुलासिनि श्रीकमलासिनिदानी ॥ जाहि सदाशिव ध्यानधरैं अरु गान करैं मुनि चातुर ज्ञानी। नाथ कहै सोइ शैलकुमारि हमारीकरै रखवारी भवानी १४॥

तथा। गौर शरीरमें गौरी बिराजत मौरहै औरहि रीतिकोजाके। नागनको उपवीत लसै बलदेवकहै शशि भालमें वाके॥ दानकरै पलमें फलचारि औ टारत अङ्क लिखे बिधनाके। शङ्कर नाम निशङ्क सदाहीं भरोसे रहौं निशिवासर ताके १५॥

क०। नन्दी की सवारी नाग शृङ्गी करधारी नित सन्त सुखकारी नीलकण्ठ त्रिपुरारी हैं। मुण्डमालकारी शिरगङ्ग जटाधारी बाम अङ्गमें बिहारी गिरिराजसुता प्यारी हैं॥ दानिरेखभारी शेषशारदापुकारी काशीपति मदनारी कर शूलचक्रधारी हैं। कलाउजियारी बलदेव सोनिहारी यशगावैंवेदचारी सो हमारी रखवारी हैं १६॥

तथा। ओढ़े मृगछाला दूरि करत कसाला काटि डारैं भ्रमजाला धरे आधे अंगबालाहै। सोहैकण्ठकाला जोरजालिम डमरुवाला खोपड़ी के माला जाके भसम रसालाहै॥ मूरति बिशाला नयनतीसरेमें ज्वाला मृग चर्मको दुशाला पिये बिषही को प्यालाहै। सुरन में


श्री राम चन्द्र जी की मूर्त्ति.

आला आदिज्योति निरङ्काला सदा मेरे मनवाला देन वाला बैलवालाहै १७॥

तथा। मूसेपर सांपराखै सांपपर मोरराखै बैलपर सिंहराखै वाकीकाह भीतहै। कामपर वामराखै आगी पर पानीराखै विषपर अमृत राखै सोइ जग जीत है॥ पूतनको भूतराखै भूतनको विभूतिराखै छमुख औ गुम्ज मुखराखै ऐसीवाकी रीतहै। देवीदासज्ञानी देखोशङ्करकी सावधानी सबैबातलायक सो राखतराजनीतहै १८॥

स०। भालमें जाके कलानिधि है सोई साहब ताप हमारीहरैगो। अंगमें जाके बिभूति भरीरहै भौनमें सम्पति भूरि भरैगो॥ घातकहै जो मनोभवको ममपातक ताहि के जारे जरैगो। दासजू शीशपै गंगधरेरहै ताकी कृपा कहो को न तरैगो १९॥

क०। ततक्षण धरततनक अरचतजन गनगन सघन कनक दरशत दर। तरलनयन घनधरतअधरतन करतल करलस सरल गरल धर॥ अटत अजर यश रटत गहनघन सघनरजतरज रजत अचलधर। दहत सकल अघ दरशन दरशत दरद न रहत कहत नर हर हर २०॥

तथा। पथएँड़िन अरुणाई अङ्ग ओपति गुराई जङ्घ युगलनितम्ब पीनताई पकरति है। कटिखीनताई लरिकाई लीनताई मुखचन्द्र में जोन्हाई जोतिजाल बगरति है॥ भनत कवीन्द्र पेखि अंकुर उरोजनके पियहियप्रेम के खजानेसे भरतिहै। कुवँरिकेतनतरुणाई की अवाती

पेखि सौतिन के मनन में बाती सी बरात है २१ ॥

तथा। दानिनमें बड़ेदानी चारयोयुग मानी श्रीके देवतनहूंकेदेव नागरसपीजिये। ऐसोसुखधामनाम कामनाको देनहारो आपनेजननदेत त्योंहींमोहिंदीजिये ॥ भिक्षुकहौं ब्राह्मण न जानोंकोई उद्यम न नामशिवनाथ मेरो येतो यशलीजिये। अम्बिका भवानी बरदानी सब जगजानी समयपाइ शिवसों अरजमेरीकीजिये २२ ॥

तथा। गुणन विहीनहौं अधीनलीन मानमद औगुणअनेक अंग कहांलौं गनीजिये। काम क्रोध मोह माया याहीले रहतप्रीति त्रिविधतपततापं तातेतनु छीजिये ॥ करतउपाव ये कुचाली बसिउरबीच कवि शिवनाथ ध्यान कैसेकैलगीजिये। अम्बिकाभवानी बरदानी सबजगजानी समैपाइशिवसों अरज मेरीकीजिये २३ ॥

तथा। बैठि सिंहछालाको बिछाय व्याल मालधर नन्दीकी गिरैया पैरगाढ़ी चन्द्र साथकी। आये गरुड़ासन भगे भुजङ्ग नन्दसाम लाजतें सुधाकै बिन्दु खाल जीव साथकी ॥ नाहरनिहारिभग्यो शम्भुको घसीटि बैल शैलगैल गहैकहूं जैलगहै पाथकी। हँसें भूतगण भूत नाथकी विलोकि दशा लोटि २ हँसत किशोरी गिरि नाथकी २४ ॥

श्री गङ्गाजीमहारानीकीस्तुतिआदिकेकवित्त व सवैया ५ ॥

क०। कूरमपैकोलकोलहूपैशेषकुण्डली है कुण्डलीपै फबीफैलसुफनहज़ारकी। कहैपदमाकर सुफनपैफबीहै

देखो तसवीर नम्बर ४॥

श्री गंगाजी की मूर्त्ति.



भूमि भूमिपैफथीहौथिति रजतपहारकी ॥ रजतपहारपर शम्भु सुरनायकहैं शंभुपर जोति जटाजूटसोअपारकी। शम्भु जटाजूटपर चन्द्रकीछुटीहै छटा चन्द्रकी छटानपै छटा है गंगधारकी १ ॥

तथा। करमको मूलतन तनमूल जीवजग जीवनको मूल अति आनँदउधरिबो। कहै पदमाकर सुआनँद को मूलराज राजमूल केवल प्रजाकोभौनभरिबो॥ प्रजामूल अन्न सब अन्नको मूलमेघ मेघनको मूल एक यज्ञ अनुसरिबो। यज्ञनको मूलधन धनमूल धर्म अरु धर्म मूल गंगाजलबिन्दु पान करिबो २ ॥

तथा। सुचितगोबिन्द कैकै सोवतेकहांधौंजाय जल जन्तु पांतिजरिजैबेकोअखिलती॥ कहैपदमाकरसुजादा कहौ कौन अब जाति मरयादाहै महीकी अनमिलती॥ जल थल अन्तरिक्ष पावते कथों पापीमुक्ति मुनिजन जापकन जो न दुर मिलती। सूखिजाती सिन्धु बड़वान-लकी झारनते जो न गंगाधाराह्वै हजारधारमिलती ३॥

तथा। यमपुरद्वारेके किवारे लगेतारे कोउ हैं न रख-वारे ऐसेसबकेउजारेहैं। कहै पदमाकर तिहारेप्राणधारे जेते जेते अघभारे सुरलोक को सिधारेहैं॥ सुजन सु-धारेकरे पुण्य उजियारे अति पतितकतारे भवसिन्धुते उबारे हैं। काहूने न तारे तिन्हें गंगा तुमतारे आजु जेते तुमतारे तेते नभ में न तारे हैं ४॥

तथा। अधम अजान एक चढ़िकै बिमान भाष्यो बूझतहौं गंगातोहिं परिपरिपांयहौं। कहैपदमाकरकृपा

करि बताउसांची देख्यो अतिअद्भुतरावरोस्वभायहौं ॥ तेरेगुण गानही की महिमा महान मैया कान कान नाइ कै जहांनमधिछायहौं । एकमुख गाये ताते पंचमुखपाये अब पंचमुख गायहौं तो केतेमुख पायहौं ५ ॥

तथा । पापनकीपांति भांतिभांतिबिललातिपरी यम की जमाति हलकम्पन हिलतिहै । कहैपदमाकरहमेश दिवि बीथिन बिमाननकी रेलठेला ठेलनि ठिलतिहै ॥ सुरधुनिरावरे उधारे जगजीवनकी छिनछिन श्रेणी इन्द्र लोकको पिलतिहै । आसन अरघ देत देत निशि वासर विचारे पाकशासनको सांस न मिलतिहै ६ ॥

तथा । लाये भूमिलोकतेजसूसजबरेईजाय ज़ाहिर खबरकरी पापिनके मित्रकी । कहै पदमाकर बिलोकि यम कहिकै बिचारो तो करमगति ऐसे अपवित्रकी ॥ जौलौंलगे काग़ज़ बिचारन कछुक तौलौं ताकेकानपरी ध्वनिगङ्गाकेचरित्रकी ॥ वाकेशीशहीते ऐसीगंगाघरघ-रायबही जामें बहीबहीफिरी बहीचित्रहू गोपित्रकी ७ ॥

तथा । गंगाके चरित्र लखि भाषैं यमराज ऐसे एरे चित्रगुप्त मेरेहुकुम में कानदे । कहै पदमाकर ये नरकनि मूंदिकरि मूंदि दरवाजनको तजि यह थानदे ॥ देखुयह देवनदी कीन्हे सबदेव याते दूतनबोलाय के बिदाकेबेगि पानदे । फ़ारडारु फ़रद न राखु रोजनामा कहूं खाता खत जानदे बहीको बहिजानदे ८ ॥

तथा । बईती बिरंचिभई बामन पगनपर फैलीफैली फिरी ईश शीश पै सुगथकी । आइ कै जहान जह्नु

जहां लपटाई फिरि दीननके हेतदौरी कीन्हीं तीनि पथ की । कहैपदमाकर सुमहिमा कहांलौंकहों गंगानामपायो सोही सबके अरथकी । चास्यो फल फली फूली गह गही बहबही लहलही कीरतिलताहै भगीरथकी ९ ॥

तथा । सहज सुभाय आय एक महापातकी गंगामैया धोई तूतोदेह निज आपहै । कहै पदमाकर सुमहिमा मही में भई महादेव देवनमें बाढ़ी थिर थापहै ॥ जकि रहे हैं यम थकिरहे हैं दूत दूनी सब पापनके उठीतनता पहै । बांचीबही वाकी गति देखिकै विचित्ररहे चित्रकेसे लिखे चित्रगुप्त चुपचापहै १० ॥

तथा । जान्योजिनहैनजग योगजपजागरणजन्माहिंबि तायो जग जोपनको जोइकै । कहैपदमाकरसुदेवनके से वनते दूरिरहे पूरिमणिवेद रह होइकै ॥ कुटिल कुराही कूर कलहीकलङ्की कलिकालकी कथानमें रहे जे मति खोइकै । तेऊ विष्णु अंगनमें बैठे सुर संगनमें गंगकी तरंगनमें अंगनको धोइकै ११ ॥

तथा । जैसे तैंन मोंको कहूंनेकहू डरातहुतो ऐसे अब तोसों होंहुं नेकहू न डरिहौं । कहैपदमाकर प्रचण्डजो परैगोतो उमण्डिकरितोसों भुजदण्डठोंकिलरिहौं ॥ चलो चलु चलोचलु बिचलु न बीचही ते कीचबीच नीचतो कुटुम्बको कचरिहौं । एरेदगादार मेरेपातक अपारतोहिं गंगाकी कछारमें पछारि छारकरिहौं १२ ॥

तथा । आयोजौनतेरीधौरीधारीमें धसतजाततिनको नहोत सुरपुरते निपातहै । कहै पदमाकर तिहारो नाम

जाके मुख ताके मुख अमृतको पुंज सरसातहै ॥ तेरो तोय छूके औछुवत तनजाको बात तिनकी चलै न यम लोकन में बातहै। जहां जहां मैया तेरी धूरि उड़िजाती गंगा तहां तहां पापन कीधूरि उड़िजात है १३ ॥

तथा। विधिकेकमण्डलुकी सिद्धिहै प्रसिद्धयही हरिप दपंकज प्रताप की लहरहै। कहै पदमाकर गिरीश शीश मण्डलके मुण्डनकी माल ततकाल अघहरहै ॥ भूपतिभगीरथके रथकी सुपुण्यपथ जह्नु जप योगफलफैलकी फहरहै ॥ क्षेमकीछहर गंगा रावरी लहर कलिकालकी कहर यमजालको जहरहै १४ ॥

तथा। हौंतो पंचभूत तजिबेको बध्यो तोहिंपर तैंतो कस्यो मोहिं भलो भूतनको पतिहै। कहै पदमाकर सुएक तनतारिबेमें कीन्हें तनग्यारहकहो सोकौनिगतिहै ॥ मेरे भाग गंग यही लिखी भगीरथी गंगे तुम्हें कहिये कछुक तो कितेकि मेरी मतिहै। एकभवशूल आयो मेटिबेकोतेरेकूल तोहिंतो त्रिशूलदेत बार न लगतिहै १५ ॥

तथा। भाषाहोत भूषित सुपूरी अभिलाषा होत सुयश लताकी सुशाखाहै सुगतिकी। कहै पदमाकर त्यों बदन विशाल होत हालहौतहेरी छलछिद्रनकी खंतिकी॥ गंगाजूतिहारे गुणगानकरै अजगमै आनहोत बरषासुआनँदकी अतिकी। परहोत पुण्यनको धूरिहोतअघरमचूर होतचिन्ता दूरहोत दुरमतिकी १६ ॥

तथा। लोचनअसम अंग भसमचिताकीलाय तीनों लोकनायकसो कैसेके ठहरतो। कहै पदमाकर विलोकि

हसि ढंगजाकेवेदहू पुराणगान कैसे अनुसरतो ॥ बांधे जटाजूट बैठे परवतकूटमाहिं महाकालकूट कहो कैसे के ठहरतो । पीवैनितभंगै रहैं प्रेतनके संगै ऐसे पूछतो को नंगै जो न गंगै शीशधरतो १७ ॥

तथा । सबनके बीचबीच समयमहानीच मुखगंगा मैया तेरेआजुरेणुकनह्वैगये । कहै पदमाकर दशा यों सुनो ताकी बाकी छबिरी छटानछितिछोर जोरछ्वैगये ॥ दूत दबकाने चित्रगुप्तचुपकाने औ जकाने यमजाल पापपुंज लुंज ल्वैगये । चारिमुखचारिभुज चाहिचाहिरहे ताहि पंचनके देखतही पंचमुख ह्वैगये १८ ॥

तथा । कलिके कलंकी कूर कुटिल कुराहीकेते तरिगे तुरन्तत्तबै लीन्हीरेणु राहजब । कहै पदमाकर प्रयास बिन पावैसिद्धि मानत न कोऊ यमदूतन की दाहदब ॥ कागज़ करम करतूति के उठाइधरे पचिपचि पेंचमेंपरे हैं प्रेतनाह अब । वेपरदवेदरद गजब गुनाहिनके गंगा की गरदकीन्हे गरद गुनाह सब १९ ॥

तथा । रेणुकाकीरासनमें कीचकुशकासनमें निकट निवासनमें आसन लदाऊके । कहै पदमाकर तहांई मंजुशूरनमें धौरी धौरी धूरनमें पूरणप्रभाऊके ॥ पार नमें वारनमें देखहु दरारनमें नाचतिहै मुकुति अधीन सबकाऊके । कूल औ कछारनमें गंगाजलधारनमें मँझ-रा मँझारनमें झारनमें झाऊके २० ॥

तथा । तेरेतीर जौलौं एकलहर निहारियतु तौलौं कैयोलच्छ स्वच्छ लहरन धारती । कहै पदमाकर चहौं जो

बरदान तौलौं कैयो बरदाननके गान अनुसारती ॥ जौ-लौंलगो काहूसों कहनकल्याएकतुव तौलौं कैयो कलाके समूहन सम्हारती । जौलौं एकतारेकोहौं रचत कवित्त गंगे तौलौं तुम केतिक करोरि तारि डारती २१ ॥

तथा। कैधौं तिहुंलोककी शिंगारकी बिशाल माल कैधौं जगीजगमें जमाति तीरथनकी । कहै पदमाकर बिराजै सुरसिंधुधार कैधौंदूधधार कामधेनुनकेथनकी ॥ भूपतिभगीरथके यशकी जलूस कैधौं प्रकटी तपस्या कैधौं पूरीजह्नुजनकी । कैधौं कछुराखै राकापतिसों इ-लाकाभारी भूमिकीशलाकाकैपताका पुण्यगनकी २२ ॥

तथा। यमको न जोर जब पापिनपै चल्यो तबहाथ जोरि गंगाजूसों चुगुली करै खरे । बड़ेन पै डरो पै ना डरोदेवि तुच्छनपै कहै पदमाकर सुनावतहरेहरे ॥ बड़े-न पै डरे बड़ी पाइये बड़ाईदेखो ईशपै ढरीतौ तुम्हैंईश शीशपै ढरे। तुच्छन को देती जैसो नारायण रूप तैसो तुच्छ तुम्हें तुच्छ करि पायन तरे करे २३ ॥

तथा। यमकेजसूस बिनती यमसों हमेशाकरैं तेरी ठाकुरीको ठीक नेकु न निहारोहै । बड़े बड़े पापी औ सु-रापी द्विजतापी तहांचलन न पावै कहूं हुकुम हमारोहै ॥ कहै पदमाकर सुब्रह्मलोक विष्णुलोक नामलैकै कोऊ शिवलोकको सिधारोहै । बैठीशीश गङ्गाके तरङ्गाहैअभ-ङ्गा ऐसी गङ्गानेउठायदीन्हों अमल तिहारोहै २४ ॥

तथा। बिन जपयज्ञदान तीक्षणतपस्याध्यान चाह-तहौ जोपै तिहुंलोकमें महाउदोत। कहैपदमाकरसुनौतो

हालहामीभरो लीखौं कहैलैकै कहूं कागजकलम दोल ॥ गङ्गाजूके नाम सुने हामीभरे लिखौ कहै ऐसे चढ़िजात कछू पुण्यन के पूरेगोत। सौगुने सुनेते औ हज़ारगुने हामीभरे लाखगुने लिखत करोरिगुने कहे होत २५ ॥

तथा। शरदघटासी खासी उठतीअटासी छुपटासी क्षितिक्षीरधिछटासीनिरधारिये । लज्जासीछुटीसीछार-छारीसीगढ़ीसीगढ़ मठसीमढ़ीसी औ गढ़ीकेढारढारि-ये ॥ कहै पदमाकर सुधौंरीधौंरीदौरी आवै चौरीचौरी चं-चलसुचारुचिह्नवारिये। हरेहरेछबि नईनई न्यारीन्यारी नित लहरैं निहारीप्यारी गङ्गाजू तिहारिये २६ ॥

तथा। विघन विनाशै भवपाशहोतनाशै भाशैनाशै पुण्य पुञ्जकी प्रकाशै रङ्गरङ्गाके। सुखकी समाजैउपराजै साजछाजे क्षिति घनसे गराजे राजैशीशईशनङ्गाके ॥ कहैपदमाकर सुजानै करि ज्ञानै जानै तानै मनमानै भोग आनै देव अङ्गाके। सुन्दर सुभङ्गनित अमित अभङ्गआछे अघओघभङ्गा ये तरङ्गादेविगङ्गाके २७॥

तथा। तहांआई भूमिते लगाईआसमानहूलौं जान गीरवान औविमाननके जुरेथोक। कहैपदमाकरजोकोऊ नर जैसेतैसे तनुदेत गङ्गातीरतजिकैमहानशोक ॥ सोतौ देतव्याधै विष दुखनदुनाई देत पापनके पुञ्जको पहारन को ठोक ठोक। दगादेत दूतन चुनौती चित्रगुप्तैदेत यमको जरबदेत पापीलेत शिवलोक २८ ॥

तथा। एक महापातकी सुगातकी दशाबिलोकि देत थोंउराहनो सुआठहू पहर हैं। मीचसमै तेरेउत आप

गये कण्ठ इत व्यापिगयो कण्ठ कालकूटसो जहर है॥ आप चढ़ीशीश मोहिं दीन्हीं बखशीश औ हजारशी-शकरेकी लगाई अटहरहै। मोहिंकरिनङ्गा अङ्ग अङ्गन भुजङ्गबांधो एरी मेरीगङ्गा तेरी अद्भुतलहरहै २९॥

तथा। हेरिहेरि हँसत न चाहत हरषिचढ़यो वैलहूं बिलोकिमन वाकीओरटरको। कहैपद्माकर सुदेखिके गरुड़हू को लेखि निजभाग अनुरागके न सरको॥ कापे चढ़ौं कौनतजौं चाहतसबनयह शोचतपतितपस्यो गंगातीर परको। जौलौं धरीद्वैकरूप हरको न पायो तौलौं पातकी बिचारो भयो चोर भरे घरको ३०॥

तथा। सारमाला सत्यकी बिचारमाला वेदन की भारी भागमालाहै भगीरथ नरेशकी। तपमालाजह्नुकी सुजपमाला योगिनकी आछीआपमालाया अनादिब्रह्म वेशकी॥ कहैपद्माकर प्रमाणमाला पुण्यनकी गङ्गाजू की धारा धनमाला है धनेशकी। ज्ञानमाला गुरुकी गुमानमाला ज्ञानिनकी ध्यानमाला ध्रुव मौलिमाला है महेशकी ३१॥

तथा। ज्ञाननमें ध्याननमें निगम निदाननमें मिलत न क्योंहूं हरिहीमें ध्याइयतुहै। कहैपद्माकर नतच्छन प्रतच्छहोत अच्छनके आगेहूं अधिच्छ गाइयतुहै॥ इन्दिराके मन्दिरमें सुनिये अनन्दभरे बीधे भवफन्दतहां कैसे जाइयतुहै। देवन के वृन्दमें न पैये क्षीरसिन्धु में सुगङ्गाजल बिन्दुमें गोविन्द पाइयतु है ३२॥

तथा। कामअरुक्रोध लोभ मोह मदमात्सर्य इन

कीजैंजीरनकोजारिहैपैजारि है। कहैपदमाकरपसारपुण्य चार्योओर चार्योफलधामनमें धारिहै पैधारि है॥ चोभ छल छन्दनको बाढ़े पाप वृन्दनको फिकिर कुफन्दनको फारिहै पै फारिहै। एकैबार बारि जिन गंगाको पियोहै तिन्हैं तारनि तरंगिनी या तारिहै पैतारिहै ३३॥

तथा। जन्म जन्म जिन छोड्यो तौन मेरो संग अंग अंग हितही के रहे जौन लपटानेहैं। कहै पदमाकरति- हारी सोहँ गंग योग जपके यतनमें न नेकु अकुलाने हैं॥ तौनपाप मेरेतेरे तीर पर मैया अब मिलत न हेरे छत कित धौं हिराने हैं॥ कचरेकरार में बहेकै बीचधार- में कै बूड़े वै सेवारमें कि वारूमें मिलाने हैं ३४॥

श्रीयमुनाजीकी स्तुतिके कवित्त व सवैया॥

क०। आनभरी अधिक कृशानभरी पापनको दान भरी दीरघ प्रमान मान कमुना। तेजभरीमंजुलमजेज भरी रीझिभरी खीझिभरी दूतनकी दाहै दौरियमुना॥ ग्वालकवि सुखद प्रतीतिभरी रीतिभरी परमपुनीतभरी मीतभरी भमुना। जंगभरी यमते उमंगभरी तारिबेको रंगभरी तरल तरंग तेरी यमुना १॥

तथा। व्यापी अघ ओघको महापी मदिराकोदक्ष कीनो परदेशको पयान रुजगारी मैं। पाककारिबेको लई लकरी करीलनकी सो करील रावरे किनारेहुती क्यारी मैं॥ ग्वालकवि ताकोउड़िधूमगयो नर्कनमें पुरुषन सह पापी श्यामछविधारीमैं। सुमिरणसेवाध्यान दरशपरश विमुक्तिकी दिवैया मैया यमुना निहारी मैं २॥

तथा। बैठ्यो तटनीके तट भाषत तिलक पायों एरे राहगीर पासआयजलछूजातैं। अचवनकिये महामहिमा महीमेंहोत जानाफलहोत और देवनकी पूजातैं॥ ग्वालकवि कौतुक बिशालदेखिहालेहाल रसिकबिहारी भयोजात अबदूजातैं। कीरतिअखण्डहोत तूजगप्रचण्ड होत होत है अदण्ड मारतण्डकी तनूजातैं ३॥

तथा। श्यामरंग रंगत ते श्यामैंरंग होतसुने यमुना जरूरही जुरी है जोरजंगीतू। देतहैं अन्हैयन उठायपीत अम्बरन लकुट विशालदेत सुन्दरसुरंगीतू॥ ग्वालकवि गोरीरतिहूंते पाटरानीदेत देति मोरचन्द्रिका चमंकित कलङ्कीतू। संगी करै ग्वालन उमंगी मतिचंगीकरै करि बहुरंगी फेरि करति त्रिभंगीतू ४॥

तथा। कामनाकी गैयासी मनोरथ भरैयाभलैं अखिलअगारन में सम्पतिडरैयातू। दुरितदरैयाविदरैयाबदराहनकी जुलुम जरैया टेकयमकी टरैयातू॥ ग्वालकवि भाषै छविछोरनछवैया वेस सुखमें सनैया दुख हियके हरैयातू। शय्याकरै शेषकी सुज्योति की जगैयाजोर कान्हकी करैयामैया तरणितनैयातू ५॥

तथा। कैधौं अन्धके अखिलअगार चारु कैधौंरस राजकी मयूखैं मंजु जाकी हैं। कैधौं श्याम बिरहबियोगिनके नैन ऐन कज्जल कलित जलधारैं धार ताकी हैं॥ ग्वालकवि कैधौं चतुराननके लेखिबेको फूट्योमसि भाजन अनूपछवि वाकी हैं। कैधौं जलस्वच्छ में प्रत्यक्ष जलझाईं कैधौं तरल तरंगैं मारतण्डतनयाकीहैं ६॥

तथा । मारतण्डतनया तिहारेसुने कौतुक मैं सौतुक गोविन्द करै केलनको मैयातू । तेजकरै आनन सुजानन में आनकरै मानकरै जगत प्रमान पसरैयातू ॥ ग्वालकवि आनँदकी छकनिछकैया फेर कठिन कलेशनके भेशनहरैयातू । शहर यमेशकी जरैया यमदूतन को कहरकुढंगन की कतल करैयातू ७ ॥

तथा । भूलेहूं न जातो एको भुनगा हरीके भौन कैसे तृषावन्तनकी तिरषा बुझातीं ये । सागर अपार भैन दिये बेशुमार सबकासों मिलि मिलिकै वहांलौं पिलिजातीं ये ॥ ग्वालकवि धरमध्वजा न फहराती ऐसे कैसेहून वरण विवेकता निभातींये । जीवतीं न गोपिका गोबि-न्दके बियोग बीच जो न यमुनाकीजोरजेबदरशातींये ८॥

तथा । रविकीकुमारी जाके प्रीमतमुरारी सोतो इंदि-रादि नारिनमें शिरदारनारीहै । जोई उरधारीलेहै ताहि निसतारिदेहै भुवनको सँभारि तैसे तोहूं पार पारि है ॥ कहैरघुराई ताहिगाइ चितलाय नीके जाके वारी पापन की वारी बारिडारिहै । यमुना बिसारिहै तौ यमुना बि-सारिहै जो यमुना सँभारि है तो यमुना सँभारिहै ९ ॥

श्री हनुमान्‌जी की स्तुतिके कवित्व व सवैया ॥

क० । जयजय रामदूत महावीर बजरंगी देव होयतू दयालु मोपै कृपातुम कीजिये । हौंतो तेरोदास मैंतोतेरे ही भरोसे रहौं कहै रामलाल एकअर्ज़ मेरी लीजिये ॥ शत्रु अरु बैरीदुष्ट जेतबीर मेरेहोयँ तिनको तुमारिडारो

देखोतसबीरनम्बर ५ ॥

यहै वर दीजिये । बीरनमें बीर महाबीर बड़ो बीर हमैं लेकै बीरगदा हस्त शत्रुको उठीजिये १ ॥

तथा । जयजय हनुमान तुअङ्गीवीर वज्रांगी लै-कैशमशेर शिर शत्रुन को झारिये । पावकलगाय लङ्का वाटिकाउजारिडारयो झारिडारयो रावणु असुरसँहारि-ये ॥ बंचकनमारयो मेघनादहूउजारिडारयो वारिटारिडा-रयो बीर बिग्रह बहुकारिये । कहै रामलाल मोपैकृपाकरौ बायुपूत शत्रुनको मारिमारि लातनपछारिये २ ॥

स० । जयहनुमान हिरण्यसुशैल समान शरीर बि-राजत नीके । भाल विशालत्रिपुण्ड्र सुशोभित देखे मिटैं दुख भव रजनी के ॥ रामसुआनन चन्द्र चकोर पिवैया सदा गुण ग्राम अमीके । करजोरि करै अमरेश बिनय दुखदारुण बेगिहरौ जन जीके ३ ॥

तथा । सुखसुन्दरसुन्दर देखिलियो कपिखेलसमुन्दर पारहिजाई । शिवसुन्दरदीनबिभीषणको अवनीतनया कर शोक नशाई ॥ बागविध्वंसि निशाचरहू बहु मारि दियो पुर आगिलगाई । अमरेश लँगूरहिं सिन्धु बुझाइ कपीश सियासुधि रामसुनाई ४ ॥

तथा । अहिरावण राम सबन्धु चुराय पताल गयो क्षणमाहँ छिपाई । लखिसैन्यबिहाल गयोहनुमान हत्यो मनुजाद न बारलगाई ॥ सानुज रामहि कन्ध चढ़ायके बेगिचल्यो निजसैनहिआई । दुःखहरयो कपिभालुनको अमरेशमनैं यशसो चितलाई ५ ॥

क० । रामबरदूत बायुपूतसोसपूतप्रभु बल अनुकूल


श्री कृष्ण चन्द्र जी का ऊँचे स्वर से बाँसुरी बजाना.

तिहुँपुर सरनामहै। कनकाचल शरीर रणधीरमहावीर स्वामीहरोभवपीर अतिविकलगुलामहै ॥ गयोबाटिका अशोक तात हरयो सिय शोक छायो यश तिहूंलोकमें बड़ाईगमठामहै। दास अमरेशकेरी लाज तवहाथनाथ रहत भरोसे पै तिहारे आठौयामहै ६ ॥

श्रीकृष्णचन्द्रजी की छवि आदि वर्णन के कवित्त व सवैया ॥

क०। केसरिको कंचनने कंचनको चम्पकने चम्पकको जीत्यो प्यारी रूपने अमन्द है। गजगति छीने भूप भूपगति छीनहंस हंसगति छीनिबेको तेरीगति मन्दहै॥ सबहारे बाणनते बाण पंचबाणनते कृष्णलाल तोहिं देखि रीझे नँदनन्दहै। गजमुखमूंदै कंज कंज मुखमूंदैचन्द्र चन्द्रमुख मूंदिबेको तेरो मुखचन्दहै १ ॥

तथा। माफ कियामुलुक मताहदी बिभीषण को कहीथी जुबान कुरबान थे करारकी। बैठिबे को ताइफ तखतदैतखतदिया दौलतिबड़ाईथी जुनारदारवारकी॥ तब क्या कहाथा अब सरफराज पापहुये जबकीअरज सुनी चिरीमार खारकी। कारेके करारमाहं क्यों दिलदारहुये एरेनन्दलाल क्या हमारी बार बारकी २ ॥

तथा। कदमकी डालीचढ़ि कूद्यो बनमाली कोपि कालीदह भीतर वियोगबीज ब्वैगयो। कहै गिरिधारी धायनगर के नारीनर भई भीरभारी नीर नयननते च्वै गयो॥ नन्दनँदरानी अररानी परैं पानीबीच ओकओक

देखो तसवीर नम्बर ६ ॥

अररसशोर त्रिष ह्वैगयो। यमुनासमान्यो आजब्रजको सपूतहाय यशुमतिसून बित सूनजग कैगयो ३॥

स०। मोरपखानि बनो शिरमौर लसै अति केस-रिभालअनूप। बारछुटे झलकैं श्रुतिकुण्डल मालगरे लखिये सुरभूप॥ पीतपटो तन अङ्गदबाहु कलानिधि सोमुखहै अनुरूप। बेणुबजावत गावत सांझ गये गड़ि नैनन लीननरूप ४॥

क०। कहा भयो जोपै काव्य भेद भाव छन्द बिना हरियश जामें सोई कथनि सुआई है। सन्तजन गावैं सुनैं कहैंजापैताहि कोरीकबिता बनाईदेखि गिरापछिताई है॥ रामरस बिना जैसे फीकोलगै स्वाद तिमि रामरस बिनास्वादगन्धहू न आई है। सन्तमनभाई सुखदाई है सुहाईजामें कृष्णकेलिगाई सोई सांचीकबिताई है ५॥

स०। पण्डितहोइकै कीनोकहा जुपै कृष्णकथासों न नेह ललामहै। कर्म्मनमें पचिभूल्यो बृथा श्रमही फलपायो लह्योनबिरामहै॥ ज्ञानगरूरहै घूरसबै हियमें जुपै नाहिं रम्यो घनश्यामहै। हैधनधाम अराम हराम सो रामबिना सबकाम निकामहै ६॥

क०। ब्रजकीलुगाईहैंचबाई कैसीलखोमाई आवहिं सदाई इतेकरिकरिकोटिब्याज। कहैं लँगराई करै कान्ह है तिहारोब्रङ्क लावति कलङ्क इन्हैं आवति न शङ्कलाज॥ बारोहै दुलारो मेरो चलिबो न सीख्योचाल अबहींतेलाल के पहिरि आवै बालसाज। हालनेलगीहै घुँघुरारीलट नेकु नेकु पालनेते लालने उतारिपगुधारयोआज ७॥

तथा । फुहि फुहि बूंदझरें बीर बारिवाहनते कुहूंकुहूं सुनिपरै कूककोकिलानकी । ताहीसमय श्यामा श्याम मूलतहिंडोलचढ़े वारोंछविकोटि मैं रतिपपंचबानकी ॥ कुंडललटकसोहै भृकुटी मटकमोहै अटकी चटकपटपीत फहरानकी । झूलत समयकी सुधि भूलत न हूलतरी उझुकनि झुकनि झिकोरनि भुजानकी ८ ॥

तथा । झांवरे लगत सुरजासुकी झलक झांकि सुषमा सराहोंकहा सांवरे सुजानकी । झूलिबेकी चाह करि चढे भूलने पै दोऊ कोऊ नाहिं सकैकहि उपमा झुलानकी ॥ कटिकी लचनि मचकनि चारु जांघनिकी अचकनि गहनि वो भूम भूमकानकी । झूलत समयकी सुधि भूलति न हूलतिरी उझकनि झुकनि झिकोरनि भुजानकी ९ ॥

तथा । करैंजलकेलिश्याम भुजते भुजानमेलि मनो हेमबेलि रही लपटि तमालसों । एक अङ्कभरैं लै निशङ्क ह्वै मयङ्कमुखी एकवङ्क नैनके बतावैं सैन लालसों ॥ एक छुटिधावैं एक पकरिलैआवैं जुटि एकनीरनावैं पानिपल्लव रसालसों । महिमाबिशाल नहिंजानै बेद जासुख्याल पर्यो प्रेमजाल जो छुटावें जगजालसों १० ॥

तथा । वारोंकोटि मारुचारु धूरिसे धुरेटे अंग लार मुख जैसे सुधाधार चन्द्रते ढरै । झूमि झूमि झलकैं झँ-डूलेकी लटैं लिलाट ललित डिठौनादृग कैसे मनते टरै ॥ सांवरे सलोनेकी किलककलबोलनि अमोल सुषमा अ-पार कौनसों कहीपरै । मैयां बैयां चलनि न ऐया लेतमैया

देखि हँसनि कन्हैया की जुन्हैया ज्योति को हरै ११ ॥

क० । मोरके पखौवनके माथेपर मुकुटसोहै कुण्डल की झलक मानो गिरिके धरैयाकी । कांधेपर कामरी कसी है फेंटफांवरी सूरति है सांवरी यशोमति के छैया की ॥ दत्तकवि जनपर कोटिकाम वारिडारौं कैसी छवि बनी है बलिभद्रजूके भैयाकी । आगेग्वालगैया पीछेपापा पैयां सब गोपीलेत बलैया प्यारेनटवर कन्हैयाकी १२ ॥

स० । कटि काछनी काछे पितम्बरकी धरे मोर पखान को मोरपखा । द्विजदेवजू यों दुपटी फहरै मनो बोलत बिड़वबिजै करखा ॥ वह कौनधौं माधुरी मूरति वारो अली छबि नैनन जाकी चखा । विहरै चहुँधावन बीथिन बीच मनोभवभूपको मानोसखा १३ ॥

तथा । गुच्छनको अवतंस लसै शिखिपक्षन अच्छ किरीट बनायो । पल्लवलाल समेत छरीकर पल्लवसो मति रामसोहायो ॥ गुंजनको करमंजुलमालसो कुंजन ते कढ़ि बाहर आयो । आजको रूपलखो ब्रजराजको आंखिन को फल आजुहिं पायो १४ ॥

क० । सोहत मुकुटशीश कुण्डल श्रवणसोहै मुरली अधर ध्वनि मोहै त्रिभुवनको । लोचन रसालवंक भृकुटी बिशालसोहै सोहै बनमालगरे हरलेत मनको ॥ रूपमन मोहन न चित्तते बिसारो मन सुन्दर बदनपर कोटि मदननको । जगत निवासकीजै सुमति प्रकास मेरे उरमें हुलासहै बिलास बरणनको १५ ॥

स० । छबिसों फबिशीश किरीटबन्यो रुचिसों हिये

बनमाल लसै । करकंजहि मंजुरली मुरली कछनीकटि चारुप्रभावरसै ॥ कविकृष्ण कहै लखिसुन्दरि मूरति यों अभिलाष हियेसरसै । वह नन्दकिशोर बिहारी सदा यहि बानिक मो मनमांझबसै १६ ॥

तथा । आज लख्यो ब्रजराज कुमार सुदेश शृंगार बने सिगरेहैं । रूपकी रीझ कही न परै अवलोकि बिलोचन नीरभरे हैं ॥ कृष्णकहै शिरसोहतमोर किरीट चँदाछबिपुंजधरे हैं । मनो अक्रशे शशि शेखरसों हरि शेखरचन्द्र अनेक किये हैं १७ ॥

तथा । मैं निरख्यों ब्रजराज ललाद्युति पुंजहियेहित साजिरहे हैं । कृष्णकहै दृगदीरघ देखि प्रभातके पंकज लाजिरहे हैं ॥ मंजुलकाननमें मकराकृत कुण्डल यों छबि छाजिरहे हैं । मानोमनोजधस्यो हियमें अरुद्धारनिशान बिराजि रहे हैं १८ ॥

तथा । भाग्य बड़े निरख्यो यह बानिक आजु किहौं बलिजाउँघरीकी । ऐन प्रभालखि लागतिहै कछु मोको तौमैनकि मूरतिफीकी ॥ देखुरी मोहनके उरभाबतिमाल बिराजत गुंजकिनीकी । मनहुँ दिपत कहु बाहर होवहि ज्वाल दवानल अन्तरहीकी १९ ॥

तथा । चलिदेखरी बानिकसोंबनिकै ब्रजराजकोलाड़िलो गावतुहै । मुखचन्द्रकी चारु मरीचनसों बलिनैन चकोर सिरावतुहै ॥ जबडीठिको ओठनको पटको मुसक्यानको रंग मिलावतुहै । तब बांसुरी बांसहरेकी लला सुरचापके रंग दिखावतु है २० ॥

क० । शीतलसमीरजहां गुंजरतभौंरद्रुम झूमझूम रहेभरे फूलनिके भारहैं । चहुँओर नहर की लहरि उठति अति चादर फुहारनसों फरैजल धारहैं ॥ ग्रीषम न जानी परै बरषाकी रुचिधरे तरन करनकैं नेकन सँचारहैं । सघन निकुंजतीर यमुनाके तहांजाय राधा मनमोहनजू करत बिहारहैं २१ ॥

स० । कान्हछली गुरुलोग कहैं सबतापस ह्वै दशकन्ध मल्योरी । बावन ह्वै बलिबांधिलियो सब राज दियो सुरराज भल्योरी ॥ सतटारि जलन्धर की युवती हरणाकुश बालि को गर्ब मल्योरी । मोहिनी ह्वै शिव नाथ छल्यो इनको सजनी छलफैलि फल्योरी २२ ॥

क० । वंशकी न बिसरी सुधि झूठी सौंहैं खायखाय तनआन मनआन कपट निधान हौ । लैलै भाजिजात चीर माखन चोरायखात गारीदेत मुसक्यात निपट अयानहौ ॥ दूरिदूरिदुदकारैदौरिदौरिपायँपरिडारिदई लोकलाज छलनि छलानहौ । बकिबकिको मरै आलीऐसन सों बारबार हित अनहित दोऊ लागत समानहौ २३ ॥

स० । जाकेलये यहगाउँ चबाय में नाउँ धराय कै बात सहीरी । जाकेलये गृहगोकुल छोंड़िकैजायकै कुंजन बैठि अहीरी ॥ जाकेलये पतिकोपरिहास बिलास तज्यो अरु लाज बहीरी । मोहिं मनायरहे बिनती करि ताहरि सों हमरूठि रहीरी २४ ॥

तथा । जाकेलये कुलकानि तजी घरहायनिकी चरचा नहिंमानी । जाकेलये सब गोकुलमें बदनाम भई

मनमानि मलानी ॥ बन्दनदागबनाय कपोलन भोरहि लाल जगावत आनी । कोटि करौ मन योबन दै पर कन्त न आपनहोत सयानी २५ ॥

क० । जटिल जवाहिर के भूषण सरस साजि चली गजगतिरति लालके मिलनबाल । पगपगमगमगकरत मनोरथन डगडग डिग डिग मैनमदमाती बाल ॥ किंकिणी कलित धुनि नूपुरनि रुनझुन घायल करत बजे पायल परतताल । चन्दते चटक प्यारी बदन सलोनताई पीरी परिगई पायो सेज पै न प्यारो लाल २६ ॥

तथा । जाको चित चरण बीच होयलवलीन सदा ताको तौ अपार सिन्धु बात ना तलैयाकी । और हू अनेक भांति पूजन करि सेवतहैं बेद औ पुराण कहे बात है भलैयाकी ॥ रामलाल कहै मुक्तिहोय क्यों न ताकी जिन एकबार लीला सुनी यशुमतिके छैयाकी । ऐसोहै कन्हैया मैं लेतहूं बलैया भलपूतना छलैयासी भेजी गतिमैयाकी २७ ॥

तथा । वारिडारौं शरदइन्दु मुख छबि गुबिन्दपर दिनेशहूंको वारिडारौं नखन छटानपर । कोटिकामवारि डारौं अंग अंग श्यामलखि वारिडारौं अलि आलि कुंचित लटानपर ॥ नैननकी कोरनपै कंजहूंको वारिडारौं वारिडारौं हंसहूंको चाल लटकानपर । देखसखी आज ब्रजराज छबि कहा कहों काम धनुवारिडारौं भृकुटी मटानपर २८ ॥

तथा । नैननसों नैनकोरै बाहुनसों बाहुजोरै बैठेसुख

सेज रस मोदरी करतेहैं। भीजेतन प्रेमरंग रीझे लखि अंग अंग त्रिया मुसकानानि में फूलसे झरतेहैं॥ पीवत हैं अधरस धीरे धीरे दोऊशशि थोरे थोरे बेसरके मोती थहरतेहैं। माधुरी किशोर गोर पावत न सुख और येरी जब दोऊ रसबातन ढरतेहैं २९॥

तथा। धाय धाय नागरी नवेली आई देखिबे को भानकेभवन भई भीर दरशानेकी। छदापै छितेपै छद-रेपै और छज्जनपै गोखनपै दरपै दरीचिनपै आनेकी॥ आंगनमें आयो जब बन्नाबनवारीबनि निरखि प्रताप मुख सुख सरसानेकी। चकीसी झकीसी कोऊलागिटक टकीसी कोऊ चित्रकीलिखीसी भईनारिबरसानेकी ३०॥

तथा। सेवती चमेली बेली मालती निवारी कुन्द खिलरहे फूल खिली चांदनी में चन्दकी। नूपुरसितार बेनु बांसुरी मृदङ्गबाज नाचत गुपालतीर तनया कलि-न्दकी॥ नाचरहे मोर चारोंओर सों प्रतापदेखो फूलनपै नाचरही अवली मलिन्दकी। आगे गतिनाचरही ना-रिकुंजकेसरमें बेसरमें नाचरही मूरति गोबिन्दकी ३१॥

श्रीकृष्णचन्द्रसे प्रेम व स्नेह विषयके कवित्त व सवैया॥

तथा। कवि कमलेशहै अधीन गुनराजानिके क्षितिके अधीन गुणाधीन लेखियतु हैं। क्षितिके अधीनधान धा-नके अधीन प्राण प्राणके अधीन देह सोई पेखियतुहैं॥ देहके अधीन नेह नेहके अधीनगेह गेहकेअधीन नारि

देखो तसवीर नम्बर ७॥

हज़ारा तसवीर नं॰ ७ मुतअल्लिक़े सफ़ा ४८

श्री कृष्ण चन्द्र जी का गोपियों से वार्त्तालाप करना तथा एक गोपी का श्री कृष्ण जी का वस्त्र पकड़ना॰



सो बिशेषियतुहैं। नारिके अधीन भाव भावके अधीन भक्ति भक्तिके अधीन कृष्णचन्द्र देखियतुहैं १॥

तथा। छैल मनमोहनकी छबिमेंछकीहौंछीन एकहू न भूलत लगाई प्रेमडोरी है। भनत ब्रजेश साँचीस-रससुभायभरी चायभरी बृन्दाबन चन्दकी चकोरीहै॥ गोकुलमेंबसत न गोकुलेशं कामकछू गोकुलेशहीकेबश गोपीकी किशोरीहै। गोरीदेह देखि कोऊ गोरी न कहो-गेमोहिं हौंतो सराबोर श्यामरंगही में बोरीहै २॥

स०। याकी निकाई न पाईकहूं तियमैनका मैनकी जाईसीलागै। कानलागेलसै वहनैनतक दैरतबैनसुधा समपागै॥ नादक गीत कलानि प्रबीन लखें तन दी-पतिके तमभागै। ब्योस लगै घर कंच लिपी सोराति ना न्हाई कियोतिनजागै ३॥

क०। घुँघुराने वारवारों मोतिनबिहारवारों मुरली बजाय कछुटोनोंकरिदैगयो। यमुनाकेकूल कालिह मि-ल्योहो अचानकही जानि न परत कछु बात मोसूं कै गयो॥ जबते बिहाल भई डोलै बनबीथिनमें कहैंबल-देव यह मैनबीज बैगयो। सखियांनिगोड़ी हकनाहकब-कावतीहैं नन्दको कुमार हाय मेरो मन लैगयो ४॥

स०। रूपकी रीझन प्रेमपस्यो किधौं रूपकीरीझनि प्रेमसों पागी। मण्डन मैन जग्यो मनसा बसकै मनसा बस मैनकै जागी॥ लाजहिलै कुलकानिभगी किधौंला-जलिये कुलकानहि भागी। नैनलगे वहि मूरतिमाई किधौं वह मूरति नयननि लागी ५॥

हज़ारा।

तथा। तुम नाम लिखावती हौ हमपै हम नाम कहो कहालीजियेजू। अबनावचलै सिगरीजलमें थलमें न चलै कहाकीजियेजू॥ कबिमंचित औसर जोअकती सकतीनहिं हमपर कीजियेजू। हमतौ अपनो बर पूजती हैं सपने नहीं पीपर पूजियेजू ६॥

क०। यमुनातट बंशीवटके निकट कहूं लख्योपीतपट औ मुकुट अतिसोह मैं। उड़िगये भूषण बसनभूख प्यासबास श्वास आस रैनिदिन मिलिबेकी छोहमैं॥ बार बारबरत बियोगकी बिथानबीच भनै शिवदीन परीमनसिजद्रोहमैं। ज्ञानगुणबोरि लाजकुलकानि भानिभानि वादिनते वाको मनमोहिरह्यो मोहमैं ७॥

तथा। पहिलेही जाय मिले गुणमें श्रवण फेर रूप सुधामधि कीनो नैनहू पयानहै। हँसनि नटनि चितवनि मुसुकानि सुघराई रसिकाई मिली मति पय पानहै॥ मोहिमोहि मोहन मईरी मनमेरो भयो हरिचन्द भेद ना परत कछुजानहै। कान्हभये प्राणमय प्रानभयेकान्ह मय हियमें न जानपरै कान्हहै कि प्रानहै ८॥

तथा। करिकै अकेली मोहिं जात प्राणनाथ आवै कौन जानै आय कब फेर दुखहरिहौ। औधको न काम कछू प्यारे घनश्यामबिना आपके न जीहैं हम जोपैइतै धरिहौ॥ हरिचन्द साथनाथ लेनमैंन मोहिं कहा लाभ निजजियमें बतावो सो बिचरिहौ। देहसंग लेलतो टहल हूकरतजातो ऐहौप्राणप्यारे प्राणलाइकहाकरिहौ ६॥

तथा। गुरुजन बरजि रहेरी बहुभांति मोहिं संग

तिनहूंछांड़ि प्रेमरंग राची मैं । त्योंहींबदनामी लई कुलटा कहाईहौं कलङ्किनीहू बनी ऐसी प्रेमलीक खांची मैं ॥ कहैंहरिचन्द सबै छोंड्योप्राणप्यारे काज याते जग भूठ्यो रह्यो एकभई सांची मैं । नेहके बजायबाजछोंड़ि सबलाज आज घूंघुटउघारि ब्रजराजहेतुनाची मैं १० ॥

स० । बाढ़्यो करै दिनही चणहीक्षण कोटि उपायकरौं न बुझाई । दाहत लाज समाज सुखै गुरुकी भयनींद सबै सँगलाई ॥ छीजत देहके साथ में प्राणहु हा हरिचन्द करौंका उपाई । क्योंहू बुझैनहिं आंसूके नीरन लालन कैसी दवारि लगाई ११ ॥

क० । बाजीकरै बंशीध्वनि बाजिबाजिश्रवणन जोरा ज़ोरी मुखछबि चितहि चुरायेलेत । हँसनि हँसावति जगतसों तिहारी मुरि मुरनि पियारी मन सबसों मुराये लेत ॥ हरीचन्द बोलनि चलनि बतरानि पीतपट फहरानि मिलिधीरजामिटायेलेत । जुलफैंतिहारी लाजकुफुलन तोरैं प्राणप्यारे नैन सैन प्राण संगही लगाये लेत १२ ॥

स० । जादिन लाल बजावतबेणु अचानक आयकढ़े ममद्वारे । हौंरहीठाढ़ी अटा अपने लखिकै हँसे मोतन नन्ददुलारे ॥ लाजिकै भाजिगई हरिचन्द हौं भौनके भीतर भीतिकेमारे । ताहीदिनाते चवाइनहू मिलि हाय चवाय के चौचँदवारे १३ ॥

तथा । ब्याकुलही तलफौं बिनुप्रीतम कोऊ तौ नेकदया उरलाओ । प्यासी तजौं तनुरूप सुधा बिनु पानिपपीको

पपीहे पिआओ ॥ जीय में हौस कहूं रहिजात न हा हरिचन्द कोऊ उठि धाओ। आवै न आवै पियारी अरे कोऊ हालतौ जाइकै मेरो सुनाओ १४॥

तथा। मेरीगलीन न आइये लाल यासों सबै तुमहीं लखिजाइहै। प्रेमतो सोई छिप्यो जो रहै प्रकटे रसहू सबभांति नशाइहै॥ आइहौं हौंहीं उतैहरिचन्द मनोरथ आपको कुञ्ज पुराइ है। अंकनबाटमें लाइयेजू कोउ देखि जो लेहै कलंक लगाइहै १५॥

तथा। मारगप्रेमको को समझै हरिचन्द यथारथ होतयथाहै। लाभकछू न पुकारनमें बदनामहीहोनकिसारी कथाहै॥ जानतहै जियमेरो भलीबिधि औरउपाय सबै बिरथा। बावरे हैं ब्रजकेसगरे मोंहिं नाहक पूंछत कौन बिथाहै १६॥

क०। उमड़ि उमड़ि दृगरोवत अधीर भये मुखद्युति पीरीपरी बिरहमहाभरी। हरीचन्दप्रेममाती मनहुं गुलाबीछकी कामझरझांवरीसी द्युतितनुकीकरी॥ प्रेमकारीगरके अनेकरंग देखोयह योगियासजायेबाल बिरिछ तरेखरी। आंखियांमेंसांवरो हियेमेंबसैलालवह बारबार मुखते पुकारत हरीहरी १७॥

तथा। जियमें जो होइ अधिकार तो बिचार कीजे लोक लाज भलोबुरो भले निरधारिये। नयनश्रवणकर पग सबैपरबश भये उतैचलिजातइन्हैंकैसेकैसम्हारिये॥ हरिचन्दभई सब भांतिसों पराईहम इन्हैं ज्ञानकहिकहौ कैसेकै निवारिये। मनमें रहै जो ताही दीजिये बिसारि

मन आये बसैयामें वाहि कैसेकै बिसारिये १८ ॥

स० । होते न लालइतोर इते जोपै होते कहूं तुमहूं बरसानियां । गोकुल गांवके लोगकठोर करैं छतहीय में मारि निसानियां ॥ यों तरसावतहौ अबलागण को मुखदेखिबेको दधिदानियां । दीनता की हमरे तुम्हरे निरदैयनहूं की चलैगी कहानियां १९ ॥

तथा । दीनदयालु कहाइकै धाइकै दीननसौं क्यों सनेह बढ़ायो । त्योंहरिचन्दजू वेदन में करुणानिधि नाम कहो क्योंगँवायो ॥ एतीरुखाइ न चाहियेतापै कृपा करिकै जेहिको अपनायो । ऐसोही जोपै स्वभावरह्यो तो गरीबनेवाज क्यों नाम धरायो २० ॥

तथा । पियप्यारे बिना यह माधुरीमूरति औरनको अबपेखियेका । सुखछांड़िकै संगमकोतुम्हरे इनलच्छन को अबलेखियेका ॥ हरिचन्दजू हीरनको ब्यवहार कै कांचनकोलै परेखियेका । इनआंखिनमें तुवरूप बस्यो उनआंखिनसों अब देखियेका २१ ॥

तथा । आयोसनेजुरिकै ब्रजगांवको देखनको जे रहैं अकुलातहैं । चार चवाइनै लै दुरबीनन धाओ न आज तमाशे लखातहैं ॥ सास जेठानी सखी सँगकी हरिचन्द करौ मिलि भेदकि बातहैं । घूंघुट टारि निवारिभये पियको हम आजु निहारन जातहैं २२ ॥

तथा । एकही गांवमें बास सदा घर पासइहौ नहिं जानती हैं । पुनि पांचयें सातयें आवत जात कि आसनचित्तमें आनती हैं ॥ हम कौनउपायकरैं इनको हरिचन्द

महाहठ ठानतीहैं । पिय प्यारे तिहारे निहारे बिना अँखियां दुखियां नहिं मानतीहैं २३ ॥

तथा । यह संग में लागिये डोलैसदा बिन देखे न धीरज आनतीहैं । छिनहूं जो बियोग परै हरिचन्द तौ चालप्रलैकि सुठानतीहैं ॥ बरुनीमें थिरैं न झपैंउझपैं पलमें न समाइबो जानतीहैं । पियप्यारे तिहारे निहारे बिना अँखियां दुखियां नहिं मानतीहैं २४ ॥

तथा । व्यापकब्रह्म सबै थल पूरण हैं हमहूं पहिचानतीहैं । पैबिना नँदलाल बिहाल सदा हरिचन्द न ज्ञानहिं ठानतीहैं ॥ तुम ऊधोयहै कहियो उनसों हम और कछू नहिं जानतीहैं । पियप्यारे तिहारे निहारे बिना अँखियां दुखियां नहिं मानतीहैं २५ ॥

तथा । जिनको लरिकाईसों संगकियो अब सोऊ न साथहि साजतीहैं । हरिचन्दजू जानिहमैं बदनाम चवावघने उपराजतीहैं ॥ हमहाय कलङ्किनि ऐसी भई सखियां लखिकै मोहिं भाजतीहैं । निशिबासर संगमैं जे रहतीं मुखबोलिबेसों अबलाजतीहैं २६ ॥

तथा । पहिले बहुभांति भरोसोदियो अबहीं हम लाइमिलावतीहैं । हरिचन्द भरोसेरही उनके सखियां जे हमारी कहावतीहैं ॥ अबवोई जुदाह्वैरहीं हमसों उलटो मिलिकै समुझावतीहैं । पहिलेतो लगाइकै आगअरी जलको अब आपुहि धावतीहैं २७ ॥

तथा । लै मन फेरिबो जानो नहीं बलि नेहनिबाह कियो नहिंआवत । हेरिकै फेरिमुखैहरिचन्दजू देखनहू

को हमें तरसावत ॥ प्रीतिपपीहनको घनसांवरे पानि-
पक्षन क्यों न पिआवत। जानो न नेकबिथापरकी वलि-
हारी तऊ हौ सुजान कहावत २८ ॥

क० । आई गुरुलोगसंग न्योते ब्रजगांवनई फूल
हीं सुहाई शोभा अंगन सनीरही । पूछेमनमोहन बतायो
सखियन यह सोई राधाप्यारी वृषभानुकी जनीरही ॥
हरिचन्द पासजाय प्यारे ललचायो दीठ लाज की
धँसी सो मानो हीर की अनीरही । देखो अनदेखो
देखो आधोमुख हाय तऊ आधो मुखदेखबेकी हौसही
बनीरही २९ ॥

तथा । भूलीसी भ्रमीसी चकी जकीसी थकीसी
गोपी दुखीसी रहत कछू नाहीं सुधिदेहकी । मोहीसों
लुभाई कछु मोदकसों खायसदा बिसरीसी रहौं नेक
खबर न गेहकी ॥ रिसभरी रहै कबौं फूली ना समाति
अंग हँसिहँसि कहैबात अधिकउमेहकी । पूछेतेखिसा-
नी होय उत्तर न आवेतोहिं जानीहम जानीहै निशानी
या सनेहकी ३० ॥

स० । कहो कौन मिलाप कि बातैं कहै कहि औरन
कोतो कछू न पतीजिये । चितचाहैजहां बसियेमिलिये
न कभू जिय आवै सुईसुईकीजिये ॥ अबप्राण चलेचहैं
तासोंकहैं हरिचन्दकीसो बिनती सुनिलीजिये । भरिनैन
हमें इकबेरहूतो अपनो मुखमोहन जोहनदीजिये ३१ ॥

क० । इतउत जगमें दिवानीसी फिरतरही कौन
बदनामि जौन शिरपैलईनहीं । त्रासगुरुलोगनकी आ-

सकैअनेक सही कबबहुभांतिनके तापसोंतईनहीं ॥ हरि-चन्द गिरि बन कुंज जहांजहां सुन्यो तहांतहां कबउठि धाइके गईनहीं। होनी अनहोनीकीनी सबही तिहारे हेतु तऊ प्राणप्यारेभेंट तुमसों भईनहीं ३२ ॥

तथा। एकबेर नैनभरि देखैं जाहि मोहैतौन माच्यो ब्रजगांव ठांवठांवमें कहरहै। संगलगीडोलैं कोऊघर हीकराहैंपरी छूट्यो खानपान रैन चैनबनघरहै ॥ हरीच-न्द जहांसुनौ तहां चरचाहै यही एक प्रेमडोर नाच्यो सगरो शहरहै। यामें ना सँदेह कछू देया हौं पुकारेकहौं मैयाकीसौं मैयारी कन्हैया जादूगरहै ३३ ॥

तथा। जौनगली काढ़ौ तहांमोहै नरनारी सब भीर-न के मारे बन्द होइजात राहहै। जकीसी थकीसी सबै इतउत ठाढ़ीरहैं घायलसी घूमैं केतीकियेजिय चाहहै ॥ हरीचन्द जासों जोईकहौ तौन सोईकरै बरवसतजे सब पतिब्रत राहहै। यामें ना सँदेह कछू सहजहिमोहैमन सांवरो सलोना जानै टोना खामखाहहै ३४ ॥

स०। रूपदिखाइकै मोललियो मन बालगुड़ी बहु रंगनजोरी। चाहत मांझोदियो हरिचन्दजू लैअपनो गुनकी रसडोरी ॥ फेरिकै नैनपरे तनुपै बदनामीकी तापैलगाईपुछोरी। प्रीतिकीचंग उमंगचढ़ायकै सोहरि हाय बढ़ायकै तोरी ३५ ॥

तथा। कौनकहै इतआइये लालन पावसमें तो दया उरलीजिये। कोहमहैं कहाजोर हमारो है क्योंहरिचन्द बृथाहठकीजिये ॥ जो जियमें रुचे भेंटिये ताहि दया

करिकै तेहिको सुख दीजिये। कोरिही कोरी भली हम हैं पिय भीजियेजू उनके रस भीजिये ३६॥

क०। खोरि सांकरी में आजु छिपिकै निहारीलाल तरुपै बिराजे छल जिय अति कीनो है। ग्वालबाल साथ केहू इतउत घाटिन में छिप हरिचन्द दानहेतु चित दीनोहै॥ ताहीसमै गोपिन बिलोकि कूदिधाय सब ऊधम मचायो दूधदधि घृतछीनोहै। दहीजो गिरायो सोतो फेरहूजमायलेहैं मनकहांपैहैंदानमिसजौनलीनोहै ३७॥

स०। लाज समाज निवारिसबै प्रणप्रेमको प्यारे पसारन दीजिये। जानन दीजिये लोगनको कुलटाकहि मोहिंपुकारन दीजिये॥ त्यों हरिचन्द सबै भयटारिकै लालन घूंघुट टारनदीजिये। छांड़िसकोचन चन्दमुखै भरिलोचन आजु निहारन दीजिये ३८॥

तथा। धारनदीजिये धीर हिये कुलकानि को आजु बिगारन दीजिये। मारन दीजिये लाज सबै हरिचन्द कलङ्क पसारन दीजिये॥ चार चवाइन सों चहुँ ओर सो शोर मचाइ पुकारन दीजिये। छांड़ि सकोचन चन्द मुखै भरिलोचन आजु निहारन दीजिये ३९॥

क०। पूरण पियूष प्रेम आसव छकी हो रोम रोम रसभीन्यो सुधिभूली गेहगातकी। लोक परलोकछोड़ि लाजसों बदन मोड़ि उघरि नचीहौं तजिसंग तातमातकी॥ हरीचन्द येतहूपै दरश दिखावै क्यों न तरसत रैनिदिना प्यासे मान पातकी। एरेब्रजचन्द तेरेमुखकी चकोरिहूमें एरेघनश्याम तेरे रूपकीहौं चातकी ४०॥

तथा। छांड़ि कुलबेद तेरी चेरीभई चाहभरी गुरुजनपरिजन लोकलाज नासीहौं। चातकी तृषित तुव रूप सुधाहेतुनित पलपलदुसह बियोग दुखगासीहौं॥ हरीचन्द एक ब्रतनेम प्रेमहीको लीबै रूपकी तिहारे ब्रज भूप हौं उपासीहौं। ज्यायलेरे प्राणन बचायले लगाय कण्ठ एरे नंदलाल तेरी मोललई दासीहौं ४१॥

तथा। तरसतश्रवणबिनासुने मीठे बैनतेरे क्यों न तिन माहिं सुधाबचनसुनाइजाय। तेरेबिनमिलेभई झांझरी सी देहमान राखिलेरे मेरोधाइ कण्ठ लपटाइजाय॥ हरीचन्द बहुत भई न सहिजाय अब हाहा निरमोही मेरे प्राणन बचाइजाय। प्रीतिनिरबाहि दया जियमें बसाय एरे एरे निर्दयी नेकु दरशदिखाइजाय ४२॥

तथा। दौरिउठिप्यारी गरलावै गिरिधारी किन ऐसे पियहूंसों किनबोलै कल बादिनी। देखु हरिचन्द ठीक दुपहर तेरेहेतु आयोचलिदूरसों पियारोरी प्रमादिनी॥ तेरेगृह चलत न दुखसुख जानिगिन्यो शीतल बनाउ ताहि सुरति सवादिनी। मखमल भूमलभो लूहभई सोरी पास दूरी भई तेरे यह धूपभई चांदिनी ४३॥

स०। परीरहैं बैर परोसिनैंपै नँनदी उरशालसि सालहिरी। बस बास बुरो ब्रजको सजनी हठिक्योंलखिये सुखजालहिरी॥ बड़ी आंखिन मोरकी पांखिनको तूमिलावबहै प्रतिपालहिरी। अबमेटौ बियोग बिथा तनुकी भरिकै भुजभेंटौ गोपालहिरी ४४॥

क०। गईधौं कहांते कालिन्दी के कूल फूलखेन दूल

सी लगतिनाहिं छविउतरति है। मूरति अनूप एकआ-
यकै अचानकमें चानकलगाय अजों हियको हरति है॥
जुलुफ में कुलुफ करीहै मति मेरी छलि येरी अलिकहा
करों कल ना परतिहै। जबजब वाकी करों सुधिबुधि
दीनद्याल तब तब मेरी सब सुधि बिसरतिहै ४५॥
तथा। कालिन्दीके कूलगई फूल लेन तहांएक छैल
लखि मेरीमति धीरज न धारती। एंड़िनको देखि दबि
जाति कलारविकीहै किमिकैसो दीनद्याल भनै कविभा-
रती॥ कहूं मैं कहांलौं मनु शोभा तिहूंलोकनकी आनि
आनिताकी सब आरतीउतारती। तूरति न बनैकलीमोहि
सुनिअलीरही मूरतिसी ठाढ़ी वह सूरतिनिहारती ४६॥
स०। मुरिकै मुसुकानि लख्यो जबते ममतो तबते
कुलकानि नसी। कछु भावतहै नहिं ताहीबिना वहरैनि
दिना द्युति आनि बसी॥ गति प्रीतिकी जानत कोउ
नहीं सबलोगकरैं उतपात हँसी। वह लालन कुन्तलजा-
लनमें मति मो हरिनी अब जाय फँसी ४७॥
क०। जा दिनते दुहीगाय मेरीधूमरीको मोहिं धूम-
रीसी आवै नहिं रह्योजायघरमें। वादिनते उठत चवा-
इनके उतपात सगरी सिहात बात वगरी बगर में॥ कहूं
कहाहाल या बिहाल अब अपनो मैं ढूंढ़ति गुपाल को
फिरतिहौं डगरमें। दोहनी हमारीदे हमारेकरमाहँप्यारी
लैगयो मुरारी मनमेरो करि करमें ४८॥
तथा। आज मैं निहारे कारेकान्हको सुपनबीच उ-
ठिकै सकारे यमुनापै जलकोगई। तबहींते दीनद्याल ह्वै

रही मनीरबाल येरी भटूमेरीभटभेरी मगमेंभई ॥ नन्द नन्दमोतन बिलोकि मन्दमन्दकह्यो येरीचन्दमुखीआइ किततैंइतैनई । कल न परति आली ललनलख्यो न भले चलनसमयमें चलमलन दगादई ४९ ॥

तथा । कहाकहौंहेली मैं अकेलीगई कुंजगैल फूली ही चमेली छैलतहां बेणुटेरोरी । पीतपटधेरैं हरेंहरें आयगैरें गह्यो मोतिनकी लरी लखि कुंजकैरें फेरोरी ॥ कटिको लचायके नचाय भौंह नैननको सैननसों कियो चित्तचंचलकोचेरोरी । कुंजकी गली में अली औचकसों आय छली चुनतिकलीहीं चुनिलियो मनमेरोरी ५० ॥

तथा । पीतपटकसी बसी श्यामकी सुरतिलसी तौलौं कुलफांसनसिगास को सहति है । आनै नहिं नेक एक प्रीतिकी परीहै टेक करिकै अनेककला लज्ञाको चहति है ॥ कबधौंमिलैगो वहसांवरो कुँवरमोहिं लाख लाखयहै अभिलाषको गहतिहै । खिरकीके माहिंखरी हिरकी हरीक्यों हेरै घरीघरी फिरकीलौं थिरकीरहतिहै ५१ ॥

स० । सुन्दर गोल कपोलनपै अनमोलसो कुण्डल डोलनिप्यारी । हीहलकैं द्युति मोहनकी झलकैं सुथरी अलकैं घुंघुरारी ॥ वामुसुकानि बिलोकतही कुलकानि सबैतजि होत बिदारी । लागि जो जाहिं तो कीजै कहा सखि ये अंखियां रिझवारि हमारी ५२ ॥

तथा । हैअतिभीति चवायनकी हँसिहै अरि पापिनि दै करतारी । लाजगही ब्रजराज बिलोकत आजलौं मैं कुलकानि सँभारी ॥ आवतजात सदा यहिगैल सुछैल

छबीलनि कुंजबिहारी। लागि जो जाहिं तो कीजै कहा सखि ये अँखियां रिझवारि हमारी ५३॥

तथा। देति सदा सिख तू सजनी अरु मैंहूं बिचारति हौंहितकारी। मानकिये गुणमानकहैं सनमान बढ़ै फिरिह्वै हितभारी॥ मोहनी मूरति मोहनकी अवलोकत लोक रिझावनिहारी। लागि जो जाहिं तो कीजै कहा सखि ये अँखियां रिझवारि हमारी ५४॥

तथा। लीनरहैं नितरूप पयोनिधि मीनकहैं कबि बुद्धि बिचारी। दीन अधीन रहैं नितही बिनु देखत तोष लहैं न सदारी॥ बानिपरी प्रियपेखनकी कुलकानि बिसारि दई इनसारी। लागि जो जाहिं तो कीजैकहा सखि ये अँखियां रिझवारि हमारी ५५॥

क०। तूहैश्यामा वेहैंश्याम दोऊछबि अभिराम आठौयाम घनश्याम नामब्रत लायो है। छकी है छबीलेके रसीले प्रेमछाकनिसों चोरि चिततेरो मोरनहीं उनदयो है॥ छपैहै क्षपाकर छपाये कहुंकरओट मुकुरैरी कहाजोट तेरो भलोभयो है। प्यारो बलभैया बनवेणुको बजैया आय अबहीं कन्हैया तेरी गैया दुहिगयोहै ५६॥

स०। भोगबिलासनमें जो सदा रहीं आयतिन्हैं तुम योग सिखावत। देहसुरङ्गनपै सजिबेकहँ कैसेकुरङ्गकी छालबतावत॥ त्यों भुवनेश अनोखी अनोखी सुबातैं बनाय कहा फलपावत। योग अयोग बिचारिसकौ नहिं ऊधो कैसे प्रबीण कहावत ५७॥

तथा। हमजानती की न निबाहहिंगे तब प्रेमकेफन्द

में क्योंपरती। भुवनेशजू त्योंबदनामीइती अपनेशिरपै हम क्यों धरती॥ उनकी करतूतिनको लखिकै अबका-है उसासन को भरती। सखियान के संग निशङ्कभई ब्रजबीथिन माहिं खेलाकरती ५८॥

तथा। तबतोमुखचन्दते मोहिलियो इनचित्तचकोरन शोभसने। भुवनेश त्यों प्रीतिकी रीतिबढ़ाय न अन्तर राख्यो कछूसपने॥ भयो काह न जानिपरै अबधौं निठुराई गही इतनी तुमनें। दिन रैनि नचावतहौ हमको बसे देशमें हौ पै विदेशीबने ५९॥

तथा। ह्वैह्वैउठैयह प्राणविहीन घरीघरीरावरीछोहन में। नयनचढ़े भुवनेशरहैं नितही सिगरीमगजोहनमें॥ सांसरहीचलिआसनसों सबैसांचीकहौमनमोहनमें। राखिबो चाहि चहोजगमें तो चलोहमरे अब गोहनमें ६०॥

तथा। राजत कुञ्जगलीन में श्याम बिराजति बाम दरीचिकाऊपर। दीठिचकोरसी श्यामके नयनकी चन्द्रमुखी पै लगी तेहि अवसर॥ प्रेमपगी झझकी भुवनेश गिरीबेंदी बेनीसों योंपगकेतर। मानहु कारो भुजङ्ग महा टपकायदियो मणि एक जमींपर ६१॥

तथा। ब्रजराज के काज सँवारति सुन्दरि मांगन मोतिन आनभरी। रचि बिन्द गुलालको बालके भाल गरेमें लसै मुकुतानिलरी॥ भुवनेश सुकौन छटा बरणै पहिराईजुहै चुनिकै चुनरी। मनुइन्द्रबधूनकी बृन्दअनन्दित हेमलतापर हैं छहरी ६२॥

तथा। इन्द्रबधूनकी बृन्दनसों बिथुरी महिमें मणि

लालपत्यारी। त्योंभुवनेश झिल्ली झनकारसों नूपुरकी ध्वनिहै अतिप्यारी॥ घोर घटाघन औ क्षण जोन्हसी सारीसजी जरतारीकिनारी। याविधि पावसकी सुषमा लहि प्यारी चली मिलिबे गिरिधारी ६३॥

तथा। हमसों अब बूझति काह अहो अपनी करतूति कहाकरोरी। भुवनेशजू भाग्यमें मेरेयही अनयासही दुःख सदासहौंरी॥ करि प्रीतम प्राण सोमान अहो अफ़सोसमें हाय नितै रहौंरी। करती कछु ऐसी उपाय अली मिलतें वे यही अब मैं चहौंरी ६४॥

तथा। आजु गईती बिलोकिबेको कलकुञ्जन में बलिकुञ्जबिहारी। ताहितहां न मिलेभुवनेश तबै गहि बैठी कदम्बकी डारी॥ बेदन ऐसो बढ़ो तनमें क्षणमें गईच्वैसी न जाति निहारी। कैसेगहै गृहकी अब गैल गई वह काम के बाननि मारी ६५॥

तथा। जब बोलतहैं वै दयाकरिकैं चुपकैसेरहैं मन जातहरो। उनसों मिलिकै अभिलाष सबै तुम्हैं रोकत को किन पूरीकरो॥ भुवनेशजूलाभ कहायहीमें हमसों जुपै नाहकही झगरो। बिधिभालमें जोई लिखी सोई होत अहो इन बातनमें न परो ६६॥

क०। चन्दतें दुचन्द मुखचन्दकी चमाकै रुचि चन्दमौलिचित्तह्वै चकोररह्यो फँसिकै। चोरि लेत चेतचष चञ्चलचितौनिचारु रहीदीनचाल बनमालगरेलसिकै॥ केशरललाटदिये गातको त्रिभङ्गकिये रहो हिये मेरेयह बानक सों वसिकै। आनँद के कन्द ब्रजचन्द नन्द

नन्द नेक मेरीओर देखिये जू मन्दमन्द हँसिकै ६७॥

स०। हौं नहिं जैहौं अली घर नन्द के फन्द करै बहु नन्दलला है। मन्दहिमन्द सुहांसहिको लखि मन्द भयो शुभ सोमकलाहै॥ कासों कहौं भुवनेश सबैदुख यों ब्रजचन्दमें चवचन्दचलाहै। चाइचवाइनै कीवो करैं उनको मुखबन्द न एकपलाहै ६८॥

क०। आली आजु राग अनुराग से निकारे हम तौलौं ब्रजराजआ अवाजको बिगारिगो। पीतपटकटि कर लकुटी सोहावनहै भृकुटी कुटिल कजनैनन निहारिगो॥ तात्तणते भूलत भुलावै ना दिवाकरजू मेरोरोम रोम हाय प्रेमदीप बारिगो। फेरि फेरि आनन अधर मुसुकायकर मीठेमीठेबैनन पियूषरस भारिगो ६९॥

तथा। डारैकहूं मथनि बिसारैकहूं घीको भांड़। विकलबिगारै कहूं माखन मठामही। भ्रमि भ्रमि पावति चहूंघाते तु याहीमग प्रेमपायपूरके प्रबाहन मनोबही॥ झुरसिगई धौं कहूं काहूकी बियोगभार बारबार विकल बिसूरति जहीतही। येहोब्रजराज एकग्वालिनी कहूंकी आज भोरहींते द्वारपै पुकारति दहीदही ७०॥

तथा। वृन्दाबनकुंजनमें बंशीबटछांह आसि कौतुक अनोखो एक आज लखिआईमैं। लागोहुतो हाटएक मदन धनीकोतहां गोपिनकोवृन्दरहो झूमि चहुंघाईमें और द्विजदेवसौदाकी न रीतिकछू भाषीजाय ह्वैरही जुनैनउन मदकी देखाईमें। लैलै कछूरूप मनमोहनसों बीर वे अहीरनै गँवारीदेह हीरन बटाईमैं ७१॥

स०। होतेरहे नवअंकुर की छबि छांह कछारनमें अनिआरी। त्योंद्विजदेव कदम्बन गुच्छन येईनये उनयेसुखकारी॥ कीजिये बेगिसनाथइन्हें चलिये वनकुंजनकुंजबिहारी। पावसकालके मेघ नये नवनेह नई बृषभानुकुमारी ७२॥

क०। बूझेहू न सूझत सुघाट बाट जलथलबिनशी सकल मरयादा सब ठामकी। द्विजदेव देहरी के बाहर धरतपग फेरि सुधिकरत न धामकी न ग्रामकी॥ बूड़ति अथाहे कुलधरम निबाहेकौन बावरीबिलोकि यह भूकनि सुदामकी। पावसअँध्यारी हुती ऐसिये डरातीतापै आठौयाम रसबरषनि घनश्यामकी ७३॥

तथा। आवतचलीही यह बिषमबयारिदेखु दबे दबे पाँयन किवारन लरजिदे। कैलिया कलंकिनीको देरी समभाय मधुमाती मधुपालिन कुचालिन तरजिदे॥ आजब्रजरानीके बियोगकोदिवसताते हरेहरेकीर बकबादिनहरजिदे। पीपीकै पुकारिबेकी खोलैं ज्योंनजीहन त्यों बावरी पपीहनके जूहन बरजिदे ७४॥

स०। बहुऊपरहै खिरकीके खड़ो झुकिझूमतहैगुण संग सटापटि। करलीने पतंग उड़ावतहैं मनमेरेकोगेतसों देतझटापटि॥ शिरसोहत मोरकिरीटमनोहर हेरतप्रेमकी होत पटापटि। जबते लख्यो सांवरो नन्दकुमार लगी तबते कछु चित्त चटापटि ७५॥

तथा। कोऊभलोकहो कोऊबुरोकहो कोऊभुकैकिन्न रोषके आये। आवतहाथ कहा कबिराज जो पच्चिनके

कहोपीछेकोधाये ॥ कोकरिकैअफसोसमरै बिधिको जो लिखो सो मिटै न मिटाये। होतउदास सदासजनी सुनु बासुत्र्यो प्रीति छिपै न छिपाये ७६ ॥

क०। नैनजैसे सलिलचाहैं सलिलजैसे बिमलचाहैं बिमलजैसे कमलचाहैं सीताज्यों रामको। पावस ज्यों पपीहा चाहै बहिन ज्यों भैया चाहै राधा ज्यों कन्हैया चाहै परदेशी धामको॥ घन जैसे मोरचाहै चन्द्र ज्यों चकोर चाहै चकईज्यों भोर चाहै कामिनी ज्यों कामको। सुख जैसे तन चाहै शूर जैसे रनचाहै वैसे मेरा मनचाहै प्यारेतेरे नामको ७७॥

स०। आजगईती कलिन्दजापै लखि कुंजलतान कलोलतही बन्यो। ठढ़ीहोय त्यों श्रमसीकरते कछु भीगे तिचोलनिचोलतही बन्यो॥ आयगये मधुराय तहीं द्विजदेव गुमानसों डोलतही बन्यो। कोटिउपायकै तिहिकालपै आली गोपालसों बो तही बन्यो ७८।

क०। चाकेसंगहीते राते कंजछबि छीने माते झुकि झुकि झूमि झूमि काहुको कछू गनैन। द्विजदेवकीसों ऐसी बनक बनाय बहुभांतिनबि।रैं चितचाहन चहूंघा चैन॥ पेखिपरे प्रात जोपै गातन उछाहभरे बारबार तातेतुम्हैं बूझती कछूक बैन। येहो ब्रजराज मेरे प्रेमधन लूटिबेकोबीराखाय आयकितै आपकेअनोखेनैन ७९।

तथा। आजबरसानेकी नवेलीअलबेलीबनी पावन चरित्र बलिबलि वन तयारीमैं। लौलै कर लेवनि लगावन लगीहैंरंग आनँद उमंगते सखीहू न्यारी न्यारीमैं॥ताही

समय बाँसुरीसुनाई कहूंकान्हैं टेरि द्विजदेवकीसों या अनन्द अधिकारीमें चित्रलिखिबेकोकौलनरचाचलावै जब चित्रकी लिखी सो भई सारी चित्रसारीमें ८० ॥

तथा। आजबरसानेकीनबेलीअलबेलीबधूमोहनविलोकिबेकोलाजकाजलैरही। छज्जाछज्जाझांकती झरोखनिझरोखनिह्वै चित्रसारीचित्रसारी चन्द्रसम ह्वै रही॥ कहैपद्माकर त्यों निकस्यो गोबिन्दताहि जहां तहांइकटकताकिथरी ह्वैरही। छज्जावारीछकीसीउझकीसी झरोखावारी चित्रकीसी लिखी चित्रसारीवारी ह्वैरही ८१ ॥

तथा। सांझही शृंगारसाजि प्राणप्यारे पासजाति बनितावनकबनी बेलसी अनन्दकी। कबिमतिरामकल किंकिणिकी ध्वनिसुनि बाजे मन्दमन्द चालत्यों बिराजत गयन्दकी॥ केसरिमें रँगिये दुकूल हांसीमेंझरत फूल केशनमें छायछबि फूलनके बृन्दकी। पीछेपीछे आवत अँध्यारीसी भँवरभीर आगे आगे फैलत उज्यारी मुख चन्दकी ८२ ॥

तथा। ध्यावौं घनश्यामको लगावौं मति चातकसी नामकी रटनितजि और कछू ठानोना। लोकपरलोक को बहाओं प्रेमसिन्धुआज लाजके जहाजको बुड़ाओं आनि आनोना॥ गाओं गुण लालको रिझाओं मन दीनद्याल और जगजालजीव यशको बखानोना। हौंतो भईदासीब्रजवासी बलबीरजूकी करौंकोटि हांसी उपहासीतऊमानोना ८३ ॥

तथा। ऊधो बसुधामें सुधालहरी ललाकी बानी

मैन कलाधारी कहि प्यारी कब बोलिहैं। मन्दमुसुकानि चारु चन्दमुखकी मरीचि फैलि चित कैरव कपाट कब खोलिहैं॥ लागिरही प्यास ब्रजजीवनकी आशहमें कबधौं बिलासयुत रासमें कलोलिहैं। कुञ्जबन माहीं ये कदम्बन की छाहीं छैल मेलिगलबाहीं कब मन्दमन्द डोलिहैं ८४॥

तथा। गेरेगुञ्जमाल धरे खरेह्वै तमालतरे लाल कब फूलनकी माल पहिराय हैं। ललित लताकी सेज पल्लव मई सुनई आपने करनि कब कुञ्ज में बिछाय हैं॥ धरा-धर धारी अतिप्यारी अधरानधर कबधौं मधुर ध्वनि बांसुरी बजाय हैं। यशुदादुलारे प्राणप्यारे नन्दवारे कब मिलिकै हमारे सों मधुरस्वर गाय हैं ८५॥

तथा। कल न परति कहूं ऊधो इनगैयनको कबधौं ललन धौरी धूमरी पुकारि हैं। पूरिहैं श्रवण कब सुधा निज बैननिसों कब वह छबि हम नैननि निहारि हैं॥ बूड़िबोचहत ब्रज राधाहगधारते कबधौं धराधर करज पर धारिहैं। मारिहैंअघासुर बिदारि हैं बकाको कब बेणु को बजाय कुञ्जबनमें बिहारिहैं ८६॥

तथा। ऊधोचित्तचोर नन्दकेकिशोर भोरसमय नय-नकोरकी मरोर चितै कब जागिहैं। लाखनउपायप्रिय पूरि अभिलाषनको माखन चुराय कब नन्दभवन भागि हैं॥ दानकी गली में बृषभानकीललीपै पागि मांगि दही दान कब कान्ह अनुरागिहैं। लैहैं हमछीन बीन दीन ब-न्धुनाथनते होयकैअधीन कब दीनतासों मांगिहैं ८७॥

स०। भामिनि कोनहिं भोजनकीसुधि वावरीसीभई भौनमें डोलै। मीतकीप्रीतिमेंमातीरहैनित कामिनिनेक न काहू सों वोलै॥ बातैंपिया मनमोहनके हितकी चित तेनहिं कैसेहुखोलै। नन्दकुमारके सुन्दररूपसों बाल विकाइ गई बिनमोलै ८८॥

क०। कोऊकहौ कुलटाकुलीन अकुलीन कहौ कोऊ कहौ अङ्क न कलङ्किनी कुनारीहौं। कैसेसुरलोक नर-लोक परलोक सब कोनमें अलोक लोक लाकनते न्यारीहौं॥ तन जाहु मनजाहु देवगुरु जन जाहु जीभ क्योंन जाहु टेक टरत न टारीहौं। बृन्दाबनवारी गिरिधारी के मुकुटपर पीतपटवारेकी मैं मूरतिपै वारीहौं ८९॥

तथा। मुकुटके रङ्गनिपै इन्द्रको धनुषवारों अमल कमलवारों लोचन विशाल पर। कुंडल प्रभापै कोटि प्रभाकर वारिडारौं कोटिक मदनवारों बदनरसालपर॥ तनुके तरणपर नीरदसजलवारौं चपलाचमक मनमो-हनकी मालपर। चालपै मरालवारों मनपर मन वारों और कहा कहा वारिडारों नन्दलाल पर ९०॥

स०। नाइनको पिय वेषकियो ठाकुराइन पायँनजा-वकलायो। सारी उतारिधरी उबटैबेको कंचुकीको हरि हाथचलायो॥ चौंकिचितै अवलोकि रही पतिकोपहिं-चानिकै शीशनवायो। मेरेलिये इतनीकरि मोहन हाइ अली गहि कण्ठ लगायो ९१॥

तथा। सुन्दरमूरतिमोहनकी मनमोहनके हियमेंहिर कीसी। देव गोपालको बोलसुने छतियां भरि आई

सुधा छिरकीसी॥ ऊंची अटानहिं बोलिसकै अरुनयनन लाज घट घिर कीसी। पूरण प्रीतिमई हरिकी खिरकी त्रितकी त्रह फिरै फिरकीसी ९२॥

क०। नेहभरे नयननकी जबते नज़र मिली तबहीं ते चित्तकीतो लग्यो अतिचावहै। मिलत मिलत मन हिलमिल एकभयो परयो प्रेमफन्दको अनोखो उरझावहै॥ कहि न सकत तेरो हियो निरमोहीअतिमेरोहियो गह्यो कछु ऐसोई स्वभावहै। तेरे अनआय मनआवै रहतमोहिं ते आये आय जात प्यारीतनु आव है ९३॥

तथा। जाको नाम नेक कहुं धोखेहुं कढ़त अन्त आवत न यमदूत सपने निकटरे। पावतसो मुक्ति जाहि याचत नित योगीजन छूटि जात बेगिभव शृङ्खला विकटरे॥ सोई ये अनन्दकन्द नन्दकुमार प्यारे ताहिके हमेश चारु चरणन लिपटरे। येरे परताप कोटिभ्रम को किंवारटारि बारबार कृष्णकृष्ण राधाकृष्णरटरे ९४॥

तथा। अली तमाल अवताल की बिशाल सोहैं शाखौं सघन छबिछाये ये उतंगहैं। श्रेणिन अनेक द्रुम दाड़िम कदम्ब फूले फैलत सुगन्धबर दरशात सुरंगहैं॥ वृन्दाबन बाम अतिअद्भुत विलास छायो चहुं दिशिप्रत प्रफुल कूजन कुरंगहैं। यमुना के कूल औ कदम्बनकीडारनपै राधाकृष्ण राधाकृष्णरटतबिहंगहैं ९५॥

तथा। स्वर्णके सँवारे सोपान छैपान सोहैं उठत अनूप कल तरल तरंगहैं। किलकत कलोल चहुं ओर

चकवा मरालमाते श्रेणीसरोजतारे गुञ्जत सुभृंगहैं ॥ छिनमें अकूत केले जन्तु जड़ जंगम सब पातप्रताप जाके परसत परसंगहैं। यमुनाके कूल श्री कदम्बन की डारनपै राधाकृष्ण राधाकृष्ण टेरत बिहंगहैं १६ ॥

तथा। कानन करोरकुल कोकिल कपोल छाय रंग रंग प्रताप जाके चमकत अंगहैं। लालपरचंगुलस-नोगमुखलालसोहै शोभा निरेसचितलजित अनंगहैं ॥ छहन निवासलै शीतल जलपानकर राते दृगानकरि करि तकि तकि तंगहैं। यमुनाके कूल श्री कदम्बन की डारनपै राधाकृष्ण राधाकृष्ण टेरत बिहंगहैं १७ ॥

तथा। तीर नीर नूतन कदम्बनकी सहाभरि भूमि झूमि शाखारहे यमुना के अंगहैं। बल्लरीनबेलीफूल झूलरही झालरसी भृङ्गमतवारे तपै गुंजतउमंगहैं ॥ भनत प्रताप चहुं नृत्यत मुदित मोर त्रिविध समीर डोलैं तरलतरंगहैं। यमुना के कूल श्री कदम्बन की डारनपै राधाकृष्ण राधाकृष्ण टेरत बिहंगहैं १८ ॥

तथा। कुंडल बिलोल कुलकानन कनकराजै केसरि को तिलक भाल भृकुटी बिशालकी। कुन्दन किरीट तामें मोरके पखान खोंसे झूमत चलत मन्दगतिसों मरालकी। चितवनि तिरछी तीर तीक्षणत्र्यंग कैसे बिहँसतमें आली जात लाली है गुलालकी। कैसेहूंबिसा-रेनाहिं बिसरत प्रताप नेक मेरेमन बसीटेढ़ी सूरतिगो-पालकी १९ ॥

तथा। कानन बीच कुण्डल किरीट शिर दिव्यसोहै

कुन्तल कपोल राते लोचन रसालकी । कण्ठ कल आभा झौरझूलै कण्ठभूषणसी पीक लीक छाई कैधौं छाईछबिलालकी ॥ छबिसों मरोरे पीव मुरलीधरअधरनमें काछनीसों काछे उर शोभा बनमालकी । कैसेकै प्रताप सुधिबातें बसे एरीमेरे मन बसी टेढ़ी मूरति गोपालकी १०० ॥

तथा । काहूको करोरिसुख सम्पति समाजबसी काहूको बसीबेष मोहन कलबालकी । काहूको कपट दम्भ द्रोह अरु कोह बसी काहूको बसी त्रास बासर निशि कालकी ॥ काहूको यन्त्र मन्त्र जप तप बिशेष बसी काहूकोबसी भाव भेषों बैतालकी । भनत प्रताप मन केतिक कितीकबसी मेरेमनबसी टेढ़ी मूरतिगोपालकी १०१ ॥

स० । भोर भये जल लेनचली वह गोकुल गांवकी गैल में गोरी । औचक भेटभई नँदराम परी उरमें लखि प्रेम ठगोरी ॥ आहट पाइके औरनकौन भईमनकीवहि सांकरीखोरी । मोहिगई न चलै न हलै तन मान तजै बृषभानुकिशोरी १०२ ॥

क० । मोसों क्यों न भाषतिहै आपनो हिवाल आली ऐसी कौनबात जौन तेरो अंगछरिगो । जानी हम जानी तेरे तरनितनूजातीरकरो विषवारोनेकनैननिमेंपरिगो ॥ कहैं नन्दराम तैं न जान्यो लरिकाईबशमेरीजानि दूरहीतैतेरोगातधरिगो । काबिस तिहारेअंगठहरिगयो री बाल काबिसको रंग तेरे तनुमें छहरिगो १०३ ॥

स० । जौलौं उतै जुगुनू दरशै तनुतापहरै तबलौं

दरसै लगी। जौलौं समीर उतै सरसै नँदराम उसांस इतै उरसै लगी॥ जौलौं जवास झरी झरसैं उत तौलौं इतै छतियां झरसैं लगी। जौलौं घनेरी घटा वरसैं उत तौलौं इतै अँखियां वरसैं लगी १०४॥

तथा। लखि मोहनै मोहिं मिलापके शोच घनेघने घायल घूटिगई। अब और विचार विचारत ना मन मैन महन्तसों मूडिगई॥ नँदरामजू आपुगई सुखसिंधु हमैं उपचारन छांडिगई। तुम कौनको आली पुकारतीहो वह सांवरे रंगमें डूबिगई १०५॥

क०। अंगना अनंगकैसी आई उठि आंगनमें रैनिको न भूलत विलासहास नाहको। छहरिछहरिउठै छाती पर छूटे बार टूटो हार हियमें वढावै चित्तचाहको॥ कहै नन्दराम बारबामके उनींदे नैन मैनकेसे तीर ताकि तोरत सनाहको। बाहन उठाइकै जम्हाति अँगिराति बाल ठाढ़ी मानो लेति सुखसागरकी थाहको १०६॥

तथा। प्राणनके प्राणपति देवताके प्राणपति चित्तकी सुरतिको न टारत पियारी सों। बारनगतीके वरबारन सँवारनको हारनको फूल बीनिलावत कियारीसों॥ कहै नन्दराम कोटिकामसे कलानिधिसे बैठेपरयंकपर परम अनारीसों। सोवै सासुरानी और ननँद जिठानी तऊ लाज सरसानी सो न बोलत विहारीसों १०७॥

स०। जातीहती यमुना जलको हरिआवै तहां सँग लीने सखानरी। औचक भेंटभई वहि मारग हेरि हँस्यो हियो हरखानरी॥ त्यों नँदरामजू नेकचितै चित चूरकै

देगो कपूरचखानरी । मोरपखान धरे सिलिम्यो भयो तादिनते मन मेरो पखानरी १०८ ॥

तथा । अलि इन्दु सुधा अरबिन्द रमा जलबिन्दु लौं बीच बिचारियेना । घनश्यामको रूप निहारि अरी घनश्यामको रूप निहारियेना ॥ नँदरायजू अन्तरबीच निरन्तर भूलिहू अन्तर डारियेना । चितचाहत मेरो सदा सजनी हरिके मुखसों दृग टारियेना १०९ ॥

क० । ऊधो जाय कान्हसे हमारी ये हमारी सोंहैं कह्यो समुझाय बैन बिदित सुनाह वाह । तात के न मातके न भ्रातके न साथीभये जातिके न पांतिके न कुलके उछाह वाह ॥ नन्दलाल गोपिनके गौवनके ग्वालनके येते सब गुणतजि करत गुनाह वाह । प्यारी को बिसारोजाय देहुँ कहा गारी करी कुबिजा घरवारी मित्र वाह वाह वाह ११० ॥

श्रीराधिकाजी महारानी व श्रीरुक्मिणीजीकी स्तुति व छबि व नखशिख आदिके कवित्व सवैया १० ॥

दो० मेरी भव बाधा हरो राधा नागरि सोय ।
जातनकीझाईंपरे श्यामहरितद्युतिहोय ॥

स० । जाकी प्रभा अवलोकतही तिहूँलोक कि सुन्दरता गहिवारी । कृष्णकहैं सरसीरुहनयनको नाम महामुद मंगलकारी ॥ जातनकी झलकैंझलकैं हरि ताद्युति श्यामकी होत निहारी । श्रीबृषभानुकुमारि कृपा करि राधा हरो भवबाधा हमारी १ ॥

देखो तसवीर नंबर ८ ॥

क०। काहूको शरण शम्भु गिरिजा गणेश शेष काहूको शरण है कुवेर ऐसे धोरी को। काहूको शरण मच्छ कच्छ वलराम राम काहूको शरण गोरी साँवरी सी जोरीको॥ काहूको शरण बोध बामन बराह व्यास येही निरधार सदा रहै मतिभोरी को। आनँदकरण विधि वंदितचरण एक हठीको शरण वृषभानुकीकिशोरीको २॥

तथा। कोऊ धन धाम कोऊ चाहै अभिराम कोऊ साहिबी सुरेश भांति लाख लाहियतुहै। कोऊ गजराज महाराज सुखराज कोऊ तीर्थ व्रत नेम यज्ञ अंग दाहियतुहै॥ ऐसीचितचाहै चरचाहै दुनियांकी हठी चाहै हृदय एक तौन ठीक ठाहियतुहै। जन रखवारीकी सुप्रभुप्राण प्यारीकी सुकीरति दुलारी की नजर चाहियतुहै ३॥

तथा। हीनहौं अधीनहौं तिहारो व्रजसाहिबिनी हिय में मलीन करुणाकी ओर ढरिये। भारी भवसागर में बोरत वरैहूमोहिं काम क्रोध लोभ मोह लागेसबअरिये॥ बुरोभलो जैसो तैसो तेरे द्वारपरयो मैंतो मेरेगुण अव-गुण तैं मनमें न धरिये। कीरति किशोरी वृषभानु की दुहाई तोहिं लक्षलक्ष भांतिसों हठीकी पक्ष करिये ४॥

तथा। जनदुखहरणी धरेणीपति ध्यावैं तोहिं तेरी जगकरणी विधिवरणी बड़ेस्यानकी। चिन्ताके सो घेरा मनढेरा सो भ्रमतफिरै हृदय नहिंडेरा सुधिखानकी न पान की॥ ध्यावतवनै न मोहिं तेरोही कहावत ह्वै हठीपै कृपा की कोर राखि दया दानकी। अवगुण भरोरी हौं कहत करजोरे अब मोरी पक्ष कर तू किशोरी वृषभानुकी ५॥

तथा। ध्यावत महेशहू गणेशहू धनेशहू दिनेशहू फणेश त्यों मुनीश मनमानीहै। तीनोंलोक जपतात्रिताप की हरणहार नवो निद्धि सिद्धि मुक्ति भई दरवानीहै॥ कीरति दुलारी सेवैं चरण बिहारी धन्य जाकी कीर्ति निन्त बिधि बेदन बखानी है। साधा काज पलमें अशाधा क्षण आधा हठी बाधा हरिबेको एक राधा महारानी है ६॥

तथा। शम्भु सुर ध्यावैं सदा शेष गुण गावैं बिधि पारहू न पावैं जे कहैया बेदबानीके। परमपद पायके चढ़ायबेको लायकहैं जन सुखदायक सहाय दधिदानीके॥ मुक्तिकेमालिक अतालिकहैं सिद्धिनके दीनप्रतिपालिक रखैया क्षितिपानी के। योग यज्ञ जप तप कछु वे न साधे ऐसे पद अवराधे हम राधे महरानी के ७॥

स०। माखनते मखतूलहू ते सुकुमार शिरोमणि कंज कलीके। लालगुलाल प्रबालके भूषण दूषणहैं घनश्यामछलीके॥ आलीगुलाबकी आबहि वारिये चारिये ये ब्रज कुंज थलीके। भानुप्रतापको निन्दतहै पदवन्दत ह्वै बृषभानुललीके ८॥

तथा। जाकी कृपा शुक ज्ञानी भये अतिदानी औ ध्यानी भये त्रिपुरारी। जाकी कृपा बिधि बेद रचे भये व्यास पुराणनके अधिकारी॥ जाकी कृपाते त्रिलोक धनी सो कहावत श्रीब्रजचन्द बिहारी। लोकघटी ते हठीको बचाउ कृपाकरि श्रीबृषभानुदुलारी ९॥

क०। मखमल माखन से इन्दुकी मयूखन से नूतन तमालपत्र आभा आभरनहैं। गुलसे गुलाबसे गुलाल

जपा जावक से पावक प्रवाल लाल द्युति के दरनहैं ॥ उमापति रमापति यमापति आठो याम ध्यावत रहत चारोफल के फरनहैं । पंकजबरन रविछवि के हरन हठी सुखके करन राधे रावरे चरनहैं १० ॥

केशवर्णन ॥

क० । कारे सटकारे केश मृदुता भरी हैं वेश मखतूलश्याम कैधौं काहूके अँधेरे हैं । दिवाकरभट्ट यह कहत विचारिवात कैधौं तमधारआय चन्द्रमाको घेरेहैं ॥ जम्बुफलहारे देखि कालिमा अनूपछवि कैधौं अम्बु यमुनाके शीश पै वसेरेहैं । निविड़पयोद चहुँकोद ऋतुपावससी छूट कुचश्रृंगर छ्वै छवालौं लटकेरेहैं ११॥

तथा । मरकत सूत कैधौं पन्नगके पूत अति राजतअमूत तमराज कैसे तारहैं । मखतूल गुणग्राम शोभितसरस श्याम काम मृगकाननके कुहके कुमारहैं ॥ कोप की किरण के जलत नवनील तन्त उपमा अनन्त चारु चमर श्रृंगार हैं । कारे सटकारे भीजे शोंधे सों सुगन्ध वास ऐसे वलभद्र नवबाला तेरे बारहैं १२ ॥

तथा । वाला वार छोरकै निवारत है बार बार तार तार फैलरहे चौग्रिद्र मुखिन्दुके । लहरत एँड़िनलौं छहरत चूमैंभूमि झरझर मोतीपर पुञ्जनजालिन्दुके ॥ भनै रघुनाथ किधौं जानिकै सुधाके बुन्द जात चले मुदित मनोहर मलिन्दुके । मानो चन्द्रमण्डलपै कुण्डमें अमी के हेतु धायगये छौना छाय लाखन फणिन्दुके १३ ॥

तथा । मरकत सूत किधौं पन्नगके पूत किधौं राजत

अभूत तमराज कैसे तारहैं। मखतूल गुणग्राम शोभित सरलश्याम काम मृगकानन कि कुरुके कुमार हैं॥ कोपकी किरण किधौं नीलकंजनालतन उपमा अनन्तचारु चमर शृंगारहैं। कारे सटकारे भीजे शोधेसों सुगन्धवास ऐसे बलभद्र नवबाला तेरे बारहैं १४॥

स०। नीलमणीनके सूत किधौं किधौं पन्नगपूत लसै छबि बार हैं। रेशमश्याम समूह किधौं किधौं कामवटे के बरोह अपारहैं॥ राजिवनयन सुनै रघुराज किधौं रसराज नदी के सेवारहैं। कै सटकारे महाछबिवारे प्रकाश पसारे सो रुक्मिणी वारहैं १५॥

क०। श्यामा आहि कोयल की श्यामता लगत कैसे कारे झपकारे प्यारे अरगजे सरसत। दीरघ अमल केश कपोल पै कुचनछ्वै जंघनते लटकि चरणहूलों परसत॥ कज्जलते चटक छटकिरहे शीशपर देखि देखि मेघन ज्यों कजरारे तरसत। चन्दन की चौकी बैठी बारन सुखावै बाल छोरनते चुवै बुन्द मानो मोती बरसत १६॥

पाटी बेनी जूराआदि वर्णन॥

क०। बार गुहि रेशमसे दीन्हीं लटकाय पीठ ब्याली मानोहेमके शिलापैलटकारीहै। भनत दिवाकर सुगन्ध सरसात तामें मलयाके चाटि कैधौं सौरभ बगारी है॥ देखि देखि मोरिनी करति अनुमान मन कैधौं भ्रमरावली कि नागकी कुमारी है। लखि नंदलाल याते होतहै बिहालप्यारी ब्यालीतेबड़ेरी बिष बेनीमें निहारीहै १७॥

तथा। जूरा शीशऊपर कँगूरा कामवीरकैसो सेंदुर लकीर मानो भानुको प्रकाशहै। भनत दिवाकर नखतलर मोतीमांग गंगा स्वच्छ पानी नाली यमुना निकासहै॥ कैधौं स्वरभानु घेरोहै प्रभातकाल लाल तिनके छोड़ायबे को तारा आस पासहै। कीरतिकुमारी कैधौं श्यामसन बांधिराखी फेंटमारि बैठो मानो नागआमखासहै १८॥

तथा। किधौं शशिमन्दिर पै श्यामघन कलश सोहै किधौं देहदामिनीपै तिमिर समेटोहै। गुणनको गूढ़ो कैधौं शोभाके समूह लूटो कैधौं मखतूल सम विराजत विजैठोहै॥ काजरको धूम किधौं लसत मशाल रसराज को शृङ्गार किधौं प्राणप्रिय पैठोहै। प्यारी शीश जूरो ऐसो शोभादेत रूरो किधौं मानो हेमगिरि पै विषर ऐंठि बैठोहै १९॥

तथा। अतर फुलेल मेल हेमकंकईसों ओछ पोंछ कै सख्यानदई केसर तरौंटी है। नाइन सिवारसे सम्हार बारबार बार त्रिलर सुधार गुन्ध कीन्हीं एक सोटीहै॥ भनै रघुनाथ किधौं आनँद अगोटी रसराजसों रँगोटी रति चोटीकरि खोटीहै। कैधौं व्याल जोटीयुत पन्नगी सुमोटीवाल कैधौं तुव भालपै सोहाई लसीचोटीहै २०॥

तथा। कैधौं हेमशैलशृङ्ग ऊपर विराजो शम्भु कैधौं रतिनाहने निवास लियो माकोहै। कैधौं बांधि चोटी कियो सहचरिपुष्ट रम्भ देखि ताहि रम्भाको गुमान कुल थाकोहै॥ भनै रघुनाथ कै नवेलीइन्दु आननते निकासि कलंकजाय बैठो छवि छाकोहै। जूराजोखताको परपूरोहै

शृङ्गारकिधौं कैधौं प्रीतिपूरण यों सम्पुट त्तपाकोहै २१ ॥
तथा । दरशदरशको परशहोत बलभद्र कीधौं है सर-स शाला शानि सुरभानकी । रसराज पक्षी के युगल पंख वासे सोहै छांहबैठो त्तपाकर शेचकवितानकी । तमके प-रल लिपटाने हेमकूटसों कि सघन कदम्बिनी करचोटी पंचबानकी । पाटी तेरी तरुणी युगल ऐसी राजै मानो ज-मीजग यमुना सिवारतन सानकी २२ ॥
तथा । जीति रति कामहि करति रसरीति तहां प्रीत-मते दुहूंरचि विपरीति रतिहै । मची सिसकार रसनाकी झनकार जहां शम्भुमुख चन्द्रमाकी छवि छलकतिहै ॥ कटि लफि लफि लचकत कुचभारन सों हारन ते ओरौ उरओप उलहतिहै । पीठपर बेनी मृगनयनी के लुरत मानो नागिनि सुमेरुके शिलापै लहरतिहै २३ ॥
तथा । बेनी नवबालाकी बनाई गुही बलभद्र कुसुम अरुण पाट मन मोहियतुहै । कारी सटकारी नीकी राजत नितम्ब नीचे पन्नग किनारिन की द्युति दोहियतुहै ॥ सातुक सिताई असिताई तेज तामसकी राजसरताई मिलि रूप रोहियतुहै । धरतत्रिगन वपु त्रिभुवन जीतबे को मानो महामायाई सदेह सोहियतुहै २४ ॥
स० । कैधौं कुहू युग आय मिली किधौं भादौंकिरैनिके ये युग भागहैं । काम शृँगार अवास किधौं किधौं येपिकके परवक्षै सँगलागहैं ॥ जाह्नवी धारके दोऊ दिशै किधौं कालिन्दी धारकै सोहे अदागहैं । केशव कैधौं विदर्भसु-ताके त्रिपाटी लसै युग मैनकी बागहैं २५ ॥

तथा। कैधौं सुधारस चाखिबेको लपिटी लरितीन भुअंगिनि कारी। कैधौं प्रभाकर भीति शशी निशि को छरिकैनिकटैनिजधारी॥ कामकला किधौं राजतिहै कल कीधौं शृंगारकी बेलिसुधारी। श्रेणीसही सुषमा की सजी किधौं रुक्मिनी वेनीबनीहै बिहारी २६॥

क०। कंगहीकरत राय बेलाको फुलेल लाय लाल गुणगुही मोतीलर लटकाईहै। कैधौं व्याल बिषधरकालि हरै समेटि गूढ़ी काम कोतवाल के कोड़ाते सरसाईहै॥ आजला वचोगेलाल कोलकीनिरखिवेनी बरबसडसैगी जु कठिन बिषताईहै। मन्त्रऊ न लागै किल कोटि करो शिवनाथ बचौं बनवारी खैंचि मदन दोहाईहै २७॥

तथा। ज्योतिय शीशकै कँगूरकाम मंदिरको शूरो उरशालतहै पूरी छांहकरिकै। चौरिमांगमोतीभरि बन्दन लगावै कैधौं पांवड़े बिछावै सुखलोकको डगरिकै॥ सरस सवांरि पाटी पारि पारि कङ्गहीलै सौतिन के नैनन करोतीसीप करिकै। सोरहूकलाते परिपूरणहै कलानिधि शीशचाढ़ि आई करि प्यारी घटाभरिकै २८॥

अलकवर्णन॥

क०। मेचक अलक लटछूटिकै कपोल आयो करत कलोल गोदपोश्रा द्विजराजके। भनत दिवाकर सुटेढ़ी बेढ़ी चाबुकसों सोहतहै झूमि झूमि मार महाराजके॥ कैधौं अरबिन्द मकरन्द रस लेबे हेत श्रेणी श्रेणी बैठि गयो भौंरन समाजके। राधिकारसीली कैधौं सेली लटकाइ शीश फांसिलेत अकुलाई प्यारेब्रजराजके २९॥

तथा। बिराचि अनूप जातरूपसों प्रपूरीप्रभा जर शशिबंश आदि कुण्डली अखण्ड है। तामें मणिमान कान्तकान्तपञ्जराखीगुनी जगमग ज्योतिरहीताकीअति मण्ड है॥ भनरघुनाथकिधौंचूड़ामणितेरीवाल सौतमन शालनकोदीन्होंकामदण्डहै। कैधौं मेरुशृङ्गपैघनेघनपै जंपज्योति तापै उड़कुण्डमें बिराजो मारतण्ड है ३०॥

तथा। बदनकलानिधिकोपरमप्रकाशमानतमभजि हेमशैल शिखर सुडाटीहै। कैधौं सुधापाय राहु बैठ्यो चन्द्र मंडलपै ताकोमांगरेख चक्र विष्णु अलकाटी है॥ भनरघुनाथ किधौं दोनों ओर काम श्याम बसतहमेश किधौं मोतिनकीटाटीहै। सघनसुपाटी घन कैधौं प्रीति पाटीपढ़ि रसपतनाटी किधौं तेरी बालपाटीहै ३१॥

तथा। मोहर ज्यों मुकताकी युगल बिकारी दई लोचन तरंग कैधौं चाबुक मसन्दको। लहकि लहकि टेढ़ी बेढ़ीसी अलकदोऊ बहकिबहकि करैं चरचाअनन्दको॥ लटकि कपोलन कलोलन करत झूमि फैलि फहरानो कैधौं ध्वजा कामफन्दको। बिषम कटोहै अलसोहै से कुशलसिंह नागनकेछौनापै बिछौना कियोचन्दको ३२॥

तथा। सांवरेरसिक रसबसबिपरीतिरची प्यारी केलजोहैंनैन मनको हरतहैं। मन्दमन्दमेखलाकी ध्वनिसुनि दत्तकबि चेटुआ मरालनके मन पकरतहैं॥ झूमती हैं अलकैंछबीलेमुखऊपर यों मानो बाल ब्याल सुधा चन्द तेभरतहैं। टूटटूट श्रमजल बुन्द यों परत मानो कनक लताते मुकताहल झरतहैं ३३॥

मांग सिंदूर सहित वर्णन ॥

क०। पीतम प्रवीनके खिलौनाहैं अनोखे किधौं द्रुतछबि चोखेदिपै हरित दुकूलहैं। कैधौं घनपाटिनके मध्यचंचलामें उड़ निकट ग्रभानभये उदितअतूलहैं॥ भनरघुनाथ दिव्यदिपत तिहारोभाल हालतलाल मोहन को कैधौं प्रीतिमूल हैं। शोभा अनुकूल मंजु सेंदुर समूले किधौं मोतीयुत मांग बाल तेरेशीशफूलहैं ३४॥

तथा। वारों कामकामिनी करोड़कामिनी तनुपै सुरभचँपावनी सुगन्धता चमेली की। सौतिन को गरब गमावनी गुमानभरी शोभानिघटावनी सुजातरूप बेली की॥ भनरघुनाथ दिव्यदामिनीदुरावनी सुचांदनीचुरावनी है द्युति अलबेलीकी। निजछबिछावनी छिपावनी क्षपाकीछबि प्यारेमनभावनी सुहावनी नबेलीकी ३५॥

तथा। तमके विपिनमें सरलपन्थ सातुकको किधौं नीलगिरिपर गंगाजूकी धारहै। किधौं बनवारी बीच राजत रजतरेस कीनो चन्द्रकर अन्धकारको प्रहारहै॥ नापत शृंगारभूमि डोरी हासरसकी कि बलिभद्र कीरति कि लीक सुकमारहै। पयकी असार घनसार कि असारमांग अमृतकी आपगाजपाई करतारहै ३६॥

स०। नीलके शैलपै राजिरही किधौं गंगकीधार है शम्भुकीढारी। सोहतिहै किधौं श्यामनिशा मधिस्वाति की पन्थ महाछबिवारी॥ कामके कानन पन्थ किधौं तनु रुचिरे चन्दनरेखनिहारी। फूली तमाल पै मल्लिकाकी लतिका किधौं रुक्मिणी मांग मुरारी ३७॥

भालवर्णन ॥

क० । पापीविधि यशकीजनमभूमिशेषवहै उपजत जहां सब सुकृतको जालहै । तिलकतरोवरकी छाया सुखतल्प किधौं रसके अगारनको अजिर रसाल है ॥ भागकैसोबासन सोहागकैसो आसनहै मोहनीकोसासन कियो तो बसलालहै । कामकी तुरंगनकी धायकी धरनि यह किधौं बलिभद्र गोरीभामिनिकी भालहै ३८ ॥

स० । सोहत कंचनपत्र किधौं कलि कीधौं सुअष्टमि चन्द्र बिशालहै । कामकलानिके सीखिबेको किधौं काम के बामकी पाटीरसालहै ॥ भाषेमुनी रघुराजकिधौं रसराजकी राजै सभा छबिजालहै । कीधौं बशीकर मंत्रके यंत्रकी पीठिलसै किधौं रुक्मिणी भालहै ३९ ॥

भौंहवर्णन ॥

क० । कैधौं अली पूछको पसारिबैठो दर्पणमें कैधौं है कमान काम गोसाकीनवाईहै । कैधौं द्वै सोनार मार नारिरूपजोखतहै पोखतगिराय पलडण्डी थिरकाईहै ॥ भनत दिवाकर नचायदृग बोलति जो खोलति कपाट प्रेमनाभीमें समाईहै । बंकअधिकाई कामधनुहु न पाई ऐसी राधिका तिहारी जैसी भौंहकी निकाईहै ४० ॥

तथा । कैधौं चन्द्रबिम्बमें प्रकाशी मन्दरेखा बिम्ब कैधौं रूपसिन्धुमें निकासे नीलअरविन्दु । कैधौं शील तालद्वै बँधाये मणिनीलसैन कैधौंपंचबानको कमानेजग डार्योनिन्दु ॥ भनरघुनाथ किधौं शोभासरजानतुन्द नयनकंजमानबसे मुदितमत्तमलिन्दु । कैधौं रतिराजकी

परा जैके काज आज धनुयुग साजलै समाज रह्यो राज इन्दु ४१ ॥

तथा। सौरभ सुगन्ध बास चम्पक की नासिकाको कीधौं अली ऊरवते आघ्रनु करतिहै। कीधौं मुखचन्द धस्यो बाहन कुरंगकन्ध युवामरकतन को मनहिं हरतिहै॥ कीधौं बलिभद्र भालकञ्चनके भाजनमें दीपकगनैनको काज रूपरतिहै। भामिनीकी भौंह किधौं काम की कटारीयुग जिन्हैंदेखि सौतिनके गरबगरतिहै ४२॥

स०। खेलहिं खेल शशीमें किधौं अतिचञ्चलशावकद्वै अहिकेरे। कीधौं लसै युगपांति मलिन्दकी द्वै अरविन्दनके अतिनेरे॥ भाषैमुनीरघुराज द्वैरेखबचायदिया किधौं मारिचितेरे। कामकृपानके कामकमानकै रुक्मिणी भौंहपरे दृगहेरे ४३॥

क०। कुटिल अनूपसोहै मानीकीसी गतिजामेंभृंगनकी श्यामता सरस छबिछाईहै। कामके शरासनते त्रासन अधिकदेखो आसन मुनिन इन्द्र सासन चलाईहै॥ कासनकहौंरी योगी डासन तजत जगो सासन भरत रोगी भये मुरझाईहै। तानमें तुरंग मनपाई ऐसी बङ्कताई जैसी शिवनाथ प्यारी भौंह बनियाईहै ४४॥

श्रवणवर्णन॥

क०। सीपके समानकान रंचक लखात प्यारी कैधौं जेवघरी काम धाममें लगायोहै। भनतदिवाकर सुबिकस्यो सरोज कैधौं रूपके तलावमें चटकद्वै फुलायोहै॥ तरकी जटितज्योति झलकबसनश्वेत रविके मयूषमानो

जाह्नवीमें छायोहै। कैधौं है वजीर तारा चन्दके नजीक बैठो कैधौं हैफनूस ढिगगादीके धरायोहै ४५॥

तथा। बदन प्रयाग गंगधार वरबन्दीबेस पाटोंकेश यमुन सुभाल सुखदैनीके। शारदा सुछूटीलरी माणिक मणीननकी टूटी शीशफूलतैं कपोल पिकबैनीके॥ भन रघुनाथ कर्णराजतसुदेश युग्म सहित सुगन्ध चन्द नाद मृगनैनीके। कैधौं कञ्ज एकएक दोनों ओर फूलि रहे अलियुत राजैं तट युगल त्रिबेनीके ४६॥

क०। रूपके अनूपमकी राखीहै ध्वजा उतारि सारा कामयंत्रकी कि कञ्चनकेपोतहैं। पियकेबचन स्वातीबदन की सीप युग सुनतही मोदमुक्ताहलको तनोतहैं॥ लोचन कुरंगन को कीनीहै परिषधार बलिभद्र झांपे न झपत लोलहोतहैं। सुसके सुमनहैं श्रवणतेरे सुन्दरी कि दरी है सोहागराग सारंग कि सोतहैं ४७॥

तथा। करनकरीहै जैसी करनी करनदोऊ चरणविचारि दीन्ह्यों कंचनको दानिये। औरऊ करन एक पिता प्रतिपालकीन्ह्यों बांहकासनीहै हम कथा मृदुबानिये॥ कामिनी करनदोऊ करतसो घटिनहीं करन विहारसमै सेजसनमानिये। वेकरनपिताभक्त मनवच शिवनाथ येकरनपतिके बचनभक्तिजानिये ४८॥

नेत्र वर्णन॥

क०। हरिण हिरानेकहूं हारनमें हेरि नयन मीनहू समाने जलकञ्जखञ्ज फीके हैं। रूपकी बजार मदपीके मतवारे भये कैधौं हुद्देदार है अनंग की अनीके हैं॥

नन्दराम कैधौं ये कटारहैं कटाकरके आंकरके अन्त क विभाग बरछीकेहैं। सानपै धरेहैं खरसानपै उतारे खूब कैधौं पंचबान यह ओपै ओपिनीकेहैं ४९॥

तथा। अलकअमोल अलबेलीकी अनोखीआंखि अतिअलसात ओप अजब अमेजेमें। मन्द मुसक्यान मांगमोती मोहनीकेनीके मोद मदमाती मनमदन मजेजेमें॥ यौवनजलूस ज्योति जोयके नरायणजू सकलशृंगार नखशिख ते सहेजेमें। चन्द्रमुखी चंचल चलांक चंचलासीचारु चसक लगायगई कसककरेजेमें ५०॥

स०। भीषम कर्ण कृपा अभिमन्यु दुर्योधन सोमसों भूरिश्रवाके। अर्जुन भीम युधिष्ठिर धृष्ट विराटबली सहदेव प्रभाके॥ सो शर व्यर्थ भये इनहूं के कहा कहिये निरदीन दया के। मेरेकटाक्षबचैं न मुनीशहु हैं कबिसो शर की समताके ५१॥

तथा। भूतपरेतको फेरो बचै यहिनैन कोफेरो हियो तोड़िडारे। तीर चलैं तलवारिचलैं अरु शम्भुको बाण छुटै अनियारे॥ वज्रको फेरो बचै तो बचै अरु प्राणबचैं नरसिंह हुँकारे। कालको फेरो बचै घड़ि द्वैक बचै नहिं नयन चपेट के मारे ५२॥

क०। कारेकजरारे रतनारे अरबिन्द सम चपल दराज अनियारे सुखकारीहैं। भनत दिवाकर कुरंगबान खंजनको गंजनकरति श्याम अंजनकिनारी हैं॥ झूकि झूकि झांकति झरोखा लागि सानभरे लागे बनमाली मानो लोहकी कटारी हैं। मोरिमोरिलेति मुसुकाय दृग

घूंघुटमें मारिकै फिरत ज्यों शिकारको शिकारी हैं ५३॥

तथा। गंजागिले खंजनकी भौंर भयकंजनकी बारि बिधु मंजन औ अंजन समेत हैं। नेह भरे सागर स्नेह भरे दीपकसे मेह भरेबादर सलौने लखिलेतहैं॥ तरल त्रिबेनीके तरंगन सें तारा कबि मानो शालग्राम स्नान के निकेतहैं। मृगमद लागे शाखामृग दृगदागे मैन छाजनमें पागे नैन ऐसे शोभा देतहैं ५४॥

तथा। देखे अरुणाई करुणाई लगै कंजनको मृगन गुमानतजि लाजगहिबेपरी। तोषनिधिकहै अलिछौन-नहूदीनताई मीननअधीनह्वैके हारिसहिबेपरी॥ चरचा चकोरनकी कोरडारे कोरनसों कबिन कवीसन गरीबी-गहिबेपरी। आई चोर चंचलाई राधिकाके नयनन में खासखंजरीटन खराबी सहिबेपरी ५५॥

तथा। सफरीसे कंज से कुरंग करसायलसे आमकी-सी फांकैं सबकहतसुजानहैं। नटुवासे नटसे तुरङ्गनसे खंजनसे बालकहठीले जैसे ऐसेठनेठानहैं॥ देखौं टेढी कोरैं मानो नखनैया छोरकैहैं बान ऐसी अनीपैनी लागे लेन प्रानहैं। ठगबटपारे मतवारे कबि तुच्छमति इत-नेही नयननके कहे उपमान हैं ५६॥

तथा। मीनह्वैकमीनेपरे पानीमें निहारे हारि हारिके चकोरताते चुगत अँगारेहैं। भूपति भनत मंजुकंजनके खंजनके गंजनगरब करिडारे कै निकारेहैं॥ डाररतनारे तारे कारे औ सितारे सेत उपमा सितासित तरं-

गिनमें भारे हैं। प्यारी तेरे मान दृग पानि पर सानधरे कैवरकसी सेवै कमानवारे वारे हैं ५७॥

तथा। आवदार अजव अनोखी अनियारी अलबेली ऐसीआंखैंऐनऐननसे रूखीसी। भोजभनै योवनजलूस में न जागेज्योति ज्योतिजोम जुलुम जुलाहलमें पूखी सी॥ ताकिजातीतीक्षण तिरीछीतरुणाईपर तेरीदृगनो-कैं तेज तीरनतेतीखीसी। बैनमढ़िजातीचारुचौखचढ़ि जातीहियोफोरिवढ़िजातीच्वढ़िजाती साफ़सूखीसी ५८॥

तथा। ऐसे मैन मैनके न देखे ऐनसैनके जगैया दिन रैनके जितैया सौति मीनके। कमलकुलीननके मुकुली करनहार काननकी कोरनलों कोरन रंगीनके॥ भनत कविन्द्र भावतीके नैन चायकसे देखे मैन पायकसे नायक नवीनके। सींचेहैंअमीनके अमीन मनो मीनके बखाने को मृगीनके खगीन पन्नगीनके ५९॥

तथा। मृगकेसे मीनकेसे खञ्जन प्रवीन केसे अञ्जन सहित सित असित जलदसे। चरसे चकोरसे की चोखे कांडकोरसे की मदनमरोरसे की माते राते मदसे॥ नवीन कवि नैनासे की और नैन बैनासे की सीपड़ेल सोना मध्य राखे मृगमदसे। पाशसे पयोधिसे कि और सौंधे सौंधसेकी कारे भौंरकेसे अनियारे कोकनदसे ६०॥

तथा। राजतअमीके मद छाकेकालकूट किधौं चंचल तुरंगकी समाये येनकाके हैं। पीके हियराके मृग मी-नन के थाके किधौं सौतिसालही के सुषमा के ऐन काके हैं॥ परमकहतदेखि खंजनहू थाके किधौं श्याम

सेलताके लाल आभा साधि काके हैं। छत्र क्षपाकरके भूपालके छलाके चारु चंचल चलांके नैन बांके राधिकाके हैं ६१॥

तथा। खंजन नवीन मीन मानके उमाकेदेत नाके देत दृग दद कंजके तहां केहैं। ठौर ठौर भँवर भ्रमत जाके ताकेसंग माखन चकोर कहै चंचल चलांकेहैं॥ ऐसे ना रमाके ना उमाके ना तिलोत्तमाके प्रवलहरौल पंचबाण प्रीतिनाके हैं। है न मंजुघोषाके बखानै मैनकाके मैन ऐन सुषमाके नैन बांके राधिकाकेहैं ६२॥

तथा। एकही झमाके में छमाके मनमोहे दृग ऐसे मारमाके न उमाके ना रमाकेहैं। दशहू दिशाके मनसा के फल देनहारे करननिशाके इमि जाकी ओर ताकेहैं॥ जायके जहांके तहां मीन जल ढाकेगये हरिनहहाके ऐसे कमल कहांकेहैं। मदनसभाके सुषमाके उपमाके चारु चंचल चलांके नैन बांके राधिकाकेहैं ६३॥

तथा। लालची लजीले लोल ललित रसीले लखे लोगनि ललकि लैलै लूट लँगराकेहैं। छिनमें छलीन चित्त छैलनको छोभैं छोरैं छोरैं छरकीले सो छबीले छबि छाके हैं॥ मनसा कहत डेरा डोडीके न डाड़ेडांका डारत डगर दृग डारत में डांकेहैं। ऐसे और काके मैनकाके अबला के मैन बाननते बांके नैन बांके राधिकाकेहैं ६४॥

तथा। पतिव्रतताके मंजमन्दिरमजाके किधौं लखि मृग थाके चारु सरसुषमाकेहैं। कैधौंप्रेमछाकेहैं अमन्द भौन भाकेहैं न ऐसे रमा रम्भाके उमाके और काकेहैं॥

भनै रघुनाथ धाम कैधौं शीलताके प्रेम सागर के मीन नैन थांके राधिकाके हैं। पिय मुद्दाके वशीकर वसुधा के कीधौं सुधासिन्धु मण्डलमें कुण्डल द्वै सुधाके हैं६५॥

तथा। खंजन चकोर मीन मृग शिशु सारमयौं वारिये कपोतहू अनूप कहि गोरीके। तीखे तीर खंजर कटारीतेग नेजनतें बांकाबिछुवातेहैं बकैतबरजोरीके॥ भनै रघुनाथ हैं लजीले ललची हैं लाल पंकजगुलाबरंगराति मद मोरीके। ललित विशाल यों रसाल कजरारे लोल मृदुरतनारे नैन नवलकिशोरीके ६६॥

तथा। कैधौं चन्द्रमण्डलमें कुण्ड द्वै अमीके भरे देख के फनिन्द जोट छांट तहँ गोसोहै। कैधौं दृग बानन में लागी नटसाल कीधौं तूही ब्रजबाल नन्दलालको ठगोसोहै॥ भनै रघुनाथ कीधौं तेरे यह तीखे तेग तापै धरी बाढ़ि देख मैनहूं ठगोसोहै। मन्त्रसों जगोसो तन्त्र मोहनी पगोसो कीधौं नैन कजरारिनतें काजर लगोसोहै ६७॥

तथा। परम प्रवीन मीन केतिक ये मीन कीधौं सुख के सरोजहै कला ये प्रियभानके। शरदके खंजन मिले हैं मुख चन्द्रसोकी जोरे हैं कुरंगरथ वाहन समानके॥ मुनिनके मन उपजावत अनेकभाव मेरे जान येहैं विशिख पंचबानके। बाल तेरे नैन की विशालसाल सौतिनकें बलभद्र सानहैं सोहाग सरसानके ६८॥

स०। कै सपमाके समुद्रके सोहि रहे युगमीन अनेक कलाकरि। कै छबिकी रचि पिंजरी काम दियो तेहिं में

युग खंजनकोधरि ॥ भाषै मुनी रघुराज किधौं बिधुबाल कुरंग द्वै लीन्हों सुदैभरि। आपके पन्थमें लागे सुप्रेम में पागे किधौं रुकुमिनि दृगौ हरि ६९ ॥

क०। कैधौं खंजरीटन की चपलताईहै छीनी कैधौं चंचरीकनकी कजरारी छाइये। कैधौं प्रात कंजनकी स्वच्छता निवास कीन्हों लाजको समेटि बिधि लोचन बनाइये॥ चतुर चलांके बांके सैनई उझकि झांके पैनई सरस कैधौं मैनशरपाइये। हँसि हँसि हेरि हेरि फेरि फेरि शिवनाथ हरिसों हरिन नैन नेक न दुराइये ७० ॥

सैनबर्णन ॥

तथा। चंचल बिशालमीन खंजन मृगाते बेष ताकन तिरीछीभई जब दृग जूटीकी। मृदु मुसुक्याय रूप झलक दिखाय फेरि मोरि मुखदीन्हों जोर डोर प्रीति टूटीकी॥ भनै रघुनाथ भरी आनँद अटूटी लखि छूटी मान बान कान्ह सहित बूटीकी। लूटी सौत सान आन मेंड़ सब फूटी देखि नेजा मैन बूटी सैन नवलबधूटीकी ७१ ॥

तथा। नेकही निहारें नैन नायिकासुकीयानारि मुनिन के मन मनसिजसौतनौत है। बिनही कटाक्षकाटै लाज हीके कवचन काजर नयेले कूटि कामके उदोतहै ॥ जो है निबिकार तौ बिकारकरै औरनको छांडै क्यों कुलीन भाव जैसे जाके गोतहै। बांकी चितवनमें करैगी कहा बलभद्र सुधी चितवनमें असाधु साधु होतहै ७२ ॥

तथा। कीधौं छतिमण्डलकु बेनी देखि तारागण होत मीनकेतन के मीनसरफ तहैं। मित्रनसों कहे सुख

हीकी वात वलभद्र पूछतकी मन्त्र मुनिनसों बरकसहै ॥ लक्षी तरवरनि को छूटै घृतचतुरनि बिशिख बिसारे पाथे कामकरकस है । उज्ज्वल सरलचक्र चहतहैरैनि दिन अक्ष के अपागनके आछे तरकसहै ७३ ॥

स० । केशव बाकी चितौनकी कौन कला कहौं जाति कही कछु नाहीं । यद्यपि सूधी सुधारस पागी विकार विवरजित सोहै सदाहीं ॥ तद्यपि जायपरै जहँ औचक नेकौ स्वभाव हतै ज्यहि घाहीं । चेतनहोत जड़ै जड़चेतनकेतनको निरख्यो दृगमाहीं ७४ ॥

तथा । बाजकी बैठक लै उचकी पुनि बेधि कढ़ी पर घूंघुट झीनो । उड़िजाय कुही जिमि दूरि दुरी बहुरोगति आनि करीलकी लीनो ॥ तानत काननलों चख लोलसों सानन में झरवारनकीनो । शालत देव अदेवनहूं बरु पारथको पुरुषारथ छीनो ७५ ॥

बरुनीवर्णन ॥

क० । शूर सुरमाके सैन कामजंग जीतेहेतु साजे दृग अखकोर कोनन सँवारेहैं । भनत दिवाकर सुधाकरन लेश जामें चकित सुरेश छोड़ि आसन सिधारेहैं ॥ बैठिकै नजीक चारु चमर डुलावैं फेरि हेरि जोड़िदारनके करत इशारे हैं । उपमा बिलोकतहू लोकमें न आवै प्यारी बरुनी बिलास जैसी राधिका तिहारे हैं ७६ ॥

तथा । तेरे युगम नयननकी बरुनी यों बनी घनी मनो द्वै मनीनकी कनीकनके लुंजहैं । शीलके दुकूपचक्षुपल मुखबन्धन पै कंचन कँगूर ये मनोज रचे मुंज हैं ॥ मनै

रघुनाथ कीधौं शोभाहै सरोवरपै सुवर बँधाननपै बरद्रुम कुंजहैं । पूनरी मनोहरन पातुरके बैल छोर कैधौं नयन सुभट सुधारे सपुंज हैं ७७ ॥

तथा । सुन्दरिके सुन्दर पुन्दर प्रियाते अति नाहिनै सुसुन्दर यों यक्ष सुरनारी के । कामकी तर जूके अमोले पला कंचनके कैधौं क्षेमधाम छत्र पूनरी सुखारी के ॥ भनै रघुनाथ हैं मनोहर पियाके सदा कैधौं युग सम्पुटहैं रतन अगारीके । परखत मैनत्री लगावैना पलकनैन ऐसे हैं सुखैन नैन पलक पियारी के ७८ ॥

तथा । पातुर पुतरी पहिरे पवित्रपीत बास कीधौं ये सकल सुख बासना कैधानहैं । पियरूप पीवेको अधर आछे बलभद्र सौतिन को एकौपल कल न निदानहैं ॥ पिंजर की खंजरीटकनके संपुटहैं जिनमें वसत प्यारे प्रीतम के प्रानहैं । कामतुलापलाहै पलक तेरी प्रमिनी कि त्रियाके कपाट कीधौं तारे न त्रानहैं ७९ ॥

तथा । कामकेकेदारनकी आयसकी कीन्हीं वारी श्यामलसघन कमलाकरके कूलहैं । लोचनअनन्त हैकी रसना सहसचारि काजरकी कोर युग रसराज कूलहैं ॥ पलक अनङ्गकरतल्लन के पल्लवहैं कीधौं चितचोर है हज़ार भुजमूलहैं । तरुनी की बरुनी बिराजैं ऐसी बलभद्र मोहनी पटनबाटे छोर मखतूलहैं ८० ॥

तथा । पयभरे भाजनन पैयनमधुपमध्य कीधौं क्षीर नेधि मध्य दीपयुगकारे हैं । बसन बिशद बीच शोभेही के बिन्दुकीधौं देखिबेको मैनसुख दर्पणसँवारे हैं ॥ छाती

धरे क्षिति जीतिवेके काज बलभद्र तमकी रसके तरुणि तेरेतारे हैं। कमलदलनपर मणिमय देव कीधौं पीयमन द्विज पूजिबेको पाँयँ धारे हैं ८१॥

कोयावर्णन॥

क०। पाटलनयन कोकनद कैसे दलदोऊ बलभद्र बासर उनींदी देखि बालमें। शोभाके समुद्रनमें बढ़वकी आभा कीधौं देवध्वनि भारती मिली है पुण्यकाल में॥ कामकेवरतु कैधौं नासिका उड़त बैठो खेलत शिकार तरुणीके रूपताल में। लोचन सितासितमें लोहितलकीरें मानो विधे युग मीन लालरेशमके जालमें ८२॥

अंजनवर्णन॥

क०। कंचनके कन्दपरिखंजनतलपकीधौं बांधे युग मीन नागफांससों मदन हैं। कामके कसारनकी कूलन की कूपिका कि अहिखतिलक के शृंगार के सदन हैं॥ त्रिशिख पुलिन्दमैन भाजेहैं प्रदीपनसों बलभद्र मुनिन के मनके कदनहैं। काजरकी रेखें अवरेखी युगलोचनन कीने चितचोरनके मेचक वदन हैं ८३॥

स०। अंजनकोरदृगंचलराजतकैमुनिनेश्वरआनिचुभी वै। केहुमुहीयहनागिनकीशिवनाथभनै रसनातिलसीवै॥ चन्दहिचाहिचढ़ीफहराय कपोलनकूल अमीरस पीवै। देखतहीबिषछायगयो उर काटतहीकहोकैसेकेजीवै ८४॥

तथा। खाय हलाहल और न मारत आलीअचम्भव बात सरीहै। नेक दया जियमें धरिये यह तेरेई ऊपर पाप परी है॥ काहेको अंजनदेई सँवारत ऐसे हिये उर शाल

करीहै। को जग नाहिं भयो अभिमान अरी इन नयनन न बाढ़ि धरी है ८५॥

कपोलवर्णन॥

क०। मदनमहीपके मुकुरद्वै सोहात गोल माखन के गोल कैधौं हाथे चिकनाई है। भनत दिवाकर की रूप के समुद्र मांझ रतनसे रूरे युग शफरी तराई है॥ कैधौं स्वर्णशीलचारु चांदीकी कलाईदैके सुषमा बिरंचि राचि हाथसे बनाई है। कैधौं आसमानते मयङ्क द्वै देह होय राधिका तिहारे ये कपोल ठहराई है ८६॥

तथा। सुरभ सुबर्ण जासु पुहुप गुलाब कंज आदर समाजेमनो मदन घनेरे हैं। डोलत सुलोलगोल लोलक अमोल झलक मानो प्रभा तालनील कमल बसेरे हैं॥ भले रघुनाथ दीप्त रासहैं प्रकाशपुंज आसन मनोजके सदा सो मेरेहेरे हैं। पियमन लोल मोल लेनके लिबास कीधौं गोलगोल अमल कपोल तिय तेरे हैं ८७॥

स०। चन्द्रमुखी चपलामी लली लखि लाल मनोज की मौजन बाढ़ै। द्वैरस हासके कूप किधौं पति प्रेमके पूरनको यह खाढ़ै। यों रघुनाथ बिलोकै लसै मुसक्यातही देतीं सुधा जनु काढ़ै। मोहतीं मोहन के मनको मन मोहनी की ये कपोलकी गाढ़ै ८८॥

क०। सुषमा भरतभरे परमाके सांचेढरे सुधासों सुधारिधरे दरपन सुदेशहै। आभाकी निकाई है किदर किधौं कांतिन के तानों पुररूप पुरजनके नरेश है। लपटत लोचन चितक देखि बलभद्र झलकत चौथे किल

फनिके सुदेशहैं। गोरगण्डमण्डल अखण्ड ज्योतिवन्तलेरे छबिके छपाकर कै द्युतिके दिनेशहैं ८९ ॥

स०। शोभाकीसांचमें मैनकीढारी लसैयुगआरसी आनँदखानकी। रावरेडीठिकेबैठिबेको किधौं फाविरही फरसी फटिकानकी ॥ आपैसुनीरघुराज किधौं सरसीयुग सोहिरही सुषमानकी। रुक्मिनिके किधौं गोलकपोल प्रभाजेकरै उभय चन्द्र प्रभानकी ९० ॥

क०। मुकुरसे मंजुल झलकिरहे माणिकज्यों हँसत परतगाड़ अमल अमोलये। कमलकीकोमलाई लागत नानेकजामें रसभरेचीकने लटेतेबने गोलये ॥ गदगदे गोरेभोरे कठिनई थोरे थोरे अरुणाई बोरे चोरे चितहिं भिलोलये। अधरनके प्यारे कैधौं मानहूं के तारे शिव-नाथ छबिवारे चन्द्र निरखि कपोलये ९१ ॥

कपोलगड़हा वर्णन ॥

क०। मानरि परत जल यौवनके जोर कीधौं जामें छबि बूड़त सकल प्रमदानकी। निकसि सकै न कस करिहारी बलिभद्र नैनना मलायबेकीबोड़ीविधवानकी ॥ उदित नवीन होत रितत भरत मानो रूपकी निवारि कीधौं बुंदी सुखदानकी। प्रियमनपारद अटकिबे की गाड़ कीधौं गाड़मण्डमण्डल मृदुल मुसक्यानकी ९२ ॥

तिल वर्णन ॥

स०। राधेकी ठोढ़ीकोबिन्दु दिनेश किधौं बिसराम गोविन्दके जीको। चारु चुभ्योकनको मणिनील को कैधौं जमावजम्यो रजनीको ॥ कैधौंअनंगशृंगारकेरंग लिख्यो

बरबीज बशीकरपीको । फूलेसरोजमें भौंरीबसी किधौं फूलशशी में लग्यो अरसीको ९३ ॥

क०। अमल कपोलपै अमोलगोल श्यामरंग आयके अनंग कैधौं पूतरीसमाईहै । भनत दिवाकर निशाकर कलङ्क कैधौं चन्द्रमाके धोखे मुखमण्डलमेंआईहै ॥ कैधौं कमलासन सँवारि छबि आननके नजरि न लागै याते कालिमा लगाईहै । कैधौं कीलनीलमणि राधिका तिहारेतिल कैधौंकैसबील जादूलालको लोभाईहै ९४ ॥

तथा। कैधौं रूपराशिमें शृँगाररस अंकुरित कंकुरित कैधौं तम तड़ित जुन्हाईमें । कहैंपदमाकर किधौं योंकामकारीगर नुकतादियोहै हेमफरदसोहाईमें ॥ कैधौं अरबिन्दमें मलिन्दसुत सोयोआनि कैधौं तिलसोहत कपोलकी लुनाई में । कैधौं पर्यो इन्दुमें कलिन्दी जल बिन्दु कैधौं गरक़ गोबिन्दभयो गोरीकीगोराईमें ९५ ॥

तथा। फटिकशिला में नीलमणि इकमुद्रितहै कैधौं खेतरजित सनेहबीज बोयोहै । कैधौं रसहास्यमें शृँगार ने अगार कियो कैतूं यशजाल डाल अयशहि गोयो है ॥ भनै रघुनाथ कीधौं यह तिलतेरो गोल गोलही कपोल पै अमोल पीतमोयोहै । कैधौं क्षीरसिन्धुमें गोबिन्द यह राज्यो कीधौं मन्द आनचन्दमें अनन्दमनसोयोहै ९६ ॥

तथा। गाड़पर्यो कैधौं यह मदनमतंगमात्यो कैधौं चंचरीक अरबिंद रसपाग्योहै। कैधौंश्यामघटाकोकनूका टूटि गड़िगयो रस बरसावन सरस अनुराग्यो है ॥ करत बिहार बैठि बालकेबदनपर कुशलसिंह देखो यह

रूपमद दाग्योहै। नैनठगहाँसीफाँसी डारिमारिरसिक मन ताहीते चिवुकगाड़ कालिमासों लाग्योहै ९७॥

श्रवण वर्णन॥

स०। प्रेमकथा रसपीवनको युगकंचन प्यालाकिधौं भलभावैं। आयकै वैन अन्हायवेको किधौं बावली ह्वै अतिमोद वढ़ावैं॥ भाषमुनी रघुराजकिधौं सुषमाके समुद्रकी सीप सोहावैं। राव्रे के गुणके किधौं भौन सो रुक्मिणी श्रौण किधौं छविछावैं ९८॥

क०। कंचनकेपत्र कैधौं मुक्ताजड़ायदीनो प्यारी के वदन मैन मदसों उयो परै। बारिज दलन ओसकन से विराजमान शिवनाथ मंजुल कपोलनछुयोपरै॥ बीचबीच शीतलाके दागन में ढुरिरह्यो ज़ुरिकै उमड़ि आनि कचन दुवो परै। राहुके रदनके छदनबीच चन्दनते छलकि छलकि अमी वुन्दन चुवो परै ९९॥

नासिकासह भूषणवर्णन॥

क०। कीरकैसे ठौर पेख परम प्रकाशमान सुरभि समीरके झकोरझहरातहैं। भनतदिवाकर बुलाश्वेत मोतीसंग कैधौं पञ्चबाणके निशान फहरातहैं॥ कैधौं वेधवायो वेधरूप अतिवेधहेतु कैधौं टूटे चंचरीकतुण्ड दरशातहैं। बेसरिके बेसता बखाने कविकौन राधे नाक के निहारे प्यारे श्याम तरसातहैं १००॥

तथा। कुन्दनलै बिरंचिने नकासी मनो ताके बीच दीन्ह्यों जड़ कुलिश दुतिन्द्रका। ताके आसपास सजे शशिमणि चन्द्रकांत तारागणबृन्द में विराज्यो नखति-

न्द्रका ॥ भनरघुनाथ रमा रतिलखि मोहेजाहि लजतन नाहिंदेखि भामिनी सुरिन्द्रका । द्रविन धनिन्द्रका ल मोल सम जाके यह कृष्णचन्द्र मोहन किशोरी शिर चन्द्रका १०१ ॥

तथा । सुरपति तीकी द्युतिफीकी होत जाहि देखि रहत रतीकला गरूरता रतीकीहै । तीनलोककीकी कहौं जीकीहोययातेअति नाहिंमेंनिकाई द्रौपदीकी नाकनीकी है ॥ भनरघुनाथ चारुअमल सुढारवेस अतिसुखदान कान्हप्राणपतिहीकीहै । वर शुकनासाते बुलाक नथ-वासामंजु परमप्रकाशपुंज नासा लाड़िलीकी है १०२ ॥

तथा । शोभाकी सकेलि ऊंची बेलि बांधी बलिभद्र राखो सम लोचन कुरंगनको रोसहै । दीपतिको दीप कुकी मुखदीपको सुमेरु मृदुमुख सारसको सिकाकुन्द जोसहै ॥ कलपतरोवरकीकली किधौं गंधकली उपमा अनूपमको विविध निसोसहै । तिलको प्रसून है कि नासिका तरुणि तेरी सुरनकी शरणा कि सौरभकोकोस है १०३ ॥

स० । तीनहूंलोककी दीपतिसंचि रचये करसोंतिल फूलधौं मारहै । कै युग अम्बुजके मधि सोहिरही मल चम्पकलीसुकुमारहै ॥ मारके कीरकीतुण्ड किधौं किधौं कामकोतून रच्यो करतारहै । भाषैमुनी रघुराजकिधौं रुकमीनकी नासा बिराजै अपारहै १०४ ॥

तथा । नासिका चारु बिलोकतही बनजायसमोहन कीरछपाने । वेसरिको मुक्ता छबि देत मनो कमलागृह

हज़ारा ।
तोरणताने ॥ श्वाससलते उसके पुटवाल कहैं कवि कोक
होत पलाने । लैशिसकी मुसुकावत भायन घ्राणसुग-
न्धनकी पहिचाने १०५ ॥

नथबेध वर्णन ॥

क० । कैधौं प्रेमरंगको तड़ागहै तरंगभरो कैधौंसुधा
सिन्धुप्रीतिमन्दिरधनीकोहै । चेनकोछलासो मैनफन्दकी
कलासों किधौं रतिकमलाकी मति करनसों फीकोहै ॥
भनरघुनाथ मान सौतिनको मथन निषंग पंचबाणनकी
तीषन अनीकोहै । बेधनीय हीको मौन रसनूप जीको
जुलम करत सुतीको नीको बेध नथुनीकोहै १०६ ॥

तथा । शोभा सुरसदनको वातयन बलिभद्र किधौं
महामोहिनी पिपीलिकाकोगेहहै । पैनोपंचबाणको छबी-
लो छिद्रछाजतहै देखिवे को देहमें अदेहजूको देहहै ॥
पीयमन रोकिबेको निगड़ किलीको रंध्र सुख मधुकरको
सोसिरजासोंनेहहै । मैलकेसवासेमें धनुर्द्धरको मोर चाहै
किधौं वामनासिकामें बेसरिको बेहहै १०७ ॥

स० । सालतहै नटसालहियो सरसालविनिन्दत
तीक्षणताई । देखतही मनभूलिरह्यो कहियेकिमि नासिक
बेधसुहाई ॥ योंशिवनाथ बिराजतराजत लाजतमोतिन
बेधनिकाई । जानिबड़ोवितकामनाओर मनो कमलागृह
सन्धि चलाई १०८ ॥

अधर वर्णन ॥

क० । लालेमृदुउथले सुघुले फलकुंदुरूसे तामें रंग
पानछबि दुगुनीबढ़ायोहै । भनतदिवाकरयों सुमन नवीन

कैसो कोमल रसालदल देखिकै लजायोहै॥ विद्रुम वेरंग होत हारत उदोतपेखि कुसुमके रंगने निरेखि ललचायो है। प्यारी मुखचन्द्रते पियूषरस च्वइ च्वइ अधरै अमल मानो ऊपर में छायो है १०९॥

तथा। गुलगुले कन्दके सुमन्दकर दाखन को देखहु दुचन्दकलाकन्दकीकमाईसी। कहैपदमाकर त्यों साहिबीसुधाकीसबै ब्रजबसुधामेंधौंकहांधौंपरीपाईसी॥ खरक खरीको मधुहूंकी माधुरीको शुभ सरदासिरीको मिसिरी को लूटि लाईसी। सांवरी सलोनीके सलोने अधरानमें सुमन्दमुसुकानिभरी मंजुलमिठाईसी ११०॥

तथा। डाभकेसे चीरेओंठ अलप सुरेख अतिसुन्दर सुरङ्ग इन्दुनारि कैसो तनुहै। मधुर मधुर रस नारङ्गी कली की काक धरीहै सुधारि शुद्ध सुधाको सदनुहै॥ सुघरसुपंकुबिम्बु लीनेशुकचन्द्रगोद लखियतमहामोहनीको यहैधनुहै। बन्धुजीव विद्रुम अनार कलिकाके दल तेरेअधरनकी अरुणताको अनुहै १११॥

स०। दाड़िमफूलके द्वैदलकी किधौं कंचन वेलि में बिम्ब सोहावै। कैमधुसागर के द्वै प्रबाल सिंदूर द्वै लीक धौं इन्दुमें भावै॥ कीअरबिन्दमें इन्द्रबधू अटि द्वैरघुराज प्रमोद बढ़ावै। रावरेके अनुराग के ऐनधौं रुक्मिणी ओंठ किधौं छबि छावै ११२॥

क०। अरुणसे अमल कमलकीसी कोमलाई अधरन देखि बिम्बा करत प्रलाप ये। जाके रूपआगे रूपविद्रुम बेरंगहोत शोचिशोचिमोचिदृग भरतअलापये॥ खीनेहैं

नथूले भूले देखिकै कुशलसिंह देवतानहूंके मन सुखद कळापये। अमीरसमाते ताते चढ़्योहैउन्मादउर द्वैजके युगलचन्द करत मिलापये ११३ ॥

तथा। लालरंगराचेहैं प्रबालते अनोखेअति बिम्बाफल हालते बिशाल द्युतिवारेहैं। उज्ज्वल अनूप अमीकूपके किनारे किधौं ऐसे शची रम्भा रती कौनके निहारे हैं॥ भन रघुनाथ वा विधाता चतुराई धन्य जानै सब शोभाको समेटके सँवारे हैं। निजपियाप्यारे को मनोहर नवारे बने मधुर अपारे प्रिया अधर तिहारे हैं ११४॥

अधरगड़हा बर्णन॥

क०। कीधौं द्विजराज मुखतर्पणको भाजनहै कीधौं प्राणतर्पक चोरापिया दानको। तपसास्वरूपताको तपसाको तपकुण्ड शोभाको सलिल कुण्ड सुरनकेन्हानको॥ राजरूप कन्दरा कि सुन्दरि शरण ताकि बलिभद्र थिर ह्वै बसो है अरिथान को। तेरेतिय ऊरध अधर की पनारीमधि कीधौं हियलोचनपियालो मधुपानको ११५॥

स०। कैधौं गुलाबकी पाखुरीहै यह छांड़ि प्रसूनहि आनिबसीहै। कैयहमोहनीकी मरयादहै काहूकेप्राणन पैठिनशीहै॥ गाड़परो तियके अधरोंपर कै शिवनाथ बुलाक धसीहै। केहरिके उरको तजिकै भृगुकोपदचिह्न सों आनि धरी है ११६॥

दशन बर्णन॥

क०। कैधौं कली बेलाकी चमेलीकी चमकचारु कैधौं कीर कमल में दाड़िम दुरायो है। कैधौं द्युति मंगलकी

मण्डल मर्यंकमध्य कैधौं बीजुरीको बीज सुधामय लि-शायोहै ॥ कैधौं मुक्ताहल महाम्बरमें शेषराखे कैधौं मन मुकुरमें सीकर सोहायोहै। रूपकवि राधिकावदन में रदनछवि सोरहौंकला को काटि बत्तिसबनायोहै ११७॥

तथा। कैधौं दानेदाड़िमके पांति पांति राजत हैं कैधौं इन्द्रबधूकी जमाति जमिबैठीहै। मनत द्विजाकर सुस्वच्छता कहांलौं कहौं श्वेत अनुमान मुक्तागण पैठीहै ॥ कैधौं विधिहीरा खरसानपै खरादिशुभ्र साधि साधि सुत्रनते गोलकील ऐंठीहै। राधिका तिहारे दंत दामिनि बिलोकि व्योम समता न पावै याते दूरि दूरि बैठी है ११८॥

तथा। कैधौं पद्मरागनकी पंगति बिशाल कैधौं हीरन के जालके प्रवाल अलबेलीके। कुंदकलिकाहैं पुं-जकुसुमजपाहैं कैधौं दाड़िमके बीजकैधौंपुहुपचमेलीके॥ भनरघुनाथ शुभ्रस्वच्छ शुचि शोभावान तापैलसैपान लाल रंगरस रलीके। मोहतिहैं मनतमों लुरन्ति द्युति सौतिनके अति द्युतिवन्त दन्तनिरखि नवेलीके ११९॥

तथा। कैधौं कलीबेलाकी चमेलीकी चमकचौका कैधौं अनवेध मुक्ताहल बसाये हैं। हीरनकीखानि यहै जानिये कुशलसिंह कैधौंमणिमरकतके सीकर सोहाये हैं॥ हंसनकेछौना येपढ़नआये बाणीपास कैधौंयशबीज प्यारीमुखहीजमाये हैं। दामिनीचमक कैधौं घसीहैदशन आनि सोरहौंकलानिकाटि बत्तिसौ बनाये हैं १२०॥

तथा। कैधौंकुन्दकलिकाकी अवलीअनूप कीधौंवाणी

कोविपांचिका सुधारिधरी सारिहै। शशीके सदन शशि शिशु आये तीयकाज कीधौं मुखवारिज में वारिजकी धारिहै॥ झलकत रुचिर बतीसी बजबलिभद्र चमकत चारु बिज्जुरीकी अनुहारिहै। अमतके कनतपोधनको विमलमन तेरे ये रदन चन्द्रवदन मँझारिहै १२१॥

स०। कामके बाणनकी फलकांलि भरी किधौं कुन्द कलीदरशाही। कैसुखमाकेसुसीपकेथेसुकुमारकुमारलसैं सँगमाही॥ कैमनहारीअनन्दके खानकी हीरनकी युग औलिलखाही। भाषैमुनीरघुराज किधौं रदरुक्मिणी के हदशोभासोहाही १२२॥

तथा। दाड़िमकेदाने आनिभुलाने मुखहि लुभाने छबिछलकी। कैधौंमुक्ताहलखायहलाहल भयेकोलाहल लखि भलकी॥ भौंरनके छौना करताबिछौना करत न गौना पलदलकी। शिवनाथनरीचीरतनिकशीची चन्द्र मरीचीबलबलकी १२३॥

मुखवर्णन॥

क०। आनन अनूपछबि छलकी छटासी होतज्योति जोन्हनिदै निशिकरचन्दनीकोहै। देखत चकोर से न मुरतसुनेश मन ममतामदादि तमकरै खण्डनीको है॥ व्यास सनकादि वेदविदित विरंचिहरि शम्भु से विवेकी जासुकरैवन्दनीकोहै। कामताप्रसाद कलासोरहौं अ-खण्ड मुख चन्दहूते नीको वृषभाननन्दनीकोहै १२४॥

स०। कैसुखमाकेसरोवरको बिकसो अरबिन्दअनू-पम भावै। रावरे आननदेखिबेको किधौं आरसीआनँद

की छविछावै ॥ केशव की तुम नयनचकोर को रूप सुधानिधि इन्दुसोहावै । भाषै मुनीरघुराज किधौं मुखरुक्मिणीको सुखसिन्धुबढ़ावै १२५ ॥

रसनावर्णन ॥

स० । मणिपारसज्यो हरसम्पुट में मणि भवन दिवा जनु साजतुहै । तिहिकी समता न चढ़ैचितपै जिहि देखिरमारतिलाजतुहै ॥ रघुनाथ भनै पिय प्राण पिया द्युति दामिनिसी छबिछाजतुहै । मृदुवैनपियूषस्रवैजिहि ते रसना मुखचन्द्रबिराजतुहै १२६ ॥

क० । कमल बदनमध्यकमला के काजरचि राखी है कमलदल तलपसुधाही है । कीधौं सरतंतनकी ल... यह बलिभद्र कीधौं सरस्वादनकी परखनहारी है ॥ ललित तमोलरंग गुणकी कसौटी कीधौं मंत्रनकीसूरि परमारथकी प्यारीहै । रसिकरसली प्यारी तेरी मृदु रसनाकी पन्द्रहौं रसनकी रसानन्दकारी है १२७ ॥

तथा । शारदाकी सेज कैधौं सुखकीसहेलीसोहै रस कीसीरानी कैधौं कवित बिधानीहै । कोमल अमलअमी अंशही चुरायकैधौं कमलाकलासी चारुचन्द्रहिछिपानी है ॥ हरिसोंकहतबैन हासरसरीतिप्रीति नीति निपुणाई कैधौं निगमनिधानीहै । कुशलसिंहकैधौं अरबिन्द में निवासकीन्हों बिधिकी बरङ्गनासरस बरदानीहै १२८ ॥

मुखवासवर्णन ॥

स० । सुगन्ध प्रवाह बहै अबला मुखज्यों मलयागिरिगन्धप्रकासी । चम्पचमेलीगुलाबजुहीजही कुंकुम

केसरिपाई सुवासी ॥ चन्दन औ घनसारहि पैठि कियो इन बैठि बड़ोतप कासी। भूतलते भरिमैन बिलोकहि मुक्तभये लहि नाकके बासी १२९ ॥

क०। पूरिपरिमलमलयाचल उरोजनको निजनीर-हारी है कमल गुलपानिको। धूपते अनूपआवै बोलेते बदनवाकबलिभद्रदम्पतिमधुपसुखदानिको ॥ धुनिधुनि तपतेहैं गन्धकीर नासिकाको अधिक अमोद इन्दकुन्द कलिकानिको। सोधेभीजे बारती गुलाबसों प्रसेदकन तेरी देहदीपति सुगन्धन की खानिको १३० ॥

तथा। सोनेमें सुरङ्गसब वैसई लसतअङ्ग जगमग जीवन जवाहिरसो सङ्गतास। रूपतरु कण्ठकासकन्दुक से सोहैंकुच चन्द्रमासे आनन अमन्दद्युति मन्दहास ॥ शोभाकी निकाई देव कामकीनिकाईहूते नीकेभयेभूषण भ्रमरभ्रमैं आसपास। चौगुनीचटकतन चीरकीचटक-हूते सौगुनी सुगन्धतेहै मुखकी सहजवास १३१ ॥

मुसक्यानवर्णन ॥

स०। बोलत बात प्रसूनझरे छहरै छवि होठनकी सुखशाला। भट्ट दिवाकर प्रेमकपाटन ठाटन लोहकी खोलतिताला ॥ राजतहै गजरागरमें घरके चमकैं जनु दीपकमाला। खग्गके धारनते द्विगुणी मुसुकानि लगै अबला तेरी आला १३२ ॥

तथा। नयननकीगति कोरनलौं अरु कोरनकीगति कानलौं जानो। काननकीगति जीभलौंहै गतिजीभकी कण्ठतरेलौं बखानो ॥ कण्ठतरेतेगिरागतिहै यशवन्त

सन्दारसनालौं पिछानो। हैरसनागति होठनलौं गतिहो-
ठनकीमुसुक्यानलौं मानो १३३॥

तथा। गहि हाथ सों हाथ सहेलीकेसाथमें आवतहीं
वृषभानलली। मतिरामसकांति न आवतितीर निवा-
रति भौंरनकीअवली॥ लखिके मनमोहनसोंसकुची
कियोचाहत आपनीओट अली। चितचोरि लिया दृग
जोरि तिया सुखमोरिकछु मुसक्याय चली १३४॥

क०। पूरत पियूषयों प्रकाशत प्रकाश पुंज पूरण
करण कान घ्राणपति साधाकी। सुखद सदाही मोद
सिंधुकी कलोल कीधौं हरण हमेश कृष्णचन्द्ररतबाधा
की॥ भनैरघुनाथ कौन कौन उपमादैकहौं कौनसमता
है रूपसरित अगाधाकी। चौगुनीसुचन्द्रचान्द्रकातेसौ-
गुनीहैयह हांसी चंचलाते है हज़ारगुनीराधाकी १३५॥

तथा। कैधौं द्विजराजनकी तपस्या को तेज येहै कै-
धौं रसन अग्रकीरतिको वासुहै। कलिभद्रताकीछबिरं-
गशुभ्रदेखियत कीधौं सुरआपगाको आननमेंवासुहै॥
सुरनकी ज्योति सरगनकी मरीचिकाकी बीचिकासुबीच
चतुराईको प्रकासुहै। पियप्राण पारन को कीधौं निज
चन्द्रहासु सुखके सुमनकै कृशोदरीकोहासुहै १३६॥

तथा। क्षीरधिकी छीरकैधौं नीरसुरआपगाहै कैधौं
हीर हारनकी हाटहीसम्हारीहै। हंसनकी पांति कैधौं
गुनकीहै भांतिभली कीरतिको सांति कैधौं शारदकीसा-
रीहै॥ अम्बुजकहतबसुधामें कैसुधाकीधारकैधौंहासरस
की हरोलभीरभारीहै। चन्द्रउजियारीकी बिहारी की

वसीकरन सी करनवारो कैधौं हँसनि तिहारी है १३७॥

सं०। शारदकी किधौं पारदसीदिपै दामिनिदीपति मोदकरीहै। कैधौं सबै नषतानिकी ज्योति अकोति बिरंचिबटोरिधरीहै॥ भाषै मुनी रघुराजकिनेक सो दाड़िम मंजु मरीचिभरीहै। कैरुकमीनिकीहासछटा सुखमाकी किधौं महताब बरी है १३८॥

तथा। अधरानहिं में मुसकी वह बाल बिलोकत शातको वारिजलाजै। दन्तनकी झलकी छबिनेक सो दाड़िम दामिनिको मदभाजै॥ माधुरता बरसै शिवनाथ सुधाधरसी परसी छबिछाजै। आनँदकन्द सपूरणचन्द मनो सुखरूपी विनोदन साजै १३९॥

क०। हँसिहँसि ख्यालख्याल करतसखीनहूं सों झरिझरि परत कैधौं मालती के फूलरी। कंठलकलकी तीनों ग्रामसे फिरतुजात शब्दझनकार सोतो सुरअनुकूलरी॥ चौका की चमक देखि तड़ित लजाय जाय घनन्दुरायरही उठी उरशूलरी। फूलझरी छुटत कैधौं छुटत चित शिवनाथ कुटलशीश सौतैजानिसुख निरमूलरी १४०॥

तथा। लुरिलुरि ढुरि ढुरि झुकिझुकि रीझिरीझि आधेआधेबरन कहतकिलकारीसों। सुनत सोहातनेको समुझि परतकैसो चुभकि चिबुकगाढ़परतहहारीसों॥ खैंचिखैंचि पीतपट लचिलचि गातउर अम्बुकउमगि मुसक्यानिअरुणारीसों। ढीलीढीलीभौंहन रसीलीछबि शिवनाथदैदै करतारी प्यारी हँसै गिरिधारीसों १४१॥

बाणीवर्णन ॥

क०। केकी पिक कोकिला अवाजनपै गाजपरी कैलिया लजाय छोड़ि सौरभ पराई है। भनत दिवाकर तिलोत्तमा न ढूंढ़ैकोऊ रूरे राग सुने सबसुरी शरमाई है॥ कैधौं आयशारदा निवासकियो रसनामें बातनके ब्याज बोलि झरतमिठाई है। राधिका की वानी कैधौं सानीहै पियूषरस देतबरदानी ऐसीवेदसुनिगाईहै १४२॥

तथा। अमित लजीली शील सुमति सजीली शुचि सुरसशृँगारमै रँगीली सुखदानीपै। वदन सुधाधर तें कढ़तसुधासनी सहित सुवास रूपरासब्रजरानी पै॥ भनै रघुनाथ शुद्ध सारथ सदैव सुनै रंभारति सकत न वात कर स्यानी पै। वारौं बरबानी वीन कोकिल कहानी कहा नागरी नबेली की सनेहमृदुवानी पै १४३॥

स०। धुनि कैधौं विराजि रही मनमोहनि मैन के बीनकी बेसबनी। विधि रावरेके वशकीबेलिये विरच्यो वसी मंत्र किधौं अवनी॥ रघुराजकहै किधौं रागमयी प्रकटी सुर साजहुकी सजनी। मृदुरुकामिनि के मुखचन्द्रते कैधौं कढ़ै बरबानी सुधासों सनी १४४॥

चिबुकवर्णन॥

क०। मदनकेकूप कैधौं रूपके तलाव मंजु सलिल प्रसेद नील नीरज फुलायोहै। भनत दिवाकर गुलाब फूलि फूलि फूलि तूलीनहिं तूलमूल साखतेसुखायो है॥ कैधौंबैन तौल तौल बोलेकेविरंचिमुख लालमणि छांटि केसुपलरा लगायो है॥ चिबुकतिहारेराधे श्याममनपरे

आई ऊबिऊबि डूबत बिकूबत थकायो है १४५ ॥

तथा। प्रीतम की प्रकट प्रतीति प्रीति भूरिभरी दिपतप्रभूरीप्रभा सुरसअतोड़ीहै। गाड़हैगुनीलीकीली रसपतकीलीमनौ कैधौंकलीकुंजकीमलिंदनीबिथोड़ी है॥ भनैरघुनाथ भूप रसबसबासीभयो कैधौंश्यामबृन्दिय। रीतिकीमतिमोड़ीहै। करत नहोड़ीभई सवति निगोड़ी मनो बाल तुवठोढ़ीकी न जोड़ जगठोड़ीहै १४६ ॥

तथा। कनक बरण कोकनदके वरण अरु भूलत झाई यामें बसन रदनकी। कीनी चतुरानन चतुरराचि पचिकरि आपुऐसीचौकीचारुआसनमदनकी ॥ अंगुल सो वाको उपमानको अवधिसब सुमिलि सोपानमानो प्रीयके सदनकी। सुन्दर सुठामहै चिबुक नवनायिकाकी कीधौं वलिभद्र बादशाहीहै मदनकी १४७ ॥

स०। मैनकेमंजुल ऐनके बागकी आबभरी धौं गुलाबकलीहै। मीतहिजानि मनोजकिधौं रचिदीनी सो चन्दहि चौकीभलीहै ॥ भाषमुनीरघुराज किधौं अनुरागकी आमटिकोरी ढलीहै। रावरे प्रेमकी नारंगि धौं लसै रुक्मिणि ठोढ़ी प्रभा नवली है १४८ ॥

क०। चिबुक प्रकाश कैधौं इंदिराको मन्दिर है कैधौं मैनसर जल भौंर छबिछाईहै। कैधौं ठोढ़ी काटि कै बनायो बिधि शशिमुख ताही ते पड़योहै गाड़ लगत सोहाईहै॥ कैधौंहरिकंठमणिताको प्रतिबिम्बजानि कैधौं भवकूप नरलोगन बनाई है। राजसुखयज्ञताको कुंडहै यहै शिवनाथ शंकासमिधपाइ आहुति बनाईहै १४९ ॥

चिबुक तिल वर्णन ॥

क०। चन्द के चरण परि उबरो तनक तम क्रिधौं तम गुणहीको पदुअतिखीनोहै। लगिरहो लोभ मक-रन्द काज बालिभद्र सारसमधुपकोकि मनुहरिलीनो है॥ मानो कलधौतपीठि बैठो रसनायकहै पियलोचननको परम सुखदीनोहै। काम रँगरेज बांधोचूनरीको चिह्न एक कीधौं तिय चतुर चिबुक चिह्न कीनोहै १५०॥

मुखमण्डलवर्णन ॥

क०। कैधौं अरबिन्दप्रात बापीमें प्रकाशभयो कैधौं सोनजूही पै गुलाब फूल फूलोहै। भनतदिवाकर न ताब महताबआब देखत शिताब आफ़ताबओपभूलो है॥ सखीसेत घूंघुटते सुखमादेखात कैसे मानो जल जाह्नवीमें कंज फूलफूलोहै। शरद मयंक राधेताराके समूहसाथ तापै तेरेमुख के न जोट समतूलोहै १५१॥

तथा। पायज़ेब जेहर जराऊ जरी जोरी हठीमाणि मुक्तान हीराहार उरधारे हैं। सह्लानसमुद्र कढ़ी रमा रमणीय ऐसी अंगनसुगन्ध पाय झूमैं भौंर भारे हैं॥ बैठीहै तख़त खोल बख़्तापियारे जूको मानो काम बाम पै सुहाग चमरढारे हैं। दैकै मृगबिन्दुकीन्ही जोन्ह ज्योतिमन्दराधेतेरेमुखचन्दपैअनेकचन्दवारे हैं १५२॥

तथा। मोतिनकी बेंदी बर कनक जरावजरी पाटी बिच मांग मेरे मनको मह्यो करै। भारे कजरारे अनि-यारे वे तिहारेनैन रैनिदिन मेरे हियरेईको गह्यो करै॥

मीठे वै सुअधर कपोल मुसक्यानि लीन्हें मन्द मन्द मोहिं कछु बातसी कह्यो करै। जितै जितै लखौं तितै तितै सुनु चन्द्रमुखी आनन तिहारो आंख आगेई रह्यो करै १५३॥

तथा। राजत रँगीली रँगभौन रसमाती तहां झांकतझरोखनते ज्योतिनको वृन्दहै। ज्वालामुखी मन्दिर प्रसिद्ध सो दिखात वहां कैधौं स्वर्णशैलकी गुहामें प्रभाकन्दहै॥ भनैरघुनाथ लोगलखत विचारैमनो तारागण चन्दहै कि भानहै कि छन्दहै। चन्दतेहै दूनो दीप्तिकन्द सदा पूनोसम होतहै नऊनो मुखबालाबालचन्दहै १५४॥

तथा। छहरै छबीली छटा छूटि छितिमण्डल पै उमँगि-उजोरी महाओज के उबकसी। कबिपजनेश कंज मंजुलमुखीके गात उपमाधिकात कलकुन्दन तबकसी॥ फैली दीप दीप दीप दीपतिदिपति ताकी दीपमालिका कीरही दीपक दबकसी। परत न ताब लखि मुख महताब आब निकसी सिताब आफताब के भभकसी १५५॥

तथा। कोमलता कञ्जते गुलाबते सुगन्धलैकै चन्द्र सों प्रकाश लैकै उदित उजेरो है। रूप रति आनन सों चातुरी सुजाननसों नीरनीरवाननसों कौतुक निबेरो है॥ ठाकुर बिचारि कै बनायो बिधिकारीगर रचना निहारि कान्ह होत चितचेरो है। सानेसों सुरंगलै सवादलै सुधा को बसुधाको सुख लूटिकै बनायो मुख तेरोहै १५६॥

तथा। आनँद को कन्द वृषभानुजा को मुखचन्द लीलाहीते मोहनके मानसको चोरै है। दूजो तैसो रचि-

बेको चाहत बिरंचिनित शशिको बनावे अजौं मनको न मोरैहै॥ फेरतहै सान आसमानपै चढ़ाय फिर पानी पै चढ़ायबेको बारिधिमें बोरैहै। राधिकाके आननको जोड़नबिलोकै बिधि टूकटूकतोरैपुनिटूकटूकजोरैहै १५७॥

तथा। कोऊकहै है कलङ्क कोऊ कहै सिंधुपङ्क कोऊ कहै छायाहै तमोगुणके भासकी। कोऊकहै मृगमद कोऊ कहै राहुरद कोऊकहै नीलगिरि शोभा आसपासकी॥ भंजनजू मेरेजान चन्द्रमाको छीलबिधि राधेको बनाय मुख शोभाके बिलासकी। तादिनते छाती छेद भयोहै क्षपाकरके वारपार देखतहै नीलमा अकासकी १५८॥

तथा। खगखण्ड तीसरे रँगीली रंगरावटी में ताकि ताकीओर छकिरह्यो नँदनन्दहै। कालीदास बीचिन दरीचिनह्वै झलकत छबिकी मरीचिनकी झलक अमन्दहै॥ लोग देखिभरमैं कहाधौं यह घरमैं सुरँगमग्यो जगमग्यो ज्योतिन को कन्दहै। लालनकी मालहै कि ज्वालन की जालहै कि चामीकर चपला कि रबिहै कि चन्दहै १५९॥

तथा। सुन्दरबदन राधे शोभाको सदन तेरो बदन बनायो चार बदन बनायकै। ताकी रुचिलेनको उदित भयो रैनिपति राख्यो मतिमूढ़ निजकर बगरायकै॥ कहै कबिचिन्तामणि ताहि निशि चोरजानि दियो है सजाय पाकशासन रिसाय कै। याते निशि फेर अमरावती के आसपास मुखमें कलंक मिसकारिख लगायकै १६०॥

तथा। कैधौं सप्तऋषिन के मखनकी सिद्धिपुञ्ज ह्वै सुहंस चखन के मणिनकी ज्योत है। चपला चमक की

चहूंधाचकचौंधे कौंधे नेकहँसे दाडिमदशनद्युतिहोतहै ॥
जगर मगर जागे सगर अगर चारु चाहि चाहि चकित
चकोरनको गोतहै। द्विगुणोदिनेशते चतुर्गुणो चन्दहूंते
हनुमान प्यारी तेरो आनन उदोतहै १६१ ॥

तथा। भृकुटीतनीको लट नागिनिफनीको देव प्यारे
लखि नीकोलगै फैल्यो कंज फीकोहै। मैनकमनीकोनैन
बानकी अनीको चोखे चैन रजनीको हौंस हुलसनि नीको
है ॥ रूप रस नीको कहा रमारमनीको गजगति गमनी
को सीव जीव मुरनीकोहै। बेनी बन्दनीको रुखहास म-
न्दनीको मुखचन्दहूं ते नीको बृषभानुनन्दनीको है १६२॥

तथा। पानप पदुम की बदन झलकत द्युति रूपकी
तरङ्ग तामें प्राणतानियतुहै। यौवनकी ज्योति जगमगत
प्रभासी मानो अजिर उद्योत ताको उर आनियतुहै ॥
मुकुर ते अमल बनाये हैं विधाता विधु बलिमङ्क यहै
उपमा सुमानियतुहै। मेरी जान झाईं झलकत तेरेआन-
नकी ताहीको उजेरो जगज्योति जानियतुहै १६३ ॥

तथा। कैधौंशिवनाथ उदयाचल उदितभयो सोरहौं
कलाते परिपूरण मयंकरी। लोचन चकोरये चलनलागे
चारोंदिशि भरिभरि पियूष रस पीवत निशंकरी ॥ सोते
ये कमलनयनी सकुचि नमितमुख गईमुर्झाय फीकीपरी
छविपंकरी। राधेको बदन येरी सदनसुधाको अति लओ
है डिठौना सोई कठिन कलंकरी १६४ ॥

शीतलादाग वर्णन ॥

क०। कैधौंस्वेद अहर विचारिके बनायो बिधि काम

की कटोरी कैधौं धोय धोय राखीहै । भनत दिवाकर न-
खतव्योमउड़ि कैधौं आननपैबैठिकै सुधाकेस्वाद चाखी
है ॥ कैधौंश्यामसुन्दर डिठौनागड़े गाड़भये जूहीके प्रसून
छबि देखिदेखिमाखीहै । शीतलाके दागराधेमुखमेंलखात
कैसो सांवरो प्रसंगके प्रस्वेद साथसाखीहै १६५ ॥

तथा । झिलमिले कपोलनपै कुण्डल सुडोलनपै को-
किलासुबोलनपै वारिवारिकीजिये । लालमुखपाननपै
चन्द्रमा सो आनन कमलपत्र कानन पै प्रेमरस पीजिये ॥
कोरदार नैननपै चित्तचोर सैननपै माधुरी सुबैननपै अ-
मीरस पीजिये । भागवरेभागनपै ह्वैकै अनुरागनपै शीत-
लाके दागनपै लागन मनदीजिये १६६ ॥

तथा । चन्दकीमरीचीकानतोरि बिथरायदीन्हों कैधौं
हीराफोरिकै कनूका धरिधरिगये । कैधौं काममन्दिर
की झंझरी बनाई बिधि कैधौं सोनजुहीके पुहुप झरिझ-
रिगये ॥ कामिनी मनोरथ सुआलबालशिवनाथ मैनकम-
तङ्गमाते बेलिचरिचरिगये । अमलकपोलनपै दागनहीं
शीतलाके डीठि गड़िगड़िगई गाड़परिपरिगये १६७ ॥

ग्रीवा बर्णन ॥

स० । शंख जड़े मणिमाणिकसों शुभ गोत कपोत
बिलातहैं सीवा । भट्ट दिवाकर रेख निरेखकै मोहे सुरासुर
मानुष जीवा ॥ मालहुमेल जगामगते उपमानहिंतोलत
लाखव दीवा । स्वच्छ मनोहर चम्पकली अवलीन के
संगमें शोभति ग्रीवा १६८ ॥

क० । सप्तस्वर तीनग्राम रागनको धामधन्य मूर्च्छना

सुतानै श्रुतिग्रहमाति पैनीको। कैधौं चन्द्रमण्डलको परमअधार शुद्ध उज्ज्वल अनूप स्वच्छदच्छ पिकबैनी की॥ भनै रघुनाथ शीलशोभा को निवास यही प्रीतम की प्रीतिकी प्रतीत करदैनीको। कम्बुते सुढारस्मचार है कपोतहुँते रम्भारतिकंठनै सुकंठमृगनैनीको १६९॥

स०। कोकिल कण्ठकी त्योंहीं कपोतकी कीरहुकी कलकांति नकासी। कारीगरीकरि कामहु जो रचै कम्बु सुधानिधिको छबिरासी॥ भाषैमुनी रघुराजतऊ सति मानिये तीनहूं लोक बिलासी। पावै न गो समता रुक्मीणिके ग्रीवकी सो सुठि मोद प्रकासी १७०॥

तथा। लचकैजिमि चारुकबूतरकण्ठहि रेखबिराजत कम्बुकलासी। देखि कपोलन फाँसिदई उरजानि यहै छबि भानुमलासी॥ हंसनके चितचोपभई बिचरैं करि आठहु याम तलासी। यों शिवनाथ बनीनवला कसला गृह कञ्चनकी लवलासी १७१॥

भुज वर्णन॥

स०। जोशनबाजूबिजायठभूषित दामिनीसीदमकै अतिगोरे। भट्ट दिवाकर बांह डुलाय दिखायकै लाल लियोचितचोरे॥ अमृतकी लहरीसीलगै जबलेतछिपाय करेजनतोरे। नाक में पेखी न ऐसीसुरी रति रम्भा परीको दिमाक बिलोरे १७२॥

क०। सोनाकी कलीपै कैधौं भँवरा लपटि गयो कैधौं काले रङ्गनके लायलाय चूरीहै। भनत दिवाकर कमल से अमलअति देखिद्युति बिधुने बिहाय समै मूरी है॥

दीप कीसी खासी चपलासी चन्द्रिकासी खासी युगल हथेरी रंगमेहँदीकी दूरीहै। बिद्रुमकी बेलीसी नवेली के सुअंगुरीपै नखत के पांतिसों नखन मानो पूरीहै १७३॥

तथा। कैधौं अर्थधर्म काममोक्षफलदातावृक्ष स्वक्ष दक्षदान भृत्य पक्षको अथोरीके। रम्भाते सुढारु चारु उज्ज्वल मृणालहुंते पङ्कज गुलाब शृङ्गरतिमदमोरी के॥ भनै रघुनाथ ऋद्धि सिद्धि के निवास किधौं परमप्रकासवान पियचित्तचोरी के। सुकृतजरूरे पतिपदरत रूरे यह दीपतिप्रपूरे कर कीरतिकिशोरीके १७४॥

तथा। तनतरुवरकी उभयशाखाबलिभद्र सुन्दरसुडोल अतिगोलसमतूलहैं। सांचे भरिढारी बिधि दामिनी के दोऊटूक दमकति द्युतिनाहीं दुरतिदुकूलहैं॥ सुखके सरोवर के पोषे हैं मृणाल कीधौं कूलेकरअग्र कोकनदकेसे फूलहैं। कोमकन्द मेरेभाय कुन्दन कनकदण्ड कीधौं गोरी भामिनीके गोरे भुजमूलहैं १७५॥

स०। कैधौं सुधा के सरोवर के ढिग सोहैं मृणाल उभै अतिभाये। कैधौं मयङ्क पियूषके पानको पन्नग पीतह्वै ऊरधधाये॥ भाषैमुनी रघुराज किधौं युग हेमके दण्ड अखण्ड सोहाये। कैधौंलसै सुषमाकीलता किधौं रुक्मिणी के भुजह्वै छबिछाये १७६॥

क०। हलत चलत कैधौं क्षीरनिधिकी लहरि भाई सोभुजन नन्दलालन लोभायगो। गोरेसेअमलये कमल कीसी कोमलाई हेरि हेरि सौतिनको मुखकुम्हिलायगो॥ ऐरापति करकीसी तरासरी शोभियत चोभियत

चित्तमाहँ ऐसीछवि छायगो। कण्ठकेबसैया कैधौंआनँद दिवैया शिवनाथबरसैया रसलोचनअघायगो १७७॥

करतल वर्णन॥

क०। कैधौंप्रीतिपीतमकी सनदलिखीहै बिधि लेखनी बिचित्र चित्तहरनमुनीनके। अमल सुधासोंभरे ताल युग सोहैं बाल बिचरन काज किधौं प्यारे मनमीनके॥ मनैरघुनाथ किधौं सुरतरु तेरो तन शाखाभुजपत्र यही नायकप्रवीनके। दरपण दिव्ययों सुधानिधिसी सभापुंज प्रफुल्लितकंज किधौं तारे करपीनके १७८॥

तथा। सुन्दरि छबीली प्यारी तेरे करतल येतो लिखे हैं बिचित्र बिधिलेखनी सुरेखसों। कञ्चनसे दरशत माखनसे परशत भरेहैं सोहाग सब भागहीकी रेखसों॥ कमलकली से प्रेमनेमनीके बंधपाय रूपके अभासित मिलेहैं मानो बेखसों। बांचतरहत नितनाहके नयनबुध बलिभद्र लगत न नयन निमेखसों १७९॥

अंगुली वर्णन॥

क०। कैधौं कल्पतरुवर शाखा ये सोहावनी हैं मन ललचावनी सदाही निजवरकी। जगमगहोति ज्योति नखनखतावलिकी पदिक प्रकाशके मरीचीहिमकरकी॥ मनैरघुनाथ किधौंकुसुमकली हैं भली पुरदफलीहैं कैपती के मनहरकी। कैधौं यह अंगुली तिहारे करपङ्कजकी कैधौं अनीकामके प्रसून पञ्चशरकी १८०॥

तथा। फूलेमधुमालतीके पुहुप पुनरभव मानो बलिभद्र पञ्चशाखा देवतरकी। केसरिकलीसी कलधौतकी

कलीसी कीधौं कली भलीभांति कञ्जलता कामशरकी ॥ कोमल अमल अष्टदशाचक्र चिह्नराजै जीतीशोभा दिशा दशहूकी सुरनरकी। तेरेनन बसन तनके तन धरि तन्ले- किधौं करपल्लव किशोरी तेरे करकी १८१ ॥

स०। कै किशलै में लगी फली मूंगकी कोमल मंजु महामुद लानी। पञ्चदली किधौं फूले सुकञ्ज सुगन्ध सने सुषमानके खानी ॥ पञ्चशरै शरपञ्च किधौं जड़्यो कञ्चन पीठपै शोभाअमानी। कै रुकमीणिके पानिलसै रघुराज सुकीर्त्ति कवीन बखानी १८२

नख वर्णन ॥

क०। कैधौं पद्मरागन में मीनावर हीराजड़े कैधौं कञ्जपातनमें बुन्द ये सुधाकेहैं। कैधौं अमीकुण्डनमें तारागणकेलिकरैं देखैं मुखचन्द महामोद छबिछाकेहैं ॥ भनै रघुनाथ किधौं हास्यरसहीके भौन कैधौं यशरत्न किधौं महलप्रभाके हैं। कैधौं दिव्यदीपनिकेधामहैं अनूप किधौं दश नखनीके अंगुली में राधिकाके हैं १८३ ॥

तथा। मानो अधगुञ्जकासे चंचुक चकोरचष चाञ्चुक चमक चोज बिद्रुमतमालके। चेटकके चिह्न कैधौं नटकके सुन्न कैधौं हाटकके हुन्न देशदक्षिण के चालके ॥ जटित जरायमधि नायक अमोल मोल गोल गोल मोती मानो मणि हेमपालके। अंगुरी अनीकी नीकी कनककनीसी कैधौं कामिनीके नखकेनगीना कामलालके १८४ ॥

तथा। कंचनके पल्लव में क्षोभके वठीक मानो लिख्योहैउचाटमन्त्र बिधिमोहसों भयो। सुधाकोस्रवतमणि

माणिक लसत सोहैं आंगुरी किरणि ज्यों प्रभाकरउदय भयो ॥ मेहँदीरचितनख कैधौं मैनपंचबान खरसानधरे सोनोपानी तिनको दयो। आंचरके ओटते अचानकही डीठिपर्खो तेरोहाथ देखे मनमेरो हाथतेगयो १८५ ॥

कुच वर्णन ॥

क०। मदन महीप कुच गुम्मज उठायउर भृकुटी कमानबङ्क मारत निशानाहै। भनत दिवाकर सुरेशनर नागलोक धीरताबिहाय सबअंग थहरानाहै ॥ करत बिचारलोग अबनाब्रचैंगेजान आंखिनकेसान मानो बीर रससानाहै। योबन उरोजबर सुन्दर उतंगबाम अजब अनोखोबाण काको ना समानाहै १८६ ॥

तथा। कैधौं जगजीति मार दुन्दुभी उलटि दीन्हे कैधौं पीन श्रीफल छिपाय उर राखेहैं। भनत दिवाकर गयन्दमणिहारगंग चक्रवाकतीरमें सिकोरबैठिपांखेहैं॥ कैधौं हेमकलश पियूष रसभरि भरि काले रंग मुख पै सुआधेरंग दाखेहैं। तुंगकुचरुद्रसे करेरे गोरे गोलगोरी पूजनकरेमें मन काको ना भिलाखेहैं १८७ ॥

स०। हूजे न आतुरहू अबहीं वह जानै कहां रतिकी परपाटी। खेलत साथ सहेलिनके फिरै आंगनमों नहिं अवघटघाटी ॥ बूभिपरै कविराज अहू अब मैन महीप कीलागीहै सांटी। योबनजामत यों उकसैं छतियांक्षिति ज्यों गुण आंकुर माटी १८८ ॥

क०। सुन्दर सजीले परलम्ब सहजीले राधे परम लजीले शुभकाजन कजीले हैं। बेलिन बसीले अलि

बेलिन हँसीले आदि रसमें रसीले रूप यशमें यशीले हैं ॥ नेह रसशीले परनेह परशीले अनुनयन बहकीले चटकीले मटकीलेहैं । तेरेकुचनीले छूटि छबीसे छबीले मानो पन्नग रँगीले मैनमंजु बतकीले हैं १८९ ॥

तथा । गौन को नवेली तू भवनते न बाहरहो कुच तेरेकंचन मनोजद्युतिहरिहैं । फूलऐसी माल औदुकूल ऐसी चपलासी ललितन देखे चिलकनसी नजरिहैं ॥ कहैद्विजनन्द प्यारी पूतरी छपायचलो अबतो ये नयन तेरेरी पषान फारिहैं । ऐसी कसबाती तूतो नेक न डराती काहूछाती न दिखाउ कोऊ छातीमारि मरिहैं १९० ॥

स० । घूंघटके पट ढालबने बरछीकी अनी झुलनी झलकावै । नागगती दोउयोबन जोर सो नयन महाव-तहूलतआवै ॥ ध्यानडिगैं मुनि ज्ञानिनके जबकामिनि नयन के बाण चलावै । घायलसे घुमैं कितने बिधना यहि नैनके बाणबचावै १९१ ॥

तथा । योबन ज्योति जगामग होति शृंगार प्रभा सरसावतहै । रीझिरहैं लखि लालके लोचन मोद हिये भर आवतहै ॥ सोहत टीको जरायजरयो तिय भाल महाछबि छावतहै । मानहुं चन्द्रके मण्डलमें दिननायक शोभा बढ़ावतहै १९२ ॥

क० । अचल चकोरकी कलीहै कोकनदकीसी दा-ड़िम जँभीरी किधौं फटिकै के पोआहैं । श्रीफल सोहाये किधौं कोकनिके शावकहैं शृङ्गगिरि शङ्करकी कंचनके लौआहैं ॥ कञ्ज की कली हैं कैसिधौरा रूपराशिभरे योबन

के मग किधौं पकेसे बटोआहैं। अतिही कठिनहैं बखाने नाहिं जात क्योंहूं प्यारी के पयोधर कि काम के बटौआ हैं १९३ ॥

तथा। उठेहैं उठानकरि उरज उचौंहैं दोऊ सुथरे गोलारे गेंदवारे गातगोरेमें। कैधौं हेम गुम्मज बनेहैं भांति आछिनके आछेफल श्रीफल कमल मुखमोरेमें॥ उपजो अचम्भो ये परीहै पहिचान धोखे चकित बिराहिम कहत सब ओरेमें। मेरेभुज भेंटिबेको भागकहा देखियत जाके महादेवजू बिराजमान कोरे में १९४॥

तथा। इन्दिराके मन्दिर अमन्दद्युति कन्दुक से बन्धुर बिमोदभरे युगधौं बिरदके। तारापति ललित लताके स्वच्छगुच्छ कैधौं श्रीफल सुफलभये आनिअनहदके॥ कैधौं चक्रवाक युग बैठे ऊंचीभूमिपर तुम्बके परनतीर बासी नाभिनदके। सुभग सरोजसे उरोज तेरे ओजभरे कैधौं मीरफरश मनोज मसनदके १९५॥

तथा। श्रीफलशरीफा किधौंदाड़िम नरंगीरूप कैधौं स्वर्ण सम्पुट बिशाल छबि वारीके। कैधौं यह गिन्दुक गुलाब अनफूले कंज गुंजत मलिन्द मनो आसरस भारीके॥ भनै रघुनाथ हेमंकलशरतीकृतकै पतिनटनागर के बाट खिलवारीके। रसपतिबासकै निवासद्युति शोभा धाम आसनहैं काम कै उरोज प्राणप्यारीके १९६॥

तथा। अमलकठोरे गोरे चीकने उतंगभोरे बरबस मारे मन नेक ना डरोलये। शीशपै झिलमडारि बदत न काहू सूंघा लय सालकरे घावकठिन करोलये॥ ऐंडि

के अड़त आनि खेत रस जूझहूमें टरत न टारे भारे रति के हरोलये। अड़ा अड़ीपरेते अँचलपै चलायदल कवि शिवनाथ छीनि मैनके सरोलये १९७॥

तथा। कैसे रतिरानी के सिधारे कवि श्रीपतिजू जैसे कलधौतके सरोरुह सँवारेहैं। कैसे कलधौतके सरोरुह सँवारे कहि जैसे रूप नटके बटासे छबि ढारे हैं॥ कैसे रूप नटके बटासे छबि ढारे कहि जैसे काम भूपतिके उलटे नगारेहैं। कैसे काम भूपतिके उलटे नगारे कहि जैसे प्राणप्यारी ऊंचे उरज तिहारे हैं १९८॥

तथा। कंजकी कलीसे उपमानहूं भलीके सोहैं सुषमा थली के लखि सौति मतिछरकी। कोकयुग नीके पीके हीके मे हिबेको करी हेमकुम्भ गास करतूति निज कर-की॥ गिरिधरकहैं कुचनीके कामिनी के इमि तापै मुक्तानि माल छाजै छबि बरकी। मानो शम्भु शीशते भगीरथके साथ काज निकसी अपार युग धार सुरसरकी १९९॥

तथा। आजु अलबेली अलबेले संग रंगधाम रति बिपरीत पूरी प्रीतिसो करतिहै। उझकि उझकि झुकि झुकि लचकीली लंक आतेही अशंक अंक प्यारेको भ-रति है॥ गिरिधरदास उभय उरज उतंग सोहैं उपमा कहत बनि लाजही धरतिहै। मानो हैतुम्बराखि छाती के तरे तरुनि सूरत समुद्र बेप्रयासहि तरतिहै २००॥

स०। कोईकहै कुच कंचन कुम्भ सुधारससे भरराखे हैं ओऊ। श्रीफल शम्भु सुमेरुसमान मनोजके गेंदकहैं कबिकोऊ॥ मोमनमें उपमा असआवत भाषतहौं पुनि

होउ न होऊ । जीति सबै जग औंधधरे हैं मनोज महीप के दुन्दुभि दोऊ २०१ ॥

हृदय वर्णन ॥

क० । सुमति सुशील अम्बु सरवर शोभावान कैधौं प्रियप्रेमको पयोनिधि सुनीत है । बिम्ब कुचबीच रोमराजी अति सोहतिहै मेरुते प्रकाशी मनो भानुजा पुनीत है ॥ भनैरघुनाथ चारु हीरनकोहार गङ्ग लालनकी माल बहै शारदा प्रतीतहै । तेरेतन तीरथ प्रयागमें त्रिबेनी तट प्यारी उरमाधवको मन्दिर पुनीतहै २०२ ॥

तथा । लाल गुनमुक्तासी सुरसरि सरस्वती बीच सुरसुता रोमराजीसुखदेनीहै । शुद्धभये न्हायकरि नयन हरिरायजूके बलिभद्र सकल अदान केरी छेनीहै ॥ रस पतिहास अनुराग रस रसको कि पदुम पदुम मुख पदुम नसेनी है । रजतमसत की त्रिरेखा हृदय मैनाकी कैधौं तिय तेरेउर त्रिबिध त्रिबेनी है २०३ ॥

रोमावली वर्णन ॥

क० । कारे सुकुमारे पन्नगीके रूपधारे बीर कैधौं फोरिपरबत कलिन्दजाके धारे हैं । भनतदिवाकर बिरंचिभाल भाग लिखि करते छटकि मानो मसीके पनारे हैं ॥ कैधौं जलभौंर सुधाकुंडपैरिबेके काज कीरके बिनोदजात बांधिके कतारे हैं । कृष्णाकर झाईके झलकझलकारे कैधौं उदररोमावली नवेली के बिचारे हैं २०४ ॥

तथा । लागेलाल चौकीमें बिराजे हरीराम कहै रोमावली दण्डहै अकालदिया कामको । कैधौं जलधर एक

धारा सो बिराजतहै कैधौं कबरीकी परछाईं झाईंश्यामको ॥ कैधौं गजसूंड़ि नाभि कुण्डजल पानकरै कैधौं कामदेव लिखिराख्यो रति कामको । कैधौं कुचभूप सीमा बांटि लीनो आधोआध कैधौं है पिपीलिका की पांति चली धामको २०५ ॥

तथा । पागरसपतिकी बिनत नाभि कुण्ड बैठी मेहरि मनोभवकी परनि को तारुहै । सरलअलपहीकी छातीहै अलप कीधौं भक्षतते भागिवचो भोगिनीकुमारुहै ॥ बालानन सदन सम्हारिबेको बलिभद्र धरि गयो रेखामूल बांधि सूतधारुहै । पातमे उदरपर तेरी रोमराजी कीधौं जमल उरोजनकोठई म्रदुवारुहै २०६ ॥

स० । प्रेमके कूपते हेत कलोल कढ़ी यकपन्नगी कैधौं बिराजै । इन्द्रमतंगके दानके छिद्रमें भौंरनकी अवली किधौंछाजै ॥ भारती भौंरमें कैधौं कलिन्दजा धारकी लीक सुढार सुभ्राजै । नाभिके ऊपर कैरघुराज सुरुक्मिणी रोमावली रुचिराजै २०७ ॥

तथा । बैठी मलीन अली अवली कि सरोज कलीन सों ह्वै भिफली है । शम्भुगली बिलुरीहीचली किधौंराग लली अनुरागरली है ॥ तेरी अली यह रोमावली कि शृंगार लता फरु फैलिफली है । नाभिथलीते जुरेफल ह्वैरु भली रसराज नली उछली है २०८ ॥

त्रिबली बर्णन ॥

क० । जंघयुग डोरिधरि लहरी सुरोमझोरि नाभी के हलोरिभौंर लंबकुचगहीहै । भनतदिवाकर अन्हा-

न रस वापीलाख भये अबिनाशी ऐसी पुण्यशुभ लही है ॥ कोककी कलानसोइ यशकेसमान नवकेलिकेकथान सो निदान मंत्रकही है। उदर सुदार तेरे पानके समान प्यारी त्रिबलीतरंग परलोकसीढ़ी सही है २०९ ॥

तथा। पुरटशिलापै किधौं सोहत सुधाको कुण्ड तापै आहिं तीनकला अमृत पिवैयाकी। कैधौं छबिकूप नीलमणि मुखबन्धनपै रोमावली डोरचन्द्र सुजलभरैयाकी ॥ भनैरघुनाथ स्वच्छरुचिर गहीरशुद्ध हर्णहार हीतलसुज्ञान ब्रजरैयाकी। दलत हमेशामानसौतमनसाले बल त्रिबलि संयुक्त नाभि नवल दुलहैयाकी २१० ॥

तथा। पानसों उदर तामें त्रिबली बिराजमान कैधौं त्रैलोकहू की शोभा मर्य्यादरी। नाभिकी गँभीरता बिलोकि मन भूलिजात सुरसरि सलिलके भ्रमनछबि छादरी॥ कोमलअमलद्युति गोरीकी गोराईवर हेरिहेरि शिवनाथ नैननसी आदरी। कैधौं पार कूप ये अबला उझकि झकि उठत तरंग कैधौं हरत बिषादरी २११॥

नाभि बर्णन ॥

क०। सुखकी नदी में कैधौं परत गँभीर भौंर धराको तखत पियलोचन अरथकी। कैधौं बरषामें रोमराजिरहे पन्नगकी कैधौं खानिखुलीहै जवाहिरके गथकी॥ घासीराम कैधौं सौति सुखनकी भाकसीसी मानभई खिरकी उरज गढ़पथकी। एरीमेरीबीर तेरी नाभीरसभरी कैधौं दोतकरताकी कै मथानी मनमथकी २१२ ॥

पीठ बर्णन॥

क०। बेनीछुटिशीशते लटकि झूमिझूमिकर नागरिके धमिके पनारी पीठिह्वैगई। भनत दिवाकर पुरट पात रंभकैसे ऐंचिकर आंचर चटाक चित्तलैगई॥ ताछिन ते लाल खानपान ना दुकूलसुधि अंगअंग सात्त्विक अनंग बीजबैगई। राधिका रसीली तेरी कहांलौं बखानोंछबि कबिगण उपमा अनूठी सों अथैगई २१३॥

स०। मृगनैनी की पीठिपै बेनीलसै शुभगन्ध सनेह समोयरही है। अतिचीकनी चारु चुभी चितमें सुसुकेशसुकेशन जोयरही है॥ कबिदेव कहाकहिये उपमा रबिकी तनया तन तोयरही है। मनो कंचनके कदलीदलऊपर सांवरी सांपिनि सोयरही है २१४॥

क०। कञ्चनकी पाटी तामें सोहन कस्यो है कैधौं मोहनी के मोहनको मोहनको बानरी। कैधौं बेनी भार ते पनारी परिगई प्यारी देवनकुमारी बलिहारी छबि कानरी॥ कुशलसिंह हेरिहेरि हाहाकरि खोलि खोलि बोलिबोलिदीन्ही वै अदीनी भरी मानरी। नीठि नीठि पीठि प्यारी परसत परमप्राणि मानिमानि नेह कीन्हीं प्रेम पहिचानरी २१५॥

कटि बर्णन॥

क०। सारी जरतारी बूटी मोतिन किनारीदार किङ्किणी झनक नीबीछबि छहरातिहै। भनत दिवाकर उरोजपीन भारनते बिजनबयारिलागे अंगथहरातिहै॥ सिंहिनी सुनतिकान आपने अधिकखीन दीनह्वै मलीन

मन हिये हहरातिहै। राधिकाके लंकलाल केलिपरयंक पर नीठि नीठि ईश्वरसी दीठि ठहरातिहै २१६॥

तथा। छहरतिछबि क्षितिछोरनलों छाटिछटा बशकिये छैलन छकायेहिरलतिहै। छीरदकी छोहरीसी छपासी प्रवीण बेनी छपामें छपाकरकी छातीमेंलसतिहै॥ छला छाप छाजत छराके छोर छिटकत छवनि छुवतछन घुतिसी लसतिहै। छीन कटि छोटीसी छबीली ने छटांक भरी छाई छलछन्द छितिपालहि छलतिहै २१७॥

तथा। सुमनमें बास जैसे सुमनमें आवैकैसे नाहीं कहूँ होत नाहीं हाँकहे छहत है। सुरसरि सुरजामें सूरसुता सोहै जैसे बेदकेबचन बांचे सांचेउचरतहैं॥ परिवाके इन्दुकी कलाज्यों बसै अम्बर में परिवाकी अक्ष परतक्ष ना लहतहै। जैसे अनुमान परमानपरब्रह्म जैसे कामिनी कीकटि कवि भीरन कहत है २१८॥

तथा। लाजैजाहि निरख सुलंकलख केहरिहू पुनि रति रम्भाको गुमान गुरु हारो है। तामें किंकनावल बिशाल सुखारी बजै बर जरतारो लख्यो घांघरो घुमारो है॥ भनै रघुनाथ मंजुमृदु मखतूल तुल्य सौरभ गुलाबलों सुजान अलिधारोहै। कैधौं इन्द्रजालको यतीमैंहूं निकास्यो बिधु कुन्दन तपायबारु सुकटितिहारोहै २१९॥

तथा। तागसों तपासों बारलाकसों लोकंजने सों छिद्रकैसो छन्दकहिबेको छलियतुहै। चितहिपरतचकि जातहै चितौनि जौनि नैननकीगतिको गुमान दलियतुहै॥ पगनधरत धरकतहियो बलिभद्र डगनभरतु डग

डग डगियतुहै। कंचनके भार कुच भार कुलहार भार ऐसे छीन लंकसों निशंक चलियतुहै २२० ॥

स०। अंगकी सूक्षमताको कहै कटिकेहरिकी समता नहिंपावै। तार औवार सेवार कतार बिचारकिये लघुही मनभावै॥ देवकीसूनु सुनो रघुराज सुरुक्मिणी लंक अनूप सोहावै। ब्रह्मबसीठि धौं जीवकी पीठि धौं दीठिहै कीधौं न दीठि में आवै २२१ ॥

तथा। सूक्षमलंक बिलोकत बालकी केहरिजायभयो बनबासी। सूमको दान कि गौरिको मान सो छीनिछवो ऋतुहै बिमलासी॥ भूतनहीं चितयो चितचोरत कादर की दृढ़ता जिमिनासी। कुचभारन ते लचिजात अजो शिवनाथभनै प्रियमानक्षमासी २२२ ॥

नितम्ब वर्णन॥

क०। कैधौं खरीखीनकटि निकसीनितम्बपीन कैधौं रातसमर प्रहारताके आलसी। भनतदिवाकरकी मदन तमूरधरे मेखलाके रव सोइ बाजत है झालसी॥ कैधौं जातरूपयुग हण्डिका उलटिराखे होत जगमग ज्योति सभाबरजालसी॥ हरूवेबदनताकेथम्भनलगीयों मानो सौतिउरसालत है पेखिपेखिसालसी २२३ ॥

तथा। बालाबालबैसके बिताइक किशोरकर्ण हर्णआतुरीके चातुरीके देनवारे हैं। मत्तगज ठवनि सिखावन गुरूहै किधौं प्यारे प्रेमरंगके सुवर्णघटभारे हैं॥ भनैरघुनाथ विश्वबिजय बिलोकिमैन उलटिधरेकै सन्तकुम्भके

नगारेहैं । कैधौंप्रभापुंजस्वच्छसुन्दरगुलाबरङ्ग प्यारी मृदु युगलनितम्ब ये तिहारे हैं २२४ ॥

तथा। गानकरिमदन तँबूरन उलटिधरे कंचन बरण दोऊलगत सोहाये हैं। चीकनेउठौं हैं मृदुबालके नितम्ब बर महिमा न कहिजात ऐसीछबिछाये हैं॥ शोभाकोसमेटि औ लपेटि सब उपमान चायनसहित बिधि इनहीं बनाये हैं। कैधौं जगजीतिरति आपनीदुहाईफेरि नौबत बजाइ ये नगारे औंधाये हैं २२५ ॥

जंघ बर्णन ॥

क० । केदलीदलहै सुऊषमसहितएतो एतोहैमयूख मय गुणहित तेरे हैं। जाकीकहूं रोमनकीपावैनरमनरुचि मेरेजान रम्भाहू के करभकेरेरे हैं ॥ रदमतिजिनकी दुरदकरजे कहत धुर कामरथ उपमानते अनेरेहैं। शोभा के सदनके कि काचे कलधौतखम्भ कीधौं मृगलोचनी युगलजंघ तेरे हैं २२६ ॥

स० । कंचनकेकमनीय किधौं कदली अपने उलटे करिराखे। मैनमतंगनके कैभले सित शुण्डहैं पीनअमी रसचाखे ॥ कै सुषमा तियके करके करभै जुमहे सुषमा तरु शाखे। बिम्ब बिजयरसराजके कैधौं रुक्मिणिजंघ के कामदुशाखे २२७॥

क० । हाटक समान रम्भखम्भसीलसत जानु केलि में निधानु मानो भानुराते प्रातके। भनत दिवाकर बितुण्ड शुण्ड गोलरोल उपमाअतोल रसराज कान्हघात के॥ घनसार स्वच्छता सुबासता घसीसी जामें एतोमैन

मानवोतो देवबृन्दजातके। कौन कौन बातकी बड़ाई करों खोजिखोजि कामिनीके जंघयुगडारपारिजातके २२८॥
तथा। शोभाके निवासको लगे हैं किधौं स्वर्णखम्भ कैधौं चन्द्रस्यन्दनके युग धुरधारे हैं। रम्भाखम्भरम्य किधौं सुरुतरुशाखा युग सुखद सदाहीं निज प्रीतमको प्यारे हैं॥ भनैरघुनाथपीन अमल सुवर्ण कंज दामिनिते अमित अमोघ द्युतिवारे हैं। कैधौं ये सुधारस भरे हैं इक्षु दण्डदोइ किधौं कामदण्ड जंघयुगल तिहारे हैं २२९॥
तथा। कैधौं मैनमंजिनी मतंगिनीकी सकुच छीनि कैधौं हंसहंसिनी बिहारकी चलनिहै। कैधौं सुखसागर थहावत मयंकमुखी कैधौं नन्दलाल मनमाणिकझलनि है॥ हेरे हेरे हेरि हेरि हठि हठि हरिननयनी झूमत झुकत कैधौं केशरी मलिनहै। शिवनाथ कैधौं अनुराग में सुहाग बेलि फहरि फहरि फैलि फूलन फलनिहै २३०॥
पिण्डुरी वर्णन॥
क०। शोभावान परम प्रकाशित लखैहौं बने किह बिधनाने निजहाथसों सवाँरी हैं। मोहन की मोहनी सुढार मदमातीमैन देखतही सौतैं मानछोड़ हियेहारी हैं॥ भनैरघुनाथ रम्य स्वच्छहैंप्रवालनतैं युगमहताबी मनो मनसिज वारी हैं। रम्भा खम्भ अग्रकम्बुद्युतिप्रतिबिम्बीकिधौंगहव गुलाबीगोलगुलफ तिहारी हैं २३१॥
तथा। कीधौं बैस बेलिबेको बेलन बनायबिधि शोभाघर सघर सकल सुखदाईकी। कोमल अमलदल कोतिकीके कलिकाकी कसरि कलाई मानो मनमथ राई

की ॥ कीधौं बलिभद्र शोधि सकल सोहाग मनु सुचिर रुचिर रचि पचिकै बनाईकी। आभा खण्डि सौतिन्न की ऐपनसों माड़ी तातें कीधौं प्रेमनीयै तेरी पेंडुरी सुभाई की २३२ ॥

तथा। कञ्चन के खम्भ कैधौं ईंगुरसों बोरिराखे गोरे गद्दगदे चोरे चितहिं अमोलये। केलिके निधान कैधौं मदन बिमान रूरे सरस सवाँरे प्यारे करन कलोलये ॥ जंघन युगलदेखि कदली लजायबन्न गहनदुरीरहै बिराजी छबि नौलये। कीरहिं बिलोकिकै पटकि डारै बारबार ऐसे सुखदायक अमलमृदुगोलये २३३ ॥

सुरवा बर्णन ॥

क०। पायजेब घुंघुरू घुमाउ देई जेबपायँ नूपुर के रुनुक झुनुक ललचायये। घूमि घूमि लालमणि घूमत गोलाइनमें चाइन बढ़ाय जबजीव अटकायये ॥ महरू दिवाकर भनत कोक पण्डितहै मण्डित पलंगपे छटाको फैलायये। राधिका रसीली गरबीली तेरी सुरवाने सुरीवो परीके किन्नरी के कहरायये २३४ ॥

स०। लख लाजत जाहि मरालगते गजराज तजैं गत आतुरवा। द्युति देखत दामिनिहू सकुचै दुरजात घने घनके कुरवा ॥ रघुनाथ भनै मृदु चाल चलै अतिप्यारे लगै सकरी चुरवा। मन मोहतहै जग मोहन को मनमोहनीके पग के सुरवा २३५ ॥

एंड़ी बर्णन ॥

क०। बिम्बमे प्रबाल से न ईंगुरगुलालमें न चम्पक

रसाल में न नेसुक निहारे में। दाड़िम प्रसून में न मून धरातून में न इन्द्रकी बधून में न गुंजा अधिकारे में॥ कुसुमसुरङ्ग में न किंशुकसुरङ्ग मैन जावक मँजीठ कंज पुंज वारिडारेमें। राधेजू तिहारे पग अरुण समान ताको हेरिहारे कबिता न आवत बिचारे में २३६॥

तथा। मृदुल मनोहर गुलाब दलहूँते अति कमल प्रबालते सुरङ्ग दरशाती हैं। कलित महावरसों ललित लखेही बने दाड़िम प्रसूनहूंते सरस दिखाती हैं॥ भनै रघुनाथ बाल इंडुरी तिहारी बर सौतिन को सालतीं मनोज मदमाती हैं। चलत मराल चाल लाल बलिहारी करे निकस मरीची चन्द्रभौन चढ़िजातीहैं २३७॥

तथा। जोगुन रंगवारी जावक सुरंगवारी आनँद उमंगवारी स्वच्छ छबि छाकीहै। सौतिगण भंगवारी सखी सतरंगवारी नवलन रंगवारी अंगवारी ताकीहै॥ गिरिधर कहैं सोहै सम्पुट सरोजवारी बशीकरण मंत्रवारी यंत्रवारी बांकीहै। पियमनबेड़ी अक्ष लक्षण निबेड़ी बेस उपमा न छेड़ी राजै एंड़ी राधिकाकी है २३८॥

पगतल वर्णन॥

क०। शोभाके निवासकै प्रकासके निकेत मंजु कैधौं यह उदधि अमोघ यशभारीके। कैधौं रसहांसके तड़ाग या सुधाके सिन्धु सौति मदहारी किधौं यह सुकुमारीके॥ भनै रघुनाथबसैं हिये हमरे में सदा सब सुखदाता बृषभानुकी दुलारी के। अरुण अमन्द चारु बिमल सोहाग भरे कमल गुलाबरंग पगतल प्यारी के २३९॥

तथा। सातुकि सिताई रजगुणकी रताई मनु तामस को त्यागि सुख जनकेसहायके। कोमलअमल दल मोहनीकी पुस्तककी राजत रुचिरबिधि बरणसुभायके॥ प्रेम दलदलकी सुपथ भूमि सोहै किधौं रहे खैंचि लोचन तुरंग हरिरायके। कीधौं मीन केतन तलप ताप तामरस दल बलिभद्र तरुनीश्योछा तेरेपायके २४० ॥

तथा। करजोरे किन्नरी तिलोत्तमा तँबूरलीन्हें चौंर चतुराननी करत छबि छाकीहै। छत्र लेन छत्रपतिनीहूं नचै रम्भा ठाढ़ी मकर पताकी बारी कल पलताकी है॥ यमला ना राधिकासी कमलाहै हनुमान कौन कहै रसना फणीशहुकी थाकीहै। तलातल बितल रसातल महातलकी अतल सुतल कीते पगतलताकी है २४१ ॥

पगअंगुरीभूषणादि वर्णन ॥

क०। अँगुठा अनोठेछोर अँगुरी अरुण तोर भूसुत सोहात मानो नलिनीकलीकीजू। भनतादिवाकर गुलाब सों चरणमृदु बोयो जलजात चले ब्रजको गलीकीजू॥ जावकके रंग जाको फीकीसी लगतपाय एंड़ी के मले ते आशु झलकाझलीकीजू। हंसकीसीचाल मगवाहीते चलति कैधौं भली पगतल वृषभानुकी ललीकीजू २४२ ॥

तथा। सहजरसीली गरबीली छनकीली अति शील में सनी हैं करी सौतें जिनपंगुलीं। पूरणकरनहार आसपति शोभारास भूषण समेत देख निंदैं भई कंगुलीं॥ भनै रघुनाथ भरीभाग यों सोहाग सदा जावक लगेते

लसे लालरंगरंगली । अमल गुलाबकंज दलरंगलाजै
लखि नवल सोहाई दश तेरे पद अंगुली २४३ ॥
स० । कोमल फूल मनो अरविंद दोऊ पद सुन्दरि
के रसभीने । ताकी अनूपम आँगुरियां छबिलेत सुवर्णकी
मानहुँछीने ॥ आंगुरीलाली लखीपदमें जनु भूतुल बैठि
समाजहिकीने । उपमा रतिनाथ लखात नहीं निजहाथ
रचे पद अंग बिधीने २४४ ॥

पदनख वर्णन ॥

क० । कैधौं पद्मराग रत्नजटित भरेहैं कुण्ड तामें बिंद
शेशीकी प्रकाशी प्रभापालीने । कैधौं पग पंकजमें राजत
रँगीलेनख जातक रँगोजे अलि सुमति सयानीने ॥ मने
रघुनाथ प्राणपति मनमोहनको मोहिनी दिये हैं लिखि
यंत्र बरवानीने । कैधौं मुखचन्द्र अमीअचन प्रकाशहेतु
नजर किये हैं लाल दशरथरानीने २४५ ॥
तथा । कीधौंमनबंधन बनाय मैनबिधनाहै देखिदशा
दरपण मोहे नन्दके लला। हंसन के गोलककी तारतार
काननके कमल दलनपर स्वातिबुन्दके छला॥ अन्तरकी
आभा करबीर कोरकानिकोर बलिभद्र निरखि सिहात
नितही हला । राका चन्द्रमुखी प्यारी तेरे चन्द्र कीधौं काम
के कलंबन की भालचन्द्र की कला २४६ ॥
स० । कामबिरंचिके बेष बनाय किधौं सुषमाके सो-
हात सितारे। कंज दलीनके शीश किधौं लसै गंगके
अम्बुके बुन्द कतारे ॥ सांची सुनो रघुराज किधौं सज

चम्पकलीन पै मोतिन हारे। कैपदके नख रुक्मिणि के जिन पै कवि कोटि कलानिधि वारे २४७॥

पदवर्णन॥

क०। कोमल अरुण स्वच्छ पुहुप गुलाबहूँते अति द्युतिवन्त दिव्य कीरति कुमारीके। नूपुर निवास है अनूप गत वारे शुभ मोहन सदैवकन्त भौत मदहारीके॥ भनै रघुनाथ ना विसारो क्षणएक धन्य सब सुखदाता कृष्ण-चन्द्र पियप्यारीके। वारों रतिरम्भा शचीशत अतिशो-भापुंज ऐसे पद कंजमंजु राधिका दुलारीके २४८॥

तथा। कोमल बिमल मंजु कंजसे अरुण सोहैं ल-क्षण समेत शुभ शुद्ध कन्दनीके हैं। हरीके मनालय निरालय निकारन के भक्ति बरदायक बखानै छन्दनीके हैं॥ ध्यावत सुरेशशम्भु शेष औ गणेश खुलेभागअव नीकेजहां मन्दपरे नीके हैं। कटैं यमफन्दनीय छन्दनीय हरहरिवन्दनी चरण वृषभानुनन्दनीकेहैं २४९॥

तथा। मखमल माखनसे इन्दुकी मयूखनसे नूतन तमालपत्र आभा आभरनहैं। गुलसे गुलाजसेगुलाब जपा जावकसे पावक प्रबाल लाल गावैं भूधरनहैं॥ उमापति रमापति यमापति आठौंयाम ध्यावत रहत चार फलके फरनहैं। पंकज बरन छवि छविके हरन हठी सुखके करन राधे रावरे चरनहैं २५०॥

तथा। कोऊ उमाराज रमाराज यमाराज कोऊ कोऊ रामचन्द्र सुखकन्द नाम नाधैमैं। कोऊ ध्यावै गणपति

फणपति सुरपति कोऊ देवध्याय फललेत पलआधेमें॥
हठीको अधार निरधार की अधार तुही जपतपयोग
यज्ञ कछुवे न साधे में। कटैकोटिबाधे मुनि धरत समाधे
ऐसे राधेपद रावरे सदाही अवराधे मैं २५१॥

स०। करकंजन जावकदै रुचिसों विछिया सजिके
ब्रजमाड़िलीके। मखतूलगुहे घुँघुरू पहिराय छलाछि-
गुनी चित चाड़िलीके॥ पगजेवै जराव जलूसनकी
रविकी किरणै छबि छाड़िलीके। जगवन्दतहै जिनको
सिगरो पगवन्दत कीरति लाड़िलीके २५२॥

क०। कलपलताकेकैधों पल्लवनवीनदोऊ हरनमंजु-
ताकेकंजताकेवनताकेहैं। पावनपतित गुणगावैमुनिता-
के छबिछलैमबताके जनताकेगरुताकेहैं॥नवोनिधिसि-
द्धिताके आलेहैं अमल हठी तीनोंलोकताके प्रभुताके
प्रभुताकेहैं। कटैं पाप ताके बँधे पुण्यके पताके जिन
ऐसे पग ताकेवृषभानुकी सुताकेहैं २५३॥

स०। बरषा अरु शीतहु आतपको निशि बोस सहै
सरही में खरे। कहुँसूखिहुँ जात कहूं हरियात रहै जल-
जात यों ध्यानधरे॥रघुराज सुना तपके बल यद्यपि रावरे
के भलमेहपरे। तबहूं न लहै सरि रुक्मिणिके पदकीमधु
ब्याजहि आश भरे २५४॥

क०। देखोशुभबालापदसुन्दरविशाला मानोईंगुर
लजातजाके देखतचरणहैं। जलज गुलाब खिसियात
देखिकेमलाई सिसेहुपुहुप मन माहिसकुचतहैं॥ ऐसे
पग प्यारी के सकल छबिछीनिलियो छबिनाहिं काहूकी

पदन सरसतहैं। उपमा न काहूकी सकलकवि ढूंढ़िहारे मधुपति जैसे प्यारी तेरे ये चरण हैं २५५ ॥

तथा। सुन्दरसुरङ्ग नैन शोभित अनङ्गरङ्ग अङ्ग अङ्ग फैलत तरङ्ग परिमलके। बारनके भारसुकुमारिकोलचत लंक राजैपरयंकपरभीतरमहलके ॥ कहैपदमाकरबिलोक जनरीझैं जाहि अम्बरअमलकेसकल जलथलके। कोमल कमलके गुलाबनके दलके सुजात गड़िपाँयन बिछौना मखमलके २५६ ॥

सर्व देहछबिवर्णन ॥

क०। जरीदारकंचुकी केऊपरभलझिझाई ललितललाई मानो चुनिनप्रभाकरी। अंगअनुकूलेफूलेफूल से बिलोकियत लपटिदुकूलभुजमूलतसुभाकरी ॥ ऊंचेऊंचे निपट निवासचढ़ि चन्द्रमुखी झांकतझरोखेचोखेबदन सुधाकरी। अगम जिरह पैंधि गिरहदजेरोकर बिरहा नवेली आज आपही बिदाकरी २५७ ॥

तथा। बैसकी किशोरी गोरी शोभा बरणी न जात गातकी निकाई छबि नाहीं काहू थोनमें। बासरगवाँयो खेलि जीयमें बियोगबेलि सांझसमय बिथा बाढ़ी बैठि पीय भौनमें ॥ औधिके ब्यतीत भये रंचको न कलपरी ब्याकुलसी भईजात सारेमन्दयोनमें। नीचेलेउठायनारि डीठि पर जागना सुआगि आगि आगिकैके भाजिगई भौनमें २५७ ॥

स०। बारिज सो मुख मीनसे नयन लेवारसे बारन की सुखदाली। कम्बुसो कण्ठ लसै कुचकोकसो भौंरसो

नाभि भरी भ्रमभामी ॥ गोकुलधारसी रोमावलीलहरी सी लसे त्रिवली छबिरासी। लालबिहारकरोरसमें वह बालबनी सुखकी सरितासी २५९ ॥

तथा। ऐसी न देखीसुनीसजनी घनि बाढ़तहै जो बियोगकिबाधा। त्योंपदमाकरमोहनको तबते कल है न कहूं पल आधा ॥ लालगुलाल घलाघलमें दृग ठोकरदै गई रूपअगाधा। कैगई कैगई चेटकसी मन लैगई लैगई लैगई राधा २६० ॥

क०। एँड़ीतोनारंगीऐसी उरोज दोनों श्रीफल सों बिम्बासे अधर दन्तदाड़िमबिजैन सी। गति गजराज कैसी कटि मृगराज कैसी अश्वकैसो घूंघुट मृगाके ऐसे नैनसी ॥ कमलसोचरण तन कुसुम्भसे सरसनीको चम्पे कोऐसीकलीबोहीजुहीदैनसी। अलिकेऐसेकेशकीरकैसी नासिकाकपोतकैसोकंठ कोकिलाके ऐसे बैनसी २६१ ॥

तथा। अतरपुतायो मढ्यो महल सुगन्धन सों द्वारे गजमोतिनकी तोरनैंतनीरहैं। चन्दनचहलचारुचांदनी चँदोवालाल गोपमाल मणीकनी कोरनै घनीरहैं ॥ उभा चौंर ढोरैं रमा आरतीउतारैं ठाढ़ी रम्भा रति मैनकासी कोटिन जनीरहैं। हठीदेवतानकी दिमाकदाररानी तेऊ राधे महरानीजूके हाजिर बनीरहैं २६२ ॥

तथा। मोतिनकी तोरनैं तमाशेदार द्वारेवारैं अमित तोयनकी शोभा बड़े सानकी। मखमली गिलमगलीचा मखतूलनके अतर अतूलनकी झोकैं हठी मानकी ॥ जरकसी जरब जलूसन की गद्दीकर रचि छबि रही

झकीझालरवितानकी । कंचनकी बेली रमारतितेनबेली अलबेली रङ्ग रावटी अकेली बृषभानकी २६३ ॥

तथा। अतरपुताया चौकचन्दन लिपायो बिछीगिलम गलीचनकी पंगति प्रमानकी । कारी हरी पीरी लाल झालरैं झलकरहीं जैसी छबिछाई चारु चांदनी वितान को ॥ झीनीश्वेतसारी जड़ीमोतिन किनारीदार फैलीसुख आभाहटी राधेसुखदानकी । नाहनेह नहीकर रमारूप रहीकर बैठीआनि गद्दीपर बेटी बृषभानकी २६४ ॥

तथा । कंचन फरश फैली मणिन मयूखै तन्यो जरी को वितान तेज तरनि तरा परैं । पांवड़े बिछौना परे मोतिनकेकोर वारे चारोंओरजोर जो प्रभाभरी भरापरैं ॥ हीरन तखत बैठी राधे महरानीहठी रम्भारतिरूपगिरि धसक धरापरैं । छूटी मुखचन्द्रचारु किरण कतार बांध छ्वै छ्वै चन्दमण्डललौं छबिके छरापरैं २६५ ॥

तथा । चांदनी में चांदे लग्यो चांदनी चँदोवा चारु चांदनी बिछौनन अधिक छबिछाई है । बड़े बड़े मोतिन कीलरैंरुरैं चार्यो ओर बीचबीच जरीकोर सोहत सुहाई है ॥ गोरेगातश्वेतसारी हीरनकिनारीघनी इन्दु से बदन राधे इन्दिरा लजाई है । भालदिये चन्दन सुनेह नन्द नन्दनसों महकसुगन्धन सों सेजपर आईहै २६६ ॥

तथा । मखमली गिलमगलीचनकी पांति चारु जर कसीसेज तैसी रहीछबिछाइकै । हीरनके माणिनके मोति मालती के हार लालन प्रबालनके ल्यावती बनाइकै ॥ एकैलिये सारी जरतारी कनी कोरवारी एकै हठी बीन

लै रिझावै गीतगाइकै चंदनचढ़ाय भाल बन्दनलगाय राधे बैठी चन्दमंदकै मसिन्दपर आइकै २६७॥

तथा। कंचनमहल चौकचांदनी बिछौनातामें जरी को बितान तानभानज्योतिमन्दकी। लालनकीमालैंलाल सारीकोरदार अंग ओठनकीलाली जिमि लालीजीवबंद की॥ रम्भासी रमासी खासीदासी मैनकासी हठी ठाढ़ी करजोरैं तेऊछीनै ज्योतिचन्दकी। गावैंवेदवाणीचौंरढारत भवानीराधे बैठी सुखदानी महारानीनंदनन्दकी २६८॥

तथा। सारी जरतारी लगी मणिन किनारी द्युति दामिनी किहारी गात जातरूप कन्दहै। हारहिये भूषण जराऊ भाल बेंदीलाल अधर प्रवालबिम्ब बसैजीव बन्दहै॥ उमाकी रमाकी सुखमाकी देवमाकीहठी रम्भा इन्दुमासी उपमासी गतिमन्द है। तारापति कैसो मुख लहतगोबिन्दवारी तख्तपैबैठीराधेवखतबलंदहै २६९॥

तथा। बैठीरंग भरी है रँगीली रंगरावटी में कहांलौं बखानौं सुन्दराई शिरताज की। चांदनीकी चम्पककी चञ्चला चमीकरकी इन्दिरा तिलोत्तमाकी शोभा कौन काजकी॥ मोतिनके हारगरे मोतिनसों मांगभरे मोतिन सों बेनीगुही हठी सुखसाजकी। चालगजराजमृगराज कीलीलङ्क द्विजराजसोबदनराजैरानीब्रजराजकी २७०॥

तथा। चामीकर चौकीपर चम्पकबरणहठी अंगकी चमकैंचारु चंचलैचलावतीं। तारासीतरंगनासी अतर लगावैं रति मुकुर दिखावैं बिजैबीजन डुलावतीं॥ कमला करन जोरैं बिमला सुतन्त्रतोरैं नवलालै मरजी को

अरजी सुनावतीं । सुरनकी रानी सुरपालनकी रानी दिगपालनकी रानी द्वार मुजरा न पावतीं २७१ ॥

तथा। कोऊछत्रलीने कोऊआहगीर कीने कोऊ बीनै लै प्रवीनै ये नवीनै सुरगावतीं। कोऊ जधीजोरै करअ-तर गुलाबबोरै लैलै अलबेलीहठी धावनतैंआवतीं ॥ कोऊचौंरढारैं कोऊआरतीउतारैं कोऊकरती सलामैं कोऊमुजरा न पावतीं । बैठीआनतखतपै बखतबलन्द राधे बाला दिगपालनकी मालापहिरावतीं २७२ ॥

तथा। फटिकशिलानकेमहल महरानी बैठी सुरनकी रानी जुरिआईं मनभावतीं । कोऊजलदानीपानदानी पीकदानीलिये कोऊ करबीनै लै सोहाय गीतगावतीं ॥ कोऊ चीरचीनैं चारु चांदनीसे चौजवारे हठीलेसुगंधन सों अलकैं बनावतीं । मोतिनकेमणिनके पन्नगप्रबालन के लालनके हीरनके हार पहिरावतीं २७३ ॥

तथा। जातरूपतखतपै बैठीरूपराशिराधे अंगनकी प्रभाप्रभाकर को लजावतीं । चीरचारु हीरहार हिये पहिरायकर भूषणवनायवाल साजन सजावतीं ॥ अतर गुलावलै सुगन्धनलगावैं सवै चन्दनचढ़ायभालभौं-रनभगावतीं। जोरिजोरिपाणि देवतानहूंकी रानी हठी कोटि कोटि कोरनिश झुकि के बजावती २७४ ॥

तथा। केसरिसेअंग पट केसरकेरंगजगे मोतीगुही मांगहै अनंगहूकी बालिका । रम्भासी रमासी मैनका सी मंजुघोषा सम शचीसी उमासी सुखमासी ज्योति जालिका ॥ सांझ समय आन वृषभानुकी कुमारीराधा

ठाढ़ी दरवाजे हठीप्राणनकी पालिका। भागभरे नैनन निहारौ नन्दलालचलि रैनि गुजरीसी उजरीसी दीप-मालिका २७५॥

तथा। सांझहौंगईतीबार भौन वृषभानुजीके अति सुकुमार एक रूपकैसी रासी है। दाड़िम दशन बिम्ब अधर प्रबालवारी सुधासीझरतचारु मन्दमन्दहासीहै॥ देखीहौं गोपाल ग्वाल, आज गरबीली हठी राधे कहि टेरैजानी रम्भा रमा दासी है। हिमकरकलासी चमक चपलासी है सो शम्भु अबलासी खासी दीप-मालिकासी है २७६॥

स०। मंजनचीर सुहारहिये शिरबन्दन अञ्जनमो-तिन बानकी। जावक नूपुर माल औ किंकिणि कंचुकी चन्दनहै गतियानकी॥ कंकण सोहै केयूर भुजान लसै मुखपानओ बेंदी गुंथानकी। आवैगलीमें विलोकोचली यह कंजकलीसी लली वृषभानकी २७७॥

क०। सारी जरतारी लगी मणिनकिनारी त्योंहीं दामिनी दबायलेत दमक रदनकी। हीरनके हार हठी गजरा गोहाबदार अंगअंग फैलरही दीपतिमदनकी॥ हेमकी छरीसी मान मुखनजराव जरी सबगुण भरी परीछबिके कदनकी। चांदनी बिछौना भाल चन्दन लगावे बाल चांदनीमें बैठीलालचन्दसे बदनकी २७८॥

स०। मोरपखा गरे गुंजकी माल करे नव बेष बड़ी अबिछाई। पीतपटी दुपटी कटिमें लपटी लकुटीहठी मों नन माई॥ छूटीलटैंडुलैं कुण्डलकान बजेमुरलीधुनिमंद

सुभाई। कोटिन काम गुलाम भये जब कान्ह ह्वै भानु लली बनिआईं २७९॥

क०। बजत बधाय गाय मंगल सोहाय मग पांवड़े परायहैं अवाई सुखदानकी। बैठी सुखपाल सुख पालन की रानी साथ ब्रज महारानी के प्रकट जग जानकी॥ बोलि कै पठाईं आईं नगरलुगाईंसब देखिछबिछाईं जि न्हैं सूझत न आनकी। महरमभाई हठी कुलहि सोहाई ऐसी गोकुलहि आई राधे बेटीवृषभान की २८०॥

तथा। केसरिसी केतकीसी चम्पक चमीकरसी चपला चमक चारु गातकी गोराईहै। जाको मुखचन्द देखि चन्द मन्द ज्योति होति जाकेलखि नैन अरविन्द द्युतिपाईहै॥ नीलमणि मोतिनकी माल उर डोलत मयूर औ मरालनकीपंगति सोहाईहै। देखिबेको दौरिआई गोरीब्रजबालासबै भानुकी किशोरी आजु नन्दगृह आई है २८१॥

तथा। गायउठीं किन्नरी नरीनये सुरन सबै द्वारद्वार नगर नगाराध्वनि छाईहै। सुरहरषाने दरशाने बरषाने प्रेम सरसाने फूलबरषालय बरषाईहै॥ बन्दीजनबिरद बखानैं भांति भांति हठी लीन्हों अवतार राधे बेदनहूं गाईहै। धन्य ब्रजमण्डल सुधन्य कोखि कीरतिकी धन्य वृषभानुजूके भागकी भलाईहै २८२॥

तथा। देखीभटू भावती प्रकाशभारे भानकैसो कोकिलासे बैन नैन ऐनन जुरैगई। मैनकासी नारी हठी सैनका कहारी प्यारी रम्भारमा उमावारी मन को भुरै गई॥ कमलकलीसी लली राजत अलीनबीच गोकुल

गलीनमें गुलाबसो कुरैगई । बिज्जुलके जालनकीकोटि-
न मशालनकी लालनकी मालनकी दीपतिढुरैगई २८३॥

तथा । मणिन महलमहँ महकैं सुगन्धैं तैसी फटिक
शिलानहूंको फरश सँवारो है । जबदार जर्बदार जरीओ
जलूसदार चोजदार विशद बिछौनन पसारो है ॥ चन्द्र
मणिचौकी पर चम्पक वरण हठी रम्भा रमा उमा रूप
गरव उतारो है । देखो नँदनन्द सुखकन्द व्रजचन्द
आजु राधे मुखचन्द चन्द मन्द करिडारोहै २८४ ॥

तथा । बैठीकुञ्जभौनगोरी कीरतिकिशोरीराधे छूटत
फुहारे हिमवारे एक पातीहै । अतर गुलाब घिसचन्दन
चहलमची चारोंओर सुमन सुगन्ध सरसाती है ॥ कैयो
रङ्गवारी हठी उठतीं तरंगैं त्यों अनन्त अंगनासी अंग
आभा उफनाती है । बांधि बांधि परा सरासरीमुखकिरणैं
ग्रों छोरलों धरापै छूटिछरा खायजाती है २८५ ॥

स० । भौनते गौनकै भानुलली कढ़िदेखन आईसबै
व्रजनारैं । पेरादुकूल शृंगार सजै मनो फूलिरहीं बन
चम्पक डारैं ॥ पांइन तैं अँगुरी नख ह्वै हठी लालीकी
नीकैं कढ़ीअसरारैं । मैलीभई उपमा सिगरी मनोफैली
रही में महावर धारैं २८६ ॥

क० । जबतेबिलोक्योतोहिं सुन्दर कुंवरकान्ह नेकु न
सुहायकछू चित्त अकुलातहै । तबहीं ते तजिभौन कीरति
किशोरीतौन सखिन समूह साथ सुख सरसातहै ॥ कहा
कहौं तोहिं ताहि देखि आई तैसे भटू कौतुक बिलोकि
हठी हिये हरषातहै । यमुनाके तीरबहै शीतल समीर

तहां वीर बलवीर जू को बलि बलि जात है २८७ ॥

तथा। आज हौं गईती वीर सहज निकुंजनमें कौतुक विलोक्योंतहां सबसुखदानीके। कहतबनैन मोपै अचरज बातहठी कहि कहि हारे मुखचारवेद बानीके ॥ श्रवण सुनै न मानै आंखिन दिखाऊं तोहिं चलि दुरि मेरेसाथ चरित गुमानीके। लूटैं सुखमोटैं करैं मनुहार कोटैं बैठे पांयन पलोटैं लाल राधामहारानीके २८८ ॥

स०। चन्दसों आनन कंचनसेतन हौंलखिकै बिन मोल विकानी। औ अरविन्दसी आंखिनको हठी देखत मेरी ये आंखि सिरानी ॥ राजतहै मनमोहनके सँग वारौं मैं कोटिरमारति बानी। जीवनमूल सबै ब्रजकी ठकुरानी हमारीहै राधिका रानी २८९ ॥

क०। गतिपै गयन्दवारौं पग अरबिन्द वारौं हठी अलिवृन्द वारौं अलकन फन्दपै। गुलफगुलिन्द वारौं शीलतापै सिन्धु वारौं सकलसुगन्ध वारौं मुखकी सुगन्धपै ॥ कटिपै मृगेन्द्र वारौं तनछविवृन्द वारौं बेनीपै फनिन्द वारौं जात नँदनन्दपै। ओठजीवबन्धु वारौं हासी सुधाकन्द वारौं कोटिकोटिचन्द वारौं राधेमुखचन्दपै२९०

तथा। मलिन अटापै ठाढ़ी पुरटपटापै प्यारी रूप की घटासी देखि रीझत गोपालहै। चरनकरनकी चमक अभरनकी औ तनअम्बरनकी सुफैली प्रभा लालहै ॥ जकिरहे थकिरहे देखिचकिचकिरहे हठी नरनारिनको ऐसोभयो हालहै। कैधौं कछु ख्यालहै कै मोहनीकोजाल है कै लालनकी माल है कै मदनमशालहै २९१ ॥

तथा। पौरिही पे ठाढ़ेरहौ बाढ़े घरहीकेलाल चौकीहै हमारी यहां बूझो ना सहलहै। अरज़करैंगी घरी द्वैकमें तिहारी अबै मोजराई सखिनकी चहलपहल है॥ गोकुल के नाथ आये ग्वालनके साथदीजै सिगरी बिसारि जौन गुरुता गहलहै। अदबसोंरहौ बेअदबकी न कहौकान्ह वृन्दाबन महारानी राधाको महलहै २९२॥

तथा। पैन्हे श्वेतसारी जरीमोतिनकिनारी द्युति दामिनि कहारी प्रति जातरूप कन्दहै। हारहिये भूषण जराऊ भाल बेंदीलाल अधर प्रबालल्लाल औरै ज्योति वृन्दहै॥ दमकसमाकी हठी रमा उमा इन्दुमाकी रतिरूप उपमाकी करै गतिमन्दहै। नखतपतीसों मुखलखत गोबिन्द ठाढ़ो तखतपै बैठीराधे बखतबलन्दहै २९३॥

तथा। कोठरी अँधेरी प्यारी बशतिमशाल कैसी दीपक शिखाके द्युतिदुरिदबिजाते हैं। भनत दिवाकर कुन्दन गोलगोरीजोरी श्याम के निहारे दृगझपकि झपाते हैं॥ शीशके महलमें अनेकप्रतिबिम्ब जाके जादूसे प्रत्यक्ष होत जात करमाते हैं। भौनसे निकसिकै अजिर जब आई राधे चांदनी करत मन्द चन्द भागिजाते हैं २९४॥

तथा। कंचनके बेलीसी नबेलीके शरीरलागे ज्वालामुखी देबीसी मुखार ब्रजसमकी। भनतदिवाकर न रतिके न रम्भाके न उर्वशी न किन्नरी बिलायोशीबनमकी॥ आरसी उदास घनसारसी सुबास सुरसम्पाकी प्रकास की जवासतातसमकी। भूषण वो अंजन वो अंगराग जावक के पावकके रंगन दुकूल देहचमकी २९५॥

तथा। बैठीचढ़ी चांदनीमें चंद्रमा बिलोकनको उन्नत उरोजनते उछरे हरापरें। दसाक्षमा केतक तिलोत्तमाहें घनश्याम रमा रति रूपदेखि धसकेधरापरें॥ जेवरजड़ाऊमोरजगमगें अंगनते नेवर जड़ाऊ तेज तरुन तरापरें। राधेमुखमण्डल मयूखनते महाराज छूटिके क्षपाकरके ऊपर छरापरें २१६॥

तथा। असल अनंगके अनंदकी उदित भूमि जीति पियावाजी दगाबाजीसी पसारीहै। कनक के पानसे उदरमें उदितद्युति त्रिवली तिहारी मैं निहारी मैनहारीहै॥ रूपगुनचातुरी सो सुरनर नागनको जीते सनिकंठविधि सोहैरेख सारीहै। सौतिसुख उतरेको पियप्रेम चढ़िबेको कुन्दन की प्यारी पै रकारी शीशवारी है २१७॥

तथा। कंकन करन कलकिंकिनी कलित कटि कंचन कँगूर कुच केशकरी यामिनी। कानन करनफूल कोमल कपोल कंठ कंबुक कपोतग्रीव कोकिल कलासिनी॥ केसरि कुसुम कलधौतकी कछू न कांति कोबिद प्रवीन बेनी करिवरगामिनी। कोककारिकासी कींनरीक कन्यकासी कैधौं कामकी कलासी कमलासी खासी कामिनी २१८॥

स०। अलबेली अलीपै धरैभुजको अँगराई जम्हाई चितै त्रिवली। सरको शिरचीर गिरयो कटिह्वै पजनेश प्रभाकी जगी अवली॥ परवैजड़ी बालकी बेनीबँधी झलकैं मुक्काली कपांकथली। त्रिधुकेरथ चक्रुत चक्र मनो कलकेंचुली नागिनि छांड़िचली २१९॥

क०। चलत मरालनकी महिमा घटावै बैन बोलत अचैनकरै प्रभुता पिकनकी। मुसुक्यात सुधाकोसोहाग सोसकेलिलेति बरनसो जीतै सुन्दराई सुबरनकी॥ भनत कबीन्द्र वाकी निरखि सुघरताई पाई है दृगनने बड़ाई डीठिपनकी। मनते न भूलति भुलावै मनहीको वह चह चहे चखनकी लहलहे तनकी ३००॥

तथा। राधिकाके चरण बिराजेचारु मानिकसे मूंगकी फलीसी भली आंगुरी सुभाषैं हैं। गदाधर कहै करीकरसे युगलजानु छीन कटि केशरीसी बेषअभिलाषैं हैं॥ पान सोउदर हेमकुम्भसेउरोजवर बाहुलतिकासी खासी काम तरु शाखैं हैं। इन्दुसो बदन कुरबिन्द से अधरलाल कुन्दसे रदन अरबिन्द सम आंखैं हैं ३०१॥

तथा। राधाठकुरानी पास बानीलिये पानीखरी आस पासचेरी चौंरढारैं देवदारसी। अंगरागअंगनि लगायबे कोल्याई रति अम्बरअमललिये फूलनको हारसी॥ युगलकिशोर कहै नन्दकेकिशोर जहां जोरे करजो हैं ज्योति जिनकी बिचारसी। मोदक बढ़ायबे को तुरकी हराहै लिये एकहाथ फूलगेंद एक हाथ आरसी ३०२॥

तथा। कुंतीपांचाली दमयन्ती तारा शकुन्तलाकी अहल्याहू मन्दोदरी पहिलेसुधारेहैं। मैनका घृताची रम्भा मंजुघोषा उर्वशी तिलोत्तमाको तिनहूते हलुकी निहारे हैं॥ बिदुषसुकबिभनै गिरारमाजमासिया मोहनीहूं रचि फिरि मन में बिचारे हैं। राधेको बनाय बिधि धोये हाथ जामो रंग ताको भयो चन्द्रकर झरि भये तारे हैं ३०३॥

तथा। ऐसी रूपवारी प्यारी हौं न देखी काम नारी जैसी वृषभानुकी दुलारी जो निहारिये। कंज कैसीराशि जाके अंगनिसुवास वश आसपास भृंगनकी भीर हाथ डारिये॥ छाईज्योतिभूषणकी दूषणकोचन्द्रशोभा मंदगति धारै पाये देखिबेस धारिये। खंजमृगमीनकी निकाई व्रजहोसनजू नैननकी द्युतिपर वारवार वारिये ३०४॥

तथा। वह चितवन वहसुन्दरकपोल द्युति वह दशननि छवि विज्जुकी धरतिहै। वह ओठ लाली वह नासिका सकोरनि में वह हावभावकै यों कौतुक करतिहै॥ कहै मनीराम छबि बरनि सकै को वह रतिते सरस मन मुनिको हरतिहै। वह मुसकानि युग भौंहनि कमान द्युति वह बतरानि ना बिसारी बिसरतिहै ३०५॥

तथा। वाटिक बिहारीअभिसारकोंसिधारीभारीसांकर अँधेरीमें उजेरी कैसोकन्दहै। भादौंको विषममेहदीपसी दुरै न देह नागरके नेहको सनेह हष्टिवृन्दहै॥ शिवाजान्योनागरि पिशाचनिकमख्या जान्यो मृगनि कलानिधि औछलीजान्योछन्दहै। बिज्जुजान्यो घनघोर घटापट मारजान्यो भोरजान्यो चोरन चकोर जान्यो चन्दहै ३०६॥

स०। करतापतिके उरआनँदकी सुषमायोंप्रकाशन की सरता। रतिरंगसमै निज अंगन सों निशि में द्युति दामिनिकी हरता॥ रघुनाथ भनै बिरची बिधनै तिहिकी धनिधन्यहै चातुरता। रति रम्भा शचीयुत मेनकाहू लखि लाजती बालकी सुन्दरता ३०७॥

क०। भानुसेअधरबिम्ब कृष्णसेचिकुर प्यारी शीत-

करश्रानन छटान बगरायोहै । हरिसोहे एकअंक भृकुटी कमानसैन नयन खरसान दन्तदामिनि दुरायोहै ॥ वदत दिवाकर उरोजशम्भु गंगाहार नखन सरस्वती विमल धारछायो है । देखि ना परत है चलाकी कमलासन की जिन वनितामें सारेदेवता बनायोहै ३०८ ॥

तथा । भालमें विशेष वास अधर बुझावै प्यास लोयनके कोये शालग्रामको प्रकासहै । भृकुटी पिनाक नाक मघवानिवासपुर पांचजन्य ग्रीवा पारिजातके सुवासहै ॥ दिवाकर कहै कान करन प्रयागतीर्थ बेनी शीश शेष दांत हीराके उजासहै । एते द्रव्यदेव मिले वनिता मिलत अंक ताके परिरम्भनमें कौन परिहास है ३०९ ॥

तथा । फटिकशिलानिसों सुधार्यो सुधामंदिर उदधि दधिकोसो अधिकाय उमँगे अमंदु । बाहिरते भीतरलौं भीति ना दिखैये देव दूधकोसो फेन फैल्यो आंगन फरशबंदु ॥ तारासीतरुनि तामें ठाढ़ी झिलमिल होति मोतिनकी ज्योति मिल्यो मल्लिका को मकरंदु । आरसी से अम्बर में आभासी उज्यारी लगै प्यारी राधिकाको प्रतिबिम्बसो लगत चंदु ३१० ॥

तथा । मांग सिंदुरारी तन अरुण तरुण ज्योति बेंदी रविबन्यो छविपुंज उघरतुहै । सघन जघन कुच सकुच कुबीच दब्यो उचकि उचकि लङ्क लचक्यो परतु है ॥ यौवन वनक बनै तनमें तनक देव भूषण कनकमणि आभाउभरतुहै । बेसरिको मोतीसुधाबिंदुसो चुवत मुख इंदुसो चुवत बूड़ि बूड़ि उछरतुहै ३११ ॥

तथा। बालको विलोकि मनमोहन ह्वैगयो बिहाल येरी मेरी वासों लगन लागी अति है। वादिनते वाहि सुपने में निहारी सन्ना तलफत नींद कहूँ नेक जो परति है॥ भोजन न भावै कछु बात ना सुहावै मोहिं कौन पीर पावै परी मदन विपति है। वाकी छवि चित्तते बिसारी बिसरति नाहिं निशिदिन नैननके नीरैंही रहति है ३१२॥

तथा। चोवासों चुपरि केश केसरी सुरङ्ग अङ्ग केसर उबटि अन्हवाई है गुलाबसों। अंतर तिलौंछि आछे अम्बर लै पोंछि आंछि छतियां अँगोछि हँसिहँसि रसभाव सों॥ कटि मृगराजकैसी मुखहै मयङ्कमानो तीखे दृगदेव गति सीखी मृगशावसों। पैन्हे पीरो चीर चारु चौकीपर ठाढ़ी भई चांदनी सों प्यारी पै उज्यारी महताबसों ३१३॥

तथा। केसर कलित पंचतोरिया ललितलाल लहँगा लसत लंङ्कलोने पर घेरदार। जगमगे जड़ित जड़ाऊ पगपायजेब पङ्कज प्रभानि प्रभा पांवड़े गड़ेरदार॥ सदा नन्दसुन्दर सघन घुँघुवारे कच कंचुकी पै डारे अहिकारे मनो फेरदार। ऐंड़दार ऐननि मरोरदार तोरदार करल कजाकी कजरारे नैन कोरदार ३१४॥

तथा। योवन उज्यारी प्यारी बैठी रंगरावटी में मुख की मरीचें वो दरीचें बीच झलकें। भूधर सुकबि बांकी भौंहें मन मोहें खरी खंजनसी आंखें मनरंजन वे पलकें॥ शीशफूल बेंदी बंदी बीरी और बन्दनकी चन्दनकी छबि हिये बीच बीच झलकें। कोरवारी चूनरी चकोरवारी चितवनि मोरवारी बेसर मरोरवारी अलकें ३१५॥

तथा । गरब गुरजपै चढ़ाई तोप कोप करि सौतिन जखीरा कियो योबन जमाको है । भनत कवीन्द्र अभरन भार भारीभट नूपुरनगारे नौबतीनको झमाको है ॥ मैन गढ़पति आगे लड़े नैनसैन दैकै छूटत कटाक्ष वाम लागैं उरजाको है । हांको चहुँघाको करि प्यारो लेन चाहै प्यारी तेरो रूप गढ़ ग्वारियहूते भी बांको है ३१६ ॥

तथा । रातहरी चांदनी बिलोकिवेको रनिवास सगरी बुलाई मोदमंदिर में भरिगो । रघुनाथ तासमै की शोभा की समाज देखि रीझिरहीं मोपै न बखान कछु करिगो ॥ घूंघुटके खुलत दुलहिनी के आननते दशहु निशान में प्रकाश ऐसो अरिगो । ढरिगो गुमानतम सौतिनके जी को भटू तारन समेत तारापति फीको परिगो ३१७ ॥

तथा । रङ्गभरी रसभरी सुन्दर सुगन्धभरी सुखभरी पैनऐन नैनमैनकासीहै । दर्प्पणसी देह तैसी नेहकी न-बेली नई ब्रजबनितान ऐसी सुरपुरबासी है ॥ आलमसु-कबिलोने सोनेके सरोजही ते फूलही के भारभरे पानकी लतासी है । चन्दन चढ़ाय चारु चांदनीसी छायरही च-न्द्रमासी मोतीसी चमक चन्द्रमासी है ३१८ ॥

तथा । रगमगी सेजपर जगमगी शोभाचारु मणि-मय मन्दिर मयूखन अथाहकी । उदयनाथ तामें प्राण प्यारी अरु प्यारेलाल कोककी कठिन केलि करत सराह की ॥ किंकिणीकिधुनि तैसी नूपुरन नादसुनि सौतिनके बाढ़त बिषाद बाड़गाहकी । त्रिभुवन जीतिके उछाहकी बजत मानो नौबत रसीली मनमथ बादशाहकी ३१९ ॥

तथा। राधा वनमाली सङ्ग करत अनङ्ग ऐश घिरत चहुंघा वास फूलनके ढेरकी। उदयनाथ सुकबि सोहाई सखी श्रवणन किंकिणीझनक काम नौबतको जेरकी॥ मोतिन को हार चारु लटको कुचनपर अटको यों डोलो करै शोभा घनघेरकी। पांत पांत होकर नखत सब देत मनो पुण्यहेतु पूरण प्रदक्षिणा सुमेरकी ३२०॥

तथा। कीनी जान आसनमें दुनई शरासन सी गरे भुज पासनसों पकरि छबीलीको। कालिदास ललकि लपेटिलेत दामिनि ज्यों श्यामघन द्युतितन गर गरबीली को॥ गहत कठोर कुच कुंकुम कनकरंग चुम्बन करत अंग अंग चटकीलीको। मैनमद दूम दूम तूल सम तूम तूम लेत मुख चूमचूम राधिका रसीलीको ३२१॥

तथा। राधिका रसीली कामसीली में जसीली गुण गरब गसीली गरो गहत गुपालको। कालिदास मृगमद पान पायकर रंग फूली फूल कलित ललित बनमालको॥ पियत पियारी दोऊ अधरन धरि धरि अधर मधुर मधुसूदन सुभालको। रङ्ग रसहू में सबहूके रङ्गहूमेंकर दैकर कपोल मुख चूमै नंदलालको ३२२॥

तथा। कंचन से गात जलजात से लजीले नयन भृकुटी कमान मानो मैनकी मरोरी है। रंचक उरोजकी उँचाई त्यों ललाई अधरानकी मिठाई चारु चौगुनी चभोरी है॥ कहैं नन्दराम लरिकाई भरे भोरे बैन प्यारी बैसगोरी बृषभानुकी किशोरी है। श्वेतरंगसारी अंगओपते दुरंग होति जानिपरै केसर कुसुमरंग बोरीहै ३२३॥

तथा। याहीते न जैयत तुम्हारे कहे कुंजबन भौंरनके मारे कल पैयत न भौनमें। दूजे आजु दासी हित हासी हरबारन में घालेहैं घनेरे फूल तूल तौन गौनमें॥ कहैं नन्दराम केते कीर यमुनाके तीर दौरिपरै देखत ललाई ओट दौनमें। मारि हैं चकोर आली मुख मेरो चन्द्र जानि सांचीह्वैहै कविनकी झूंठीजाय हौनमें ३२४॥

तथा। शशि सों बदन जाको कनकको ऐसो रूप कुन्दकीसी कली मानोडारहू से तोरी है। चन्द्रमाकी ऐसी उजियारी केसरी कुसुम भारी धारे प्रेमसारी दिन हूंकी थोरी है। कहिबेको नारी वृषभानुकी दुलारी श्री नन्दकी सँवारी रुचिरुचि रंग बोरी है। अयिहो यशोदा रानी कैसेको सनेह होत तेरो कृष्ण कारो मेरी राधिका जी गोरीहै ३२५॥

तथा। रोहिणीरमणकी मरीचीसी सुखदशीरीं सोहिनी सरस महामोहिनी की थलसी। श्रीपति सुकबि बाल रबिके किरण ऐसी मदन मुकुरसी अमल गङ्गाजल सी॥ ग्वालि गरबीली तेरे गातकी गुराई चपलनिकी निकाई ऐसी लागत सहलसी। माखन महलसी पराग के चहलसी गुलाबके पहलसी नरम मखमलसी ३२६॥

स०। मदमैनसों यों अलसानी लसै जनु जागीमले भरि यामिनी है। मृदुबैन सुने हनुमानकहैं कहा कोकिल मंजु कलामिनी है॥ चकचौंध का लागै लखे अँखियां तब कैसे कहौं रति कामिनी है। परयंक पै सोहै सोहागभरी यों मनो थिर ह्वैरही दामिनी है ३२७॥

तथा। ललना मुख इन्दुते दूनौ लसै अरविन्द बसै चख बारसीलै। मुसक्यानि मनोहर ज्यों न महा कहि मिश्र ज़ुबान सुधारसीलै॥ ततश्रोपकरै द्युति चम्पक लोप शची सकुचै प्रति पारसीलै। कहि आवै न रूप सिपारसी यातै दिखावै लला कर आरसीलै ३२८॥

तथा। जासुकी दीपति दीपते सौगुनी दामिनि कुन्दन केसर आइका। कामकी खानि सदा मृदुबानि सनेह छकी छिति में छबि छाइका॥ अङ्ग अनूपम को बरणै सब अङ्गन प्रीतम को दुखदाइका। मानो रची छबि मूरति मोहनी श्रीधर ऐसी बखानत नाइका ३२९॥

तथा। को रति है अरु कौन रमा उमा छूटी लटैं निचुरैं गुँधी मोती। हाय अनूठे उरोज उठे भये मैन तुठे भये और हैं कोती॥ त्यों कबि ग्वाल नदी तट न्हाय खड़ी लड़ी रूपकी सुन्दर ज्योती। सोरति नार मरोरति भौंहन चोरति चित्त निचोरति धोती ३३०

क०। जोपै मुख प्यारीको बताऊं चारुचन्द्रसों मैं तोपै रहै रातही मैं ज्योतिनके जोहनी। याको तो दिवाकर के तेजहूते तेज तेज जोपै कहूं भानतो न रैन होय सोहनी॥ ग्वालकवि याते मुख मुखमाहिं मुख है जू सो मुखसो सोई अति आनन्दकी बोहिनी। आंखते न देखी सुनी कानते न ऐसी ज्योति जैसी वृषभानुकी दुलारी मनमोहिनी ३३१॥

तथा। गोरी महाभोरी तेरे गातकी गुराई देखि दिन दिन दामिनी की छाती होति सुधासी। श्रीपति कमल

की कसानी मखमलकी बदखसानी लालकी ललाई लागे मुदासी ॥ मोमनिदरत को प्रकाश को हरत जोस रोमरोम छुरतछपायनकीक्षुधासी । सुषमाकोऐनमई हीतलको चैनमई पीवनको मैनमई नयनकोसुधासी ३३२

तथा। चौंतनी चकोर चहुँओर जानि चन्द्रमुखी रही बचि डरनि दशन द्युति दम्पाके । लीलि जाते बारही बिलोकि बेनी बनिताकी गुही जौन होती तौ कुसुमसर कम्पाके ॥ रामजी सुकबि ढिग भौंहैं ना धनुष होतीं कीर कैसे छांड़ते अधर बिम्ब झम्पाके । दाखकेसे झौरा झलकत ज्योति योबनकी भौंर चाटिजाते जो न होती रंगचम्पाके ३३३ ॥

तथा। कुन्दन से अङ्ग नव योबन तरङ्ग राजै उरजउतङ्ग लङ्क छान छबि देतहै। बादलेकी सारी दर दामिनि किनारीदार बदनकी ज्योति मानो हसन समेतहै ॥ शोभनाथ निरखि सुजान अंगिरान प्यारी दोऊ करजोरि मुख मोरिहित चेतहै। सदन मलाहके सलाह सों उछाहभरी मानो रूपसागरकी ठाढ़ी थाह लेतहै ३३४॥

तथा। आननकी उपमा जो आनन को चाहैं तऊ आनन मिलैगो चतुरानन बिचारेको। कुसुम कमान के कमान को गुमान गयो करि अनुमान भौंहरूप अति प्यारेको ॥ गिरिधरदास दोऊ देखि नयन वारिजात वारि जातवारिजात मानसरवारेको। राधिकाकोरूपदेखि रति को लजातरूप जातरूप जातरूप जातरूपवारेको ३३५॥

तथा । उज्ज्वल अखण्ड खण्ड सातयें महलमहा

मण्डलचवारों चन्द्रमण्डलकी चोटहीं। भीतरहूलालन कीजालन विशालज्योति बाहर जुन्हाईलगी ज्योतिन की जोटहीं॥ बरणतिबानी चौंरढारतिभवानी करजोरेरमा रानी ठाढ़ीरमनकी ओटहीं। देवदिकपालिनिकी देवी सुखदाइनिते राधाठकुराइनिके पांयनपै लोटहीं ३३६॥

तथा। आई बरसाने ते बुलाई बृषभानुसुता निरखि प्रभानि प्रभा भानुकी अथैगई। चक चकवानिके चुकाय चक छोटिनसों चौंकत चकोर चकचौंधी शोचकैगई॥ नन्दजूके नन्दजूके नयनानि अनन्दमयी नन्दजूके मन्दिर निचन्दमयी ह्वैगई। कञ्जनिकलिनमयी कुञ्जनअलिनमयी गोकुलकीगलिन नगिनमयीकैगई ३३७॥

चालवर्णन॥

क०। साजीपीतसारीलालअञ्चलकिनारी मांग मोतिनसँवारी बृषभानुकी दुलारी है। चलति मराल गति बेंदीभालछाईअति मानो इंदुमध्यसुर सुषमासँवारी है॥ कहैंकविश्रीगोविन्द गोपिनके बृन्दनमें राजैमनु तारकन बीचहिमिकारी है। नैननचकोरतें निहारतयमुनतट गोप संग आजु कहूँ आवै गिरिधारी है ३३८॥

तथा। चलतगली में लली सहज सुभायनसों लखत गरूरता बिलात मारकामाकी॥ रम्भाशचीद्रौपदी बिलोकि जिहिं मोहैं तबकौनकहै मेनकादि और सुरभामाकी॥ भनै रघुनाथ शील शोभाकी निधान बाल मैनमदमाती कञ्जपद सुखधामाकी। लजतसुडारयों कपोतमदत्याजे देखि सरस मरालले सुचाल बर श्यामाकी ३३९॥

तथा। छबिनकी छायासब सुखनकी सुखदाया मोहनी कीमाया कीधौं कायाहै अनंगकी। बलभद्रभागकी सोहागकी सहायककी प्रीतिकी वकीलसखी योबनके संगकी॥ चित्तहीकी चातुरी कि आतुरे चरणकी की कातुरी कपट प्रीतिबदी सबअंगकी। पीयसुखदैनी इन्दुबरनैन तेरी गति सारससराल गजराज गतिभंगकी ३४० ॥

तथा। कञ्चनके खम्भ कैधौं ईंगुरसों बोरिराखे गोरे गदगदे चोरेचितहि अमोलये॥ केलिके निधान कैधौं मदन बिमानरूरे सरस सँवारे प्यारे करनकलोलये॥ जंघनयुगल देखि कदली लजाय बन गहन दुरी रहे बिराजी छबिनौलये। करिहि बिलोकिकै पटकि डारै बार बार ऐसे सुखदायक अमोल मृदुगोलये ३४१ ॥

स०। जाहि बिलोकि मरालहुलै कुलजाइरमै सरमै सरमाई। त्यों सरिको करिकै करिहू भरिलाज उरै रहै शैल सकाई॥ श्रीरघुराज सुनो चितदै सति रुक्मिणि गौनहै मंजुमहाई। उर्बशी मेनके रम्भै तिलोत्तमै कीधौं इहै गति मन्द सिखाई ३४२ ॥

क०। घाँघरेकी घूमनि घनेरीछबि घूँघटकी छाईसरसाई धुनिमंजुल मँजीरकी। लङ्ककी लचनि कुचभारकी खिचनि अंगरागकी रचनि नैनचोरै गतितीरकी॥ कहै नन्दराम तैसे मुरली मुकुटकाटि तट पीतपट जो हरत मति धीरकी। गोरे गोरे गातके निहारे नँदनन्दन ज्यों साँवरी सजीली देखी नन्दनी अहीरकी ३४३ ॥

चतुराई वर्णन ॥

क०। मंजनमें अंजनमें पुनिदृगकंजनमें हेरनमें टेरन में सैनमें सोहाई है। सैनन में वैननमें कंचुकी उतारन में अम्बरके धारनमें मंजुतासवाई है॥ भनैरघुनाथ देतपानें खानहूं में बहु हँसवतरान और मानमें मिठाई है। चाल में जँभाई अंगराई मनमोहन में देखो जहां छाई तहां चारु चतुराई है ३४४॥

तथा। आननकी ओप कहिवेकेकाज बलभद्र कवि कोरि उपमान मनमें कसतुहै। जोई भाव देखत अघाने नाहीं नयन नेक सोई भाव प्रीतम के मनमें बसतु है॥ गोरो बड़रारो प्रिय सुन्दरवदनतेरो बोलत जँभात मुसुकात हुलसतु है। मित्रकी किरनि परसत कोकनदमानो छिनकु मुदित होत छिन विकसतु है ३४५॥

वस्त्र व आभूषण आदि के कबित्त व सवैया ११॥

सोरह शृङ्गार वर्णन॥

क०। मंजन सुनेह शील बोलन चितौन चाल मृदु मुसुक्यान चारु गूथन सुबैनीकी। सेंदुर सुमांगभाल तिलक दृगंजनहूं बीरीमुख चिबुक मसीकनके तैनीकी॥ भनै रघुनाथ अंगराग अरकेसर को करमेहँदीकी दैन सब सुखदैनीकी। जावक समेत सोला लसैं कंज पद कैसे देखत बनेहै कान्ति वहि मृगनैनी की १॥

बारह आभूषण वर्णन॥

क०। बेंदीभाल नासावेसर बेसर तरौनाकान कण्ठ सिरी कण्ठहार हीरामणिसंग में। बाजूबन्द कंकन औ मुंदी

छलाछापयुक्त नीबीबन्द किंकिणी सोहाई रसरंग में ॥ भनै रघुनाथ पांयनूपुरमंजीरमंजु राजत रँगीलीभरी योबन तरंगमें । लीन्हें प्रतिबिम्ब चन्द्रबिम्बकी निकाई लखे बारहूअभूषण बिराजै बालअंग में २ ॥

सारीबर्णन ॥

क० । कंचनकी बेलीपै तमाल तरु छाया किधौं कैधौं घटाकारी आनि छायरही छनपै । कैधौं यमुनाजल में झलक दिखात दिव्य तारागण चन्द्रभानु पुंजबिज्जु घन पै ॥ भनै रघुनाथ कहौं कह उपमादै याहि हास्यो हेरि चढ़त न एको और मनपै । कैधौं जरतारी मणि मोतिन किनारीदार सोहत है प्यारी श्याम सारी गोरतनपै ३ ॥

तथा । श्वेतसारी सोहत किनारीदार जगमगी सारी सरीकोरनसों मोतिनको साजरी । चन्दथिर शरदकोमेघ ज्योंउमड़िआयो तड़ित समेत कैधौं शोभा मरयादरी ॥ चांदनीतरैयानैन मृगनकीपालकी पै चढ़िचली शिवनाथ सहित समाजरी । राकाकीसी मूरति बिराजमान बाल बर पाहुनी परमआई शरदके आजरी ४ ॥

लहँगाबर्णन ॥

क० । बरकमखाबलाल ललितजरीसोंजगौ बूटाबेल बेसभरो रतन अथोरी को । बनत बिशाल जालदार मणिमोतिनकी नहिं उपमान है त्रिलोक तिहिजोरीको ॥ भनै रघुनाथ ताहि देखत शचीहू लची मोही रति मान गयो धनपति गोरीको । राजत रसीलो चटकीलो कटि केहरि में शोभापुंज घूमदार घांघरो किशोरी को ५ ॥

स०। घेरिरह्यो कटिघांघरोघूमि मनोघनघोर उठो करि शोरन। चौंकि चितै वहि कुंजनते चहुँओरन कूक करी बनमोरन। बूटन लूटन प्राणलगे जरतारी किनारी लगी सब छोरन। प्रातचली वृषभानुलली लहकै लचि लंक परी झकझोरन ६ ॥

नीवी वर्णन ॥

स०। बातकहै अवला जवहीं तबहीं उचकै लखि मान भरीसी। जोहत देत बधूमुख तैसइ नाचत लाजहिं छांड़ि छरीसी ॥ यों चुनिकै कसि राखत है पियकै ललचावन काज धरीसी। नीवी विराजत नाभि मनोहर कै शिवनाथ सनाथ करीसी ७ ॥

कंचुकी वर्णन ॥

क०। नीलरंगवारी जरतारी जरी हीरालाल लोहित किनारी हरी मनिन गसीहै कै। कैधौं चक्रवाकन पै छाई है क्षपाकी छवि तापै नखतावलि की ज्योतिही लसी है कै ॥ भन रघुनाथ किधौं सघन घटापट मैं दरशत दीप्तवान युगल शशीहै कै। सम्पुट सरोजनपै आभाहै मनोज किधौं उन्नत उरोजनपै कंचुकी कसीहै,कै ८ ॥

तथा। राजै सुरमन्दिर में सुन्दरि अनन्दमान मानौ हेमशैल खोह शशिछवि छाज्यो है। बिम्बकुच कुम्भन पै श्यामता अमन्दलसै तापै श्यामकंचुकी निहारि तम लाज्यो है। भनरघुनाथहिये लालनकी मालमध्य कुलिश विशाल एकअतिद्युति साज्यो है। कैधौं चन्द्रशेखरपै राहु ह्वै छटापैघटा तापैतड़ितामें आनि चन्द्रमा विराज्यो है९॥

रोरीबिन्दु वर्णन ॥

क०। कैधौं चन्द्रमण्डलमें मंगलप्रकाश कियो कैधौं सुधासिन्धु मध्य फूल्यो अरविन्दु है। पीय सुखदान है गुमान गज रम्भा रमा हत रतिशान मान सौतिनको नि-न्दुहै॥ भन रघुनाथ नेमसागर उजागरहै आगर सो प्रेम नेम शोभा सुख सिन्धुहै। नन्दलला निरखि निहालहोत जाल बाल देखे तुव भाल लाल रोरीको ये बिन्दुहै १० ॥

तथा। बपुचक्षसो लगायो भायो गुरुबन्धुजानि भूमि सुत भेंटतकैठउप नरिन्दहै। कीधौं रवि रथसारथी कुरंग रथसारथीभो कीधौं निज नारि लिये उधर इन्दहै॥ सौतिनके गर्व दहिबे को है दहनकन बलभद्र सब सुख देन दुख निन्दहै। राग पिय मन को पराग सुख पंकज को भामिनी के भाल कीधौं बन्दनको बिन्द है ११ ॥

ताम्बूल वर्णन ॥

क०। सागर सुधामें किधौं सुरगुरु शोभावान कंजतें किधौं या अरुणाई फलकत है। लालन को जाल के दिखात रतनाकर में कैधौंरूप अम्बुधिते छबि छलकतहै॥ भन रघुनाथ गोरताई को मिलाईपुन सरस निकाई की रतौंहू ललकत है। पानपीक लीकको लखाई परै कण्ठ बीच प्यारी मुखचन्द्र में ललाई झलकत है १२ ॥

तथा। ओठसुठपुरटबनाये बिधिकारीगर जड़तचुनीन मनमोहन सुघरके। सुन्दर सुठारुचारु सुन्दरिके कानन में राजे पान चारुरूप मानो दिनकरके॥ भन रघुनाथ है न मोलको कुबेरकोश डोलत न मीनपत्र कैधौं देवतर

के। रतिमद नाखा किधौं पति अभिलाखा दैन शाखा प्रेम पातकै पताका पंचशरके १३॥

मेहँदीबुन्दवर्णन॥

क०। कैधौं कंजपातनमें ब्रज मकरन्दबुन्द सौतिन को मानभयो देखदेख ऊनरी। कैधौंप्रतिबिम्बनमैं झलकत पद्मराग लाल यों प्रवालकी भई है द्युतिन्यूनरी॥ भन रघुनाथ कंजलोचनी खली के कर मेहँदी के बुन्द लाल शोभाकुंज दूनरी। प्रीतमकी प्रीत किंकरी कै दैन काज किधौं दासी रंगरेजनी बनाई बर चूनरी १४॥

महाउर वर्णन॥

क०। वारौं मुखचन्द्र चन्द्रिका पै चन्द्रमाकी छटा वारौं शची रम्भा काम सुन्दरी निकाई पै। वारौं कंज कोमल गुलाब गुलखैरा फूल प्यारी मृदुमूल कंज पद अरुणाई पै॥ भन रघुनाथ जपा दाड़िम कुसुम्भ गुंज रम्भा जाय सोनके प्रसून रंग छाई पै। वारौं पद्मरागलाल माणिकप्रवालरंग तेरेपदपंकजकी जावकललाई पै १५॥

तथा। कीधौंबन्धुजीव सेवै चरणसुगन्धकाज सोहत सकल शुभ रजोगुण सीवहै। फूलफूले सुखके कलासी हारे कोकनद बलभद्र करकस नाल छिद्रग्रीव है॥ कनककी भूमि पूरि पूरिरह्यो भारती को ईंगुरके आखर बसत पीयजीव है। राते रसरंध्र रस तिय तेरे पायें सो है जावकको रंग कै शृंगारन की सीवहै १६॥

शीशफूल वर्णन॥

क०। शीशफूल शीशपै रतीशके निशान कैधौं लाल

लै भुजंग दाबे मुखमें सोहातहै। भनत दिवाकर की य-
मुनाके तटपर तोयपरफूले जलजात सरसात है॥ हारो है
लड़ाई कैधौं राहुने क्षपाकरते लागे चोटग्रीव मानो लोहू
उगिलात है। कैधौं काले मेघ में बिभासमान मंगल है
मारतंड ज्योति पेखिपेखि तरसातहै १७॥

भालसहटीकी बर्णन॥

क०। पाटी तरे बन्दनी जटित पोखराजराजें झा-
लरहू मोतिनकी झूलत रसालहै। भनत दिवाकर सुटि-
कुलीजड़ाउदार भानके नखत कैधौं चारासुत आलहै॥
देवनके गुरू शीश सोहैं बिन्द केसरको ये सब एकत्र ह्वै
बढ़ायो छबि जालहै। हीरामणि माणिकते बन्दनी चम-
कदेत ओपके उजास कैधौं मैनकी मशालहै १८॥

तथा। अमित प्रभा सो जासु परम प्रकाश पुंज
प्रियमन आसदास गुनियन साज्यो है। जिहि लखि
सौतको गुमान ध्वांत भाज्यो हेम बेंदी बेश बालके सु-
देश भाल राज्यो है॥ भन रघुनाथ जड़ी हीरनकी कनी
मनो ताके बीच माणिक अनूपछबि छाज्यो है। तारागण
आसन बनाय पाय मान महा कैधौं भानमण्डल में
मंगल बिराज्यो है १९॥

नथबर्णन॥

क०। कुन्दन कमायो बिध सुघर सुनार मनो रतन
जराय देखि मुनिमन नथको। पीय युगनैन ऐन फांदन
फँदाहै किधौं सुखदसदाहै निजनायकअरथको॥ भनरघु-
नाथ प्रेम कुंडहै अखंड मारतंडकी कलाकैसे तमानध्वांत

मथकौ। अकथ अमन्द नाक नथ नवमंजु किधौं प्रीति कुंज पुंज चक्र कैधौं मैन रथकौ २० ॥

तथा। नैननटबानके निकसिबेकी कुंडली की पारस अदसकै चरण बन्दरथको। किधौं बलभद्रकीन्हों सूक्षम सुहाग जानि जातरूप कुंडपिय मणिकेशपथको॥ किधौं जगजीति धाम दीन्हों है कि तोहिं बाम कामदेव चकवे की चक्र आप रथको। नीकी नासापुटनीकी नथ नई किधौं नाह चित्तकन्दिबेको फंदा रोप्यो मनमथको २१॥

लटकन बर्णन ॥

तथा। जड़ेजवाहिरहीरा मोतीलगेआसपास तारा गण मध्य मानो बैठोबड़ोचन्दाहै। कीधौं सरसरसगुलाब बीचसांधिराखो कीधौं अतिप्यारोलागै ओसकैसोबुन्दा है॥ कीधौं यशवन्तसिंहशोभाको अंकूरबनो मेरोमनमोहिबेकोकीन्होंकामकन्दाहै। झूमिझूमि झुकिझुकि झूमैं अधरनपर लटकन न होय प्राणफांसिबेको फन्दाहै २२॥

बुलाकबर्णन ॥

क०। कुन्दनकीतारकी संभारी बरबारीबेध बंशीसम वीचलगी मणिद्युति भारीकी। नासा मध्य लसत बिनोदरसपागी सदा सौतमदमथन मनोज मतवारीकी॥ मन रघुनाथ चाख अधरसुधारस को डोलतहै हंस बतरानि में दुलारीकी। पतिअभिलाख लाख पूरणकरन हार सुबरण मुद्राकी बुलाक वह प्यारीकी २३॥

कर्णफूल बर्णन ॥

क०। परमप्रकाशवानशोभाके निवासहुवौ कैधौं ये

प्रभाकरके मंडलअतूलहैं। जगमगहोतिज्योति जाहिर जवाहिरकी यदिछुरे यह दिव्य हरितदुकूल हैं ॥ भन रघुनाथ पैनिजटित मनीकनसों रविद्युति छीनें कीधौं तारातरु सूलहैं। पियहिय कर्णफूल कल्पफूलसे हैं यह तेरे कर्ण स्वर्ण के सुवर्ण कर्णफूलहैं २४॥

तथा। जरितजरायजगमगत सहसकर वलभद्र सुखकी कुमारिकाके भानहै। धरतत्रिधार है अपारतील नैननको कैरव अनंग आय रोपे खरसानहै॥ उपमा न आन मनरंजन बिहारीरति ताडवकेतार जिन्हें जानत जहान है। चन्द्रथचरनकी कामचक्रवेकी चक्र कीधौं तिय तरल तरौना तेरे कानहै २५॥

लोलक वर्णन ॥

क०। कंचनमणीहै अर्ध अर्ध दोई नीलमणि गोल गोल अमल रहीते छविछायकै। सोहै श्रुतिसुन्दरी सुमान हत सौतिनको प्रीतमके हीतल मनोभव जगायकै॥ भन रघुनाथ किधौं बीरमें शृंगारबसो कैधौं ग्रस्यो भान राहु गीकी संधिपायकै। धनअलकेश कौन मोल यों अमोल रहे डोल लोल लोलक कपोलन पै आयकै २६॥

बाली वर्णन ॥

क०। बिरचिबिचित्र विश्वकर्माकै अनन्त बुद्धशुद्ध शुचिसोनेकी सम्हारीसुखसालाकी। हीराकनीजड़ीमणि मोतिन लड़ीसोंमंजु उमड़ मरीचीगही फैल द्युतिजाला की। भनरघुनाथ रतिराजती छबीलीश्रुति युतअतिशोभा रूप रुचिर बिशालाकी। होतहै निहाल देखि लाल बालि-

हारी करैं जाल द्युतिवारी वरवाली बरवालाकी २७॥

कण्ठसिरी वर्णन॥

क०। सोहतहै प्यारीके गले में हेम कंठसिरी जाहि देखि सौतिनको दूरभो अनन्तमान। जटित अनूप नील मणिकनतामैं पुंज निजकर मानों रची बिधिबर शोभा वाल॥ भनै रघुनाथ किधौं गोपिनको बृन्दमान घर बहु रूप मिले चतुर सुजानकाल। जानतुंड शरद निशाकर प्रकाशकिधौंसोनजुहीफूलनपैबैठे अलिनन्दआन २८॥

हार वर्णन॥

क०। सुघरसुबुद्धी विश्वकर्म्मासम कारीगर गुहे देखे वाकोमित चंगसों चढ़तहैं। डोलतफिरत नहिं खोलतहिये की पीर मेरीकर तेरीसौंह तोजसपढ़तहैं॥ तुमतो सुघर स्यानी कहिये सबहिबात चलियेजरूर बैठे कहाका कढ़त हैं। मेटोमनबाधा हठीपूजे मनसाधा वेतो रातौदिन राधा राधा राधाही रटत हैं २९॥

तथा। बैठीकुंजभौन महरानी सुखदानीसबै किन्नरी नरीन ये सुरीन सुरगावतीं। कोरैकंबुलसी है सुवामें इन्दु आननसी प्रमुदित झूमिझूमि पग सहरावतीं॥ लैलैरी सुगन्धैं गुंजैं धीरेधीरे प्यारीपर भौंरनकी भीर हठी ऐसी छबिछावतीं। गोरेगोरे गातनपै नवलकिशोरीजूके श्याम रंगवोरे मनो चौंरन चलावतीं ३०॥

स०। हीरनके हठीहारगरे गजरा गजमोतिनके सुख दानी। जोरै जरी भरी मांगसिंदूर सुरम्भा रमा रतिरूपनसानी॥ पन्नाप्रबालन लालनकी पसरी किरणैं सुषमासर-

सानी। कोहै त्रिलोकमें मोहै नहीं लखि सोहै सोहागिनि राधिकारानी ३१ ॥

क०। केसर अगरखसचन्दनलगायोभौन अतरपुतायो भो सुगन्धचहुँओरीहै। कंचनफ़रशमखमल के बिछौनाबिछे जरीके वितान आसमान जनुजोरी है॥ आसपास चन्द्रमुखी व्यजनचंवरढारैं लीनेपानदान कीने रतिद्युति थोरी है। सुखदानभरी रूपके गुमान आज साज स्यान करि बैठीबृषभानुकी किशोरी है ३२ ॥

तथा। करनतरौना जगमगत जराऊतापै दामिनिदमकचारुचपलाविशेखोतौ। सुन्दरसुघरमनमोहनसुजान हठी इन्दीबरलोचन सुफलकर लेखोतौ॥ मोतीगुहे मांगमध्य ताराग़ंगधारकिधौं भाग वा सोहागकी बनाई त्रिधिरेखोतौ। मृगमद बिन्दुदीने कोटिचन्द मन्दकीने राधे मुखचन्द ब्रजचन्द चलिदेखोतौ ३३ ॥

तथा। पियहितकारी क्षीरफेनसी सम्हारी सेज मैनमदवारी शोभा सोहतबदनमें। मोतिनकिनारी वारी हठी सेतसारी शीश कैधौंदामिनीकीद्युतिराजतरदनमें॥ कोटि कोटिसुषमासी मंजुघोषा औ तिलोतमासी रम्भा रति मैनकासी वारिये अदनमें। सुखसरसानी कलकोकिल की बानी सुरगावैं सुररानी ब्रजरानीके सदनमें ३४ ॥

तथा। फिरतकहांहैबीरबावरी भईसी तोहिं कौतुकदिखाऊंचलिपैड़े कुंजद्वारीके। निमिषनिहारैं डीठ कितहुं न टारैं मार नन्दकेकुमार मैन सैन सुकुमारीके॥ करनपसार करदृगनलगावैहठी बशपरै गरबीलीग्वालसुकुमारी के।

आई देखिहौंहू औ दिखाऊं तोहिं चलिलालचरणपै लोटै वृषभानुकी कुमारी के ३५॥

तथा। भूमिभूमिआये घूमिघनेघनश्यामआलीकूदै काकपालीकामपालीबरसामाके। मणिसफ़टिकचन्द्रकांत शुचिहीराहेर मोती मीन बंशजबराइबड़दामाके॥ भनै रघुनाथ वही साजत रसीली ग्रीव कैधौं यह शोभासिंधु सीवतनकामाके। कैधौं गंगधारगरे हेमगिरि आई यह राजतहै कैधौं चन्द्रहार उर श्यामाके ३६॥

पोतडुलरी वर्णन॥

क०। त्रिभुवनरूपकी त्रिरेखाकीधौंमोहनीकी सुरनर नारिछवि करननिकन्दकी। पोतिकलमेचक डुलरिद्युति दमकत मानो अंसहंसके लसतसंगमन्दकी॥ झलकत सुतिसिरीशोभा लोलगोलगति कीधौं है बिराजति कि-रण मुखचन्दकी। बलभद्र ग्राम को कलंबनिकी कोक कीधौं कम्बुकण्ठ राजतलकीर जम्बुनन्दकी ३७॥

चम्पाकली वर्णन॥

स०।शशिभानुगुरू बुधभौमकवीयुत पुंजनक्षत्रन की अवली। गिरिमेरुकी देत प्रदक्षिणसों किधौं चाहत है निजपुण्यबली॥ रघुनाथ भनै किधौं कंचनकी रतनावलि सों जड़ी भांतिभली। वृषभानुललीके गले बिचसों यह सोहत सुन्दर चम्पकली ३८॥

जोसन वर्णन॥

क०। चोपित अनूपद्युति लोपित प्रभाकरकी रोपित पतीमन प्रभाके पुंजमोखये। गोपितमनोजरंगपाटअति

शोभितहैंकुन्दबरमानो रसराजके झरोखेये॥भनैरघुनाथ
मंजुकंचनकमाय।किये कैधौं अतिपरमप्रकाशरसचोखेये।
सोसनकरन हेमदोसनसों बचेबंध भुजमृदुकोसनपै जो-
सन अनोखेये ३९॥

बाजूबन्द वर्णन॥

क०। सोनेके सम्हारेजड़े मणिउर बिन्दबज्र नीलम
अमंदजे खरादेखरसानपै। कैधौं आलबाल पारिजातके
पवित्रयुग्म धाराबांधि किरण कतारापरे भानपै॥ भनै
रघुनाथ प्राणपति सुखदानसदा करतप्रकाश अंधकार
सौतसानपै। मोहतपुरंदरी लजातरतिरम्भादेखि बाजू-
बन्द राजैं शुचिसुन्दरी भुजानपै ४०॥

कंकण वर्णन॥

क०। शुद्धकर सोनाजड़े मरकत पद्मराग पदिकबड़े
जे शुचिशोभासुबरनमें। परमप्रकाशमान चारु चंचलाते
अति दीपति न ऐसीहै निशाकर तरनमें॥ भनै रघुनाथ
विश्वकरमा बनाये किधौं तिनसमता को कहा ताकैया
धरनमें। कहत असंख्य मोलशंकउर आवै लखि राजत
हैं कंकण किशोरीके करनमें ४१॥

पहुंची बर्णन॥

स०। मणिमाणिक हीरा जड़ायजड़ी ललना करमें
छबि छाजती हैं। बिच राजती कंकण चूरिन के उपमा
जगकी सब भाजती हैं॥ रघुनाथ भनै तिन्हैं देखतही
रतिरम्भा रमाशची लाजती हैं। सुषमामेंसनी द्युतिवारी
घनी पहुँची करमें अतिराजती हैं ४२॥

चूड़ी वर्णन ॥

क०। कंचनकी हरित मणीन सों जड़ीहै वर कैधौंभरी प्रीति पतिव्रतकी उमरमें। शीलमें सनीसी रतिमानको हनीसी घनी ज्योति जाल जाके मिलिजात प्रभाकरमें॥ भनै रघुनाथ किधौं सुखसर शोभासिंधु जुरत न एकौ उपमा न बिश्वभरमें। भागभरी भूरियां सोहाग भरीपूरी हरी पूरी पूरी चारुशब्द चूरी कंजकरमें ४३ ॥

छल्ला वर्णन ॥

क०। पुरटप्रपूरेभूरे जटित मणीकन सों निघटतमान सदा काम भामिनीके हैं। राजैं करअँगुरीन अतिछबि छाजैं शुचि करन सलज्ज यामिनीमें दामिनीकेहैं॥ भनै रघुनाथ यंत्रमोहिनी समंत्र किधौं सिद्धकिये राजत गयंद गामिनीकेहैं। प्रेमके लताहैं कामफन्दके कलाहैं किधौं सौतमदखाहैं कै छला ये कामिनीकेहैं ४४ ॥

अंगूठी वर्णन ॥

क०। कंचनलै बिमल बिरंचिने बनाई किधौं रुचिर अनूप देखि लाजत पुरन्दरी। तामें चन्द्रकांति एक अर्द्धमणि मुद्रितहै मानो रसबीरमें प्रकाशी हासबुन्दरी॥ भनै रघुनाथ किधौं मेरुकन्दरा में चन्द्र कैधौं भानुगोदमें बिराजो इन्दुनन्दरी। देखैंकाम सुन्दरीभईहै मतिकुन्दरी सो अंगुरी अमन्द सुन्दरी कि यहमुन्दरी ४५ ॥

छाप वर्णन ॥

क०। कंचनमें साज्यो एकहीरा भूरतौलमोल राजत है तर्जनी सुजानसी रसीलीकी। केसर के कुण्ड में प्र-

काशमान कैधौं चन्द्र कैधौं छटाछाई यही नागरी लजीली की ॥ भनै रघुनाथ हैन दूजो उपमानलोक हेरि हिये हारो प्रभापुञ्ज उमगीलीकी । हरण त्रिताप या सदैव निज नायककी परमप्रतापवान छापहै छबीलीकी ४६ ॥

किंकिणी वर्णन ॥

क० । कैधौं हेमशैलकी शिखापै लखिबैठो चन्द उड़ अवलीनै मन बात या बिचारी है । चढ़कर भूधरपै पूजहि प्रमोदपाइ पावत न राह रही घेर हियहारी है ॥ भनै रघुनाथ किधौं मंजुकटिकेहरिमें मोतीमणि हीरालाल जालकी कटारी है । लाल मनमोहनको नवलरसाल बाल साजी अलिमण्डन या किङ्किणी लिहारी है ४७ ॥

पैंजनी वर्णन ॥

क० । सुवरसुनार ह्वै बिरञ्चि बिरचे हैं किधौं लैकर सुवर्ण स्वर्ण यह अलवेलीके । लसत सुवर्ण चर्ण परम सुवर्ण युग्म कैधौं आलवाल ये शृँगार रस बेलीके ॥ भनै रघुनाथ दिव्य सुर अतिशोभावान परम प्रकाशवान रतिमद भेलीके । रतिरण जीतके वजेहैं रणकङ्कण ये कैधौं पदपङ्कज में पैंजनी नवेली के ४८ ॥

पायजेव वर्णन ॥

क० । सुभग शृँगारलोक सुन्दर सुपानमनो पेखत परम उपमाऊ बिसरति है । गतिके सदनकी मदनके समासे है की गुरज पियाकी मति तिनसों अरति है ॥ प्रेमछत्र दण्डके की बीउ कीधौं बलभद्र कल धुनि राग

रागिनीन निदरति है। पूरण मयङ्कमुखी येरी यह तेरी सुनि जेहरि बिहारीजूके मनहिं हरति है ४९ ॥

तथा। कंचनसे जटित जवाहिर अमोलरत्न आइकै समायरहीं शोभा जग जेती हैं। देखतही रम्भा रति मैनका लजाय रहीं चारु चंचला को ये चुरायेचित्त लेती हैं॥ भनै रघुनाथराव सुरमुनिमोहै कन्त मानतजि होतीमन्द सौति जगजेती हैं। औरन केपाय पायजेबन को जेबदेत तेरेपदपाय पायजेब जेब देती हैं ५० ॥

कड़े वर्णन ॥

क०। राजैबाल पगन सुवर्णके सुबर्णबेश अतिछबि छाजै प्रभा पुंज रस चाखीये। कैधौं प्रेमफन्द कृष्ण रस तरुकन्द किधौं आनँदके सिन्धुके गुविन्दगुणभाखीये॥ भनै रघुनाथ चड़ेपीन पेडरी न आन कैधौं मड़ेमान कड़े तड़ताहिनाखीये। मैनके गड़ेसे जड़े वड़े वड़े हीराचीर कांतितैं कड़ेसे कड़े करत कजाखीये ५१ ॥

नूपुर वर्णन ॥

क०। कनक रची हैं जड़मणिन शची हैं बेश देखतही चातुरी भुलानी चतुरनकी। चलत मतंगचाल मैन मतवारी मन्द बजत वधाई मनोजीति रतिरनकी॥ भनै रघुनाथ सप्तसुरवरपूर्ण शुद्धशब्द सुनिमोहै मनयक्ष किन्नरनकी। लाजैं सबसौतैं प्राणपति सुख साजतहै कान सुनै बाजन अनूप नूपुरनकी ५२ ॥

तथा। लाजके सँघातीके सँघाती मुनिध्यानिन के मन मोहि बलभद्र थातीये लहति है। जावक शोभारती

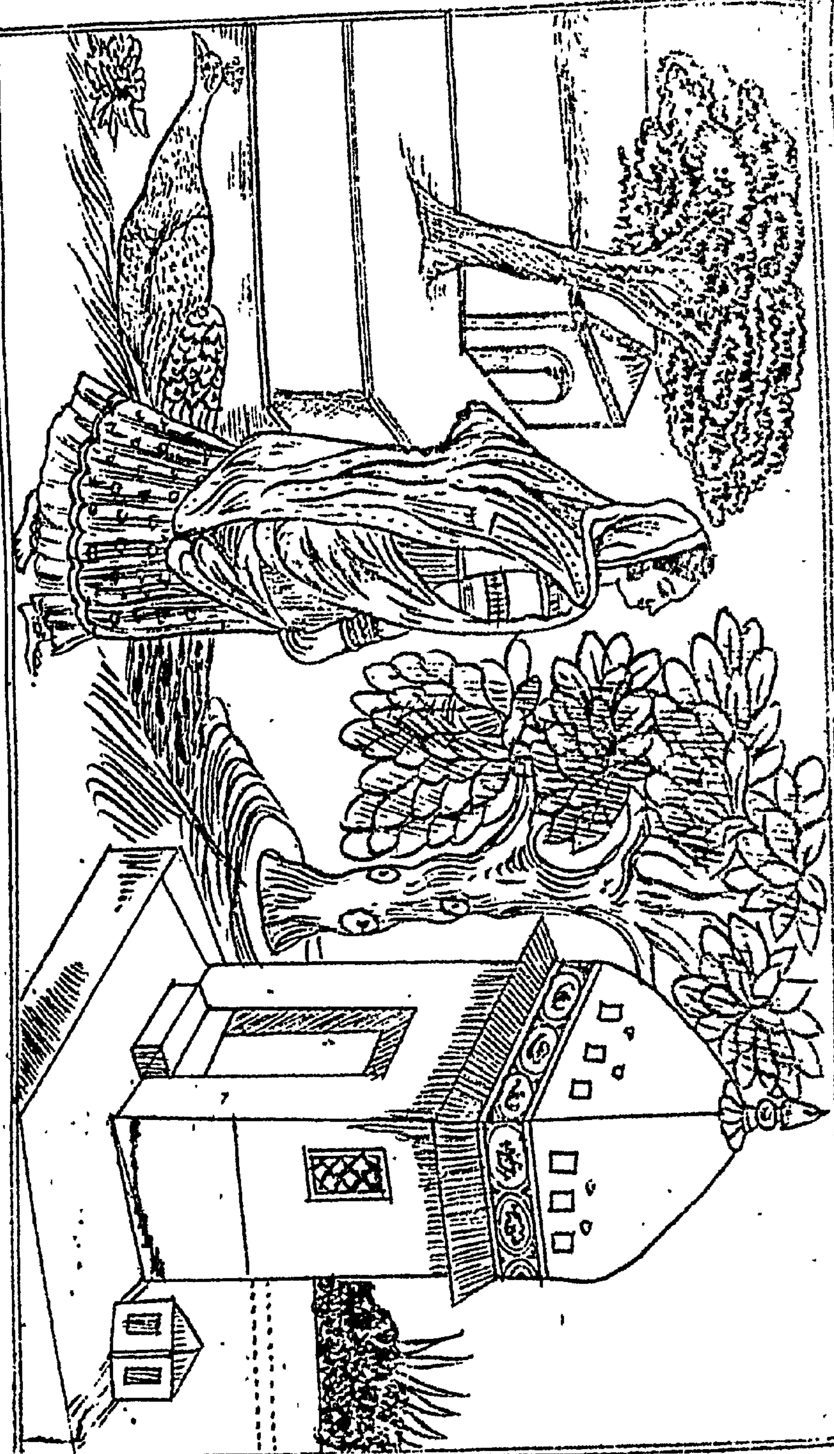
की कुलद्विजदेव कैधौं करत निगमधुनि अघन दहतिहै ॥ प्रीतिके बढ़ावन है गावनहै भावनके काननको कामकी कहानीसी कहति है । नूपुर विचित्रतेरे चरण परत नीके जिनके सुनतही विचार ना रहति है ५३ ॥

तथा । सुरनको साजि कैधौं गतिन समाज सोहै मोहै मनमोहन को ऐसीधुनिकामें हैं । कमलके दलनि मरालन के बालन ज्यों लियोहै बसेरो कल मुखरछमामें हैं ॥ श्रुति सुखकारकी बिहारीकी निपुणताई कारणबनाये विधि तालनके धामें हैं । चितउ चकावन लोभावन कुशलसिंह नूपुर बजत कैधौं मदन दमामेंहैं ५४ ॥

बिछिया वर्णन ॥

क० । सोनेके सलोने अतिऐसेहैं न होने कहूं टोने से त्रिलोकि मनोमोची सौतियनकी । मदन खिलौने से ग ढ़े धौं यह कौनेबेश वरअनुहारहैं गुलाव कलियनकी ॥ भनै रघुनाथसुन्दराई के निकेत लेख देखतहीं धामदीप्ति दुर त दियनकी । छनक छबीली चलै सुरतलजीली होत झनक सुनेते झनकारे बिछियनकी ५५ ॥

तथा । नवचित गतिकी कि रतिकी धुवाई काम का रिका सुहाई सो कहाई आपुभारती । स्मरसमरकाज भ रन कवच साज बाजत सबल सौतिलाजत निहारती । गुनके प्रशंसी कै सोहागअंसी वलभद्र मुदित उदित सह चरित निवारती । कोमल अमल पदपङ्क जनहंस कैधौं मदन महोत्सवश जोइराखी आरती ५६ ॥


कुबड़ी की मूर्ति.

अनौटवर्णन ॥

क०। पोसनाशिंगारुचारु ताकेगृह चारु किधौं रस-
पतिसारशुद्ध अमितनवेलेहैं। जिनहि निहारिलजीसुर-
पतिनारिप्रभा पूरितअगारकै मनोजखेलखेलेहैं ॥ भनै
रघुनाथ पर्मपूरणसुहागभरे भागभरे अतिअनुरागरस
रेलेहैं। पुरटपटेहैं मणिजटितअजूबेअटे बालातोअंगु
ष्ठद्दे अनौट अलबेलेहैं ५७ ॥

श्रीकूबरीजी विषयके कवित्त व सवैया ॥

क०। छलकरिछैलतजिगोकुलकीगैलतगी कुबिजा
चुरैल पगी मनवच कायहै। आपहैं सुखारी हमैं कि-
योहै दुखारी प्रीतिपाछिली बिसारी कहौ एक कछूनाय
है ॥ घनश्याम जीत ब्रजकाम बामनातहै ममारख
परीते सो यही परन पायहै। तरनउपायहै न देखिहैं न
पायहै जो औरैकलपायहै सो कैसेकलपायहै १ ॥

स०। छांडिकेमोहिं गयेमथुरा कुबरी तहँ जायभई
पटरानी। जो सुधिलीनी तौ योग सिखायो भये हरि-
चन्दअनूपमज्ञानी ॥ गोपसोंजोपै भयेरजपूत लड़ोकि-
न जोड़को आपुने जानी। मारसहौ अवलोगनकोतुम
याही में वीरता आय खटानी २ ॥

तथा। जाहुजू जाहुजू दूरहटो सोबकै बिनबातही
को अब यासों। वा छलियाने चवानकै खासो पठा-
यो है याहि न जानैकहासों ॥ काहिकरैउपदेश खरो
हरिचन्द कहै किन जाइकै तासों। सो बनि पण्डित

देखोतसवीर नम्बर ९ ॥

ज्ञान सिखावत कूबरीहू नहिं ऊबरी जासों ३ ॥

तथा। अबकाकहिये कहते न बनै हमरेसँगजो उन ऐसी करी। करिकैबिसवासमें घातहहा विषघोरिदई मिसिरीकी डरी ॥ भुवनेश न चैनपरैदिनरैन सुऐसी भईहै दशा हमरी। तजिकै हकनाहक हायहमैं सजनी उनने कुबरीकोबरी ४ ॥

तथा। नागरि एकतेएकबड़ी बड़ेनैन बड़ेकुचकुम्भ कितारे। जानतिहैं रसरीति प्रकास बिलास सुहास महा मुदवारे॥ द्वारकाराज भये कादिवाकर कूबरी नायन को पगटारे। गोकुलसे सुखनाहींमिले जिन्हराधेसी नारिअहीरकेबारे ५ ॥

क०। गोपी मनरंजन निरंजन बनेहैं जाय कुबिजासोंनेहलाय नीकीमोनतालई। वैसेही सुहाये सखा आयेहो बसीठीतुम मीठीसी बनाय हमैं चीठीयोगकी दई॥ ऊधोहमध्यानधरैं वेईदृगखंजनको अंजनकीश्यामताहमारेदृगतेगई। रैनिदिनधारयेअपार बहैंखोरि खोरि कहियो निहोरि अबकोरिकालिन्दीभई ६ ॥

तथा। फांसीनिरबानगुने ज्ञानसुने हांसीहोय श्याम की उपासीसबगोकुलकी डाचरी। भाषिहैं सुनामवाको रसनासों आठोंयाम राखिहैंहियेके धाम सूरति व सांवरी॥ बकिबोवृथाहै तव बातको न मानैहम बिरहकी बायते रहैंगी बनी बावरी। कुबिजै सुहागदियोहमको बिरागऊधौ बाजीतांति जानीगईरागरीति रावरी ७॥

तथा। यहांअनुरागऊधोलसतगुलालवहां यहांजागै

योग वहां भोग दरशंतहैं । नैन पिचकारिनते बोरें अँसुवानयहां वहांरंगकेसरि रसाल छिरकंतहैं ॥ हमैं हायदागत अनंगअंगअंगयहां वहांअंगअंगनशिंगार सरसंतहैं । खेलत हमारेसंग बिरहाबसंतवहां कूबरी के संग कंत खेलत बसंत हैं ८ ॥

स० । पाई बिभूति घनी तौ हमैं चितचाहि पठाई बिभूति उहांतें । त्यौं द्विजदेवजू कूबरी यों पठई यह कूबरी संगमनातें ॥ ऊधोजू कीजै कहा इतनो श्रम यों उपजाय हियेबहुघातें । जाहिरहै सिगरे ब्रजमें उन सुन्दर श्यामसनेहकी बातें ६ ॥

क० । आवतउसासी दुखलगै औरहासीसुनि दासी उरलाय कहो को नहिं दहाकियो । कहै पद्माकरहमारे जानऊधो उन तातको न मात को न भ्रात को कहा कियो ॥ कंकालिनि कूबरीकलंकिनि कुरूपतैसी चेटकन चेरी ताके चित्तको चहा कियो । राधे की कहनि कहि दीजो तुम मोहनसों रसिक शिरोमणि कहाय ये कहा कियो १० ॥

तथा । ह्वै रही कनौड़ी मति कौड़ीभई गोपी अति डौंड़ी फिरी लौंड़ीकी न लाजधारियतुहै । बने महराज आजसुनेहैं समाजबाद ताते फिरियाद हमहूंपुकारियतुहै ॥ दरदहरेहैं तब शरद निशामें श्याम अबक्यों करदलै करेजाफारियतुहै । चाहिये कठोरता न एती बरजोरऊधो काकरीके चोरन कटारीमारियतुहै ११ ॥

तथा । दासी वह भूपकी सरूपते प्रकासी किमि

कैसी चाल खासी कौनिचातुरीसों भरीहै । कौनिसिधि सनी केहि विधिकी बनाई बनी जाको ऋधि निधि धनी भजैं घरी घरीहै ॥ कहो कौन सजि साज हर्यो मन महाराज लोकलाजतजि जाते ऐसीप्रीतिकरीहै । सोने की शलाकासी सुनीहै हम शाकाऊधो कामकी पताका किधौं नाकाधीशपरीहै १२ ॥

तथा । जानिजालकळूकलाबसैवाकेकूबरमें जातेलला पलापलाभरैंभलीफेरीको । छलकी छटीलै नटी कपटी कन्हैयैभले कपिसोनचावति बजायकैहथेरीको ॥ नन्दन को त्यागि नँदनन्दनसोंकहोऊधो सेवनकरत कहारूंधो बनबेरीको । रूपगुणखानी राधानागरी भुलानी अब छांड़ि कुलकानी पटरानी मानींचेरीको १३ ॥

तथा । आवतिहै हासी उपहासी कान्ह कथासुनि किङ्करीको खासीमणि कीन्ही अवतंसकी । फाँसी फँसे ताहिकी उदासीरहैं ताके बिन नासी सबलाज महाराज यदुबंसकी ॥ भोरी मतिभई कहा रावरी सिखावो किन जोरी नाहिंबनै सुनो ऊधो बकीहंसकी । कहां सुखरासी ब्रजराज शम्भुहृदैबासी जगतप्रकासी कहो कहांदासी कंसकी १४ ॥

तथा । जोनप्रेम नेम प्राणप्यारेको हमारेसाथ कहो ब्रजनाथ गोपीनाथक्यों कहावहीं । लायअङ्कबङ्कलखे पङ्कजसेलोचनते आवैअबशङ्कतो कलङ्ककहालावहीं ॥ नन्दकेकिशोर चोरचीरदधि माखनके लाखनकरैंगेतऊ नामये न जाअहीं । सांचीप्रीतिराची जोजगतगीतिमाची

ऊधो क्यों न कुबिजाको अब बिरद बुलावहीं १५॥

तथा। खूबरीमची है जगकीरति वा कूबरी की वासी अब गिनी न सुहागिनी अवनिपै। रम्भा उरवशी शची रमा रती पारबती रती है न ऐसी आज सुरकी रवनिपै॥जासु गुणग्राम वसुयामही सराहैं श्याम ऐहैं नहिं राते माते कुंजरगवनिपै। दीनके दयालकी अनूठी यह चाल आली खीझतहैं मानगहे रीझत नवनिपै १६॥

तथा। गेह न सुहात हमें मेहसे झरैहैं नैन श्याम के सनेह देह दशाभई दूबरी। वे तो बनवासी ग्वारनन्द के कुमारसखी वातो कंसदासीबनी खासी महबूबरी॥ वेतो हैं त्रिभंगी और वाको अंग कूबरमें मिले हैं उमंग दोऊ संगबनो खूबरी। बड़ी है सयानी वशआनी कोऊ चेटक सों श्यामबने राजा अरु रानी बनी कूबरी १७॥

तथा। चन्दन लगाय नँदनन्दनको फन्दडारि मन्द मुसुकाय कछु कीनी धौं ठगोरी है। आलीप्रीतिपाली उन गनी न कुचाली क्योंहूं वेतो बनमाली वह माली की किशोरी है॥ जैसे कपटी हैं कान्ह तैसीछली वाहू जान हस्योहिय हाथही में बांधिप्रीतिडोरी है। करीअरधंगी निज कुबिजै त्रिभंगी श्याम वे अहीर दासी वह खासी बनी जोरीहै १८॥

तथा। फीकेपरे प्रेम ब्रजतीके साथ एहो नाथ जानै हमनीके मतिकूबरीने डहकी। लीन्हींसुधिनाहिं अजौं कोरकरुणाकीचितै कितैरहे बितैदिनगोपीगिनअहकी॥ बीतैं पलअलप कलपसे तिहारेहीन कीजैकिन दीनबंधु

खादि कालीदहकी। देखिदुखहाल क्यों नहोतहोदयाल आय डारो अबलाल काहे ज्वालमें बिरहकी १९॥

तथा। दूबरीभईहैदेह कूबरीसनेहसुने ऊबरीनशोकसिन्धुपायज्ञान बोहिते। रहीअकुलाय हायकरै शिरको नबाय कहैंयदुरायरहैं केतेदिनकोबिते॥ गाढ़ये अषाढ़ देखिबाढ़तीबियोगव्यथा दामिनी दमकि मोर शोरहैं जितैतिते। आये घनश्याम काहू बामनै सुनायो टेरि चौंकि चौंकिउठीं चन्द्रमुखीचहुँघाचिते २०॥

तथा। आपहैंत्रिभंगीगात भलीबनिआईबात योग योग मिलेबाढ़ैं भोगअधिकारेहैं। कारे अष्टकुण्डली हैं याहीते न ताननकी धुनिसुनिसो ये गुनि फुंकरनिधारे हैं॥ धारेहैंमुकुटवहै माथे मैं बिराजैमणि बांकीचितवनि बिषब्रजमेंबगारेहैं। मारेहैंगुरनिउन्हैं लाजौ ना लगति कूरकूबरीकेह्लैकै होनचाहत हमारेहैं २१॥

तथा। जैसेकान्हजान तैसे उद्धवसुजान आये हैं तो महिमानपरप्रानहैं निकारेलेत। लाखबेर अञ्जन अँजाये इनहाथनते तिनकोनिरञ्जन कहत झूंठधारेलेत॥ ग्वालकबि हालहीतआलनमें बालनमें ख्यालनमें खेले हैं किलोल किलकारेलेत। ध्यांन परचेरी योग चेरीसंग परचेरी योगपरचेरी भेजिपरचे हमारे लेत २२॥

तथा। ऊधो तेरेयार ऐसे ह्वैहैं रिझवारजाय जानती बिचार तोपैसूधोहोन जायबो। करतिविचार भांति भांतिकेसुभायभाय केतीबड़ीबातहुतीवाकोअटकायबो॥ ग्वालकबिपीठनपै एकएक हांड़ीबांधि नीकेमनमोहन

को करतीं रिझायबो। यातोकहूं कोई बहुरूपियातलाश करि सीखिलेतीं हम सब कूबर बनायबो २३॥

तथा। कैसेकैकन्हाईकी बखानैचतुराईकोऊ भेजीजो मिठाई तो कभूं न भरिहौं गरो। सारी जरतारी आंगी ओढ़नी किनारीदार धार धार फारिहौं पैन तनहिं है भरो॥ ग्वालकबि भूषणहूं भेजेहैं तौ टूटजैहैं ऐसे उर धारकै विचारकियो है खरो। भेजी मथुराते नई योगकी सौगातसखी खातिरजमासोंखाउपहिरोखुशीकरो २४॥

तथा।गोपिनकेकाजयोगसाजदैपठायोऊधो आवतन लाज डीठप्राणन पियोचहै। बरीहौं वियोग बिरहागिन भभूकनमें तापरसलूकलूकलाखनदियोचहै॥ ग्वालकबि कहै कौन कान्हरकी कुटिलाई कटेपै लगावैनोन काटन हियोचहै। कंसकी जो चेरी ताको चेलाभयो हायजाय हमैं भेजिसेली चेली आपनी कियोचहै २५॥

तथा। कूबरी कसायनकी रसकी रसायनसें शोभा सरसायनमें रहत खड़ाभयो। प्रीति ब्रजबालनकी नित उठिख्यालनकी हंसन रसालनकी झूलके छड़ाभयो॥ ग्वालकबि ऊधौ तौहू बिगर्‍यो कुसंग पर श्याम तौ लबार और निलज बड़ाभयो। आपकरैजारी हमैंयोग जरतारीभेजी देइँकहागारीभलोचीकनो घड़ाभयो २६॥

तथा। किये थे करार सो बिसारदिये दगाबाज नन्दकेकुमार संगको सँयोगिनी बनैं। कौन मुख लैके तोहिं उद्धव पठायो यहां कैसे कही बाने हाय लंक लोगिनीबनैं॥ ग्वालकबि याते एकबात तू हमारी सुनु

चुनिकै कहीहै यह तोपै भोगिनीबनैं। कूबरीको कूबकाटि लायदे शिताबीहमैं टोपीधरिताकी सब गोपी योगिनी बनैं २७॥

तथा। कहांगई अकिलतिहारी अबहींतेऊधो सूधो पन्थ छांड़ि टेढ़ो पन्थ क्यों गहतहै। श्यामजाको रंग रूप कामते करोड़गुनो नैनसैनबैनहूं सुधासे उलहतहै॥ ग्वालकबि जाको निराकार तू बतावतहै कैसे हममानैं निरो झूठही लहतहै। जूठनकी खानहारी कुबिजा नकी श्री दारी करी घरवारी तऊ ब्रह्म तू कहतहै २८॥

तथा। रूप में न कसरऔरागमें न कसर यहां लागमें न कसर न लाजहूकी घेरी हैं। रंगमें न कसर न कसर उमंगमें है प्रणके प्रसंगहूमें परमघनेरी हैं॥ ग्वालकवि हावमें न भावमें कसर यहां चावमें न कसर चलाक बहुतेरी हैं। तीनहैं कसर ऊधो काहूके न कूब यहां नाइन न जाति अरु काहूकी न चेरी हैं २९॥

तथा। कौन दिन कान्ह ने चढ़ाये प्राणऊरधको कियो कब इन्द्रिनको साधन सुधारहै। कौनसे सघन बन बैठिकै समाधि साधी कौनसे गुरूते सीखो योगको विचार है॥ ग्वालकवि ऊधोजाहि निर्गुणकहोहौ तुम सोतो वह औगुणको अखिलअगारहै। ऐतेको करार कियो आयो ना लबारमहा मामादियो मार वन्यो कूबरी को यारहै ३०॥

तथा। कौन चतुराईकरी जायकै कन्हाई वहां कूबरी लोगाईकरी औरतोझुरीलगीं। देवकीकी सेवकीन सेव-

कीपिताकी करी नाइनसुताकी भलीगांठसीखुरीलगीं॥ ग्वालकविऊधव योगपतियां की बतियां ये बिछुरीहुतीन त्रिपबुझीसीछुरीलगीं। लोकलाजलोपी प्रतिरोपीअंग ओपी जऊ तऊ हमगोपी हाय श्यामको बुरी लगीं ३१॥

स०। प्रीतिकुलीनन सों निबहै अकुलीनकीप्रीति में अन्तउदासी। खेलत खेल गयो अबहीं हमैं योग पठाय बन्यो अविनासी॥ त्यों कबिग्वाल विरंचि बिचारिकै जोड़ीजोड़ाइदई अतिखासी। जैसोई नन्दको पालक कान्ह सो तैसई कूबरी कंसकीदासी ३२॥

तथा। नन्दकोपालकहो पहिले फिर कंसकी चेरी को चेरोभयो। ताको परेखो कहा करियेभटू लाखनबार को हेरोभयो॥ त्योंकबिग्वाल करैतो कहा फिर सांपिनि सौति कोघेरोभयो। नेहछली मनमोहनको हमको अलि भूत को फेरोभयो ३३॥

तथा। उद्धवएक सँदेशोयही कहिदेउ तो बात सयानीकरो। कूबरीको ठकुरानी करी सोभले अपनी मनमानीकरो॥ पैकबिग्वाल मुनासिब औरहू सोऊ जरूर प्रमानीकरो। लांगरी लूलिन आंधरी कानिन रानिन में पटरानीकरो ३४॥

तथा। तोरिकै प्रीतिगयो मुखमोरिकै कौनसो नातो तुम्हारोरह्यो। मोहनसे छलियापै भलो अरे उद्धव तू हलकारोरह्यो॥ और कहा कहिये कबिग्वाल सो नन्दहुते वह न्यारोभयो। चेरीको नेहनगारोबज्यो अब काहेको प्यारो हमारोभयो ३५॥

तथा। लैगयोहै जबतेअक्रूर अरीतबतेवहुरंगीभयो। प्रीतितजी सबगोपिनते इकलोकुबिजाको इकंगीभयो॥ योंकबिग्वालही भाललिखीहुतो मीतसहीपैकुढंगीभयो। माय न बापको अंगीभयो सो हमारो कहो कब संगी भयो ३६॥

तथा। रासकियो औ बिलासकियो रहे पास हुलास कीरासलैलूटी। जादिन ते अक्रूर लेवायगो तादिनते गति औरहो जूटी॥ त्योंकबिग्वालकलंकिनी कूबरी कान लगे ते सबै मतिफूटी। वाहरे वाह गोविन्दछली भली योगकी भेजिदई बिषबूटी ३७॥

क०। माखनके चाखनको लाखन उपायकियो साखनतुम्हारी तऊ द्वारपैअरेरहो। चोरि चोरि दही लियो छोरिछोरि मही लियो कही अनकही सबसही पै खरेरहो॥ ग्वालकबि अचम्भोयही लहिकेहौ भूलिगये भेजो योग मूल नेकलाजतोधरेरहो। जानोंकहा रसकी रसायनगोपालतुम कूबरीकसाइनके पांइनपरेरहो ३८॥

तथा। तजि ब्रजबालनको मथुरागयो तोगयो उहां जाय कौनसो सुयश जगछायो है। करतो विवाह जाति पांति की कुमारी संग तऊ हमजानतींसुपंथमें सिधायोहै॥ ग्वालकबि जो पर सूरतहीपै रीझहुती तोपै भलीजाति की न नारीपै लुभायो है। कूबरी कलङ्किनि वा अङ्किनको अङ्कलाय कीन्ह भलोकुलको कलङ्क तैं लगायो है ३९॥

तथा। एरेनिरदई तेरीसुधिबुधि कौनेलई गई कहां प्रीतिरीति पाछिली जो खेली हैं। योगदै पठायो ऊधो

आयो औ सुनायो हमैं सब समझायो भलो तेरोयहभेली हैं॥ ग्वालकबि हमतो बियोग योग धारचुकीं तोईको मुबारक होय योग अरु सेली हैं। कूबरीके कानफाड़ माथो मूड़िराखलाय चेलाबनो ताकेयाबनावो ताहिचेली हैं४०॥

स०। शारदमासमें रासरच्यो यमुनातटपुंजबिलास की छावों। बीन मृदंग पखावज बेनु बजायबताय प्रताप हों गावों॥ ऊधो सुभौंह कटाक्षकेकोर करोरके प्रीतिकी रीति रिझावों। रीझ गोपालजो कूबरीपै तो कूबरआज मैं कौनपै पावों ४१॥

क०। पिंगपटलंकअंकजाल गुंजमालराजै चन्द्रिका मयूर चूड़ बंशीकर चहियो। मकराकृत कुण्डलप्रताप हों काननमें देखिदेखि आभा ऐन नैन लाहु लहियो॥ हाहासमीर बीर तोसोंहै निहोरा एक नेक वा बिश्वासी के पास होय बहियो। मोपै कृपाकै बहु भांति तू पाइँन परि मेरीगोपालजूते जैगोपाल कहियो ४२॥

तथा। जेते गये धीरजदै मधुपुर पथिक लोग तेऊ फिरे ना एक नैन थकिरहियो। चित्रसी ठाढ़ी ह्वै जोहती घरीनमग तुमको बिलोकि कछु धीर उर लहियो॥ ज़ात हो कापै प्रताप नेक ठाढ़ेहोउ एक हम दीननकी बात उर गहियो। हाहाबटोही बीर मधुपुर पधारो तो मेरी गोपालजूते जैगोपाल कहियो ४३॥

तथा। आपही त्रिभंगीगात भलीबनिआईबातयोग योग मिलै बाढ़ै योग अधिकारैहै। कारेअष्ट कुण्डली है याहीते न ताननहै ताननकी धुनिसों ये फंकारनधारै है॥

मुकुटब्ररहमयी माथेमें बिराजै मणि बाकी चितवनि विष ब्रजमें बगारै है। मारेहैं गुरनिउन्हें लाजौ न लगत कूर कूबरीके ह्वैकै होन चाहत हमारै है ४४॥

स०। योगलिखोहमको मनमोहन कूवरीकी यहसीख लईहै। केलिइतैकुबजापरिहास इतैब्रजमेंविषबेलिबई है॥ चाहिये जैसीनतैसीकरीबिधिभालबदी शिवनाथ भई है। जेपरहाथनहासरिबातकीऊधोतिहारियो बुद्धिगईहै ४५॥

क०। कहा लिखि पठवों सँदेशो आली ऊधौ हाथ उनके तो मनमांझ वहै बसी खूबरी। बारेकेबहेवा कान्ह कारे अति अंगहीके कारी कारीबातैं सुनि होत हैअजूब री॥ कहै गोपीनाथ प्राणनाथ जिय ऐसी ठानी जो पै जिय आनी ऐसी गही दांत दूबरी। कहिवे को शरमीहैं देखिबेको नरमीहैं बड़ेइसुकरमी हैं कूबरी नऊबरी ४६॥

तथा। शोच न हमारे कछुत्यागे मनमोहनके तनको न शोच जोपै योंही जरेजायहैं। कहै पद्माकर न शोच अब येहू यहां आयहैं तो आयहैं न आयहैं न आय हैं॥ योगको न शोच अरु भोगकोनशोच कछू याही बड़ोशोच सोतोसबनिसोहायहैं। कूबरी केकूबरमें वेध्योहैत्रिभंगता त्रिभंगको त्रिभंखीगीलाल कैसे सुरझायहैं ४७॥

स०। पाती लिखी नँदनन्दनको कछु चोस में घेरि घटा घहराइहैं। दादुरकी बैदरारनको सुनि धीर अधीरन क्यों धरजैहैं॥ ज्वाब कछू लिखिदीजो हमैं नँदराम न ताप हिये सरसैहैं। आइहौ जो मनमोहन तौ वह कूबरी दूबरी दूवरी ह्वैहैं ४८॥

श्री कृष्ण चन्द्र जी का जितनी गोपियां थीं उतने ही रूप धारण करके रास लीला करना.



रासलीला के कवित्त व सवैया १३ ॥

क०। बाजत मृदङ्ग मुरचङ्ग बीन औ उपङ्ग तातथई तातथई करत उमङ्गमैं। मेलिकै भुजानको सुजान नृत्य कला कान्ह बीच बीच नाचैं मिलिगोपिन के सङ्गमैं॥ भृकुटी मटक पटपीतकी चटक चारु कुण्डलझलक छ-जे छविके तरङ्गमैं। पदकी पटक पानि झटक सुमुसु-कानि ग्रीवाकी लटक सजै शोभा अंग अंगमैं १॥

तथा। देखिहरनी के नयन देखे हरिनीके इन लगैं तृण फीके पीके मगको निहारहीं। नन्दके कुमार छलि गये इनहूं को अलि ताते यह बार बार आंसूधार डार-हीं॥ ठाढ़ेपति सोहैं नहिं जोहैं संग रूपराची चलति अगोहैं सरसोहैं ध्यानधारहीं। बूझिइनपाहीं येऊ बिर-ही भुलैहैं नाहीं चलिगलबाहीं धरि हरिसों बिहारहीं २॥

स०। मण्डलसी युवती जुरिकै कर मण्डल बांधि गोपाल धनीके। आनँद सों चढ़ि आननकी द्युति ल-ज्जित कोटिमयंक पुनीके॥ छायरही छवि ज्योतिमहा झलकैं कल भूषण अंग कनीके। पुंज प्रताप प्रकाश चहूं रुचि नाचत कुंज कलानिधि नीके ३॥

तथा। गावत जो दशअष्टसदा षटचार न पावत पार भनीके। सन्तन चारु बिचारि प्रताप थके फण औ-लिसहस्रफनीके॥ कोटिक छायकुटी वन बीच रमायक-लेवर खाक धुनीके। पुंजलताबनितानन्नमें सोइ नाच-तकुंज कलानिधि नीके ४॥

देखो तसवीर नम्बर १०॥

तथा । झूमिरहे द्रुम भौरलता कलितासु कुसुम्भ बितान बनीके । गुञ्जत भृङ्ग प्रताप मनोहर फैलिरही मधु गन्ध सनीके ॥ बाजत बीन मृदंग निचै धुनि पूरि रही नभलौं धरनीके । मत्तप्रिया गलबांह दिये गतिनाचत कुञ्ज कलानिधि नीके ५ ॥

तथा । मण्डलमोर किरीटलसै बिलसै बिधि आनन ओपअधी के । कुण्डल कुन्दन श्रीनदुहूंकल चञ्चलता चपलाछबि फीके ॥ स्वेदचले मुखमञ्जुप्रताप हरे गति चंचलमें निधिहीके । बाजतपुंज मँजीर बिमंजु सुनाचत कुञ्ज कलानिधि नीके ६ ॥

तथा । साथछुटी कचलाज दोऊ बिलसी छबि बाम छकी छबिपीके । छाइरहींश्रमआननचन्द्र तजी सुधिसुन्दर मन्दिरजीके ॥ नाचत मण्डल मंडिप्रताप बजेकल पायल पायनतीके । श्रीअधरानन बेनुधरें मधिनाचत कुञ्ज कलानिधि नीके ७ ॥

क० । शरदरयन अरु निर्मल प्रकाश जानि कान्ह यमुनाकेतट बांसुरीबजाई है । रागरागिनी छतीसो ताहि में प्रबेश करि तालकोबन्धान सुरतीनलोक छाई है ॥ मोहे शेष औ गणेश बिधि लोकपाल सब षोड़शसहस गोपी सुनिउठिधाई है । पायकेकन्हाई जीने रहसमचाय नित यामिनीबढ़ाई षटमासको बिताई है ८ ॥

तथा । दीपति बिशाल त्यहि बीच बीच नन्दलाल कातलकरघाल मंडलबनाई हैं । साँवरोबरनगोरो शोभा होतएकठौर घनकी घमंडमानोदामिनी सोहाई हैं ॥ भूषण

हज़ारा तसवीर नं० ११ मुतअल्लिक़े सफ़ा १६१

श्री कृष्ण चन्द्र जी का एक गोपी से प्रेम की बात चीत करना ॥



सकल अंग बसन सोहैं सुरंग नृत्यको करत छमछम छबिछाईहै। देखतबिमानचढ़े भामिनीसमेत देव हरषि निरखि नभफूल झरलाई है ९ ॥

तथा। त्रिविधसमीर मंद शीतल सुगंध बहै निरतत ब्रजबाल नन्दलाल साथ हैं। कुण्डलझलक कान मुखसों अलापैतान नथकीहलन औ चमकबेंदीमाथहैं॥ रंगरंग सारी जामें जड़ीहैं किनारी छबि होत न्यारी न्यारी सब सोहैं जोड़ेहाथहैं। नूपुरझनक करकिंकिणी खनक बन ताल की बनक केलि करें यदुनाथहैं १० ॥

तथा। ग्रीवको फिरावैं श्रुतिफूलचमकावैं करकंजल-चकावैं रसबस बड़ोतावरी। कटिकोघुमावैं घूमि चक्रभर-मावैं और नूपुर बजावैं फरकावैं अंगपावरी॥ घूंघटलवा-वैं शिरसारीसरकावैं हँसिभावको बतावैं प्रभू दासीहौं मैं रावरी। नैनकोतरेरी दृष्टिकरिकेकरेरी नन्दलालतनहेरि ब्रजबालभई बावरी ११ ॥

परस्पर लीला व वार्त्ता के कवित्त व सवैया १४॥

क०। एकैकरैओटपटओटकर ओटकरि एकैजेनिघ-रघटचोटहि बचावतीं। एकै निरशंकअंक लागतीं सुवंक तजिसकैजे मयंकमुखी लंकहिलचावतीं॥ ईशकहैंकेसरि गुलाब नीर घोरिघोरि जोरिजोरि मुंड रंग धूमहिमचा-वतीं। देतीगाल गुलचा गुलालहिं लपेटि मुख दैकैकर तालीनन्दलालहि नचावतीं १ ॥

स०। काननलौ अँखियाँ ये तिहारी हथेरी हमारीक-

देखो तसवीर नम्बर ११ ॥

हांलगि फैलिहैं । मूंदेतऊ तुम देखतीहौ यहकोरै तिहारी कहांधौंसकेलिहैं ॥ कान्हरहू को सुभावयहै उनको हम हाथनहीं पर मेलिहैं । राधेजूमानौ भलोकि बुरो अँखि-मीचनिसंग तिहारे न खेलिहैं २ ॥

तथा । बूझतनन्द यशोमतिबात कहौ कुशलात उतै दोउभाई । आवहिंगे कब प्राणनिवास उदास सखा सब लोगलुगाई ॥ पीतपटीसरलैलकुटी करवायमुनाकीतटी सुखदाई । फेरि कहौ कब देखिहौं उद्धव या बन चारतधेनु कन्हाई ३ ॥

तथा । लालनगेजबतेतबतेबिरहानलज्वालनतेमनडा-ढे । पालतहैब्रजगायनग्वालहुतो जबआवत संकट गा-ढे ॥ श्यामबिनासुखधामनहींछिनहीछिनजातमहादुखबा-ढे।फेरिकहौकबदेखिहौंउद्धवमाधौमाखनमाँगतठाढ़े ४ ॥

तथा । डोलतबाल मरालकीचालन रेलत लालफिरैं ब्रजखोरी । सोहतमाल बिशालहिये तरसोहत नीलसो पीतपिछौरी॥साथसखा शिरमोरपखा धरि हाथ नचावत हैं चकडोरी । फेरिकहौ कब देखिहौं उद्धव श्याम लला बलरामकी जोरी ५ ॥

तथा । सोवतढाँकिहुते पट पीतसों भोरभये मुखपंक-जखोलत । दैजननी मोहिं माखन भावत धावत बालन संगकलोलत ॥ लागत कैकहितातगरे सुनिहौं कब तोतरे बैनन बोलत । फेरि कहौ कब देखिहौं उद्धव माधौको इन आंगन डोलत ६ ॥

तथा । एकसमैलिये मोहन ग्वालनमोहन चेरिकेखा-

तदही। उद्धवजू छलसों करिकै हरिकी यशुदा दोउबांह गही॥ ऊखलबांधिदियो डरताक्षण आंखिनतेजलधार बही। सोतकसीरभईहमतेसुतजोउतयादिकरैंतोसही ७॥

तथा। अवधेशनरेशकी प्रीतिसही प्रियकेबिनु प्राण पयानकियो है। सँगफूटत फूटसे फूटो नहीं ममपाहनहूंते कठोरहियो हैं॥ हमते वरु मीनप्रबीनबड़ो जलते पल एक नहीं यह जियो है। अब उद्धव हहाबलबीर बिछोहते क्यों बिधना मोहिं धीरदियो है ८॥

क०। भाषतयशोदापांयें परौंमैं तिहारे ऊधो कहियो यह बुझाय मेरी बिनती कन्हैयासों। जादिनपधारेपगगोकुलते प्राणप्यारे गोकुलबिचारे भूखे फिरैं तासमैयासों॥ पावहिं बिपुलपीर बछरा बिपिन गेह धावहिं अधीर नेह लावहिं न गैयासों। सूखिरहे कुंजपुंज गुंजत न भौंर भीर एहो बलबीर कैसे रहोजाय मैयासों ९॥

तथा। प्राणके अधारे मेरेबारेको सुरायल्यावैं कहियो यह बुझाय उद्धव प्यारे बलभैयासों। वादिनकीबात तुम्हें भूलिगई मेरेतात खातनहीं दहीभात डरमेजुन्हैयासों॥ खेलतउमंगभरे संगसखा बालनके लालन क्यों रूसिरह्यो ब्रजके बसैयासों। बूड़त मँझारधार निराधार गोपीग्वाल कीजे एकबारपार कृपामाय नैयासों १०॥

तथा। सावन सोहावनह्यां लागतभयावनसों आवन अवधिअब शोचैंगजगामिनी। आयहैं कबहुँ बलबीर ह्यां कि नाहीं उद्धव कैसे धीरधरैं ये अधीर ब्रजकामिनी॥ जहां तहां योगनकी ज्योति जगैं ज्वाल जैसे यमकी ज-

मातिसी जनातिजाति यामिनी। जारे हैं पपीहरा पुकारे पीउ पीउ टेरि घेरि मारैबादर देरि मारै दामिनी ११॥

तथा। रहिये अनन्दमाहिं गुनिये अँदेशनाहिं सुनिये सँदेशनन्द निज प्राणधनको। कहियो पांयलागन वडेई अनुरागनसों भूलियो कन्हैया बलभैयाको न छिनको॥ कोऊना वलैया लेत भैयाविना मोहिं यहां होहिं दूबरी न गैयासोंजियो यतनको। माखनकियो नाहिं चाखतहूं जबहींते तबहीं ते आयो तजि आपने वतनको १२॥

तथा। कुंजकी गली में एक नवल अकेलीबाल देख ब्रजराज ऐसी पाइराने चाहेते। दौरिगहीबांह उनआइ-बेकीथांह दीन्हीं सांखिकरिमानिवीजू नेहकी निबाहेते॥ कहैं कबिकाशीराम सुताबृषभानुजूकी अति अतुराई चतुराई चितमोहेते। हाहाकरि हारी पतियाने नहीं पांय पर छातीके छुयेते कहुँ छांड़िदीन्हीं कहेते १३॥

तथा। छाई शीतलाई मुरझाई कलाकुंजनकी मानो मन रंजनको पाइके जुदाई है। कापै कही जाय दिनहू की लघुताई जनै रहीछलताई लखिप्रीति सकुचाईहै॥ रैनअधिकाई भयो बिरहसहायतासों शीतऋतुघाई बिनु मीत भीतधाई है। पीरसरसाई फूलीसरसों सरसमाई हिमऋतुआईना कन्हाई सुधिपाई है १४॥

तथा। गोपीमनरंजन निरंजनबने हैं जाय कुबिजासों नेहलाय नीकीमौनजालई। वैसहीसोहाय सखा आयेहौ बसीठी तुम मीठीसीबनायहमैं चीठीयोगकीदई॥ उद्धव ध्यानधरैं वई हगखंजन्न को अंजन की श्यामता

हमारेदृगंतेगई। रैनिदिनधार ये अपारमई खोरिखोरि कहियेनिहोरि अब कूरकालिन्दीभई १५॥

तथा। फांसीलिरबानगुने ज्ञानसुनेहांसीहोत श्याम की उपासी सब गोकुलकीडावरी। भाषिहैं सुनामवाको रसनासों आठोयाम राखिहैं हियेकेधाम सूरति वहसां-वरी॥ बकिबोवृथाहै सबबातको न मानैंहम बिरहाकी बायु ते बनीरहैंगी बावरी। कुबिजे सुहागदियो हमको बिराग उद्धव बाजीतांतिजानीगई राहरीतिरावरी १६॥

स०। साजिचलीं दधिबेचनको मटुकीधरिकै शिर ऊपर भारी। पैन्हिकेचीर सुरंग सुहावनो नीलीलसै शिरसुन्दरसारी॥ नूपुर खूब छमाछमबाजत पायलकी धुनि लागतप्यारी। या बिधि साजिचलीं बनिता तिन आगे चलीं वृषभानुदुलारी १७॥

तथा। काहेको मांगत दान लला हमसों नइरीति कहा तुमठानी। आंछको दान सुनो नहिं कान भयेतुम आज नयेहरिदानी॥ बापचरावतगोरुहुतो अरुआप करी कबसे रजधानी। अबलौं कोउनाहीं भयो ब्रजमों तुमदानी भये हमने अबजानी १८॥

तथा। काहेकोठाढ़ेसोक्याकरिहौ अरु क्यों इतनोहौ रिसात कन्हैया। जाने तुम्हारेमैं नन्दबबा अरु जानी तुम्हारी यशोमतिमैया॥ कंसमरो नहिं राजगयो नहिं क्योंइतनोअड़िलातहौमैया। वासोंहँसो जोहँसै तुमसों हँसिआवतहै कि अनोखे हँसैया १९॥

तथा। कृष्णकहो उनसों तब यह तुम काहेको रारि

बढ़ावतीहौ । सांचीकहौ तुम्हैं जोरहै काको औकौनकी नारिकहावतीहौ ॥ फैरिसबै डरिहौं मटुकी तुम काहेको देह जरावतीहौ । इन नयननसों नहिं फौजचढ़ै तुम काहेको नैन दिखावतीहौ २० ॥

तथा । सुनिकै मनमोहन बैनतबै यह देतजवाबसबै ब्रजबाला । जानिअकेलि हमैं मनमोहन काहेको येते बजावत गाला ॥ सांझकोआज चलोघरलौं जब मैया सों जाय कहौं सबहाला । मारिकै खूब लगोदनसों तब लौटिके पांउपरो नँदलाला २१ ॥

तथा । कालिहही कंसको होत बिध्वंस कहौ जिनके रसमैं रसखानी । बापतिहारेदई उनको तुमताहीसेकंस बिसबभरुहानी ॥ देतिहौ दान लली वृषभान किधौं मटुकी पटकीमनमानी । जाउललातुम्हैं छांड़िदियो नतो आजुही तेरो उतारती पानी २२ ॥

तथा । कालिहपरेपलँगापर झूलत आजु उगाहनदानल- गेहौ । कंसकीयादिनहींतुमको जिनकेडरलाल उहांतेभगे हौ ॥ पावैंसुनैतौबिसाहिकहापुनिबंदिपरेपितुमातुसगेहौ । सोअबछांड़ियेमेरीगलीइनबालनकेतकलोगठगेहौ २३ ॥

क० । यमुनाकेतीर कौन पावत नहानचीर चुपही चुरायलेहु रुखनिधरतुहौ । कहै कवि छैल केतेजानतहौ छन्दछन्द सन्दकहाकहौं नन्दहूको निदरतुहौ ॥ हमनै न होहिं येतीबातकी सहनवारी बिनाफलपाय तुमकैसे गुदरतुहौ । पाईखोइभीरी चटछोरिलेहि बीरी अब यहां कारीपीरी आंखैं कौनपै करतुहौ २४ ॥

तथा। छैल ब्रजचन्द येतो छलकरिरहैगैल राधिका नवेलीवनी चम्पेकी कलीनई। ताहीखोरि आवैहरि हरखि निरखिभूले आजु भेंटह्वैहै कविजीवनभलीभई॥ ताहीमग आवत अचानकही परीदीठि मुरिमुसक्याइ उनदाहिनी गलीलई। कहिरहे कान्ह नेकठाढ़ीहोहु सुने जाउ सुनीजूहै सुनीजू है कहतहि चलीगई २५॥

स०। खेलत एकसमय ब्रजबालसों नन्दलला रसमाहँ रुसाई। गई थकि आवति जाति सखी पर एकहू भांति न जातिमनाई॥ आपुनहीं पिय आतुर ह्वै हँसिकै जगजीवनि कण्ठलगाई। आधिक बातकही तुतरातपै आधिकमें अँखिया भरि आई २६॥

क०। बोरीहै पिचक झकझोरीहै झटकि पट फोरी है कलश इहांबसै कोईकोरी है। जानौजानिभोरीहै कहूंको कोऊ छोरीहै न थोरीहै ढिठाई जाकी बहियां मरोरी है॥ नन्दजू कहत कवि गोरीहै तौ काकोकहा जानतहौ कछू काके कुलकी किशोरीहै। गोपगन धोरीहै जनकजाको एहो कान्ह प्यारे हरि होरीहै तौ कहा बरजोरी है २७॥

तथा। कीनोतुममान मैं कियोहै कबमान अब कीजे सनमान अपमान कीनो कबमैं। प्यारीहँसिबोलु और बोलै कैसे बुद्धराज हँसिहँसिबोलु हँसि बोलिहौंजू अब मैं॥ दृगकरि सोहैंको रिसोहैं करि जानत है अबकरि सोहैं अनसोहैं कीने कबमैं। लीजै भरि अंक जहां आय भरि अंकहौं नकाइभरिअंक उरअंक देखे अबमैं २८॥

तथा। उतैउयो तारन समेत तारापति इतै मोतिन

जटित लट आननपै अरीहै । उतै अङ्कसोहत कतङ्क दिन पूनोके उतैआड़ अंजनकी वैसीछबिकरीहै ॥ बिन्दादत्त कहै इतै लखत चकोर उतै चहूंओर सखिनकीदीठि सुखभरी है । आजुनन्दलाल पास प्यारीको बिलोको चलि चन्द्रमुखी चन्द्रमासों कैसी होड़परीहै २९ ॥

स० । चोरकी चोर छिनार छिनारकी साहकी साह बलीकी बली । ठगकी ठग कामुक कामुककी अरु छैलकी छैल छलीकीछली ॥ कचलंपटकी कचलंपटगति मतिराम न जानै कहांधौं चली । उनफेरिदई नथकी मुकुता उन फेरिकै फूंकी गुलाबकली ३० ॥

क० । उतैआई नायिका नबेलिन बिहाय मून इतैकढ़े बेलिनतेश्यामयहि धाकरी । जुरिगे दुहूंके दृग लालची लचीले लोल ललित रसीले लोकलाजको अधाकरी ॥ मुरिमुसक्याइकै छबीली पिकबैनी नेक करति उचार मुख बोलनको बांकरी । ताकरी कुचनबीच कांकरी गोपाल मारी सांकरी गली में प्यारी हांकरी न नाकरी ३१ ॥

स० । हौं यमुनाजलजात अचानक बानकसों नँद लालठई । तबदौरिधस्यो करसों करको उरलाय लई जनु निद्धपई ॥ शिवसिंह जहीं परस्यो कुचको तुतराय कह्यो अबछोंडुनई । भुजते निसुकाइ गुपालके गाल में आँगुरि ग्वारि गड़ायगई ३२ ॥

तथा । दम्पति नेहसों रंगभरे लसैं कुंजनि में लिये कोई सखीनहै । सुन्दरता इनमें छलसों मुरलीलईकान्ह के हाथसों छीन है ॥ शम्भुप्रसाद कहै लखिकै धरे

पीनपयोधर पयसों प्रवीन है । मांग्योजबै मुसक्याइ कहो सुनो बांसुरीहै कि यो बीन नवीनहै ३३ ॥

तथा। एक समय मिलि सूनीगली हरि राधिका शङ्कर भाग भरेभर। साहससों उनहेरिदियो उन शंक निशंकसों अंकलई भर ॥ सोंहैं अनेककरी सजनी शिर हाथ दियो नहिं मानीइतेपर। कहि हेरी एरी सुनु मेरी मटू उनछातीछुई उन छोड़िदियो कर ३४ ॥

क०। मेरे नयन अञ्जन तिहारे अधरन पर शोभा देखिगुमर बढ़ायो सब सखियां। मेरे अधरनपै ललाई पीकलाल तैसे रावरीकपोलगोल नोखीलीक लखियां॥ कविहरिजनि मेरे उरगुणमालतेरे बिनगुणमाल रेखशेष देखभाखियां। देखौले मुकुर द्युति कौनकी अधिकलाल मेरीलाल चुनरी तिहारीलाल अँखियां ३५ ॥

स०। हौंतौतिहारे दिखाइबेकेहित जागतहीरहीरैनि उजारसी। आये न राति पियाहरिचन्द लियेकरभोरलौं हौरही भारसी॥ है यह हीरनसों जड़ी रंगन तापै करी कछु चित्र चितारसी। देखोजू लालन कैसीबनीहै नई यह सुन्दर कञ्चनआरसी ३६ ॥

तथा। रोंकहिं जो तो अमंगलहोय औ प्रेमनशै जो कहैं पियजाइये। जो कहैं जाहु न तौ प्रभुताजै कछू न कहैं तो सनेह नशाइये॥ जो हरिचन्द कहैं तुम्हरेबिनु जीहैं न तो यह क्यों पतिआइये। तासोंपयान समय तुम्हरे हम का कहैं आपै हमैं समझाइये ३७ ॥

क०। आजुकुञ्जमन्दिर अनन्दभरि बैठेश्याम श्यामा

संगरंगन उमंग अनुरागे हैं। घनघहरात बरसात होत जात ज्यों ज्यों त्योंहींत्यों अधिक दोऊ प्रेमपुञ्ज पागेहैं॥ हरीचन्द अलकैं कपोलपै सिमिटिरहीं वारिबुन्दचुवत अतिहि नीकलागे हैं। भीजि भीजि लपटि लपटि सत-राइ दोऊ नीलपीत भिलिमये एकैरंग वागे हैं ३८॥

स०। ब्रजके सब नामधरैं मिलि ज्यों ज्यों वढाव कै त्यों दोउ चावकरैं। हरिचन्द हँसैं जितनो सबही तितनो दृढ़ दोऊ निभावकरैं॥ सुनिकै चहुँघा चरचा रिस सों परत्यक्ष ये प्रेम प्रभावकरैं। इत दोऊ निशङ्कमिलैंरहुरैं उतचौगुनो लोग चवावकरैं ३९॥

तथा। मिलिगांवके नांवधरौ सबही चहुँघा लखि चौगुनो चावकरौ। सबभांति हमैं बदनामकरौ कढ़िको-टिन कोटि कुदावकरौ॥ हरिचन्दजू जीवनको फलपाय चुकी अबलाख उपावकरौ। हम सोवत हैं पियअंक निशंक चवाइनै आवो चवावकरौ ४०॥

क०। कौल से करन नवदलन सँभारी सेज सुखद सहेलिन सुगन्धसों समोई है। करिकैटहल गई आपने महल भेट चहल पहल हठी दूसरो न कोई है॥ सुखन सँजोई औ वियोग तापखोई प्रीति सखियन गोई मैन मन्त्रन सों मोईहै। प्यारोभरैअंक और प्यारी गलबाहीं करैं ऐसे भानुनन्दिनी गोविंदसंग सोई है ४१॥

तथा। लाखनहैं गैया गेह तेरेहेत हे कन्हैया चाहिये जितेकु तेतो माखनकोखायरे। चोरिनवनीत कितभाजत गोपालपरे डरैजनि लाललोने मेरेढिगआयरे॥ पालन

में झूलि घरै खेलि प्रिय बालन में लालन अजिर तजि बाहिरै न जायरे। तापित मही है हाय तपि हैं सरोज पाय माय बलिजाय ऐसी धूप में न धायरे ४२ ॥

तथा। चारु चकई लै घुनघुनालटू कंचन को खेलि घरैलाल बालसखन बुलायरे। पूरिअभिलाखन को चाखनकै माखन लै दाखनमधुरधरे महरमँगायरे ॥ बाजती धौं कैसी यह बाँसुरी बजाय गाय मोदको बढ़ाय धाय मेरी गोद आयरे। आयो व्रजबीच हाऊ बूझि बलदाऊ जाय माय बलिजाय कान्ह बाहिरै न जायरे ४३ ॥

स०। राधेसखीनसों खेलनको कबिराजकहैं शतरंज पसारी। जाने न आवत आयगये मिलि बैठिके खेलन लागे बिहारी ॥ कान्हकह्योअकिआययशोमति आवतथी कोऊ गोपकी नारी। श्याम चले दुरिबेको तहां मुखमोरि हँसी वृषभानुदुलारी ४४ ॥

तथा। देखे बिना बृषभानुदुलारीके भावैहरीको घरी को घरौना। कामचढ़े कबिराज कछू व्रजराज समाजमें आय इरौना ॥ राधे बिलोकि सखीनसों श्यामसों भौंहन में कह्यो ऐसी करौना। प्यारेगह्यो बनमाल गरेतर प्यारी गह्यो करकान तरौना ४५ ॥

तथा। पांयनको परिबो अपमान अनेकसों केशव मानमनैबो। सीठी तमूर खवायबो खैबो बिशेष चहूंदिशि चौंकि चितैबो ॥ चीरकुचीरन ऊपरपोढ़िबो पातहुके खरके भगि ऐबो। आंखिन मूंदि के सीखत राधिका कुञ्जन ते प्रति कुञ्जन जैबो ४६ ॥

क०। करिकी चुराई चालु सिंह को चुरायो लंक शशिको चुरायो मुख नासा चोरीकीरकी। पिकको चुरायो बैन मृगको चुरायो नैन दशन अनार हँसी बूजरीगंभीर की॥ कहैकबिबेनी बेनी ब्यालकी चुराय लीन्ही रतीरती शोभा सबरतिके शरीरकी। अबतो कन्हैयाजूको चित्तहू चुरायलीन्हों छोरटीहै गोरटी या चोरटीअहीरकी ४७॥

स०। नन्दलला लखि वादिशि पै जहां जाती नवेलिन की अवली है। अंगबिभूषित भूषणते सबरंग रँगे पटसोभसली है॥ ताबिचनीलपटीपहिरे रसरंगरले गले चम्पकली है। जातचली मुसक्यातगली में सबैबिधि सों बृषभानुलली है ४८॥

क०। एहो ब्रजराज एककौतुक बिलोको आज भानुके उदय में बृषभानुके महलपर। बिनु जलधर बिनुपावस गगनधुनि चपलाचमकै चारुघनसार थलपर॥ श्रीपति सुजान मनमोहत मुनीशनको सोहै एकफूल चारुचञ्चला अचलपर। तामें एककीर चोंचदाबेहै नखतयुग शोभित है फूल श्यामलोभित कमलपर ४९॥

स०। हमसों करि नाहक रारि नितै तुम आपुहि आप दुहाकरौगी। भुवनेश नहीं परवाह हमैं इन बातन में जो रहाकरौगी॥ यह जानिपरी हमको अबतो अपनी करतूति उहा करौगी। तुम बादकी बातैं कहा करौगी तो बताओ हमारो कहा करौगी ५०॥

तथा। रूपरच्योहरि राधिकाको उनहूं हरिरूप रच्यो छबिछावत। गावत तानतरंगदुहूं दुहूंभाव बतायदुहूंन

रिझावत ॥ त्योंभुवनेश दुहूंनके नैन दुहूंनके आननपै टकलावत । छायरही छबि वैसियेरी जो सुनीहुती चन्द चकोर कहावत ५१ ॥

तथा । चंद्रिकाचंद्रसे आननकी अवलोकि सरोज सबै सकुचाने । बानसी बंक बिलोकनि जानिकै त्यों मृग कानन माहिं छिपाने ॥ प्राणसबै ब्रजकी वनितानिके आनिके रावरे हाथ बिकाने । सांची कहो भुवनेश अबै किनपै फिरो भौंह शरासनताने ५२ ॥

स० । यमुनाके तीर चीर ब्रजकी कुमारी राखि मज्जन करन सब पैठिगई नीररी । भनतदिवाकर तमाल ओट देइदेह लेइचीरकदमपै चढ़ोदोऊबीररी ॥ गोपीकर जोरिजोरि बिनती करतिहाहा जलमें जुड़ानी देर कांपत शरीररी । राधिका सहितपीर सोऊ ना दरदहोत मोको का दरद तोको अन्तती अहीररी ५३ ॥

तथा । सखिनसमूहसंग बैठी बृषभानुसुता चूनर देखाई रंगरेजिनलै आयकै । हाथे हाथ परत उलटिकै निहारि सब कही इन्हलायक है प्यारीको सुनायकै ॥ चुनिचुनि नीबी निजहाथे पहिरायकर देखोगे बहार श्यामगोद में सुतायकै । नैननचाय निहुराय सत-राय तब सैनन बताय मुखफेरी मुसक्यायकै ५४ ॥

तथा । कहैं यदुबीर सुनो सखाममधीर ऊधो हरोब्रज पीर जाय योगहि जगायजू । बीतत अलपपल कलप समान जिन्हैं तिन्हैं ज्ञानको विधान आइये सिखायजू ॥ कीजिये उऋण हमैं गोपिन के ऋणबाढ़े आप बिनगाढ़े

दिनकरैको सहायजू। चले शिरनाय श्यामसूरति बना-
यरथ पथहरषाय गये जहां नन्दरायजू ५५ ॥

तथा। रहियोअनन्दमाहिं गुनिये अँदेशनाहिं सुनि-
येसँदेश नन्द निज प्राणधनको। कह्योपांयलागन बड़ेई
अनुरागनसों भूलियो कन्हैया बलभैयाको न छनको ॥
कोऊ न बलैया लेत मैया बिनुमोहिं इतै होहिं दूबरी न
गैया कीजियो यतनको। माखन कियोहै नाहिं चाखतहौं
जबहींते तबहींते आयो तजि आपने वतनको ५६ ॥

स०। लाई लेवाय सखीनवलै गहे हाथसों हाथ
गहाय दई त्यों। छूटिगईकरलालतेबाल बिशालगई
फिरिकै भजिकैयों ॥ आरसीके घर जायदुरी प्रतिबिम्बन
देखि छके हरिहूज्यों। आवती जो न सुहावती बास तो
भावती को पहिचानते जू क्यों ५७ ॥

तथा। येइतघूंघुट घालिचलैं उत वे जब बांसुरी की
गनिखोलैं। त्यों पदमाकर ये इतेगोरस लैनिकसैं वे
चुकावतमोलैं ॥ प्रेमकेफन्दे सुप्रीतिकी पैठमें पैठतही है
दशायहजोलैं। राधामई भई श्यामकी सूरत श्याममई
भई राधिका डोलैं ५८ ॥

क०। ज्योंज्यों जातबाढ़त बिभावरी बिलास त्योंत्यों
चन्द्रिकाप्रकास जगजाहिरै करतुहौ। द्विजदेवकी सों
कछू आननअनूप ओप आछे अरबिन्दनकी आभानि-
दरतुहौ ॥ कीबे हैं सुरसतुम्हैं कौनबरहीकोहियो सांची
बूझिबेमें कहामौनताधरतुहौ। आजकौननारीसों मिलाप
करिबे के काज चन्द्रसे गुपाल इतै भांवरी भरतुहौ ५९ ॥

तथा। कमलसों बदन कुम्हिलानो काहे श्रमबिन्दु ग्रीषम दुपहरीपन सरसाई है। पीतपट कैसो तेरेकंत बकसीस दीन्हों धीरेक्यों बचन मोहिं मोहन बकाई है॥ बार क्यों लगीरी तेरेप्रेमकी कहानी कही अरुण कपोल काहे केसरि लगाई है। याही को पठाई भलो काम करिआई लीन्हों रस सरसाई मोहिं बातन उड़ाई है ६० ॥

तथा। बैसही कि थोरी पै न भोरी है किशोरी यह याकी चित चाहराह और की मँझैये जिन। कहैपदमाकर सुजान रूपखान आगे आन वान आनकी सुआनकै लगैयो जिन॥ जैसे अब तैसे सुधि सोहनि मनायल्याई तुम एक मेरीबात एती बिसरैयो जिन। आजकी घरीतेलै सुभूलिहूँ भुलैयो श्याम ललिताको लैके नाम बांसुरी बजैयो जिन ६१॥

स०। मैं हितकी कहियो समुझोमन आपने श्याम न रोषभरोजू। हौं तुमहीं तुमहीं हरिहो यह प्रीतिकी रीति न मानधरोजू॥ काचिकली न खिलै शिवनाथ सुधारस शोच उपाय करोजू। चलिकै मिलिये बृषभानुलली फिर कुञ्जन कुञ्जन राज करोजू ६२॥

क०। बकि बकि जकि जकि दूती हारि फिरि आई रूप मदमाती बैठी मार सरसाइगो। हँसि हँसि हेरि हेरि फेरिदृग सखिनसों मिस मिस राधेके निकटहरि आइगो॥ कह्यो उरलीजे प्यारी हार यह मालतीको तेरे कुच परसि न केहूँ कुम्हिलाइगो। आलीहौं अचम्भोरही आवत न बैनकही आपनी पियारीलीन्हीं आपही मनाइगो ६३॥

तथा। नेक हँसिबोलो करजोरिकै कहत लाल मैंतो तकसीर प्यारी तेरी कछुनाकरी। कालिकाको पूजि रक्तचन्दन चढ़ायो भाल जावकके धोखे सतरानीहो कहा करी॥ हँसि हँसि हँसाय दीन्हो मुखमोरि शिवनाथ सखी सों सहादीदैदै सांवरी हहाकरी। भूलिगईरिस मुसकान लागीमानतजि करी सोकरीअबआयोजोक्षमाकरी ६४॥

स०। वोऊरही हठि रूठिलला अब क्यों बनिहै दुहूँ ओरको मामिलो। हौंतौ थकी जकिकै बकिकै हरि कौन करै यह रावरो झामिलो॥ सोलरुयेते न बोलिये बोल जैसे तुमबोलतहौ बलिकामिलो। आजुमिलो बृषभानु दुलारिहि कालिह चहो मिलिये चहो नामिलो ६५॥

तथा। गागरलै चली सागरते वहि कुञ्जन श्यामहि भेंट भईजू। प्यासलगी कहिकै मुसकाइ गये ढिग त्यों तिरछे चितईजू॥ नैननैन मिलाइ लियो मनलाल भुजा गहि अङ्कलईजू। पूरिमनोरथ यों मिलिकै हरि कुंजनसों निज धामगईजू ६६॥

तथा। श्यामके संगगईबनमें तनमें तनको नहिं शङ्क भई है। बाल करीलके कुंजन ऊपर फैलि तमाललता उनई है॥ देखत दौरिलगी पदकांकरी नाकरी मोरि सिसीकलई है। धाइधरीगही अङ्क लगाइ अली यह प्रीतिकी रीति नई है ६७॥

तथा। एकसखीहरिसंग बिहाइकै फूलन कारण बाग गईरी। कण्टक बेधिगयो पद आंगुरी है हरिहाय पुकारि दईरी॥ काननसों सुनि काननमें धुनिधाइकै कन्ध चढ़ाय

लईरी। शोणितपोंछिलियो पटपीत अली यह प्रीतिकी रीति नईरी ६८॥

तथा। छूटिगयो गुरुलोगनकोडर टूटिगई प्रिय बंधु सगाई। भूलिगयो सगरो गृहकाज न लाज न आवत साजनताई॥ आठहु याम लिये सँग डोलत बोल न काहुकि बात सोहाई। नेकहु मान करै अबला जबतो कर जोरिरहै शिरनाई ६९॥

तथा। श्रीपति औ वृषभानुलली न मिले डर लाजन प्रेम अगाधिका। तैसी गुलाबकली चटकारिन डारी मरोरि मनोजकी बाधिका॥ बेलिनसों उरझी सुरझी सुरझीसी समीर सुगन्धन माधिका। राधेपरी कहि माधव माधव माधव टेरत राधिका राधिका ७०॥

क०। हिमकरवैरी और हाथी औ हरिनहरि खंजरीट वैरीतेरो मीन औ मरालरी। कदलीकपूर फेर कोकिलकी वैरिनि तू दाडिम वन्धूक बिम्बवैरी है सेवाररी॥ चम्पा सम्पा चंचरीक कीरकम्बु हीरालाल यमुना औ सौति वैरी कुंदन औ व्यालरी। एतेसबै बैरी तेरे एकहितू श्याम तेरे श्यामहूंते वैर तेरो ह्वैहै कौन हालरी ७१॥

तथा। गोरीकी गोराई थोरीथोरीसी जरदहोत शरद समीरनते पीरतनआधिका। भूलिगयो असनबसन दृग नीरभरे कोपनलौं बिरहतरंगिन अगाधिका॥ सूखिगो रकत मास भरत उसासनहीं तापसी तपत कीन्हीं मदन असाधिका। कबि शिवनाथ दोऊ व्याकुल से फरफरात राधाकहैं हरि हरि हरिकहैं राधिका ७२॥

स०। क्योंहरिसों हँसि बोलत काहेन कौन सुभाव पर्खो अलबेली। हौसमरें सजनी सगरी ब्रज प्रीतमसों बतराइनबेली॥ ज्यों चुपचापरहौ गहिमौनअली मुरझात सोहागकी बेली॥ आंखिनसों नहिं देखन देत रही उरमें गड़िलाज सुबेली ७३॥

तथा। बोलत नाहिं सखीके सकोचसों त्यों वृषभानुकुमारिगईजू। सीखदई समुझाइ उराहनो फूलनमालन मारिदईजू॥ लाइ सुगन्ध लगाइ लियो उर है इतहीन अधीन भईजू। उत्तर देत न नन्दकुमार न वाहि बिलोचन लाज छईजू ७४॥

क०। हँसत खेलत खेललोचन चलाइबाल रदचमकाइ गाइ भौंह मटकावती। श्यामकर बांसुरी छिनाइ छ्वायो अधरसों खैंचिखैंचि पीतपट मालझटकावती॥ देनकहैं नटजात हाहा खात अठिलात कुशलसिंह बार बार तृणचटकावती। मोहनके मोहिबे को सांची कहौं मेरीबीर कौन ब्रतसाधे राधे लाल भटकावती ७५॥

स०। आजु दिवारि किराति जुवा मिलि खेलत दंपतिहैं रजधानी। दोऊकेलतभयो झगरो पिय पांसा को छीनि लियो गहिपानी॥ क्रोधउठी भय कम्प उठ्यो तन स्वेद छुट्यो अंखियाँ सरसानी। लाल लगाय लियो उर सों मुसकाय दियो शिवनाथ सयानी ७६॥

तथा। दैदधिदीन्हों दिखावतकाचष काछनियां तनियाँतनहेरो। हेरो कहूँ बछरानको जाइ सो नाहक क्योंबनितानकोघेरो॥ घेरोकियोघरि चारिलों मोहनमोतिनहार

छुवो जनि मेरो। मेरो कह्यो करि जाहु नतौ लुटि जायगो सांवरे गांवरे तेरो ७७॥

तथा। तात न भ्रात न पुत्र न वित्त रहै तन योबन रूप गुमानमें। राज न साज समाज किते गजराज गये परि काल दहानमें॥ बाग तड़ाग बिभूति न वीरता धीरता धाम न आवे कहानमें। हरिनाम चलै सँगही शिवनाथ सो नेकी बदी रहिजात जहानमें ७८॥

क०। नंदयशोदाकी कथा सुनिये अथाह प्रभु नैननते चल्यो नदको प्रवाह बहिकै। ठहरै न धीरतरु लहरैं उठै हैं शोचहहरैं हियेमें हाय कान्ह कान्हकहिकै॥ चाखन न कीन्हों आज माखन मलाई लाल लाई है अबार को न ख्याल बीच रहिकै। या बिधि प्रलाप के कलाप करैं आपसमें आपके मिलाप आसरहे श्वास गहिकै ७९॥

तथा। खेलत सखान में सो आये आधीराति प्यारे मेरे लिये ऐसी भारीकरीअँधियारी में। स्वेदबिन्दुइन्दुमुख ऊपर बिराजिरहे लसैंलाल लोचनए नींदकी खुमारी में॥ लटपटे केश मनमोहन सँवारो नेक एतीबार आवन सो जानी अति प्यारीमें। कहांलौं निहारी जाय मोपर बिहारी आज बानिक तिहारी मतवारीपर वारी मैं ८०॥

तथा। लोचनलुनाई चारु चन्द्रसोंबदनज्योति अङ्ग अङ्ग झलक मनोजकी प्रभामई। आवतीं अकेली अलबेलीसी बिहालकुंज मगमें मिलाप नंदलाल सों नई भई॥ रञ्चक रिसो हैं बिहसो हैं वे कपोल गोल लोचन नचाय लाय गतिसों नई नई। कहिरहे कान्ह नेक ठाढ़ी

होउ सुनेजाउ सुनीहैजूसुनीहैजू कहतही चलीगई ८१ ॥

स०। आजुगई सतिभाइचली यशुदाके निकेतमिले बनवारी। पीतपटाधर दैकैचटा तहँलैगयो मोहिं अटाकी अटारी॥ यों नँदराम सुधाते सिरेकरि बातैं भली करनी यह सारी। दौरि अचानक अंकभरी शठता करिकैं शठ कंचुकी फारी ८२॥

तथा। खेलनकेमिषलैगईआलीनईदुलहीरतिमंदिरकाहीं। त्योंनँदराममचीशतरंजलगींमिलिखेलनआपुसमाहीं॥ आइकेबैठिगयेनँदलालउठीबरबालगहीहरिबाहीं। कंपतगातकढ़ैनहिंबातमरूकरिआई गरेलगिनाहीं ८३॥

तथा। पाईकहूं तबतौ कल मैं न सुनाई किती मोहिं मैन की बाधा। त्यों नँदरामजू बीति निशा अब बाकी रह्यो निशिको दल आधा॥ पायँपरैं कबके बिनतीकरैं हौंहूं तुम्हैं कबकी अवराधा। गोरे गोपाल गरेसो लगाइले दांवरीहै अब सांवरी राधा ८४॥

तथा। सोहतहैं सुख सेजदोऊ सुषमासे भरे सुख के सुखदायन। त्योंनँदरामजूअंकभरे परयंकपरे चितचौगुनोचायन॥ चूमतहैं कलकंज कपोल रचैं रसख्यालन शीलसुभायन। सांवरी राधा गुमानकरैं तब गोरे गोबिन्द परैं उठिपायन ८५॥

क०। तुम तौ गँवारहौ गँवारनकी बातैं करो बूझिबे परीहै कहाकाहेमौंहतानीहै। घूरिलगिजैहै नेकदूरि हटि बैठोलाल नन्दराम बातैंयोगयोगमें बखानीहै॥ भूषणको हालगुंजमालहीसो जानोजात दामरीकी बात कामरीते

पहिंचानी है। आप कहवावै महराजतौ अहीरनते बापकी ये बातैं कहौं केती रजधानी है ८६ ॥

स०। चीरगहे नहिं डोलनदेत लला वृषभानुसुता अकुलानी। मैया न याहि बोलायोकरो इनकी नँदराम सवै हमजानी॥ कन्दुक मेरे चोरायदुवौ अँगिया बिच देत न ग्वालिगुमानी। ग्वालनकी लरिकाईभरी बतियां सुनि ठाढ़ीहती नँदरानी ८७॥

बांसुरी विषय के कवित्त व सवैया १५॥

स०। घनश्याम घटासी छटासी दुकूल प्रकाशत औधबिराजतही। बिनदेखे छमासी छमासीपला उपहासी किनासी न काजतही। मृदुहांसीकिफांसीमें फांसी फिरै सुषमासी उदासीन साजतही। विषबांसी ये गांसी सिखासी हिये लगै बंशी बिसासी के बाजतही १॥

क०। कुञ्जनमें बांसुरी बजाई नँदनन्दनजू धुनिसुनि सबके हियेको होश हरिगो। कहैं गिरिधारी कुलनारिन की भीरभई निपट अधीरपै न धीर नेककरिगो॥ बिकसी कलीसी चलि निकसी निकेतनते नहीं ब्रतनेमको बिचार कछूकरिगो। लाजको रसाला तजिदौरीं ब्रजबाला सब आजु कुलमालाको दिवाला सो निकरिगो २॥

स०। बाजीहती मनमोहन के मुख तादिनते मनमोहिलईहै। घायलसी घुमरौंघरमें अहवादिनते मेरीसुद्धि गईहै॥ कासों पुकारिकहौं सजनी सिगरे ब्रजमें बेपीरभईहै। यहिबांसकी बंशीको नाशकरौं ज्यहि बांसकी बांसुरी गाज बईहै ३॥

तथा। बशहै मुरली स्वर लीन किधौं किधौं कूल कलिंदी के टोहनगो। किधौं पीत पटा लखि या लकुटी किधौं मोर पखाछबि जोहनगो॥ किधौं लालके मालके मध्य फँस्यो किधौं काम कमानसी भौंहनगो। हम कासों गदाधर योग करैं मनतो मनमोहन गोहनगो ४॥

क०। भूल्यो खान पान भूल्योपट परधानसबै लोगन को भूलिगयो बांसु औ निवांसुरी॥ चकिरहीगैया चारु चोंचन चिरैया दाबि चितवनि चलचखु चेतु चितुनासुरी॥ है घरी भरीसी है परीसीबृषभानुजाई जीवतजनावै बेगं आवैहगआंसुरी। कान्ह रस कैसे कै छड़ाई मेरी बीर कबि कबकी बिसासनि बगारै विष बांसुरी ५॥

तथा। बांसुरी के बीच एकभौंर डारिल्याई सखि ढांकि पटपल्लवसों महाबुद्धि भारीसों। भनतपुराण यामें आपहीते ध्वनिहोत कानदैकै कह्योसुनो राधासुकुमारी सों॥ रीझि रीझिवारी ताहि आपही मगनभई नभतन चितै मुखमूंघोइयामसारीसों। आंचरमें गांठिदै बिहँसि उठि चलीआली प्यारी कही आजु ह्यांहीरहो न हमारीसों ६॥

स०। कहुँकाहुअली रसराशिरली मुरली मधुराधर बाजतिहै। हरिबोलनि मोलनि लै चितको चल कुण्डल डोलनिभ्राजतिहै॥ वह दीनदयाल बिशालप्रभा अजहूं मन मन्दिर राजति है। लखि मोहनि मूरतिको अतिशै रतिके पतिकी द्युति लाजतिहै ७॥

क०। किधौं है बशीकरकी शीकर करति कैद जान नाहिंदेति कहूं मनकेमतंगको। किधौं है उचाट न भुलावै

घाटबाटनते हाटनते धावैं बधू छांड़ि सबसंगको ॥ किधौं नेहघटा छीजै दन्तछन छटा छोर एरी बीर बरषै सरस रस रंगको । किधौं यह मोहनकी बांसुरी बिमोहन है सोहन लगति लिये गोहन अनंगको ८ ॥

तथा। भईहै बियोगी बाल भोगीहोतहौंबिहाल तारस के भोगी भये योगी तजिकैतुरी । तपन सुताकोरी लगो है ज्यों तपनतीर भूलिकै अपनपौको गतिबेगते सुरी ॥ शारद बिशारद की भारद भई है सुनि बीनको दुरायकै प्रवीन दुरी मेदुरी । भूले सब बांसुरी सुनै हैं जब बांसुरी को आंसुरी न रोकि सकै आसुरीहू औ सुरी ९ ॥

तथा। जनी जड़बंसते अधर अवतंस ठनी बनी है असारनमें है हियेकी खालीरी। हरै मन धनको करैहै माधुरी सों बात उठैं उतपात याके कुलते दवालीरी॥ छिद्रनको लिये हिये गांठिते भरी कठोर बोले मुहजोर बरजोर ए कुचालीरी । काली के दमन कहु कैसे प्रीतिपाली याते कहैं बनमाली जगमें प्रवीन आलीरी १० ॥

तथा। सही शीत भीत बरषातप की उतपाति राति दिन याने बहुभांति तपको किया । जनमते बाढ़ी प्रीति एक पग ठाढ़ीरही डाढ़ी गई गाढ़ी नहिं नेकु कसक्यो हिया ॥ कीजै नहिं रोष यापै दीजै नाहिं दोष बीर देहको सुखाय धीर नेहूं ब्रतको लिया । परखि सुलाखि ताय लीन्हीं ब्रजराय याको ताते यह बंशी आय भई श्याम की प्रिया ११ ॥

स०। पीतपटी कटिपैलपटी छुटेकुंचितकेश बिराजत

चन्दन । राजि रह्यो गरमें गजरा गज गौहरको छलकै छबिछन्दन ॥ त्यों भुवनेश भलीविधिसों सुबजावत बांसुरी आनँद कन्दन । कौन ये हैं अवलोकु अली चले आवतहैं गति मत्त गयन्दन १२ ॥

क० । बंशी ने कियो अधीन गह्यो श्याम मन मीन रखैं बसु याम लीन लखैं भले भायेरी । अंग को त्रिभंग करे एक पग सेवैं खरे अतिशै उमंग भरे जासु संग पाये री ॥ रीझे हैं कलापैं याकी ललापैं न रह्यो जाय तपके कलापैं याकीतापैं कहिजायेरी । सेज अधरानपै सो आय कैस नेह लाय नितही पलोटैं पांय जाके यदुरायेरी १३ ॥

तथा । वादिनगईती ब्रजदेखन करील बन झुंक में जु परी आय बंशीके अन्यासुरी । ताक्षणते आली फिरों बावरीसी रावरीसों द्विजदेव नेकहूं रुकी न पर सांसुरी ॥ आजु कछु आई हिय सूरति समानीहुती रंचक विहानी रैनि धरकत पांसुरी । कीजे कहा राम अब जैये केहि ठाम येरी फेरि बन बैरिनि बजीरी बन बांसुरी १४ ॥

तथा । जादिनते बंशी अवतंशी यह गोकुलमें तादिन ते कीन्ह्यो श्याम अधर निवासुरी । कुञ्जकुञ्ज डोलैं याहि संगमों किलोलैं किये लीन्ह्यो सौति राग भाग सुखसों बिलासुरी ॥ बन्दीदीन दीन ह्वैरही हैं हम मोहन बिन एकछिन पावत न बोलिबो सुपासुरी । बांसुरी सुनत नैन आंसु आय जात पीर पांसुरी समात औ पिरात गांसु गांसुरी १५ ॥

तथा । खोइकै सुबंशबंशी ऐसेही कछुकदिन मारीफिरी

ऐसेही कछुक दिन नागीरी। छेद करवाय निज छाती में छसातगई कारीगर हाथन अनेक बिधि दागीरी॥ ताही मनमोहन किते दिनते राखिसंग द्विजदेवकीसों है सुराग अनुरागीरी। ढीठह्वैहै क्यों न ब्रजबालन सतावै सोई बांसुरी सुन्यो मैं अब हरिमुख लागीरी १६॥

तथा। वाहीके रंगी हैं रंग वाहीकेपगी है मग वाहीकेलगीहैसँगआनँद अगाधाको। कहै पदमाकर न चाहतजि नेकुदृग तारनते न्यारोकियो एकपल आधाको॥ ताहूपै गोपाल कछु ऐसे ख्याल खेलत हैं मानमोरिवे की देखि-बेकीकरि साधाको। काहूपै चलाय चष प्रथम खिझावै फेरि बांसुरी बजायकै रिझाय लेत राधाको १७॥

तथा। सांझसमै मतिराम अभिराम बंशीधर बंशी-वट तटमें बजाई जब बांसुरी। सुमिरि सहेठ बृषभानुकी कुमारि उर दुख अधिकानो भयो सुखको बिनासुरी॥ शर सों समीर लाग्यो शूलसी सहेली सब बिषसों बिनोद लाग्यो वन बनी बांसुरी। तापचढ़िआई तनु पीर चढ़ि आई मुख आंखिनके ऊपर उमँगिआये आंसुरी १८॥

स०। कौन ठगोरी भरी हरिआज बजाई है बांसुरी यारसभीनी। तानसुनी जिनहीं जिनहीं तिनहीं तिन लाज बिदा करिदीनी॥ घूमैं खरी खरी नन्द के बारन बीनी कहा अरु बाल प्रबीनी। या ब्रज मण्डलमें रस-खानि सो कौन भटू सुलटू नहिं कीनी १९॥

तथा। मोहनकी मुरली की अली जबते मधुरी ध्वनि कान परी है। बालभई तबहींते लटू गृहकाज समाज सबै

बिसरी है॥ कानन कानन ओर कियेरहैं कामखरी कुल कानिकरी है। बात सोहात न होत कछू सुनिबेकी मने मन आनिखरी है २० ॥

तथा । आज लखो बृषभानुलली मनमोहन सों रस खेलटरी है। बातनके चसकै सुरलो मुरली हरिके दबकायधरी है ॥ ज्योंज्यों हहाकरि मांगेलला वह त्योंत्योंकछू अठिलात खरी है । देनकहै मुकरैहँसै मोंहन सौंहकरैरस भायभरी है २१ ॥

तथा । सांझसमय यमुनातटबीच खड़ेतरुटेक कदम्ब किछांई । मन्द सुगन्ध समीरबहैं यमुनाजल उज्ज्वलशीरसोहाई ॥ शारदमास बिलास बिलोकि नई उरआनँद की छबिछाई । सो न कही तहिजात प्रताप जबै बँसुरी ब्रजराज बजाई २२ ॥

तथा । शब्द अचानककानपर्ख्यो सरपुंज प्रताप खरी अकुलाई । गोकुलकी कुलको न गिनी अपने अपने गृहते उठिधाई ॥ स्वेदित गोल कपोललसे कलकुण्डल डोलनि में छबिछाई । जाय मिलीं ललना तजि लाज जबै बँसुरी ब्रजराज बजाई २३ ॥

तथा । बंशी प्रताप बजैगी जबै सुधि नेक भटू तनकी न रहैगी । डोलोगि कुंजन बावरीसी मुसुक्यान तरंग में कान बहैगी ॥ घूंघट मारेचलो कितनो मति मायके की न इहां उमहैगी । आइहौ बीर जो या ब्रज तौ ब्रजराज सों लाज कहां निबहैगी २४ ॥

क० । येहो नन्दलाल तुम बांसुरी बजाओ नाहिं

हज़ारा तसवीर नं० १२ मुतअल्लिके सफ़ा २१७



श्री कृष्ण चन्द्र का यमुनाजी में कूद के काली नाग के शिर पर नाचना व नाथना।

लैलै मेरो नाम नेह रावरो छपाउँहै। नन्दराम फेरिफेरि आवतहौ याही गैल सैल ब्रजठाकुर अठाइनकोठाउँ है॥ हाथ जोरिजोरिकै बोलावतहौ कुंजवन लाल रोज रोज मिलिबे को तौ न दाउँ है। मेरेजू चरण चीन्ह धूरि दृग लावतहौ जानि जैहैं चातुर चवाई ब्रजगाउँ है २५॥

तथा। बैठी मृगनैनी खोलि वेनी सुखदैनी ऐन सजल शृंगारलागी अंगना दिवारी में। नन्दराम तौलौं मन-मोहन बिहारी कहूं मधुर बजाई फूंकि बांसुरी कियारी में॥ खटकीकरेजे तान अटकी अनोखे नेह चटकी चली दै ताल पटकी पछारी में। सेजगिरी जेहरी अँगूठी देहरी के द्वार मारगमें बाजूबन्द बांक फुलवारी में २६॥

स०। आजु मिल्यो मगमें मनमोहन जाको लगै मक-रध्वजदूतरी। त्यों नँदरामजू बीन बजावत गावत मेघ मलार सँयूतरी॥ पांसुरीपांसुरी शालतहै असि बांसुरी तानगड़ी मजबूतरी। नैननपूतरीते न कढ़ै वह सांवरो वीर अहीरको पूतरी २७॥

नागलीला के कवित्त व सवैया॥

क०। वेनी सी बखानै कवि ब्याली काली कीहू आली तिन सबहूको प्रतिपाली अहो कालीहै। ताहीसों उतालनन्दलाल बालकूदि जल नाथ्योजाय ताहि चाहि उपमा न चाली है॥ तहां हरिचन्द सबै गांवके तमाशे लगे तिनके अछत तू कीनी खूब ख्याली है। ज्योंही

देखो तसवीर नम्बर १२॥

ज्यों नचतप्यारी राधे तेरे दृग दोय त्योंही त्यों नचत फन पर बनमाली है १ ॥

तथा। गोपी ग्वाल माली जुरे आपुस में कहैं आली कोऊ यशुदाको अवतरचो इन्द्रजाली है। कहै पदमाकर करैको यों उताली जापै रहन न पावै कहूं एको फन खाली है। देखै देवताली भई बिधिके खुशाली कूदि बिलकत काली हेरि हँसत कपाली है। जनमको चाली येरी अद्भुत ख्याली आज काली की फनाली पै नच्चत बनमाली है २ ॥

स०। एकसमै प्रभु खेलहिं गेंद गिरो यमुनाजल मध्यहिमाहीं। कूदि पऱ्यो हरि ताही के हेतु गयो धँसि पैठि पतालहि जाहीं ॥ बाल सखा बहु रोदनकै हिय शोच बड़ो गये माहरिपाहीं। कृष्ण तिहारो बुड़ो यमुना बिच ढूँढ़ि थके हम पावत नाहीं ३ ॥

तथा। हाहाकारभयो ब्रजमण्डल नन्द कि रानी न देह सँभारी। शोचके वश्य कहैं अस बैन बसो मेरो भौन धौं कौन उजारी ॥ लोटहिं केश परे धरणी हिले बाल सखा वहि घाट सिधारी। ब्रजनारिन शोच को कौन कहै मनु कृप्पण द्रब्य जुआ बहु हारी ४ ॥

तथा। कृष्ण तलातल कीन प्रबेश निवास भुजङ्गम तेज अपारा। जाय समीप जगावतभे तब नागिनि कृष्ण सों बैन उचारा ॥ बालक तू किहि हेतु शरीरहि खोय चले यहँवां पगुधारा। नाहक नाग जगावत हौ फुफुकार तिहूंपुर होय उजारा ५ ॥

तथा। बोले कृष्ण सुनो अहि नारिबसै ब्रज मों यक कंस भुवाला। मांगत फूल अहीपुरके मोहिं डाटि नरेश ने कीन बिहाला॥ लादिकै फूल चलो तिहि द्वार वृथा नहिं बैन सुनो अहिबाला। कालीको तेज सुनावतु हौं मैं कोटिन कालन केर कराला ६॥

तथा। यह जाहि अहार सो वाहनहै परिवार समेत सो ताहि खवावों। पतिहीन करौं त्वहिको सुनु नारि औ नाथिकै कालिहि देश पठावों॥ हाहाकार पताल परै लै गोकुल मण्डल माहँ नचावों। देय जगाय न बार करौ मोहिं होइ विलम्ब कहा डरवावों ७॥

तथा। काली उठा रिसिआय तबै अस कौन तिहूंपुर दूसरो मेरो। दृष्टिके सम्मुख जौन परै तिहि भस्म करौं जिहिके तनुहेरो॥ जो कछु तेजकरौं हियमें क्षण एकमलौं मैं तिहूंपुर पेरो। आयुतुलानि क्यही सुनु नागिनि कौन यहीपुर कीन बसेरो ८॥

तथा। दृष्टिपरीनँदलालकिओर तबै बिषराशि छोड़ो फुफुकारा। पौन अगाध चलो अतिदुस्सह कौन कहै तिहि तेजअपारा॥ श्यामशरीर भयो अतिसांवर कृष्ण बिषंग तबै शिर धारा। करजोरि अनेकन थाकि गयो नहिं पावँ हिमाचलको पति टारा ९॥

तथा। चढ़ि मस्तक कृष्ण पयान कियो अहिलोकहि शून्यकियो क्षणमाहीं। पौनके तेज चला सहसानन आय तुलानि कदम्ब कि छाहीं॥ मुरलीधर वेणु बजावत भे सुनि गोपबधू गईं माहरि पाहीं। बंशि कि तान

परी मेरे कान कहै हिय मोर मनो हरि आहीं १० ॥

यथा। जौलगि शोच करै हियमें हरि तौलगि नन्द हुआरहिआये। शोरभयो सबगोकुलमें नर नारि कुमारहि देखन धाये। माहरि गोद उठाय लियो मोरे लाल तू कालिहि कैसे बँधाये। साजिकै आरति शीश उतारि निहारिकै आनन प्रेम बढ़ाये ११ ॥

ब्रजकी प्रशंसाके कवित्त व सवैया ७॥

क०। जौलौं तेरी आयु तौलौं हरिकी शरण आव करि लेउपाव कृष्ण नाममें अटकिजा। बन्योतेरो दांव चित्त चावअतिभावही सों गोवर्द्धननाथरूपमाधुरीगटकिजा॥ ममता बहाय काम क्रोधको दहाय प्रेम पन्थही में आय दुखद्वंद्वको पटकिजा। काहे जगनन्द काहे होति मति- मन्द अब छांड़ि सब फन्द ब्रजभूमिको सटकिजा १ ॥

तथा। ग्वालसंग जैबो ब्रजगाइनचरैबो ऐबो अब कहा दाहिने ये नैन फरकतुहै। मोतिनकी माला वारि डारौं गुंजमाला पर कुंजन की सुधि आये हियो धरकतु है॥ गोचरको गारो रघुनाथ कछू याते भारो कहाभयो मह- लानि मणिमरकतु है। मंदिरहैं मंदरते ऊंचे मेरे द्वारका के ब्रजके खरिक तऊ हिये खरकतुहै २ ॥

स०। मानुष होहुँ वही रसखानि बसौं ब्रज गोकुल गोप गुवारन। जो पशु होहुँ कहा बश मेरो चरौं नित नन्द कि धेनु मँझारन॥ पाहनहोहुँ वही गिरिको जो धर्यो करि छत्र पुरन्दर धारन। जो खग होहूं बसेरो करौं वहि कूल कलिन्दी कदम्बकी डारन ३ ॥

तथा। या लकुटी अरु कामरिया पर राज तिहूँपुरको तजिडारौं। आठहू सिद्धि नवौ निधिको सुख नन्दकिगाय चराय बिसारौं॥ रसखानि कहै इन आंखिनसों ब्रजके वन बाग तड़ाग निहारौं। कोटिकरौं कलधौत के धाम करीलके कुञ्जन ऊपर वारौं ४॥

क०। एकरजरेणुकापै चिन्तामणि वारिडारों लोकन को वारों सेवाकुञ्जके बिहार पै। लतनके पातनपै कल्प वृक्ष वारिडारों रामहूँको वारिडारों गोपिनके द्वार पै॥ ब्रज पनिहारिनिपै शचीरची वारिडारों बैकुण्ठहूकोवारि डारों कालिन्दी के धार पै। कहै अभयराम एकराधाजी को जानतहौं देवनको वारिडारों नन्दके कुमार पै ५॥

तथा। राधेकीरहनिसुनि दहनिदही है देह नेह कैसे नीरद नयननीरबरसत। सांवरीसी मूरतिमें झांवरीसी परिगई तांवरीसीआइताहि श्रमबुन्दसरसत॥ श्वासन ते बाड़वकी ज्वालसी जरन लागी भरपि झरपि झूमि दावरीसी झरसत। आंखैंखोलि बोलि कह्यो ऊधो जी तिहारी सौंह मेरो ब्रज चलिवेको अंगअंग तरसत ६॥

स०। पैरिथकोहौं तृषाकी तरंगिनी जो जगदीश्वर पारलैजाही। लागिरही बलदेवजू लालसा लायक लाभ सली मनमाहीं॥ कूलकलिन्दी करीलके कानन कामद कुञ्ज कदम्बकि छाहीं। लालची ह्वै पद नन्दके लाल के लोटोकरों ब्रजकी रजमाहीं ७॥

सुदामा चरित्रके कवित्त व सवैया १८॥

स०। बूझतयों द्विजनारि तहां पिय पांय परौं कहिये किनसोंहै। रावरो आनन आनँदसों लखिहोत इतै हियसों सुखमोहै॥ दूबरीदेहभई केहिकारण बाढ़यो चितै दुचितै अरु जोहै। शोध कँगूरनलौं पति पूरितै कौन सो भौन पुरन्दर को है १॥

तथा। साथपढ़े हम औ ब्रजनाथ जू पै तुम नाथ ये बैन उचारो। तो अब शोच न मोचत क्यों पियलोचन जाइ न नन्ददुलारो॥ काहे को बैन उदासकहो अरु काहेको एतो सहो दुखभारो। जो ब्रजराज भये महराज तो क्यों द्विजराज न वेगि सिधारो २॥

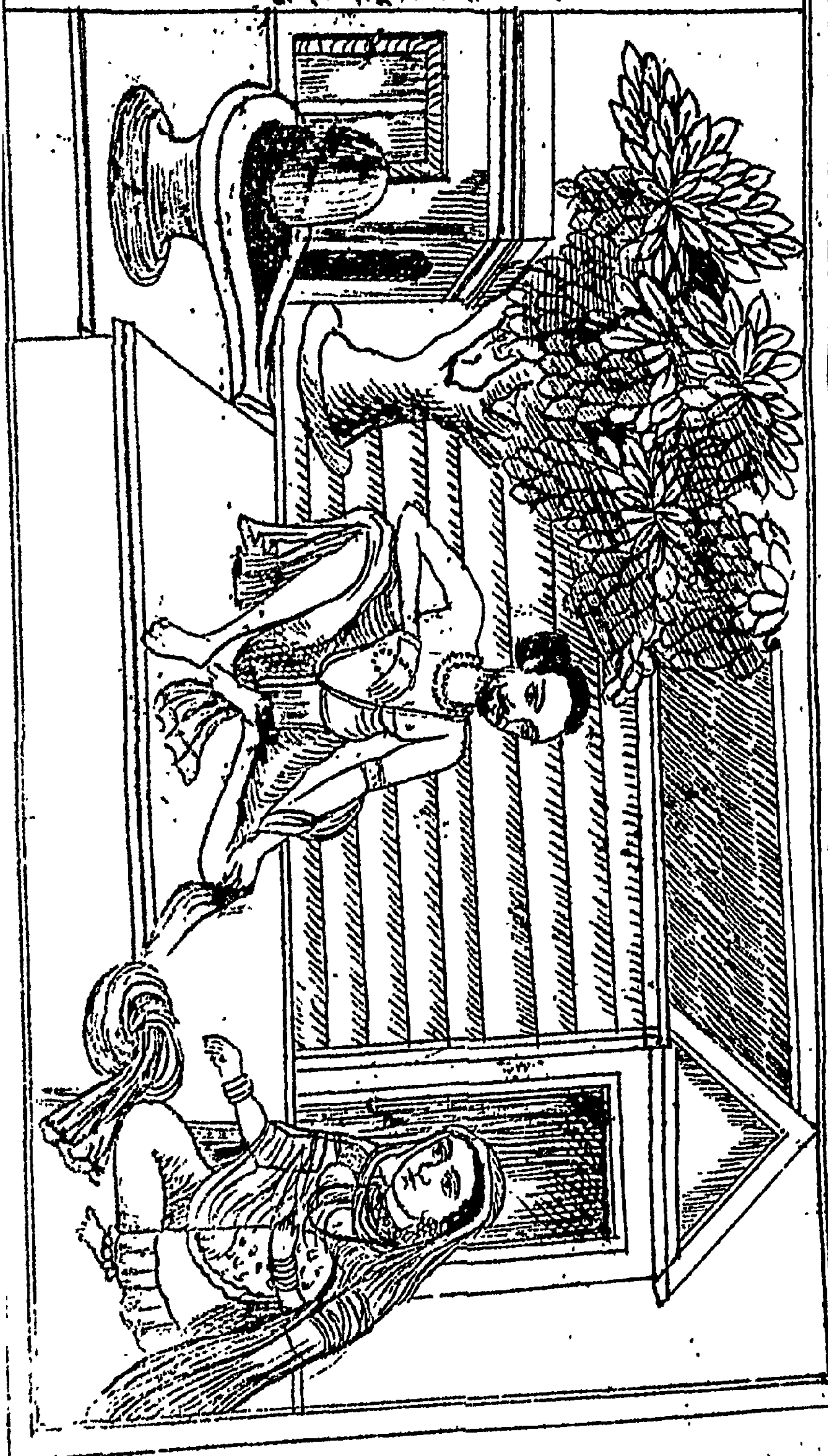
तथा। हरिपै कछुमांगनकाज़पठावति जो यहि द्वार-कै जानकह्यो। सुनिप्रीतिपुरातनमेरी गोपालकी याही ते मोहमहा उमह्यो॥ यह जानिनितन्त तियामतिकन्त यही अभिमानको ग्रासगह्यो। सतराइ न बोल्यो कछू द्विजराजपै भौंहचढ़ाइकै बैठिरह्यो ३॥

तथा। अब जो प्रभुताई बताई यती प्रभु तो अतिही वे दयाधरिहैं। यदुनन्दन शीलके सागर हैं करि आदर पाँवनहूँपरिहैं॥ यहगेह तिहारो तुरन्तही नेहकै श्रीपति सम्पति सों भरिहैं। पिय बारिजनयननसों हरि हेरत रावरी दीनदशा हरिहैं ४॥

तथा। भेंट बिना क्यहिभांति मिलैं यहि भांति जबै द्विज बैन सुनाये। बारहि बार निकेत निहार तिया तब

देखो तसवीर नम्बर १३॥

सुदामा दुर्ब्बल ब्राह्मण का अपनी ही स्त्री की शिक्षा से द्वारका पुरी में श्री कृष्ण चन्द्र जी के समीप आना.



कोटि बिचारनि ठाये॥ हेरत मन्दिर सूनो सबै बिललाइ गई हियमें दुखछाये। ढूंढ़त ढूंढ़त भौनकेकोन बरिआइके चारिक चावरपाये ५॥

क०। सपनो सो भयो है कैधौं बाईसी लगाई कहूं कैधौं गथहीन चितलोभते कहतरे। बैसहीन मांगे द्विज चाहत कहाहै कछु फेरि जनि भाषै जो भलाईको चहतरे॥ ऐसे महराज तिन्हैं मीत कहि ऐसी छबि मनमें न माले कहूं लाजहि गहतरे। जगतके नाह जाकी हद्दकै सगाह माह कोटि नरनाह दिननाहसे रहतरे ६॥

तथा। होत जो प्रबीण तौ न आवते कदापि इत ब्राह्मणीकेकहे भूलिकरतेनगौनको। भलीभई जातिकेद्विजाति जो भयेहैंनातौ करतौ कहाधौं ह्यांफिरादतेधौं कौनको॥ कोहकै अवासो मोहिंतोहिमघवासौंलागै सातौं परिनेक घेरेठान आवागौनको। द्वारका में आइ बड़ी दौलतको पाइये अनूतर कहाइके अघाइ चले भौनको ७॥

तथा। करतसहाय परेसंकट अनाथनको नाथन के नाथब्रजनाथ श्रुतिगायेहैं। कमलाके कन्तहैं अनन्त हैं अनन्तयश जूहसदा इनही ते अनन्दनि पाये हैं॥ यहै जानि ठीक ठीक ठानि चितमें बड़ी आशधरि दूरहीते धाय हम आये हैं। दीन देखि जो तुम मनमाहसे सो आनौ तौ कहौ हरिजू सौं दीनबन्धु क्यों कहाये हैं ८॥

स०। मोहनप्यारे को यार कहावत लाजत ना द्विज ऐसी सखीसों। बोलतहै विषसी मुखबात औहै सबगात भरो बिषहीसों॥ ब्राह्मण जानिकै तेरे अनूतर ओढ़ि लिये

सब श्रीपतिकीसों। होतो जु और पुरन्दरसों कि न होतो सुतौ अबहीं बिनजीसों ९॥

क०। दीरघफुलाये नाक ठाढ़यो है निशङ्क देखो जरत खरीक द्विज खायो चहै खोपरा। मैलकोनिकेतहेत करिकै लपेटे पट बड़ेबड़े दांत गात चीलरको झोपरा॥ बरष असीकको भयो है इनभांतिन सो मांगत फिरत भीख लीन्हें कर कोपरा। छोलि छोलि बोलि हरिमीत मुख भाषतुहै डोलत है मूढ़ लिये दारिदको टोकरा १०॥

स०। ब्राह्मण है यकपौरिपै ठाढ़ो अपूरब नाम सुदामा सुनावतु। दीनमहा अतिक्षीणहै गात मलीन दशा नाहिं सो कहिआवतु॥ हौंहीडराउँ लजाउँ घनोपै कहौं अब जो वह सौंह दिवावतु। फाटिये धोती फटी दुपटी पै इतेपर रावरो मीत कहावतु ११॥

क०। सुनतसुदामा नाम छोड़िकै सकाम धाम धाये घनश्याम इतमाम बिसराइकै। डहडहे बारिज से नैनन में बारबार भरिभरिआवै बारि पुरहरषाइकै॥ ऐसे कछु आनँदमें मगन बिहारीभये मोपै नाहिं ते वे कहेजाहिं गुण गाइकै। अनगने भोग रजधानी सब भूलि गई दीनबन्धु जूको तहँ दीन द्विज पाइकै १२॥

तथा। आवत गुपाल इतमीत संग लीन्हे एक सुनिकै किशोरी हरषाइ सबधाई हैं। एकै लै कलश एकै आरती सँवारती हैं एकन जराई झारी नीरसों भराई हैं॥ अटनि अटनिहूते उतरि उतरि आई नूपुरकी झाई जोर चहूंओर छाईहैं। मानहुँ समर सब जीतिकै मनोज

घर भाँति भाँति मंगल की बाजती बधाई हैं १३ ॥

स०। वै ब्रजवासी खरावत गाइ पोशाक बड़ी जिन के कमरी की। तेई अहीरन के ढोटिया जे करैं दधि बेंचि के जीवन जीकी ॥ है शिशुताके सँघाती सबै अरु नेह दशा लखिये यह पीकी। नीकी लगैं हम कैसे इन्हें औ लगै अब कैसे रजाइसि नीकी १४ ॥

क०। पढ़े एकसाथ एकसाथ खेले हम तुम अशन बसन सबै एक साथ कीन्हे हैं। एकसाथ बास गुरुदेव के समीप करि वेदन के भेदन नितन्त करि लीन्हे हैं ॥ मोहिं तौ न भूलति तिहारी प्रीति अनुदिन तुमते न और मित्र परम प्रवीने हैं। कीन्हीं निठुराई सुधि आपु बिस- राई जो पै कबहूं न आई नेकु दरशहु दीन्हे हैं १५ ॥

स०। वादिन की सुधिहै कि नहीं जब आवतते बन ते फल लीने। ताही समै चहुँ ओरनिते बरषे जु पुरन्दर नीर प्रवीने ॥ देख्यो सरोवर चारु तहां खग बृन्द लखे लव गातन भीने। शवरे औ हम आनँद से तहां पुरइनि पातनि छातनि कीने १६ ॥

तथा। वादिन की सुधि आवति मोहिं गुरू जब हेतु कै आयसु दीनो। कानन कानन ते फल मूल बड़े डरते हम औ तुम लीनो ॥ ग्रीषम आतप के समया तप ला- गत अंगनि आयो पसीनो। छांह कदम्ब की मंजुलमाहँ हरे तृण तोरि बिछावन कीनो १७ ॥

तथा। सावन की बरषावन नीर निपूरित कीन्हे नदी नद भारी। आनँद दानि धरासुरभानि बियोग तियानि

हिये दुखकारी ॥ पावस में हम रावरे वादिन जो उत कानन जात निहारी। टारी टरै न अजौं चितते वह कारी पयोद घटा छबिवारी १८ ॥

तथा। भांतिन भांतिन बातन सों समुझावत ही सब गात पसीनो। कैसहू हारि न मानी गँवारि भवारि करी अतिही दुख दीनो ॥ ब्राह्मणी बैरिनसी हम सों वही पूरब बैर भली बिधि लीनो। चाउर चारि गोपालहिं भेंट पठाइ के मोहिं फ़जीहत कीनो १९ ॥

क०। निपट सयाने जाने औरहूके मीत तुम कामके परे पै काम ऐसही करतहौ। जानि बूझि छांड़ो रीति माड़ो अनरीति द्विज लोक अपलोकन ते नेकु ना डरत हौ॥ हमहूं सहेतीं से जु ज्ञानी मानि एतीखोरि कहे नहिं यार अतिधीर को धरतहौ। एती जू पठाये बड़ी हेतु करिल्याये भेंट देत सो न काहे काहे बीचही हरतहौ २०॥

स०। सांवरे पै हमपै करि हेतहिं बिद्या गुरू इक साथ पढ़ाई। पाठ बिचार समय कबहूं फिरि बीच परो पलको न निभाई॥ लोगन आय अचम्भो यहै अब पूछत योंते किये ही ढिठाई। मोहिं बचाइ कै आपु अकेल ही मीत कहांते सिखी ठगहाई २१ ॥

तथा। तंदुलएकमुठीलैगोपालसबैहरषाइकैआपचबाने। दौरिकेब्राह्मणभौनगईतबसम्पतिछोड़िकेऔरठिकाने॥ कांपनलागेसबैदिकपाल पुरन्दरमन्दिरहीमें कँपाने। शेषकेशीशहज़ारकँपे अक्रूरमहूके हवासहिराने २२ ॥

तथा। चकितसे चकचौंधिगयो दिकपालदशोंदिशि

बुद्धिमलीनी। शेषके शीश लगे हहरान औ कूरमके जिये शूलनवीनी॥ देत न काहूवैजानिपरयो कछुमोहन सत्व-रताइमि कीनी। तंदुल एक मुठी मुख मेलि सकेलि तिलोक की सम्पति दीनी २३॥

क०। जैसे पारावारपर कुम्भजको कोप अरु दुरित पहारपैज्योंगंगाधारलेखिये। तमपैदिनेशजैसेब्रजपैसु-रेशजैसे तारकपैशक्ति ज्योंकुमारककीपेखिये॥ पन्नगपै पन्नगारित्रिपुरपैत्रिपुरारि शम्बरपैशम्बरारि जैसहूनि-मेखिये। अर्जुनपै परशुराम ऐसेदीहदारिदपै आनँदकी फौजमौज मोहन की देखिये २४॥

स०। एकदिनारजनीमहँमंजुल फूलनकीजबसेजबि-छाई। तापरपौढ़तहीतेहिऊपरब्राह्मणकमनमेंअसआई॥ कीन्हींगोपाल दयाकरिकै इतकेवलआदरकी अधिकाई। पैचरचाकबहूं कछुदेनकी दीनकेबन्धुकछूनचलाई २५॥

तथा। ब्राह्मणीमोपथहेरतह्वैहै घनेगथलावत ह्वैहैं सुदामा। होंतोपरेउँ इतफूलकीसेज किसेधौं वाहिबि-हाइत्रिजामा॥ कौनदशाधौं लखौं अब जाइ करै क्यहि भांति धौं जीवन बामा। छांड़ि न आयो मैं एकहुबारकी भौनमें भोजनकी कछुसामा २६॥

तथा। ब्राह्मणी यों पथहेरत ह्वैहै कि कन्त घने गथ सोंयुतऐहैं। दूरिते मोहिं लखे पुरबासिहू आगमजाइ कै ताहि सुनैहैं॥ सोतोसुने जबआगेको ऐहैं तबै मुख कौनदशा दरशैहैं। रैहैं कहां अरुजैहैंकहां अब आजुइ जाय कहां घरखैहैं २७॥

तथा। सौतेहजारहजारतेलाख औ लाखतेकोटिन हूं अभिलाखै। नेहभरे सबहीसों जहानमें स्वारथही लगि बैननभाखै॥ सोवतहू सपनेहूंसमै कबहूं हरिप्रेम पियूषनचाखै। मोहनके पदपंकजनेकुकै श्रीमदपारेन चित्तमेंराखै २८॥

तथा। बाजतवैसेनिशानघने चहुँओरन वैसहीआनँदछाये। वैसहीदानविधानहैंहोत औवैसहीबेदनगान गनाये॥ हीरनके अतिउन्नतमेंहलै वैसेचहूंकितभौन सोहाये। कैसीभई अबमारगतेधौं कहा हम भूलिकै द्वारकै आये २९॥

तथा। कौनसेदेशते मेरहीठौरमें आयोहै कौन नरेश है भारी। कंचनहीर जराइजरीजे रुचीरुचिसों नगरी रुचिवारी॥ है अबिबेकी जुदीनहुकी यह नाहक तोरिकै झोपरीडारी। जानिपरै न बिषादभरी वह ब्राह्मणी धौं केहिओर सिधारी ३०॥

क०। कुमुद कलानिधि कपूर करकानि कुन्द कास के बिलासहासशरदजुन्हाईहै। मुकुतारजततहँसंगहीर भीरनकी बीरजैतवार ऐसी कीरतिसोहाईहै॥ सगरी न शोभा द्विज नगरी न भाषी अब अनुपमरूप ज्योति जगत सोहाईहै। मानहुँ कुबेरजूसों मानकरि ऊपरते अलका उतारि आपु भूपरको आईहै ३१॥

स०। मेरीकही मनमानी नहीं अब जानि घनी मन मेरी सिनानी। पै बिसरी सो सयानीसबै सो कहा यह भूलिकही पियबानी॥ हौतुमहींलरनाहहमारे औ नाह

तिहरे येहौ निजरानी। सम्पतिपूरि अनन्द भई चालि सौध लखो अपनी रजधानी ३२॥

तथा। कौनरजाइसी मेरीलही कव भपकी भूमें बड़ाई धरीमैं। जाइलक्षाहे घरे अपने सरजी धौं कहाअरजी यों करीमैं॥तेरी कछू न नशैहै तिया पै फजीहति मेरी यह है है घरीमैं। तोहूसों मोसों भई कव भेंट धरातलमें किधों देवदरीमैं ३३॥

तथा। कैहो वड़े कुलकी उत वेटी इतै पुनि व्याहि वड़ेकुल आई। रूपलोनाई नईउलही अँग अंगनिचातुरतातरुणाई॥दौलतिदीन्हीं इतैपैदई अब क्यों न कछूरी गहै गरुआई। कैके सयानी अयानी करै कत नाहक इज्जति लेति पराई ३४॥

क०। हूल हियरा में अरु कानन परीहै टेर भेंटत सुदामे श्यामचाबि नअघातहीं। कहै कबिनरोत्तम ऋधि सिद्धिनमें शोरभयो ठाढ़ी थरहरे अरुशोचै कम्लातहीं॥ नागलोक नाकलोक लोक लोक ठाढ़े थरहरै शोचै सूखे सूरे जात सब गातहीं। हालोपरो थोकन में लालोपरो लोकनमें चालोपरो चकरनमें चावर चबातहीं ३५॥

स०। भौनभरे पकवान मिठाइन लोग कहैं निधि है सुषमाके। सांझ सकारे पिता अभिलाखत दाखनचाखत सिन्धुरमाके॥ ब्राह्मण एक कोऊ दुखिया स्यरपावक चावर लायो सँघाके। प्रीतिकि रीति कहा कहिये त्यहि वैठे चबातहैं कन्तरमाके ३६॥

क०। सुन्दर महल मणिमाणिक जटित अति सुब-

रण सूरज प्रकाश मानो दैरह्यो। देखत सुदामा जूको नगर के लोगधाय भेंटे हरषाय जोई सोई पगुछ्वैरह्यो॥ ब्राह्मणी को भूषण बिबिध बिधि देखि कह्यो जैहौं हौं निकासो सो तमाशा जग ह्वैरह्यो। ऐसी दयाकरी जब हरिकेदरशपाय द्वारकातेसरिससुदामापुर ह्वैरह्यो ३७॥

श्रीद्रौपदी नामके कबित्त व सवैया १६॥

क०। पाय अनुशासन दुशासनकै कोप धायो द्रुपदसुताको चीरगहे भीरभारी है। भीषम करण द्रोण बैठेब्रतधारी तहां कामिनीकी ओर कहूं नेक न निहारी है॥ सुनिकै पुकारिधायो द्वारकाते यदुराई बाढ़तदुकूल खैंचे भुजबल हारीहै। सारी बीच नारी है कि नारी बीच सारीहै कि सारिहीकी नारीहै कि नारिहीकी सारीहै १॥

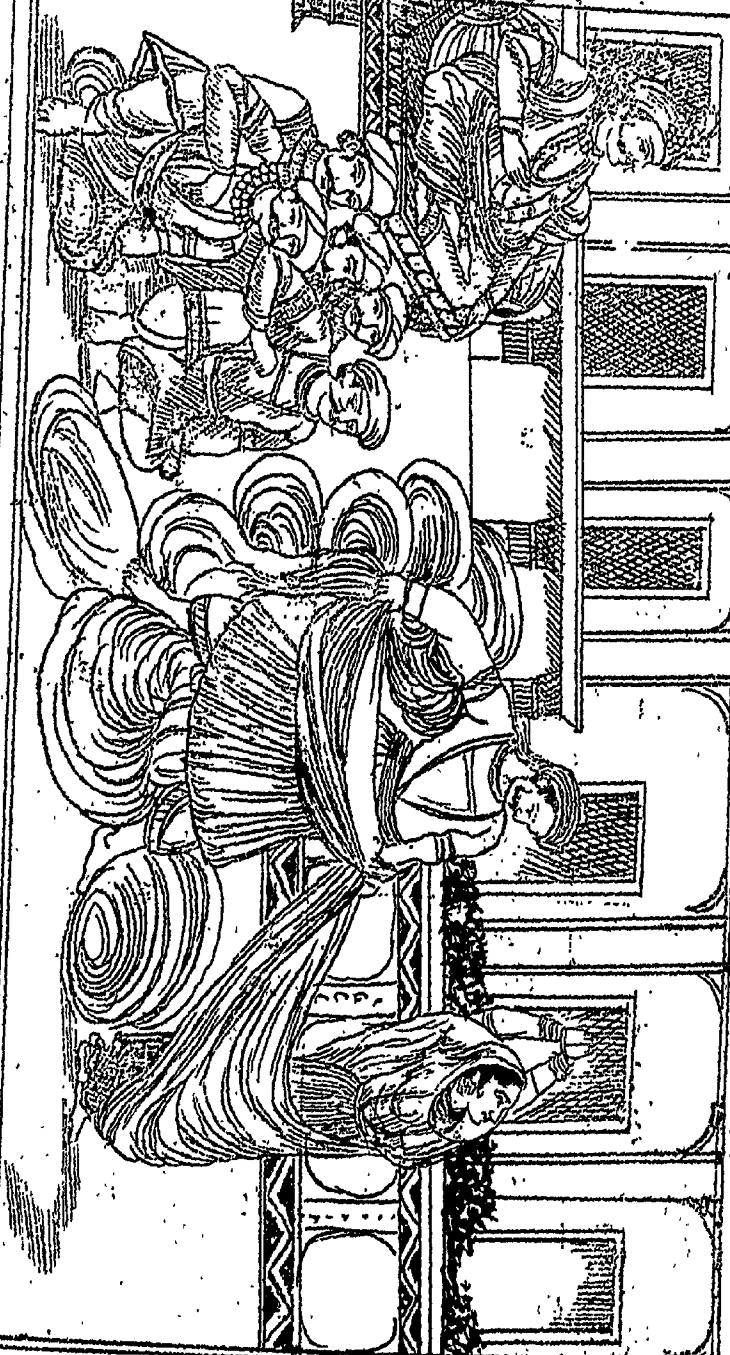
स०। द्रुपदी चहुँओर चितै जो रही चित जायरह्यो यदुनाथ जहांहै। भीषम द्रोण उतारूभये सो दुशासन अम्बर लेनचहाहै॥ पांचौ पती तनहेरिरही यदुनाथउबारहु देरकहाहै। मध्यसभा मोहिं करत उघारि सो चारि भुजाको मुरारि कहांहै २॥

तथा। कंचनरूपी अटारी तजी हमऔरतजी कुबिजा सीदासी। भोरहि भानुउदय जो भयो सतभामा तजी अरधंग रमासी॥ बंशीतजीअरुग्वालतजे हम धेनुतजी बनमांझ पियासी। वादिनद्रौपदी दौरेभले जब तूने कही चलौ द्वारकाबासी ३॥

क०। सटकी सभाकीमति लटकी कुलकी गति हट-

देखो तसवीर नम्बर १४॥

कौरव सभा में दुर्योधन की आज्ञा से दुश्शासन करके द्रौपदी का चीर खैंचना और द्रौपदी कृत कृष्ण स्तुति॥



की न काहू सबजीकी हटकी। मटकी दुशासन सूनु वाकी फलासी भई चटकी सी ह्वैकै तिय देखिये सो भटकी॥ तूही तूही रटकी सी तूहीजानै घटकी पै मटकी सी ह्वैकै आश चरण तटकी। जीवन निपट कीन्हीं पटकीन दीनानाथ पतिलाज पटकी तौ तुम्हैं लाज पटकी ४॥

तथा। कबैआपगयेथे बिसाहनबजारबीच कबै बोलि जुलाहा बिनाये दरपटसे। नन्दजीकी कामरी न काहू बसुदेवजूकी तीनहाथ पटुका लपेटेरहे कटिसे॥ मोहन भनत यामें रावरे बड़ाई कहा राखिलीन्हीं आनि बानि ऐसे नटखटसे। गोपिनके लीन्हे तब चीत चोरिचोरि अब जोरिजोरि देनलागे द्रौपदी के पटसे ५॥

तथा। द्रुपदसुताको गहिल्यायो है सभाकेबीच नीच रंगी दुशासन कुमति मनमैंभरी। देखे भूपभीषमकरण द्रोण मौनगहि खैंचत बसन उरधीर काहू ना धरी॥ दीननके नाथ तुम ऋषिकाके नायनाथ अम्बर बढ़ायो है पुकारी जब हेहरी। नन्द के दुलारे राम कृष्ण जग तारे सुनौ पीतपटवारे देर मेरी बार क्योंकरी ६॥

स०। बूड़तबारि में आगि दवारि उबारिलियो प्रहलाद मयाहर। बैरबिनाथ कियो जिन सेवक जाति भे खम्भसे बेगिहि बाहर॥ रूपधरे नरकेहरि को हरणाकुश मारिगये जब ढाहर। आननदेखि डरी कमला हँसि बेनीगह्यो मृगनैनीकी नाहर ७॥

तथा। चैनपरैनहिंमैनदहै दिन नैनन सांझरहै जल छायो। भावै न भोजन भौनसोहाय नहाय हिये परताप

तचायो ॥ ऐंचति औध दुशासन बीर जऊ बलकै तऊ अंत न पायो। व्रहकै बिदुरै बिरहास बढ्यो अब द्रौपदी के पट ज्यों अधिकायो ८ ॥

क०। आयुध अघटसाजे भटनकी भीरभारी चारों ओर बिकट लियेई जात घेरिकै। नाहरकी गरज ग-रूरसों गरजियतु ताहीसमै पीछे से सुनायो बोल टेरिकै ॥ वाके अतिविक्रम को भाव जियजायो यह फिरैगो समर एक एकको निबेरिकै। अबिचल मूकबीचबंदिमें फँसी है तऊ उमँगि उछाहसी सबन तन हेरिकै ९ ॥

भक्तिपक्ष व ज्ञान उपदेश आदि के कबित्त व सवैया २० ॥

स०। भवजलमें बहिजातहुते जिनकाढ़िलिये अपने करिआदू। बहुरिसंदेहमिटायदिये सबकाननटेरिसुनायकै नादू ॥ पूरणब्रह्म प्रकाशकियो पुनिछूटिगयो यह बाद बिबादू। ऐसी कृपा जु करी हम ऊपर सुन्दरके उर हैं गुरु दादू १ ॥

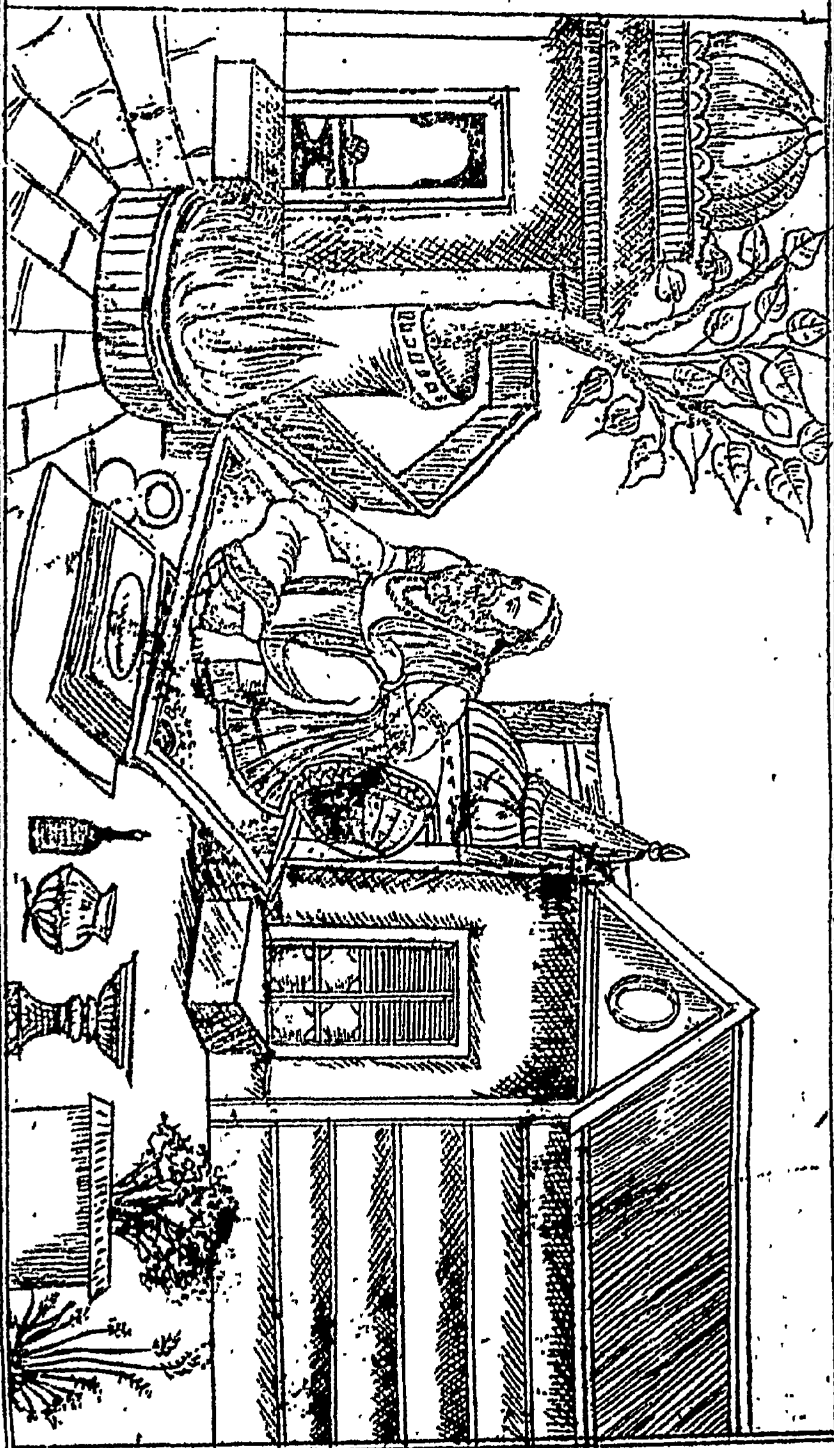
तथा। योगीकहैं गुरु जैनकहैं गुरु बोधकहैं गुरु जंगम माने। भक्तकहैं गुरु न्यासीकहैं बनवासीकहैं गुरु और बखाने ॥ शेषकहैंगुरुसोफ़ीकहैंगुरु याहीतेसुन्दरहोतहराने। वाहूकहैंगुरु वाहूकहैंगुरु हैंगुरुसोइसबै भ्रमभाने २ ॥

तथा। सोगुरु देवलिये न छिपै कहुँ सत्वरजोतमताप निवारी। इन्द्रियदेहमृषाकरि जानत शीतलता समता उरधारी ॥ व्यापकब्रह्म बिचार अखंडित द्वैतउपाधिसबै

देखो तसवीर नम्बर १५ ॥

इज़ारातसवीर नं. १५ मुतअल्लिके सफ़ा २३२

महात्मा गुरू दादू जीकी मूर्ति.



जिनटारी । शब्दसुनाय संदेह मिटावत सुन्दर वा गुरुकी बलिहारी ३ ॥

क० । गुरुबिन ज्ञान नाहिं गुरुबिन ध्यान नाहिं गुरुबिन आत्मा विचार न लहत्वहै । गुरुबिन प्रेम नाहिं गुरुबिन प्रीति नाहिं गुरुबिन शीलहू संतोष न गहत्वहै ॥ गुरुबिन बासनाहिं बुद्धिकोप्रकाश नाहिं भ्रमहूं को नाश नाहिं संशयही रहत्वहै । गुरुबिन बाट नाहिं कौड़ी बिन हाट नाहिं सुन्दर प्रकट लोक बेद यों कहत्वहै ४ ॥

तथा । बारबार कह्योताहि सावधान क्योंन होत ममताकी पोट शिर काहेकूं धरतुहै । मेरोधन मेरोधाम मेरो सुत मेरो बाम मेरेपशु मेरेग्राम भूलो यों फिरतु है ॥ तूतो भयोबावरो बिकायगई बुद्धितेरी ऐसो अन्धकूप गृह तामें तू परतुहै । सुन्दरकहत तोहिं नेकहू न आवै लाज काज को बिगारके अकाज क्यों करतु है ५ ॥

तथा । बारूके मँदिर माहिं बैठि रह्यो थिर होय राखतहै जीवनकी आशा कोऊ दिनकी । पल पल छीजत घटतजात घरीघरी बिनशत बारकहा खबरि न छिनकी ॥ करत उपाय झूठे लेनदेन खानपान मूसा इतउत फिरै ताकिरही मिनकी । सुन्दर कहत मेरी मेरी करि भूल्यो शठ चंचलचपल माया भई किन किनकी ६ ॥

तथा । पायोहै मनुष्यदेह औसर बन्योहै आय ऐसी देह बारबार कहो कहां पाइये । भूलतहै बावरे तू अबके सयानो होय रतनअमोल यह काहेकूं ठगाइये ॥ समुझि

बिचार करि ठगनको संगत्यागि ठग बीजी देख कहूं मन न डुलाइये। सुन्दर कहत तोहिं अब सावधान होय हरि को भजनकरि हरिमें समाइये ७॥

तथा। करत प्रपंचियन पंचनीके वशपर्‌यो परदारा रत भय न आवत बुराईको। परधनहरै पर जीवकी करतघात मदमांसखाय लवलेश न भलाईको॥ होयगो हिसाब तब मुखते न आवे ज्वाब सुन्दर कहत लेखो लेत राई राईको। इहांतो किये बिलास यमको न तोहिं त्रास उहांतो नहींहै कछू राज पोंपाबाई को ८॥

तथा। कीधौं पेटचूल्हा कीधौंभट्ठा कीधौं भार आय जोई कुछ झोंकिये सो सब जरिजात है। कीधौं पेट थल कीधौं बांबी कीधौं सागर है जितो जल परै तितौ सकल समात है॥ कीधौं पेट दैत्य कीधौं भूत प्रेत राक्षस है खावों खावों करै कबौं नेक न अघात है। सुन्दर कहत प्रभु कौन पाप लायो पेट जबते जनम भयो तबहींते खातहै ९॥

स०। हाड़को पिंजर चाम मढ्यो सबमाहिं भर्‌यो मल मूत्र बिकारा। थूकरुलार परै मुखते पुनि व्याधिबहै सब और हूं द्वारा॥ मांसकी जीभसों खायसबै कुछ ताहीते ताकोहै कौनबिचारा। ऐसे शरीरमें पैठिकें सुन्दर कैसेकै कीजिय शौच अचारा १०॥

क०। कामिनी कि देह मनो कहिये सघन बन तहां कोऊ जाय सोतो भूलिकै परतुहै। कुंजर है गति कटिकेहरिको भयजामें बेनी काली नागिनीहूं फन को

धरतुहै ॥ कुचहैं पहाड़ जहां कामचोर बसै तहां साधिके कटाक्षबाण प्राणको हरतुहै। सुन्दर कहत एक और डर अतिजामें राक्षसीबदन खाउँ खाउँही करतुहै ११ ॥

तथा। कामिनीको अङ्ग अतिमलिन महाअशुद्ध रोम रोम मलिन मलीन सब द्वारहैं। हाड़ मांस मज्जा मेद चामसों लपेटिराखे ठौर ठौर रक्तके भरेही भंडारहैं ॥ मूत्रहू पुरीष आंत एकमेक मिलरहीं औरहू उदर माहिं विविध विकारहैं। सुन्दर कहत नारी नखशिख निन्दा रूप ताहि जो सराहैं सो तो बड़ेही गँवारहैं १२ ॥

स०। सर्पडसे सुनहीं कछुतालुक बीछूलगे सुभलौ करिमानो। सिंहहुखाय तौ नाहिं कछू डर जो गजमारत तौ नहिंहानो ॥ आगि जरौ जलबूड़ि मरौ गिरिजाय गिरौ कछू भय मति आनो। सुन्दर और भले सबही दुख दुर्ज्जन सङ्ग भलो जनिजानो १३ ॥

क०। देखबे को दौरे तो अटकि जाय वाही ओर सुनिवे को दौरे तो रसिक शिरताजहै। सूंघिबेको दौरे तो अघाय ना सुगन्ध करि खायबेको दौरे तौ न धापै महाराजहै ॥ भोगही को दौरे तो तृपतिहू न क्योंहीं होय सुन्दर कहत याहि नेकहू न लाजहै। काहू को न कह्यो करै आपनीही टेक धरै मनसों न कोऊ हम देख्यो दगाबाजहै १४ ॥

तथा। योग करै यज्ञ करै वेदबिधि त्याग करै जप करै तप करै योंहीं आयू खूटिहै। यम करै नेम करै तीर्थहू ब्रतादि करै पुहुमि अटन करै बृथा श्वास टूटिहै ॥

जीबेको यतनकरै मनमें न बासधरै पचि पचि योंहींमरै काल शिर कूटिहै। औरहू अनेकबिधि कोटिन उपाय करै सुन्दर कहत बिनज्ञान नहिं छूटिहै १५॥

तथा। कोई फिरै नांगे पांय गूदरी बनाय करि देह की दशा दिखाय आय लोग पूज्योहै। कोई दूधाधारी होय कोई फलाहारीहोय कोई औंधेमुख भूलि भूलि धूम घूंट्योहै॥ कोई नहीं खायलोन कोईमुख गहिमौन सुंदर कहत योहीं बृथा भुसकूट्योहै। प्रभुसों तो प्रीति नाहिं ज्ञानसों न परचै होय देखो भाई आंधरे ने ज्यों बज़ार लूट्यो है १६॥

स०। गेह तज्यो अरु नेह तज्यो पुनि खेह लगायकै देह सँवारी। मेघ सहे शिर शीत सहे तनु धूपसमै जुपंचागिनिबारी॥ भूखसहे रहिरूखतरे पर सुन्दरदास सहै दुखभारी। डासन छांड़िकै कासन ऊपर आसन मार्यो पै आश न मारी १७॥

क०। आपहीके घटमें प्रकट परमेश्वरहै ताहि छांड़ि भूलि नर दूरिदूरि जातहै। कोई दौरे द्वारकाको कोई काशी जगन्नाथ कोई दौरे मथुरा कोई हरद्वार न्हातहै॥ कोई दौरेबदरीको बिषम पहाड़चढ़े कोई तो केदारजात मनमें सिहातहै। सुन्दर कहत गुरुदेव देय दिव्यनयन दूरहीके दूरबीन निकट दिखातहै १८॥

स०। कोइक जात प्रयाग बनारस कोई गया जगन्नाथहिं धावै। कै मथुरा बदरी हरद्वारसो कोई गंगा कुरुक्षेत्र नहावै॥ कोइक पुष्कर ह्वै पञ्चतीरथ दौरेही

दौरेजो द्वारकाआवै। सुन्दर वित्त गड्यो घरमाहिं सो बाहर ढूंढ़त क्योंकरि पावै १९॥

तथा। बैठतरामहिं ऊठतरामहिं बोलतरामहिं राम रह्योहै। जीवत रामहिं पीवत रामहिं धामहिं रामहिं राम गयोहै॥ जागतरामहिं सोवत रामहिं जोवतरामहिं राम लयोहै। देतहु रामहिं लेतहु रामहिं सुन्दर रामहिं राम दयोहै २०॥

तथा। श्रोत्रहु रामही नेत्रहू रामही बक्रहू रामही रामही गाजे। शीशहू रामही हाथहू रामही पांवहू रामही रामही छाजे॥ पेटहू रामही पीठहू रामही रोमहू रामही रामही बाजे। अन्तर राम निन्तर रामही सुन्दर रामही राम विराजे २१॥

तथा। भूमिहू रामही आपहू रामही तेजहू रामही बायुहीरामे। ब्योमहू रामही चन्द्रहू रामही सूरहू रामही शीतहीघामे॥ आदिहू रामही अन्तहू रामही मध्यहू रामही पुरुषहीबामे। आजहू रामही कालिहू रामही सुन्दर रामही रामहीथामे २२॥

तथा। देखहु राम अदेखहु रामही लेखहु राम अलेखहुरामे। एकहु राम अनेकहु रामहिशेषहु राम अशेषहुतामे॥ मौनहु राम अमौनहु रामही गौतहू रामहि ठाम कुठामे। बाहिर रामहि भीतर रामहि सुन्दर रामही है जगजामे २३॥

तथा। दूरहू राम समीपहु रामहिं देशहू राम प्रदेशहू रामे। पूरब रामहिं पश्चिम रामहिं दक्षिण रामहिं

उत्तर धामे॥ आगेहु रामहिं पीछेहु रामहिं व्यापक रा-
महिं है बन ग्रामे। सुन्दर राम दशों दिशि पूरण स्वर्गहु
राम पतालहु तामे २४॥

क०। शूरबीर रिपुको नमूना देखि चोटकरै मारैतब
ताकिकरि तरवार धीरसों। साधु आठो याम बैठो मनही
सों युद्धकरै जाकेमुहँ माथो नहीं देखिये शरीरसों॥ शूर-
बीर भूमिपर दूरहीते दौरलगे साधु सुनि कोपकरि राखै
धरिधीरसों। सुन्दर कहत तहां काहूको न पांवटिकै सा-
धुको संग्राम है अधिक शूरबीर सों २५॥

तथा। खैंचिकै करीं कमान ज्ञानको लगायोबाण माखो
महाबली मन जग जिनरान्यो है। ताके अगवानी
पंच योधाहू क़तलकिये और रह्यो परयो सब अरिदल
भान्योहै॥ ऐसो कोऊ सुभट जगत में न देखियत जाके
आगे कालहू सो कम्पिकै परान्योहै। सुन्दर कहत ताकी
शोभा तिहुँलोक माहिं साधुसों न शूरबीर कोऊ हम
जान्यो है २६॥

स०। प्रीतिप्रचण्डलगै परब्रह्महिं और सबै कछु
लागत फीको। शुद्धहृदय मनहोय सो निर्मल द्वैत प्रभाव
मिटै सब जीको॥ गोष्ठरुज्ञान अनन्तचलै जहँ सुन्दर
जैसे प्रबाह नदीको। ताहिते जानिकरो निशिबासर सा-
धुको सङ्ग सदा अतिनीको २७॥

तथा। कोउक निन्दत कोउक बन्दत कोउक देतहैं
आयके भक्षण। कोउक आय लगावत चन्दन कोउक
डारत धूरि ततक्षण॥ कोउ कहै यह मूरखदीसत कोउ

कहै यह आय विचक्षण। सुन्दर काहू सों राग न द्वेष सोई सब जानहु साधुके लक्षण २८॥

तथा। तातमिलै पुनि मातमिलै सुतभ्रातमिलै युवती सुखदाई। राजमिलै गजबाजिमिलै सब साजमिलै मन-वांछित पाई॥ यहलोक मिलै सुरलोकमिलै विधि लोक मिलै बैकुंठहु जाई। सुन्दर और मिलै सबही सुख सन्त समागम दुर्लभ भाई २९॥

क०। आठोंयाम यम नेम आठों याम रहै प्रेम आठोंयाम योग यज्ञ कियो बहुदानजू। आठोंयाम जप तप आठोंयाम लियो व्रत आठोंयाम तीरथ में करत सनानजू॥ आठोंयाम पूजाविधि आठोंयाम आरतीहू आठोंयाम दण्डवत सुमिरण ध्यानजू। सुन्दर कहत जिन कियो सब आठोंयाम सोई साधू जाके उर एक भगवानजू ३०॥

तथा। वही दगाबाज वही कुष्ठी जो कलङ्क भयो वही महापापी वाके नखशिख कीचहै। वही गुरुद्रोही गौ ब्राह्मण हननहार वही आतमाको घाती हिंसा वाके बीचहै॥ वही अघको समुद्र वही अघको पहार सुन्दर कहत वाकी बुरीभांति नीचहै। वही है मलेच्छ वही चा-ण्डाल बुरे ते बुरो सन्तनकी निन्दा करै सो तो महा नीचहै ३१॥

तथा। योग यज्ञ जप तप तीरथ व्रतादि दान साधन सकल नहीं याकी सरवरहै। और देवी देवता उपासना अनेकभांति शङ्क सब दूरि करि तिनते न डरहै॥ सबही

के शीशपर पांवदे मुकति होय सुन्दर कहत सो तौ जन-
मे न मरहै । मन वच कायकरि अन्तर न राखै कछु
सन्तन की सेवाकरै सोई निसतरहै ३२ ॥

स० । देखतब्रह्म सुने पुनि ब्रह्महीं बोलत है सोइ ब्रह्म-
हीबानी । भूमिहू नीरहू तेजहू वायहू व्योमहू ब्रह्म जहां
लगआनी ॥ आदिहू अन्तहू मध्यहू ब्रह्महीं है सब ब्रह्म
यही मतिठानी । सुन्दर ज्ञान अज्ञानहू ब्रह्महै आपहू
ब्रह्महीं जानत ज्ञानी ३३ ॥

तथा । बैठत केवल ऊठत केवल बोलत केवल बात
कही है । जागत केवल सोवत केवल जोवत केवल दृष्टि
लही है ॥ भूतहू केवल भव्यहू केवल वर्त्तत केवल ब्रह्म
सही है । है सबही अध ऊरध केवल सुन्दर केवल ज्ञान
वही है ३४ ॥

क० । कामीहै न यतीहै न सूमहै न सतीहै न राजाहै
न रङ्कहै न तनहै न मनहै । सोवैहै न जागै है न पीछे
है न आगेहै न गृही है न त्यागी है न घरहै न वन है ॥
स्थिरहै न डोलैहै न मौनहै न बोलैहै न बंधैहै न खुलैहै
न स्वामी है न जनहै । ऐसोकोऊ होवै जब वाकी गति
जानै तब सुन्दर कहत ज्ञानी ज्ञान शुधघन है ३५ ॥

तथा । प्रीतिसी न पाती कोऊ प्रेमसों न फूल और
चित्तसों न चन्दन सनेहसों न सेहरा । हृदयसों न आसन
सहजसों न सिंहासन भावसी न सेज और सूनुसे न
गेहरा ॥ शीलसों स्नान नाहिं ध्यानसों न धूप और
ज्ञानसों न दीपक अज्ञान तमकेहरा । मनसी न माला

कोऊ सोंहसों न जाय और आतमासों देह नाहिं देहसों न देहरा ३६ ॥

तथा । आपकी प्रशंसा सुनि आपही खुशाल होय आपहीकी निन्दा सुनि आप मुरझाय है । आपही की सुखमानि आपसुखमानतहै आपही की दुखमानि आप दुख पायहै ॥ आपही की रक्षा करि आपही को घात करै आपही हत्यारो होय गंगा जी नहाय है । सुन्दर कहत ऐसे देहहीको आपमानि निजरूप भूलिकै करत हाय हाय है ३७ ॥

तथा । जैसे कोई पोस्तीकी पागपड़ी भूमिपर हाथ लैकै कहै एकपाग मैंतो पाईहै । जैसेशेखचिल्लीमनोरथ-न को कियोघर कहै मेरो घरगयो गागरी गिराई है ॥ जैसे काहू भूतलग्यो बकतहै आकबाक सुधि सब दूरि भई और मति आईहै । तैसेही सुन्दर यह भ्रम करि भूल्यो आप भ्रमके गयेते यह आतमा सदाई है ३८ ॥

तथा । देहही सो पुष्टिलगे देहही दूबरीलगे देहही को शीतलगे देहही को तावरो । देहही को तीरलगे देहहीको खड्गलगे देहहीको शक्तिलगे देहहीको घाव-रो ॥ देहही स्वरूपलगे देहही कुरूपलगे देहही यौवन लगे देह बृद्धावरो । देहहीसों बांधिहेत आप विषय मानिलेत सुन्दर कहत ऐसो बुद्धिहीन बावरो ३९ ॥

तथा । देहदुखपावे किधौं इन्द्री दुखपावे किधौं प्राण दुखपावे धौं लहत न अहारको । मन दुखपावे किधौं बुद्धि दुखपावे किधौं चित्त दुखपावे किधौं दुख अहंकार

को ॥ गुण दुखपावै किधौं श्रोत्र दुखपावै किधौं प्रकृती दुखपावै किधौं पूरुष अधारको। सुन्दर पूछत कुछु जानि न परत ताते कौन दुखपावै गुरु कहो या बिचारको ४० ॥

स०। एकके दोय न एक न दोय वही कि यही न वही न यही है। शून्य कि थूल न शून्य न थूल जहीं कि तहीं न जहीं न तहीं है ॥ मूल कि डाल न मूल न डाल वही कि महीं न वही न महीं है। जीवके ब्रह्म न जीव न ब्रह्म तौ है कै नहीं कुछ है कै नहीं है ४१ ॥

क०। पांव जिनगह्यो सोतो कहतहै ऊखलसो पूंछ जिनगह्यो तिन लावसो सुनायोहै। सूंड़ जिनगही तिन दगलेकी बांहकही दन्त जिनगह्यो तिन मूसर दिखायो है ॥ कान जिनगह्यो तिन सूपसों बनाय कह्यो पीठ जिनगही तिन बिठौरा बतायो है। जैसो सो है तैसो ताहि सुन्दर सुअक्षीजाने आंधरेने हाथी देखि झगरो मचायो है ४२ ॥

तथा। जीवतही देवलोक जीवतही इन्द्रलोक जीवतही जन तप सत्यलोक आयोहै। जीवतही बिधिलोक जीवतहीशिवलोक जीवत बैकुण्ठलोक जो अकुण्ठगायो है ॥ जीवतहीमोक्षशिला जीवतहि भिस्तमाहिं जीवतही निकट परमपद पायो है। आतमको अनुभव जिनको जीवत भयो सुन्दर कहत तिनसंशय ये मिटायोहै ४३ ॥

तथा। क्षितिभ्रम जलभ्रम पावक पवन भ्रम व्योम भ्रम तिनको शरीरभ्रम मानिये। इन्द्रीदशतेहूभ्रम अन्तः-

करणभ्रम तिनहीं के देवतासो भ्रमते वखानिये॥ सतरज तम भ्रम पुनि अहङ्कार भ्रम महत्तत्त्व प्रकृति पुरुषभ्रम मानिये। जोई कछु कहिये सुसुन्दर कमलभ्रम अनुभव किये एक आतमाहीं जानिये ४४॥

तथा। भावेदेह छूटिजावे काशी महीं गंगातट भावे देह छूटिजावे क्षेत्र मगहरमें। भावेदेह छूटिजावे विप्र के सदन मध्य भावेदेह छूटिजावे श्वपचके घरमें॥ भावे देहछूटो देश आरज अनारज में भावेदेह छूटिजावे बन में नगरमें। सुन्दर ज्ञानीके कछु संशय रहै जो नाहिं स्वरग नरक सब भाजिगयो भरमें ४५॥

स०। प्रीतिकी रीति कछू नहिं राखत जाति न पांति नहीं कुलगारो। प्रेमके नेम कहूं नहिं दीसत लाज न कानि लग्यो सबखारो॥ लीनभयो हरिसों अभ्यन्तर आठहु याम रहै मतवारो। सुन्दर कोऊ न जानिसकै यह गोकुलगांवको पैंड़ोही न्यारो ४६॥

तथा। ज्ञानदियो गुरुदेव कृपाकरि दूरिकियो भ्रम खोलि किवारो। और क्रियाकहि को न करै अब चित्त लग्यो परब्रह्म पियारो॥ पांव बिना चलिबो कहिठाहर पंगु भयो मनमित्र हमारो। सुन्दर कोऊ न जानि सकै यह गोकुलगांवको पैंड़ोही न्यारो ४७॥

तथा। एक अखण्डित ज्यों नभव्यापक बाहिर भीतरहै यकसारो। दृष्टि न मुष्टि न रूप न रेख न श्वेत न पीत न रक्त न कारो॥ चक्रत होयरहे अनुभव बिन ज्यों लगि नाहिंन ज्ञान उचारो। सुन्दर कोऊ न

जानि सकै यह गोकुल गांवको पैंड़ेही न्यारो ४८ ॥

तथा। द्वन्द्वबिना बिचरैं बसुधा परि जा घट आतम ज्ञान अपारो। काम न क्रोध न लोभ न मोह न राग न द्वेष न म्हारो न थारो॥ योग न भोग न त्याग न संग्रह देह दशा न ढक्यो न उघारो। सुन्दर कोऊ न जानि सकै यह गोकुलगांवको पैंड़ोही न्यारो ४९॥

तथा। लक्ष अलक्ष अदक्ष न दक्ष न पक्ष अपक्ष न तूल न भारो। झूठ न सांच अवाच न बाच न कंचन कांच न दीन उदारो॥ जान अजान न मान अमान न सान गुमान न जीत न हारो। सुन्दर कोऊ न जानिसकै यह गोकुलगांवको पैंड़ोही न्यारो ५०॥

तथा। हो तुम कौनहौ ब्रह्म अखण्डित देहमें क्यों नहिं देहकेनेरे। बोलत कैसे कहों नहिं बोलत जानिये कैसे अज्ञानहै तेरे॥ दूरिकरो भ्रम निश्चय धारि कहौं गुरुदेव कहौं नितटेरे। हौ तुम ऐसे तुहूं पुनि ऐसेही होय नहीं अब द्वैतहै तेरे ५१॥

तथा। हूं कछु और कि तू कछु और कि है कछु और कि सो कछु औरै। हूं नहीं तू नहीं है कछु सो नहीं बूझे बिना जितही तित दौरै॥ हूं अरु तू यह है कछु सो पुनि बुद्धि बिलास भयो झकझोरै। हूं पुनि तू पुनि है कछु सो पुनि सुन्दर व्यापिरह्यो सबठौरै ५२॥

तथा। एक अखण्डित ब्रह्म बिराजत नाम जु दोकरि बिश्व कहावै। एकहि ग्रन्थ पुराण बखानत एकहि दत्त बशिष्ठ सुनावै॥ एकहि अर्जुन उद्धवसों कहि कृष्ण कृपा

करिकै समुझावै। सुन्दर द्वैत कछू मति जानहु एकहि व्यापक वेद बतावै ५३॥

क०। जैसे एकलोहके हथ्यार नानाभांतिकिये आदि अन्त मध्य एक लोहही प्रमानिये। जैसे एक कंचन के भूषण अनेक भये आदि अन्त मध्य एक कंचनही जानिये॥ जैसे एकमैनके सँभारे नर हाथी हय आदि अन्त मध्य एक मैनही बखानिये। तैसेही सुन्दर यह जगत सो ब्रह्ममय ब्रह्मसो जगतमय निश्चयकरिमानिये ५४॥

स०। ब्रह्महीमाहिं विराजत ब्रह्महि ब्रह्मबिना जिनि औरहि जानो। ब्रह्महीकुञ्जर कीटहु ब्रह्मही ब्रह्मही रंकरु ब्रह्महीरानो॥ कालहुब्रह्म स्वभावहु ब्रह्मही कर्महु जीवहु ब्रह्म बखानो। सुन्दर ब्रह्म बिना कछु नाहिंन ब्रह्महि जानि सबै भ्रममानो ५५॥

क०। श्रोत्रकछू और नाहिं नेत्रकछू और नाहिं नासा कछू और नाहिं रसना न और है। त्वक कछू और नाहिं वाक्य कछू और नाहिं हाथ कछू और नाहिं पांवनकी दौर है॥ मन कछू और नाहिं बुद्धिकछू और नाहिं चित्तकछू और नाहिं अहंकार तौरहै। सुन्दर कहत एकब्रह्मबिन और नाहिं आपही सें आप व्यापरह्यो सब ठौरहै ५६॥

स०। पाप न पुण्य न थूल न शून्य न बोल न मौन न सोवै न जागै। एक न दोय न पुरुष जोय कहै कहा कोय जो पीछे न आगै॥ वृद्ध न बाल न कर्म न काल न हर्ष बिलास न सूझै न भागै। बन्ध न मोक्ष अपोक्ष न प्रोक्ष न सुन्दरहै न असुन्दर लागै ५७॥

तथा । तत्त्व अतत्त्व कह्यो नहिं जात जो शून्य अशून्य उरै न परैहै । ज्योति अज्योति न जानिसकै कोउ आदि न अन्त न जीवै मरैहै ॥ रूप अरूप कछू नहिं दीसत भेद अभेद करै न हरैहै । शुद्ध अशुद्ध कहै पुनि कौन जो सुन्दर बोलै न मौन धरै है ५८ ॥

तथा । खोजतखोजतखोजिगये अरुखोजतहैं पुनिखोजहै आने । नाचत गावत गायगये बहुगायतहैं अरुगाय हैं माने ॥ देखत देखत देखिरहे सब दीसेनहीं कछुठौर ठिकाने । बूझतबूझतबूझिकै सुन्दर हेरतहेरतहेरि हिराने ५९ ॥

तथा । पिण्ड में है पुनि पिण्डमिलै नहिं पिण्डपरे पुनि त्योंहीं रहावै । श्रोत्रमें है पर श्रोत्र सुनै नहिं दृष्टि में है पर दृष्टि न आवै ॥ बुद्धिमेंहै पर बुद्धि न जानत चित्तमेंहै पर चित्त न पावै । शब्द में है पर शब्द थक्यो कहि शब्द हू सुन्दर दूर बतावै ६० ॥

तथा । भूमिहु तैसही आपहु तैसही तेजहु तैसही तैसही पौना । व्योमहु तैसही आपअखण्डित तैसहीब्रह्म रह्यो भरि भौना । देह संयोग वियोगभयो जब आयो से कौन गयो केहि कौना । जो कहिये तो कहै न बनै कछु सुन्दर जानिगही मुखमौना ६१ ॥

तथा । एकहीब्रह्म रह्योभरिपूरि तौ दूसरो कौन बतावनहारो । जो कोउ जीवकरै जो प्रणाम तो जीवकहा कछु ब्रह्मतेन्यारो ॥ जो कहै जीवभयो जगदीशी ते तो रबिमाहिं कहांको अँध्यारो । सुन्दर मौनगही यह जानि कै कौनहुँ भांति न ह्वै निरधारो ६२ ॥

तथा। नैन न बैन न चैन न आस न वास न श्वास न प्यास न याते। शीत न घाम न ठौर न ठाम न पुंस न वाम न मात न ताते॥ रूप न रेख न शेष अशेष न श्वेत न पीत न श्याम न राते। सुन्दर मौन गही सिध साधक कौन कहै उसकी मुखबाते ६३॥

तथा। वेदथके कहि तंत्रथके कहि ग्रन्थथके निशि वासर गातें। शेषथके शिव छन्दथके पुनि खोज कियो बहु भांति विथातें॥ पीरथके अरु मीरथके पुनि धीरथके बहु बोलि गिरातें। सुन्दर मौनगही सिधसाधक कौनकहै उसकी मुखबातें ६४॥

तथा। योगी थकेकहि जैनथके ऋषि तापस थाकिरहे फलखाते। न्यासी थके बनबासीथके जो उदासीथके बहुफेरि फिराते॥ शेष मसायक और उलायक थाकि रहे मनमें मुसक्याते। सुन्दर मौनगही सिधसाधक कौन कहै उसकी मुखबाते ६५॥

क०। आइके जगतबीच काहूसों न करैबैर कोऊ कछु काम करै इच्छाजौन जोईकी। ब्राह्मणकी क्षत्रिनकी बैश्य अरु शूद्रनकी अन्त्यज मलेच्छकी न ग्वाल की न भोई की॥ भलेकी बुरेकी हरिचन्द से पतितहूंकी थोरेकी बहुत की न एककी न दोईकी। चाहे जो चुनिन्दाभयो जग बीच मेरेमन तौनतू कबहुं कहुं निन्दाकरु कोईकी ६६॥

स०। बैदको बैद गुणीको गुणी ठगकोठग ठूमकको मन भावै। कागको काग मराल मरालको कांध गधाको गधा खजुलावै॥ कृष्णभनै बुधको बुधत्यों अरु रागीको रागी

मिलै स्वर गावै। ज्ञानी सों ज्ञानीकरै चरचा लबरा के ढिगा लबरा सुखपावै ६७॥

क०। फूटगये हीराकी बिकानी कनी हाटहाट काहू घाट मोल काहू बाढ़ मोलको लयो। टूटिगई लङ्का फूटि मिल्यो जो बिभीषणहै रावण समेत बंश आसमान को गयो॥ कहैं कबि गंग दुर्योधन से छत्रधारी तनक के फूटेते गुमान वाको नैगयो। फूटेते नरद उठिजातबाज़ी चौपरकी आपुसके फूटे कहो कौनको भलो भयो ६८॥

तथा। ईशके भजनमें न भूसुरके तनमें न रङ्कधामअ-नमें कहूं न बृन्दाबनमें। ज्ञाति गुरुजनमें न धोखे पित्र गनमें न उठे कबितनमें न बेद उचरनमें॥ कहैं कबिरामते बसत प्रेम तनमें बिचारदेखो छिनमें दया न जाके तनमें। कहा परगनमें बनाय धनी गनमें न लागे हरिजनमें तो थूकऐसे धनमें ६९॥

तथा। सत्यते प्रतीतहोय जाकी सब देसनमें सत्यते सचाई और सत्यते भलाईहै। सत्यही सों सुख पावै यश औ धरमबढ़ै सत्यहीते लेवादेवा सत्यते बड़ाई है॥ साधू लाल कहैं होय आदर बहुत यातें मुक्तिहोत अन्त माहिं पुण्यफल दाई है। सत्य बिना मानुष के दरजा रहत नाहिं याते चतुरननें सुसत्य उपजाई है ७०॥

तथा। जार परे जोर जात जब्रपरे भूमिजात झूमि जात यौवन अनङ्ग रसरसहै। गढ़ढाहिजात गरुवाई औ गरबजात जातसुख साहिबी समूह सरबसहै॥ कहैं हेम-नाथ धन सम्पति बिपति जात जात दुख दारिद्र दरुण

हमारा तस्वीर नं० १६ भुजबलिकी सफा २६६



एक वीरकी मूर्ति ॥

दरबसहै। बाग कटिजात कुवाँ ताल पटिजात नदीनद घटिजात पै न जात जग यसहै ७१ ॥

स०। भूलपरे पछितैहैं कहा लगरे नर देहको अवसर आजहै। तू बलदेव गहै बिनही श्रम चारिफलै तो भले सुखसाजहै॥ लाभ लहो जगजीवन को तब और कछू करिबे को न काजहै। जो भजतो यदुनन्दनके पद सो सब राजनके महराजहै ७२ ॥

तथा। काम न क्रोध न मोह न लोभ सदा सतसंग को लालच लागत। आनँद देत सबै बलदेव बिलोकत जे तिनके अघ भागत॥ पुंजप्रभा जगके प्रिय प्रान से प्रेम भरे न प्रपंच में पागत। जे भजते यदुनन्दनके पग ते जगहैं जन जानिये जागत ७३ ॥

तथा। मंगल होतसबै बलदेवसदा अणिमादिकमोद बढ़ावत। पावन औरनहूं को करैं प्रिय सन्त सभा धनि-वादको छावत॥ शुद्धहिते नित युक्त चितै करि कर्म बितै कै इतै नहिं आवत। जो भज तो यशुदा सुतको सोइ जन्म पदारथ को फल पावत ७४ ॥

वीररसके कवित्त व सवैया ॥

स०। कीजै न कोप कृपानिधि राम जो तौ गढ़लङ्क उठाय मैं लाऊं। कोउको भय अरु शङ्क न मानिके रावणरानि पै पानि भराऊं॥ लच्छकहै कबिराज समच्छ बिपच्छज सोनित सिंधु चलाऊं। माथे मरोरि धरौं दशकन्धके नाथ के हाथका पान जो पाऊं १ ॥

देखोतसवीर नंबर १६ ॥

क०। गोपीनाथ नन्दन प्रभंजनको लङ्कावीच कूदो देखि साहस सरासरके सरके। तालदेत जाके काल कालको कराल भयो छूटिगे हथ्यार जे कराकरके कर के॥ खल भल लङ्क हीय खलनके हल हल दहल कमल के बराबर के बरके। डरि डरि ढरिगये अडर डराय ढह ढर ढर ढरके धराधरके धरके २॥

तथा। बारि टारि डारौं कुम्भकर्णहि विदारिडारौं मारौं मेघनादै आजु यों बल अनन्तहौं। कहै पदमाकर त्रिकूटहीको ढाहिडारौं डारत करेई यातुधाननको अन्त हौं॥ अच्छहि निरच्छ कपि रिच्छहि उचारों इमि तोत्र तिच्छ तुच्छन को कछुवै न गन्तहौं। जारिडारौं लङ्कहि उजारि डारौं उपवन फारि डारौं रावणको तौ मैं हनुमन्तहौं ३॥

तथा। सोहैं अत्रओढ़े जे न छोड़े शीशसंगरके लंगर लँगूर उच्च ओजके अतंकामैं। कहैपदमाकर त्यौंहुंकरत फुंकरत फैलत फुलत फाल बांधत फलंकामैं॥ आगे रघुबीरके समीरके तनयके संग तारीदै तड़ातड़के तड़के तमंकामैं। शंकादै दशाननको हंकादै सबंकाबीर डंकादै बिजयको कपि कूदि पर्यो लंकामैं ४॥

स०। कुम्भकरण्ण हन्यो रणराम दल्यो दशकन्धर कन्धरतोरे। भूषणवंश बिभूषण भूषण तेज प्रताप गरे अरिओरे॥ देव निशान बजावत गावत धावतगे मनभावत भोरे। नाचत बानर भालु सबै तुलसी कहि हारे हहाभैहारे ५॥

तथा। हनुमान हठीलो रँगीलो बली ज्यहि मान मथ्यो गढ़ लंकपती को। लैकरि मुन्दर कूदि समुन्दर शोक हरो जाय सीय सतीको॥ उखारि पहार सकेलि सजीवन तेजगयोक्षणमें शकतीको। तुलसी संकट क्यों न कटै जब ध्यानधरो हनुमान यतीको ६॥

तथा। बालिबँध्यो बलिरावबँध्यो करशूली के शूल कपाल थलीहै। काम रच्यो जर काल पर्यो बंधसेतु धर्यो विष हाल हलीहै॥ सिन्धुमथ्यो कलकाली नथ्यो कहि केशवचन्द्र कुचालि चलीहै। रामहूं की हरी रावण बाम चहूं दिशि एक अदृष्ट बलीहै ७॥

तथा। कोशलराज के काजहौं आज त्रिकूट उपारि कै बारि निबोरौं। द्वौ भुजदण्ड दै अण्डकटाह चपेट के चोट चटाक के फोरौं॥ आयसु भंगको जो न डरौं तौ मींजि सभासद शोणित बोरौं। बालिको बालक तौ तुलसी दशहू मुखके रणमें रदतोरौं ८॥

तथा। गहि मन्दर बन्दर भालु चले सो मनोउमड़े घन सावनके। तुलसी उत झुण्ड प्रचंडझुके झपटेभटजेसुरदावनके॥ बिरुझेबिरदैत जे खेतअरे न टरेहठिबैरबढ़ावनके। रणमारुमची उपरी उपरा भलेबीररघूपति रावनके ९॥

तथा। रामशरासनते चले तीर रहे न शरीर हड़ावड़ फूटी। रावण धीर न पीर गनी लखिलैकर खप्पर योगिनि जूटी॥ शोणित छीट छटानपरी तुलसी प्रभु सोहै महाछबि छूटी। मानहुं मर्कतशैल बिशालमें फैलि चली जनु बीरबहूटी १०॥

क०। देखि चण्ड मुण्डको प्रचण्ड उग्र बोली शिवा अबल अरक्षण की रक्ष पक्ष पालीहौं। कहैं कालीदीन देव कौतुक बिलोको नभ चारौं दिग दन्तिबे को आजु दुरातालीहौं॥ फोरि डारौं बसुधा मरोरि डारौं मेरु-गिरि कालचक्र तोरिडारौं आजु मैं बहालीहौं। काली करौं अतिदल सब बिकरालीकरौं जंगभूमि लालीकरौं तौ मैं महाकालीहौं ११॥

तथा। हनूमन्तकी लपेट दै लँगूर की झपेट दल दुष्ट को दपेट चरपेट चाखलान। बजै नख चटाचट्ट दन्त होत खटाखट्ट गिरै सैन घटाघट्ट फूटि फूटि पारजान॥ कपिकूह किलकार खलजूह झिलकार परीपट पिलकार कटै राकस निदान। तहँ तेजको कुमार करि कोप बेशु-मार बीर लक्षण कुँवर झुकि झारी किरबान १२॥

स०। तीर कमान गही बल मण्डक मारमचीघम-सान मचायो। योगिनी रज्ज कै भारी भई शिवशङ्कर मुण्डक माल लैआयो॥ भीम समानको युद्धकियो कवि जैतकहैं जगमेंयशपायो। शाहकेकाजपै शूरलड्यो शिर टूटिपरचो धड़ धारुके धायो १३॥

क०। लगीसों लगाईलंक खेहनि खराबकरौं मारि करौं मोरनि अहार मारजारे को। सो कबिनिधान कान आंगुरी न मूंदिदहौं सुनिहौं न घोर शोर झिल्ली झन-कारेको॥ भेकन की भीड़ सहसानन मिटाय डारौं मेटि डारौं गरबगरूर घनकारेको। पाऊं जो पकरि कहूंजलसों जकरितन फीहा फीहा करौं या पपीहा दैमारे को १४॥

तथा। गरदके झुंडढक्यो मारतण्ड मण्डलले बाने फहराने जब ढिग आनि अरिके। तमकि तमकि तब राजेकराजिलैबीर बिरुझाने खरुझाने जैसे बाघथरिके॥ मण्डन बिरचिलीनी घोरिनकी बागदीनी दौरिकै दरेरे जैसे भादौं की लरिके। जित तित बिजली सलोह लगे लहकन बरसन बाण लगे जैसे बूंद झरिके १५॥

तथा। अभय कठोर बाणी सुनि लक्ष्मणजूको मारिबे को चाही जो सुधारो खल तलवारि। यार हनुमन्त तेहि गरजि हहासकरि झपटि पकरि ग्रीव भूमि लै परे पछारि॥ पुच्छन लपेटि फेरि दन्तन दरदराय नखन बकोटि चोथि देत महि डारि डारि। उदर बिदारि मारि लुत्थन लुटारि वीर जैसे मृगराज गजराज डारै फारि फारि १६॥

तथा। आवै बीर विक्रम प्रचारै जो समर बीच तिन-हूको झपटि दपटि नेक हारैना। जाहिर है जम्बूद्वीप श्रीप्रताप रुद्रसिंह दान सनमान समय शोच उर धारै ना॥ द्विज बलदेव कहैं बकसि बितुण्ड देत झुण्ड झुण्ड गुणिनको लखिकै बिचारैना। हल्लाहै कुबेरकेमहल्लामें त्रसितमेरु कोबिद कबिन हित मोहूंको उपारैना १७॥

स०। अंजनी तातदई जब लात गिस्यो हहरात न गात सँभारो। फेरि सचेत उठ्यो रणधीर भई अतिपीर शरीर न टारो॥ कहैं कृष्ण प्रशंसि कह्यो मनुजात इजा-दहै पौरुष कीश तिहारो। देखि हृदय सकुचे हनुमान न प्रान गयो धृग मान हमारो १८॥

तथा। मण्डितजे रविरूप किरीटन माणिक मोतिन सों झलकारे। पूजितफूलसुगन्धनसों नभबालनके तन में महकारे॥ काहू लखे न लखावत और न चन्दन ऐसे महा अहकारे। ते शिर रावण के रणमें हनुमानवली चढ़ि लातन मारे १९॥

तथा। इंद्रके बज्रसे जे न डरे न टरेहैं जलेशके फांस प्रहारे। शम्भु त्रिशूल गह्यो नहिं नेक न बिष्णुके चक्रसों बक्रनहारे॥ ब्रह्मकी शक्ति न शालेहिये रण आयते रावण केललकारे। कालदपेटन जे न टरे हनुमान बली ते चपेटन मारे २०॥

क०। नाचिनाचि कूदि कूदि किलकि किलकि कपि उछरि उछरि राहलेत आसमानकी। बलकि बलकि बलु कारि कारि छरि दरि छरत छरेद भेद कृतगति भानकी॥ रुण्डनसों रुण्ड अरु मुण्डनसों मुण्ड करि भारी भट झुण्डन घुमण्ड मारु घानकी। रावण कहत राम हिये हरषात जात देखो बीर लषण लड़नि हनुमानकी २१॥

स०। अतिकोप सों रोप्योहै पाउँ सभासब लङ्कस-शङ्कित शोर मचा। तमके घननादसे बीर प्रचारिकै हारि निशाचर सैनपचा॥ न टरै पग मेरुहसों गरुओ भो सो मनो महि सङ्ग बिरञ्चि रचा। तुलसी सब शूर सराहत हैं जग में बल शालिहै बालि बचा २२॥

क०। आयो आयो आयो सोई बानर बहोरि भयो शोर चहुँओर लंकाआये युवराजके। एक काढ़े सौंज एक धौंजकरे कहाह्वैहै पोचभई महाशोच सुभट समाजके॥

गाज्यो कपिराज रघुराजकी शपथकरि मूंदे कान यातु-धान मानों गाजे गाजके। सहमि सुखाति बातजात की सुरतिकरि लवा ज्यों लुकात तुलसी झपेट बाजके २३ ॥

स०। तोसों कहौं दशकन्धररे रघुबीर बिरोध न कीजिये बौरे। बालिबली खरदूषण और अनेक गिरे जेते भीत में दौरे ॥ ऐसियहालभई त्वहिंकौन तो लै मिलु सीय चहै सुख जौरे। रामके रोष न राखिसकै तुलसी बिधि श्रीपति शङ्कर सौरे २४ ॥

क०। लोथिन से लोहू के प्रबाह चले जहां तहां मानहुँ गिरिन्ह गेरु झरना झरतहैं। शोणित सहतघोर कुंजर करारे भारे कूलते समूह बाजि बिटप परत हैं ॥ सुभटशरीर नीर चारी भारी भारी तहां शूरन उछाह कूर कादर डरतहैं। फेकरि फेकरि फेरु फारि फारि पेट खात काककङ्क बालक कोलाहल करतहैं २५ ॥

तथा। जाकी बांकी बीरता सुनत सहमत शूर जाकी आंच अबहूं लसत लङ्का लाहसी। सोई हनुमान बल-वान बांको बानइत जोहै यातुधान सेना चले लेत थाह सी ॥ कम्पत अकम्पन सुखाय अति कांप कांप कुम्भक-करण आइरह्यो पाय आहसी। देखे गजराज मृगराज ज्यों गरजधायो बीर रघुबीरको समीर सूनुसाहसी २६॥

इति ॥



हफीजुल्लाहखांका

हज़ारा ॥

दूसरा भाग ॥

विशेष रस के चुहचुहातेहुये कवित्त व सवैया ॥

स०। बनमें बृषभानकुमारि मुरारि रमे रुचिसों रस रूपपिये। कलकूजतपूजतकामकला बिपरीतरची रति केलहिये॥ मणि सोहत श्याम जरायजरी अतिचौंकी चलै चलचारहिये। मखतूलके झूल झुलावत केशव भानु मनों शनि अङ्कलिये १॥

क०। आली ऐंड़दारबैठी ज्वानी के तखत पर नैन फ़ौजदार खड़ेलखैं चहूंओराहैं। द्वादशहूभूषणके द्वादश वज़ीरखड़े सोरह शिंगार भूपलखैं दृगकोराहैं॥ रूपको गुमान शीश मुकुटहै छत्र औरे ज़ेवरकी नौबति बजति सांझ भोराहैं। कहैंकबि केशवदास आली बरणी न जाति जोबनकी जोरा मानो बादशाही तोराहैं २॥

तथा। सुकनिकुमार भोरहीते करआरसीलै साजती शिंगारखारबासती सुबासहो। बातैं मनभावती बतावती न सखिहूंसों रातिरतिरंगपतिसंगपरिहासहो॥ मृदुमुस-

क्याती प्रेमराती रिस ठानती हौ आनती हौ रिसबस जानती बिलासहौ । प्रीतिमदमाती न समाती फूलिअङ्गनिहौ काहेकोलजाती क्यों न जाती पियपासहौ ३ ॥

तथा । बड़ेबड़ेमोतिनकी लसत नथूनीनाक बड़ेबड़े नैनपगे प्रेमके नसनसों । रूपऐसी बोलिन में सुन्दरनवेलीबाल सखिनसमूह मध्य सोहत जसनसों ॥ कांकरी चलायोहै तहां दुरिकै करन कान्ह मुरकि तिरीछी चितै ओटदै बसनसों । नेकअनखानी सतरानी मुसुक्यानी भौंह बदन कँपायो दाबि रसना दसनसों ४ ॥

स० । मिलिये उड़िकै किमि पङ्ख नहीं लखिये किमि नाहिंकला शशिकी । हरिके श्रुतिसे श्रुतिजोलहते सुनतेही सुबोलनि वामुखकी ॥ मुखरोषहूकेलहते कहते कमलेशकथा गुन औ यशकी । मिलिबो बिछुरो भिछुरोबो मिलो अपने बशना बिधना वशकी ५ ॥

तथा । भूषण श्वेत महाछबि सुन्दर सानि सुबास रचीसब सौने । गोरेसेअङ्ग गरूरभरी कबिखेमकहैं जो गई तहँ गौने ॥ चन्द्रमुखी कटिक्षीनखरी दृग मीनहु ते अतिचंचलदौने । ऐसी जो आयकै अङ्कलगै तो कलङ्क लग्यो अरु होउ सो हौने ६ ॥

तथा । लखिपायन पायल पायलहै पुनि लंकते दौरि निशंक गयो । तबरूप नदी त्रिबली तरिकै करिकै मति साहस पारभयो ॥ कुचदोऊ सुमेरुके बीचमेरो मनमेरो मुसाफिर लूटिलयो । कबिगंग कहैं भटपारमनोज रुमावलीते ठग सङ्ग ठयो ७ ॥

तथा। तूरत फूल कलीन नवीन गिरो मुँदरी को कहूं नगमेरो। संगकी हारी हेरायगोपाल गई अलसाइ डेराइ अँधेरो॥ सांसति सासुकी जाय सकौं न अहोछिन एकन गैयन फेरो। कुंजविहारी तिहारी थली यह जात उज्यारी दया करि हेरो ८॥

तथा। यह बन्धुहहै बड़वानलको नथमोतियों ज्वाल सो जागत है। यह शीशको फूलहु ताप करै तनु नागन सों विष पागत है॥ मृदुहार हिये कसकै गुरदत्त कठोर उरोजन लागत है। यह दाग कपोलन में शितलान को दागकरेजे मों दागत है ९॥

तथा। सूधि चितौनि चितौनिसकै औ सकै न निरीछी चितौनि चितै। गुड़ियान को खेलिबो फीकोलगै अरु काम कलाको विलासकितै॥ लरिकापन यौबन सन्धि भई दुहुँबैसको भावमिलै न हितै। विधि चुम्बक बीचको लोहो भयो मन जाइसकै न इतै न उतै १०॥

क०। अमल कमलवारौं चन्द सुकविआगे कमला की पांयनकी मृदु अरुणाई के। छीनीभई कटि अतिनिकसि नितम्बआये छपिगई छाती वड़ेकुच तरुणाई के॥ आनन प्रकाश सोम सूनो सो निहारियतु सौतिनको जोम गयो भई करुणाई के। गई लरिकाई दवि घुमड़े मनोज ओज उमड़ेपरत अंगअंग तरुणाई के ११॥

स०। ज्ञानी उपासक ध्यानी बड़े नितनेम निबाहि सुदान दये हैं। जाने सुने गुण ज्ञानै गुणौगुण गाहक साधक सिद्धभये हैं॥ योगविचार विरागछेमकर केतिक

तीरथ पन्थ गयेहैं। सन्त पुरातन हैं तौ भले पर जौलौं नयेनहिं तौलौं नयेहैं १२॥

तथा। अम्बुज कंजसे सोहत हैं अरु कंजन कुम्भ थपेसे धयेहैं। बोरेखरे गदकारेमहा बटपारेलसैं अरु मैन बयेहैं॥ ऊंचे उजागर नागरहैं औ पीयके चित्तके मित्त भयेहैं। हैंतो नये कुच ये सजनी पर जौलौं नये नहिं तौलौं नयेहैं १३॥

तथा। हेरो तो हेरो न जात भटू हरिहेरो बिना नहिं लागतनीको। नैनजुरैं न मुरैं न भलीबिधि कौतुक कासों कहौं यहजीको॥को समुझै यशवन्तजू ऐसिहौं ताकोकरो बलि पौरिजनीको। जीवकली कहे लाज तुरंग कहो कहिबोकरो लाजके जीको १४

क०। बैसतरुणाई रूपराजतअरुणाई तैसी सुन्दरता पाई शोभा समसचकी। रतितोरतीसी रम्भा लंकको नशंकजाके कहै जगदेवजू रहेसो देखभचकी॥ सावन सुहावन मनभावनके तंगपट पटलीपै पगदैके लेनलागी भचकी। झूलाको झुकायदई झोकएकबारनसों बारनके भार कई बारनारलचकी १५॥

स०। एकहीसों चितचाहिये और लौं बीचदगाको परैनहीं टांको। माणिकसों चित वेचिकै जू अबफेरिकहां परखावनो ताको॥ ठाकुरकामनहीं सबको इक लाखन में परवीन है जाको। प्रीति कहा करिबे में लगै करिकै इकओर निबाहनो वाको १६॥

क०। सुथरीसुशीली सुयशीली सुरसीली अति लंक

नचकीली काम धनुष हलाकासी। कहै कबि तोष होती सारी ते निनारी जब कारीबदरीते बढ़ै चन्द्रकेकलाकासी॥ छोनेलौने लोयनपै खंजनझमकवारों दन्तनचमकचारु चंचलाचलाकासी। सांवरे सुजान कान्ह तुमसे छपाऊं कहा सेजपै सोवाऊं आनि सोनेकी शलाकासी १७॥

स०। अरी जाकोलगी तनुसों शुभ वै कहाजाने प्रसूतबिथा बझरी। हरिनी होय भूमिमें क्यों न गिरी सर सादर सार भई मझरी॥ निधि तोष तू क्यों समुहेभईरी न बचाइ कटाक्षनकी नजरी। बरजोरी बिहारी के नयननसों करवाई करे कहिकै झगरी १८॥

तथा। लहिजीवन भूरिको लाहु अली वै भली युग चारिलौं जीबोकरैं। द्विजदेवजू त्यों हरषायहिये बरबैन सुधामधु पीबोकरैं॥ कछुघूंघुट खोलि चितै हरिओरन चौथि शशीद्युति लीबोकरैं। हमतोब्रजको बसिबोई तजो अब चाव चवाइनै कीबोकरैं १९॥

तथा। आनन है अरबिन्दन फूल्यो अलीगण भूले कहा मड़रात हैं। कीर कहा तोहिं बाइ भई भ्रम बिम्बके ओठनको ललचात हैं॥ दासजू ब्याली नबेली बनाइये पापी कलापी कहा हरषात हैं। बाजतबीन न बोलतबाल कहा सिगरे मृग घेरत जात हैं २०॥

क०। आजु चन्द्रभागा वहिचन्द्रवदनीकेतीर निरत करत आई मोरके परन को। तब वै कहाधौं कहा बेनी गहिरही तब वोहू दरशायोरी बधूपके दरनको॥ तब वै कहाधौं परस्यो धौं उरजात यह परस्यो कहाधौं कहा

आपन करनको। नागरि गुणागरि चलतिभई ताहीक्षण गागरि लैरीती यमुनाजल भरनको २१॥

तथा। नखतसे मोती नथऔंदियां जड़ायजड़ी तरल तरयोनन की आभा मुखफूटी है। देवकीनन्दन कहै तैसी चारु चम्पकली पचलरी मन्त्रमोहनीकीगाति लूटी है॥ चूनरी कुसुम्भीरंग ऊनरी परततनु कलित किनारी सो ललित रसलूटी है। बालतेरी छाती में हमेल छवि छूटी मनो लालदरियाई बीच बेलदार बूटी है २२॥

तथा। कुंजनतेआवति नवेली अलबेलीचली शोभा अंगअंगकेरी जागतउदैभई। देवकीनन्दन मुखछविकी निकाईलसै चारोंओरचांदनी प्रकाशकरिह्वैगई॥ श्याम मुखभाषी तुमकोहौ कितजैहौ सुनि बैन मगथाकी फिरि वाही ठौर ठैगई। लालनकी ओर दृगजोरि कसिकोरितनु तोरि झकझोरि चितचोरि करिलैगई २३॥

तथा। गुड़हर गेंदागुलसब्बोसी विशाल छवि लाल कचनारसी अनारसम मानी है। सूरजमुखीसी गुलपेचा सीजपासी सोहै देवकीनन्दन गुललाला सम जानी है॥ चम्पासी चमेलीसी जुहीसी सोनजूहीसम सेवतीगुलाब गुलदावदी प्रमानीहै। कल्पतरोवरसे फूलेलसै नन्द लाल चारोंओर ललना लतासी लपटानी है २४॥

तथा। डोलैपौन परसि परसि जलबूंदन सों बोलै मोरचातक चकित उठिडरिमैं। कहांलौं बराऊं दईमारे मैन बाणनसों थकिरही केतिको उपाय करि करि मैं॥ दत्तकवि प्यारे मनमोहन न पाऊं कहौ मन समुझाऊंरी

कहांलौं धीरधरि मैं। छायेमेघ मगन सुहाये नभमण्डल में आये मनभावन न सावनकी झरिमैं २५॥

तथा। वदन बिसूरै सुधारस अवलोकै कंज बिकच निहारै नैन चारुसमता ठये। चांदनीकी तेरी हांसीसम रहिगानै बिम्ब ओंठन बखानै बैन कहतनयेनये॥ धनीरामअंग उपमानयों बिलोकिलाल होतहैं निहालबाल बावरीसे ह्वैगये। दूतीके बचनसुनि चातुरी सों सानै कछू मरम न जानै नैना अरुण कहाभये २६॥

स०। पीठिदै पौढ़िहुराय कपोलको मानै न कोटि पियाउतपोढ़त। बाहँनबीच हियेकुचदोऊ गहे रसना मनहींमन शोचत॥ सोवतिजानि निवाजपिया करसोंकर दै निजओर करोंटत। नीबी बिमोचत चौंकिपरी मृगछौनसि बालबिछौनापलोटत २७॥

तथा। भोरहिते वह कौनसी पाहुनि आइतिहारेही न्योतिबुलाये। छोटीसीछाती छबानीलौं बेनी नरोत्तम रूपकी लूटिसीपाये॥ सारी हरी अँगिया घनिबेलि की घूमति सो लहँगा थिरकाये। कंजसों आनन खंजसों नैनन एड़िन ईंगुरसों लपिटाये २८॥

तथा। गांसगसीली ये बातैं छिपाइये इश्क न गाइये गाइयेहोलियां। गेंदबहाने न बीरचलाइये सूधे गुलाल उड़ाइयो कोलियां॥ लोगबुरे चतुरे लखि पावैंग दाबे रहो दिलप्रीति कलोलियां। पायँपरों जीडरों टुकनागर हाइकरों जिनि बोलियांठोलियां २९॥

क०। ढरि ढरि ढुरेबेनी बिपुल नितम्बनपै घेरि घेरि

घुमड़त घांघरो घनेरो है । फेरिफेरि फिरत निपट लच-कीलीलंक फेरिफेरि दृग फेरि फेरि मुखफेरो है॥ भुजकी डुलनि औ खुलनि कुचकोरनि की चाहि चाहि परमेश भयो चित्त चेरो है। झुकिझुकि झुकनि भरति घट ज्यों ज्यों त्यों त्यों मैनके भभूकनि भरतघट मेरो है ३० ॥

तथा। चांदनी चटकचारु चौतरामें चन्द्रमुखी चांद-नी बिलोकिबेको बैठी सुकुमारहै। फैलिरही चांदनी चटक तैसी अंगनकी चहूंओर चन्दन सुगन्धन की सारहै॥ बि-न्दादत्त कहैं हैं हुहारे आनिवारे न्यारे शोभासों सँवारे जल सूघर सुठार है। मोतिन की मालधरे सुमन बिशाल हालि लाल चलि देखौ आजु बालकी बहार है ३१ ॥

तथा। गेह देह मेह को न क्षोभ लोभ प्राण लघु लाज परलोक लोक तीन्यों ज्यों नगन में। उन्नत उरोजभार चपल चमक चाल लपटि लपटि जात नागहू पगन में॥ बेनीकबि कहै कछुकहत न बनै ऐसी लगनि लगाई हाइ कौनसी लगन में। भूमि हरियारी हरियारी ते सिधारी प्यारी निशि अँधियारी अँधियारीसी दृगन में ३२ ॥

क०। रैनिमें जगाई कल करन न पाई इमि ललनि सताई परयंक आंकमाहियां। ससकि असकि करहतिही ब्यतीती निशा मसकि प्रबीनीबेनी कीन्ही चितचाहियां॥ भोर भयो भौनके ससोन लगि गई सोय सखिन जगा-इबेको आनिगही बाहियां। चौंकि परी चकि परी औ-चक उचकि परी छकि परी जकि परी सकि परी नाहियां ३३ ॥

स०। कुञ्जगलीन अलंगन में चली आवती ती बृषभानुदुलारी। ताहि बिलोकिकै रंगभरे छल सों छिपिकै रहे कुंजबिहारी॥ कुमकुमा घालो उरोजनि को तकि पाणि सरोज सों ताहि निवारी। जानि है वीरदशा उर आनि बजी वह एकही हाथकी तारी ३४॥

तथा। मेरो तुम्हारो मिल्योजियरा सुचढ्यो रस रंग अनंग के जागे। गाउँ निगोड़ो चवाई बुरोहै कहांलगि छूटिये बातन भागे॥ फैलिपरै कहूं बात सगेनमें जाइ चुके तिये पायन मांगे। काह हमैं औ तुम्हैं बिगरैगी जुटीकौंगे भूलिहूं काहूके आगे ३५॥

क०। कवके बिहारी वलि करत हहारी तूतौ करति कहारी समय सरस विचारिये। जगकी जियारी दया देखि घटाकारी उठि आय वनवारी तू कहै तौ पांइ पारिये॥ जिन्हैं देखिहारी मृगचारी मृगनारीसारी कामकी करारी सवै प्रेममतवारिये। कारीकजरारी उजियारी अनियारी झपकारी रतनारी प्यारी आंखैं इत ढारिये ३६॥

स०। आंखैं गुलावसी खासीलसैं मुखनासिका बिम्ब धरा अवलीको। भारी नितम्बनि जंघनि पीन बनो कटि छीन बनाव ललीको॥ मंचित भीजो लसै उरचीर उरोजनि ओप सरोजकलीको। बांधिकै जूरा कसै अँगिया मन पूरो करै तिया छैलछलीको ३७॥

तथा। कान्हकै बांकी चितौनि चुभीचित काल्हि तू झांकीरी बाल गवाछन। देखिहै नोखीसी चोखीसी कोरनि ओछे फिरै उभरे जित जाछन॥ माख्यो सँभारिहिये

सों मुबारक है सहजे कजरारे मृगाञ्छन। काजरदेरी न एरी सुहागिल आंगुरी केरी कटैगी कटाछन ३८॥

क०। कनक बरणबाल नगन लसतमाल मोतिनको माल उर सोहै भलीभांति है। चन्दन चढ़ायचारु चन्द्र-मुखी मोहिनीसी प्रातहीं अन्हाइ पगुधारे मुसुकाति है॥ चूनरी बिचित्रश्याम सजिके मुबारकजू ढांकि नखशिख ते निपट सकुचाति है। चन्द्रमैं लपेटिके समेटिके नखत मानौं दिनको प्रणाम किये राति चलीजाति है ३९॥

स०। गई सांझ समै की बदी बदिकै बड़ीबेर भई निशा जानलगी। कलिमन्यजु जानि दुगैलन घैलन छैल की छाती निछान लगी॥ अब कौनको कीजै भरोसो भटू निज बारियै खेतीयै खानलगी। अतिसूधे मुबारक की बतियां नहिं आनिये काधौं बतानलगी ४०॥

क०। उठेघनसालदेखि दामिनिकलापदेखि देवराज चापदेखि त्रास अतिपावतो। बुन्द बुन्द पातदेखि सूर्य अप्रकाशदेखि दिनहू को अन्त देखि चैनहू न पावतो॥ नभको बितार देखि बायुसुखचार देखि अतिअंधकार देखि मोमैं मन लावतो। होतो वहां पावस तो एरीसखी बातसुनो बीसबिसे अजहूं हमारो कन्त आवतो ४१॥

स०। आये हैं भावभरे नँदलाल सुभावकरैं घरकाज से भावै। झांकी दै नैनकी सैनकह्यो हँसिराय जु कुंजन खेलखेलावै॥ जो बरुनी बरुनी न परै पल घूंघट खैंचन सासु सिखावै। ताहि मैं लाजसों काजकछू जोरजाय सो लाज जो काज न आवै ४२॥

तथा। रसिकै रसरीतिकी गैलनि माहिं अनीति को पन्थ न गाहियेजू। अबतौ छलछन्द कि वानिलजौ हँसि बोलिकै चित्त उमाहियेजू॥ रसिया करजोरि करौंविनती कछू और हमैं नहिं चाहियेजू। यह प्रेम कि आँखैंलगीं सो लगीं पैकुलीनयो और निबाहियेजू ४३॥

क०। प्यारे हितकाज प्यारी प्यारी हितकाज प्यारे दुहूँनि शिंगारे तनु नीक चटपटसों। यमुनाके नीरतीर हँसि हँसि बातेंकरैं मन अटकायो कल कोकिलाके र[illegible] सों॥ एते रघुराई घन घटा घहराई आई बरषनलागी लाल्हीं बूँदनके ठटसों। जौलौं प्यारे प्यारी को उठायो चाहै पीतपट तौलौं प्यारी प्यारो ढाँपे लियो नील पटसों ४४॥

तथा। भैरोंस्वर गावे कोल्हू आपसों चलत मालकौं-सके अलापे होत पाहनद्रवारैंरी। श्रीराग्द सुनेते सूखे तरुहरे होत जलकी कनूकैं आवैं मेघकी मलारैंरी॥ चढ़िके हिंडोले जब गावत हिंडोलराग फिरकी सी डोलैं पाय मारुत के रारैंरी। दीपक उचारैं दिया हाथ सों न बारैं मन औरै करि डारैं ये कदम्बन की डारैंरी ४५॥

स०। लावलमैन सुगन्ध लखौ सब सौरभ को तन देत दसी है। अंजनअंजनहू बिन श्याम बड़ेबड़े नैनन रेखलसी है॥ ऐसीजरा रघुनाथलखे यहिआचरजे शशि मेरी फसी है। लाली नवेली कि ओठन में बिन पान कहांतेधौं आनि बसी है ४६॥

तथा। सबरैनि,जगी हरिकेसँग राधिका बासर माल

उतारति है। अतिआलसवन्त जँभाति तिया अँगराति भुजानि पसारति है॥ सरकी अँगिया जु हरेरँगकी मुल-तीफ़ महाछबि पारति है। मनुहै जो पुरैनिको पातन में उरझो चकवा तेहि टारति है ४७॥

क०। मदमयी कोयलमगनह्वै करतकूकैंजलमयी मही पग परते न मगमें। बिज्जुनाचे घन में बिरह हियबीच नाचे मीचु नाचे ब्रजमें मयूर नाचें नगमें॥ श्रीपति सुकबि कहैं सावन सुहावन में आवन पथिक लागे आनँद भो अंगमें। देह छायो मदन अछेह तम क्षिति छायो मेहछायो गगन सनेह छायो जगमें ४८॥

स०। लरिकाईके खेलकटे न बनाई अजों न मनोजके बानलगे। तरुणापन आयो नहीं सजनी तरुणीनके बैन सुहानलगे॥ हरिकोहू कहांके हैं कौनके हैं ये बखानकछू मुँहआनलगे। अबतो तिरछे चलिजान लगे दृगकान लगे ललचान लगे ४९॥

क०। मन्दमन्दचलिकै अनन्दनन्दनन्दपास अँगिया के बन्द बारबार तरकतहैं। पतियां रसाल बरबाल हँसि हँसि कहैं हीराहोतजात लाल पन्ना मरकतहैं॥ कहैंशिव कबि ऐसे तकिकै तमाशेतनि कौतुक सखीनके हिये सों सरकतहैं। जहां जहां मगमाहिं पगदेत तहां तहां रुचिर कुसुम्भ कैसे कुम्भ ढरकतहैं ५०॥

तथा। समयको न जानै सीख काहूकी न मानै शारि कठिनको ठानै सोकठिन भईजातिहै। पीछेपछितैहै घात ऐसीनाहिंपैहै टेक तेरी रहिजैहै कहा टेढ़ी भई जाति है॥

सङ्कम मनावै तोहिं हितकी सिखावै सीख जाबिन न भावै भौन ताहीसों रिसातिहै। मोसों अठिलाति बिन कामको हठाति प्यारी तूतो इतराति उत राति बीती जाति है ५१ ॥

स०। बड़ेक्षेमसों क्षेमकरी मड़रात उड़ात क्यों मण्डल दैघरके। ममसेवक बाहु बिलोचन त्यों तजिदाहिन बाम दोऊ फरके ॥ कहिये हितकै हित मेरीहितू करके कत कङ्कनहूं करके। दरकै कुचकेपट कंचुकी के तरके बँद आजु कहा तरके ५२ ॥

तथा। प्यारी सुआनि अचानक आलिन प्रीतमकी कहिदीनी अवाई। भूरिभरी पुलकावलि यों सब अङ्गन में सुषमा सरसाई ॥ बाल उताल सुबंश कहै नँदलाल को देखनको उठिधाई। भार नितम्बनको न गयो करि टूटनकी मन शङ्क न आई ५३ ॥

क०। करत कलोल कीर कोकिल कपोत केकी चन्द की बधाई बाजै जानै जनिघन धुनि। सुकबिसुमेरु मीन मृगज मराल मन मुदित मधुप न्योते कोकिला सकल सुनि ॥ केहरि कंदूरी कीक कदली कमल फूले सौतिन सजेहैं तनु चीर चारु चुनिचुनि। कहा पटतानि प्यारी पौढ़ीहै बिलोको आनि चारों ओर चौचँद मच्यो है तुम्हैं रूसे सुनि ५४ ॥

स०। तुम चालेकीबातैं चलावतिहौ सुनिकै अतिही तनु छीजतहै। क्षण नेकहू न्यारी जो होतिकहूं थलमीनन कीगति लीजतहै ॥ जबलौं सुलतान न आवै घरै तबलौं

तो बिदानहिं कीजतहै। वह प्रीतमकी अनुहारि सखी नँनदी मुखदेखिके जीजतहै ५५ ॥

तथा। बातें बनावती क्यों इतनी हमहूं सों छिपा नहिं आजरहा है। मोहनकी वनमाल को दाग देखाय रह्यो उरतेरे अहाहै ॥ तूउरपै करौ सौंहैं सुनेरे अरी सुनु सांचको आंचकहाहै। अङ्कलगी तौ कलङ्कलग्यो जो न अङ्कलगी तौ कलङ्क कहाहै ५६ ॥

तथा। भीतर ते उठि आवत देखि कबै वह बाल भुजा भरिलैहैं। शेखर कण्ठ लगाय कै पीछेते आनँदके अँसु-वानि अन्हैहैं ॥ कंतभले भले बोलके सांचे कह्यो तुमहीं हम वादिन ऐहैं। औधिगये यों प्रिया घरजाय कबै हम हाथ ओराहनो पैहैं ५७ ॥

तथा। रावत नैनन मैं हियमैं भरि दूरभये क्षणहोत सचेतहै। सौतिन की कहै कौनकथा तसवीरहूंसों सत-राति सहेतहै ॥ लाजभरी अनुराग भरी हरिचन्द सबै रस आपुही लेतहै। रूपसुधा इकलीही पियै पियहू को न आरसी देखन देतहै ५८ ॥

तथा। सोईसिया अरसायके सेजपै सोअपि लाल बिचारतही रहे। पोंछि रुमालनसों श्रमसीकर भौंरन को निरुवारतहीरहे ॥ त्योंछबि देखिबेको मुखते अलकैं हरि-चन्दजू टारतही रहे। हैकपरीलौं जकेसे खरे वृषभानु-कुमारि निहारतही रहे ५९ ॥

क०। बोल्यो करै नूपुर श्रवणके निकट सदा पद तल लाल मन मेरे विहर्यो करै। बाजीकरै बंशी धुनि

पूरिराम मुखमन मुसुकानि मंदमनहि हरयोकरै ॥ हरी-चन्द्र चलनि मुरलि बतरानि चित छाई रहै छबि सुग हगनभर्योकरै। प्राणहूंतेप्यारीरहैप्यारी तू सदाईतेरो पीरोपट सदा जियबीच फह्यो करै ६० ॥

स०। ब्रजमें अब कौन कला बसिये बिनु बातही चौगुनो चावकरैं। अपराध बिना हरिचन्दजू हाय च-बाइने घात कुदाव करैं ॥ पौनसों गौन करेंहीं लखी पवैं छापनछोर्डै हियावकरैं। जोसपनेहू मिलैं नँदलाल तौ सौतुकमें ये चवाव करैं ६१ ॥

तथा। बैठेसबै गुरुलोग जहां तहां आई वधूलखिं सालमई खरी। देन उराहनोलागीतवै लिखिको अति भोरी न जानत रीतरी ॥ ढीठ तिहारो बड़ो हरिचन्द न देखतमेरी सुरेती दशाकरी। आंचरदीनो सखी मुखमें कहि सारी फटी तो बनाइहै दूसरी ६२ ॥

तथा। प्राणपियारे तिहारेलिये सखि बैठे हैं देरसों मालतीके तर। मोरही तातें बनाय बनायमिलै न वृथा गहिकैकरसों कर ॥ तोहिं घरी छिन बीततहै हरिचन्द उतैजुग सौ पलछुभर। लोरी तो हांसी उतै नहिं धीरज नौघरीभद्रा घरील जरैघर ६३ ॥

तथा। क्योंइनकोमल गोलकपोलन देखिगुलाबको फूल लजायो। त्यों हरिचन्दजू पंकजकेदलसो सुकुमार सबैअँगभायो ॥ अमृतसे युग ओठलसे नवपल्लवसों कर क्योंहै सुहायो। पाहनसों मनहोत सबै अँगकोमल क्यों करतार बनायो ६४ ॥

तथा। तुम्हरे तुम्हरेसबकोऊकहैं तुम्हेंसोकहाप्यारे सुनात नहीं। बिरदावलि आपनी राखो मिलौ मोहिं शोचिबेकी कछू बातनहीं॥ हरिचन्दजू होनीहुती सो भई इनबातन सों कछु होतनहीं। अपनावते शोच बिचारि अबै जलपानकै पूछनि जातिनहीं ६५॥

तथा। केहिपापसों पापी न प्राणछ्लैं अटके कित कौन बिचार लयो। नहिंजानिपरै हरिचन्दकछू बिधिने हमसों हठकौनठयो॥ निशि आजहूकीगई हायबिहाय बिनापिय कैसे न जीवगयो। हतभागिनी आंखिनको नितते दुख देखिबेको फिर भोरभयो ६६॥

क०। हमतो तिहारे सबभांति सों कहावैं सदा हम सों दुराव कौन सोहै सो सुनाइदै। द्वारपै खड़े हैं बड़ी देरसों अड़ेहैं यहै आशाहै हमारीताहि नेकतो पुराइदै॥ हरिचन्द जोरिकर बिनती बखानै यही देखिमेरी ओर नेकमृदुमुसुकाइदै। एरी प्राणप्यारी बार बार बलिहारी नेक घूंघट उघारि मोहिं बदन दिखाइदै ६७॥

तथा। लाईकेलिमन्दिर तमाशाको बताइ छैल बाला शशिरूपके कलापैंकिये दावासी। धाइताहि गहन चहत हरिचन्दजूके घूमिरही घरमें चहूंघा करि कावासी॥ धोखादैकै अंकन भरत अकुलानो अतिचंचल चखनसों लखानी मृगछावासी। आहिकरि सिसकिसको-रितन मोहिंपियै करतेछटकिछूटीछलकिछलावासी ६८॥

स०। तूरँगीरंग पियाकेसखी कछूबातन तेरीलखाइ परीहै। यद्यपि हौंनित पासरहौं तऊ मेरीयहै मतिशोच

भरी है॥ जानी अहो हरिचन्द आवै यह प्रीति प्रतीति तिहारी खरी है। श्याम बसैं उरमें नित ताहिसों पीन हू कंचुकी होत हरी है ६९॥

क०। आज केलिमन्दिरसों निकसि नवेली ठाढ़ी सौंर चारोंओररहे गन्धलोभिवारके। नैनअलसाने घूमैं पटहू परेहैं भूमैं उरमें प्रकट चिह्न पिये कंठहारके॥ हरीचन्द सखिनसों केलिकी कहानी कहै रसमें मसूसी रही आलस निवारके। सांचेमें खरीसी परीसीसी उतरीसी खरी बाजूबन्दबांधै चाजूपकरिकैवारके ७०॥

तथा। साज्योसाजगांवसिलितीजकेहिंडोरनाको तानिकै वितान खासो फ़रश बिछायोरी। आवै मिलि गोपी तापैभीजि झुण्डझुण्डकाम छापसीलगावैंगावैंगीतमन भायोरी॥ मोहिंजानि पालेपरी देरीपै दयाके हरिचन्द अंकलैकैलालछिपिपहुँचायोरी। जानिगईताहुपैचवाइनेगाजबदेखे पांयबिनुपङ्कके कलङ्कमोहिं लायोरी ७१॥

तथा। गौनेके सुदिनगुन गौरि तेरसा तुरंते शुभघरी शोधिकैसँदेशोलिखिआयोहै। हालऐसे कालसो निहाल करुणाहैजाइ चाहै सुनिसुनिकै बतुरचैनपायोहै॥ कालिहही उधारेशीशफिरत सखीनमध्य भनतकवीन्द्र आजऔरैरंगछायोहै। आँचरको करिबो अचानकहीमेरी आली मैंनहींसिखायो तोहिं मैनही सिखायोहै ७२॥

स०। कौनको प्राणहरैं हमयों दृग काननलागिमतो चहैंबूझन। त्योंकलु आपसहीमें उरोज कसाकसी कैकै चहैंवढिजूझन॥ ऐसेदुराजदुहूंबथकेसबहीको लख्यो अब

चौचँदसूझन। लूटनलागी प्रभाकदि॰ वाद. कर। ऋवान
सों लागे अरूभन ७३॥

तथा।लखिठौढ़ीरसाल रसालनको फरपीरोपरोलर-
कोतोकहा। द्विजदेवजू आछेकटाक्षचितैत्तणजोन्हहियो
थरकोतो कहा॥ द्युतिदन्तनकी यकबारलखे उर दाड़िम
को दरको तो कहा। अँग अंगकी ऐसी प्रभा अवलोकि
अनंग फिरैं फरको तो कहा ७४॥

तथा। मंजुसलोनी औ बारीलता हरियारी कछूपति-
यानिलईहै। पूगसे वैफल श्रीफलकी सुषमालहि राज-
तरागमईहै॥ बातनतें अबहोतप्रफुल्लित पासचहूंआलि
औलईहै। हो बनमालीउतालीचलो तितबंजुलकुंजल
प्यारी नईहै ७५॥

तथा। यह काह भयो नहिं जानिपरै कुचपैकसिकंचु-
कियादरकै। भुवनेशजू त्योंहीं लचै करिहां सब भांतिन
घांघरियासरकै॥ कनखैयन ताकतहै तबहूं उन सौतिन
की अंखियां करकै। धरकैं छतियां छरकैं कच कुंचित दे-
खति है देहियां फरकै ७६॥

तथा। सुनरी सजनी करिहैं वे कहा अपनीसी सबैजु
पैकैरहैंगी। भुवनेशजू सांचीकहौं तुमसों बतियां छतियां
निज धैरहैंगी॥ मिलिहैं हम जाय अबै उनसों तबतो
अपनो मुख लैरहैंगी। अब बीसबिस्वे यही होनो अहै
करमींजि कपालन दैरहैंगी ७७॥

तथा। उनसोंकछुबातैंकरीजबते तबहींतेअहैबिषबोने
लगीं। नहिंजानिपरैइन्हैं लाभकहा फुसकातिरहैंकोनेकोने

लगीं॥ भुवनेश न मानतिहैं तनिको डर बातमें बात मिलोने लगीं। मुख खोने लगीं दुखरोने लगीं अब चावैं चहूं दिशि होने लगीं ७८॥

तथा। साजे अभूषण श्वेत सबै अँगअंगनमेंरसमैनको भीजत। छाइरही कछु यों मुखकी छविह्वै छविहीन छपाकरछीजत॥ त्यों भुवनेशजू औरोछटा कहिजाय सु क्यों मन मैनकोमींजत। दामिनीसी द्युतिदैरही है चलि क्यों घनश्याम न अंकमें लीजत ७९॥

तथा। अब का हमको समझावतिहौ कहिहौ जो कछू नहिं माखिहौं मैं। भुवनेशजू वैरिनि लाजभई तो सोऊ अब तो नहिं राखिहौं मैं॥ सब औगुण देहिं भुलाय अबै उनसों चितचायन भाखिहौं मैं। अपनेनित नैनचकोरन ते मुखचन्द सुधारस चाखिहौं मैं ८०॥

तथा। अवलोकत क्यों न अली अबधौं अँगियानि के बन्दयेतंगभये। भुवनेशजू त्योंही तिहारे नितम्ब उरोजनिसंग उतंग भये॥ सुनिकै बरबैन सुधासे सबै सुरसोकल कोकिलदंगभये। तन दीपति देखि भलीबिधिसों मन सौतिनहूंके पतंगभये ८१॥

तथा। सखिकौनदशाअपनीमैंभनों बनगौन अजानपने ते किये। मदमाते मलिन्दन बृन्दघने अरबिन्दन नैननि घेरिलियो॥ भुवनेश कदम्बन कुंजनमें भजी कोऊ उपाय न आयो हियो॥ तन चम्पकसों जो हुतो अलिरी अलिबृन्ददुराव बचायो जियो ८२॥

तथा। एकसमैमेंकलिन्दजाकूलपै ठाढ़ोहुतो कहुँकु न-

बिहारी। ताहीसमै मिलिग्वालिनिमें कहुँआइपरी उत बिहारी।
राधिकाप्यारी॥ देखतही हरिआनिगह्यो कर औचकही राधिकाप्यारी॥ होनचहो मनो बिज्जुछटा करि फन्द कछू घन अङ्कले न्यारी ८३॥

तथा। जातीजहांईजहांसखि मैं मगमाहीं मँजीठसी क्यों दरकोपरे। कंचुकी तो कसीजातिसी है पर घांघरी लंकले क्यों लरकी परे॥ ह्वैगये हैं पुखराजसे क्यों गरके मुकता छतियां धरकी रे। जानिपरै न हमैं भुवनेश सो क्यों यह रोमावली फरकीपरे ८४॥

क०। देखिपरैसुखबोनदेखिपरै हगसुख ऐसेअबिदित वेद मुकुतिजनावते। कोऊ जडसैन कोऊ तीरथ अटन करे घरसो न कहरे न हालको बतावते॥ भनत दिवाकर हमारे जान वहीसांच आप जाने पांचकहे प्रकट दिखावते। नीबीगुनछोरि कुच करसे सरोरि नारि सुरति के फल ततकाल नर पावते ८५॥

तथा। बेलपात कनक चढ़ाय पूजि मंत्रजपि ध्यान धरि निकट करत त्रिपुरारी के। बीते कछुदेर जो प्रसन्न जन जानिकर देत बरदान सुखदान ध्यानधारी के॥ भनत दिवाकर भुजंग गर गंगाशिर नायिकाके बेनीहार गंग अनुहारीके। वोतो मारजारे हग एतो उजियारे मृग खरे सरे पुजेते उरोज ओज प्यारी के ८६॥

तथा। भरत निशंक अंक पति परयंक पर लचकत लंक हचकत कुच दूनो है। भालते पसीना ह्वैके आयो मुखमण्डलमें नखासमत कैसोसो है चन्द्रपूनो है॥ दिवा

करकहै उहिआंहिके करत रव सुरतसमै में मानो भरत प्रसूनौहै। वचन विचित्र मित्र मनको उछाह हेत देति सिसकारी चाहहोत चवगूनौहै ८७॥

स०। जातिरही यमुना जल लेनको मारगमें हमसों बतराना। लाल निहारि सुमाल नवीन उरोजन खैंचि कहेवड़दाना॥ तादिनतेवगरौहै चवावने गांवकेलोगनि मारततानो। देखी न ऐसी जहान दिवाकर गोकुल के अस बौरेजनाना ८८॥

तथा। हमहीं का अकेली रही उनकेसँग जोपैहमैंदग तानतिहौ। भुवनेश हितूजेवनीयेअहैं इनकी गति नाहीं पिछानतिहौ॥ आलि कौनसी बात अहै तुम्हरी हमको हक नाहक सानतिहौ। तुमतौ रसचाख्यौ कहौ किनकौ वनी ऐसी कि मानौ न जानतिहौ ८९॥

तथा। जबहींइते आवतिहैं तबहीं हमको तुमआनि निहारतुहौ। भुवनेशजू जातीरहैकुलकानि सोई अबबैन उचारतुहौ॥ ब्रजमें तुम्हैं लोग कहा कहिहैं तुमतो लटी बात बिचारतुहौ। यहबात सयानपनेकी नहीं बदनामी को धागे जो धारतुहौ ९०॥

क०। हंस कहंसत्रंस सरनलोभायेभाये खञ्जनलुभाये पन्थ पथिकचलायेरी। अमलसलिलकोश कमलकुमुद छाये अलिमकरंद पाये भूमताभुमायेरी॥ कारमें न आये बिरमायेबैरसाल कोन सेतघनछाये स्वाति बुन्द वरसायेरी। तायै तन अतन गँवाये प्रान लेत लाज देत बिसराये अंगअंग अकुलायेरी ९१॥

तथा। आली केलिमन्दिर में ल्याई छलबल करि प्यारे पेखि पकरीउछरिपर्यंकते। भणत कवीन्द्र कैसे थिरहै थोरी बैस पारदकी रदकीचपलताई शंकते॥ नीबी करवारिरही भुकनबगारिरही छलकपसारिरही वदन मयंकते। लालभुजभरी बाल ऐसी तरफरीहाल जाल कैसी शफरी उछरिपरी अंकते ९२॥

तथा। मुखसो लगत मुखसोहै न करति रुख लाज कामसमता बपुषमें पगीरहै। रतिके बिलास उर अन्तर बसावै पै प्रकाशन करतिरंग प्रेमके खगीरहै॥ केलिकथाकन्थकहैं उतरु न देतिताको झूठेनैनमूंदे हौस सुनैकी लगीरहै। प्यारेकोजगोहै जानि ओढ़ैपट तानितानि लगीरहै उरजोंलों पलक लगीरहै ९३॥

तथा। अरसोहै नैनाकरिकरिसोहै मुसकात त्योंत्यों अकुलात ज्योंज्योंहोतहेलेप्रातरी। दोऊत्रैपरसपरपवित अधररस चूमिचूमि चटकीले मुखजलजातरी॥ भणत कवीन्द्रभरिभरिअङ्क ह्वै निशङ्क नेहभरेदोऊ फिर फिर बतरातरी। बिछुरनकाजरी दुहूंकेगात बीते दोऊ लपटि लपटि जात नेकु न अघातरी ९४॥

स०। मञ्जुलकुञ्जते आयेहो आजु बिलोकिलतानकी बेषबहारैं। भौंरनिकेभरेभारनिहार चहूंदिशिचारुसुगन्धपसारैं॥ भागभले तिनके सुकबीन्द्र जे रावरेकी रीति निहारैं। योंकहिकै तिय नैननिते तरराइचली अँसुवानकी धारैं ९५॥

तथा। गंगलसै मुकताहल माल कला शशिकी नख

रेखसोहाई। कंचुकीबन्द जटा झलकैं मिलिचन्दन लेप बिभूति रुहाई ॥ आनबधू अभिधानकेमनमें जो मुरि ऐंठतिठानिकुहाई। आपने तो कुचशम्भुकेशीशमें हाथ धराइ कराइदोहाई ९६॥

क०। ननँद रिसानीरहै सासु अरसानी रहै ऐंठीसी जेठानीरहै कासोंकहै बातरी। जरके अजारमिस पलका पर परीआनि बरै बिरहानल अखिलघाकेगातरी॥ अँसुवा छुटै न कुलकानिते दृगनश्वास परीजातपातरीमनोजउतपातरी। सोऊतै बिदेशबस्यो सोऊतौ लखी न बाम रैनि चारोयाम वाको रोवतै बिहातरी ९७॥

तथा। पौढ़ी पटताने अबहोत पछिताने कहा मानस बिथाने करि मानस दिखाईहै। भनत कवीन्द्र सखियान सों न भनै भेद भूलीखानपानै तन आनै छबिछाईहै॥ जालकी बिरहकी गिरहपरी याके हिये जानिकै इलाज खोलिबे में चतुराईहै। जानत मुरारि कैतो जानै वहनारि कैतो जानै वहनारि जौन रारि करिआईहै ९८॥

तथा। भृकुटी चढ़ी कमान चलत कटाक्षबान चमकनिचौकाकी चमंक खड्गधारहै। अंचल निशान फहरात कुच कुम्भन पै आगेको परतपगधीरताकोबारहै॥ भनत कवीन्द्र खूब सौतिन के मनसूबा मारेजात जहां ऐसे मारको अगारहै। नन्दकेकुमारकीसों राधे जैतवार यह समरको सार कैधौं तेरो अभिसारहै ९९॥

तथा। जादिनते चाहसुनी नाहके गवनवारी तबहीं ते सुधि खान पानकी बिसारीहै। भनत कवीन्द्र वै शिंगार

आभरण डारे सखिन सों बोलनि हँसनि डारी न्यारी है॥ कज्जलकलितवाके दृगनमें आंसू फिरैं पैरी मनो मीननि कलिन्दी धार कारीहै। कौनसो मरम कहै परम रु-जीलीबाल मौन तपसीलो खड़ीभौनमेंनिहारीहै १०० ॥

तथा। देतलाललालदेत मोतिनकी मालदेत उपमा बिशालदेत कण्ठलपटातहै। चलनकहत प्यारीचलन न देतप्यारी चलन अनोखे अङ्गअङ्गनिरखातहै॥ नैन कंज नासा कीर ओठबिम्ब भौंहैं धनु भाल इन्दुखण्डको उमेठे अधिकातहै। वाकी सुन्दराई मनु बांध्योहै लला को आली हेरि हेरि मुख फेरिफेरि रहिजातहै १०१ ॥

तथा। फूलीबनबेली अलिकुलकरैकेली एककोकिला अकेली वै रसालनसों रागीहैं। दक्षिणतेकरैं गौन सुरभित बहैपौन मौनीतजेमौन देहजिनकीअरागी।हैं॥ तुम्हें बिन देखे बिलखत बाल हाल ऐसे भनत कबीन्द्र करी तुमहीं दुजागी हैं। रातिवाकी तुम बिनपलौना पलकलागी रावरे अनोखेलाल आंखैं कितलागी हैं १०२॥

तथा। सांझको समैहे रमनीय रसमै है तमकह्योंसमैहे सूझि परत न गातहै। घन घहरात तरुपात थहरात हहरानी कारीबात सुनी परत न बातहै॥ भनत कबीन्द्र लखिबेको लाल अकुलात अतनतरंगी त्यों त्यों चौगुनो लखातहै। उठि चलु आली बनमालीके मिलनहेतु आज कैसी और नहीं मिलबेकी घातहै १०३ ॥

तथा। अबलापन जोबन बीरबली दोउजङ्गजुरे मिलियुद्धको ठानो। शोरपरो सब देशनमें न्रपजोबनजोर

ध्वजाफहराने ॥ कौन कि जीतिको हारपरै सो मनो गजभुण्डन सिंहसमानो । हाय हजारन घाय कटाक्ष मनो आवलापन हारि परानो १०४ ॥

तथा। नैननवाये रहौसजनी गृहकाहुकेजाहु न मेरी गोसायनि । मन्दचलौ गतिचालछपायकै शीलसनेह सिखो ठकुरायनि ॥ कीरति सों कहिहौं सुधिकै तोहिं नन्दकुमारहि ब्याहउछायनि । सुनिकै सकुची तिरछी करिभौंह ललीदृग खञ्जनसे सुखदायनि १०५ ॥

तथा। गौनेकीरातिकी सेजसँवारि सखीन बोलाइ लईदुलही । सविलासकरी निजुप्रीतमसों सिखदेइ चलोरसरीति यही ॥ तब लालन आई लई उरलाइ गईअकुलाइ उसास वही । चौंकिपरी परयङ्कते बेग हहाकरि सुन्दरि भूमि गही १०६ ॥

तथा। सोवतहैलड़िलीदुलही पतिसङ्गबियाकुलही मुखमोरी । करसे कुच झांपिकै चापि चुरीन बजै पग पायल कम्पित गोरी ॥ सेजपरी झझकै उचकै कटि किङ्किणि शोर परो चहुँओरी । हाहाकरैं उत जागत है नँनदी बहियां न गहौ पियमोरी १०७ ॥

तथा। केलिबिलास अघाने नहीं निशिबासर बाल बोलाइलईजू । आई यसूकै अटापरबाल सो धामकी देहरी ठाढ़ी भईजू ॥ प्यारे कह्यो ढिग बैठिय सुन्दरि बोलत बैनसों लाजभईजू । जानतहौ शिवनाथ अबै अँखियानमें कामकी छांहछईजू १०८ ॥

तथा। काहू सखी सिखयो नवला कहँ मानकी रीति

सयानसों काची। बोली न बाल बोलावत लाल भरी गति मान बिलोकत नाची॥ प्रातपयान बन्यो परदेश को बात बनाइ कह्यो यह जांची। यों हरुये हँसिबोलि दियो अकुलाइकह्यो पिव झूठ कि सांची १०९॥

तथा। आयेपिया अनते बसिकै लखिभालमें बन्दन दाग दगेहैं। बोली रिसाय उठी झहराय सों रावरे कौनके रंगरँगे हैं॥ काहेको सौंह हजारन खात लगे न लगात छपात पगेहैं। भावै जितै तितैही रहिये बरजोर न काहूके नैन लगेहैं ११०॥

तथा। गोकुलको बसिवो न भलो अनदेखेही लोग कलङ्क लगावत। मैं न सुन्यो हरिकौनस्वरूप कहैं सब तेरे लिये इतआवत॥ जोयहसांचकरी सबही मिलि तौ शिवनाथ सबै बनिआवत। री वह अम्बुजसे मुखकी मधुरी मुसुकानि सो काहि न भावत १११॥

तथा। भोरहि कालिका पूजनको घरकी घरहाइनि पेल पठैहौं। तू मतिजैयो सोहागिनसांवरी सांवरेरङ्ग में रङ्ग मिलैहौं॥ कानमें आनितहीं समुझाइबिनोदन छाइहियोहुलसैहौं। फूलिगई मनहीं मन नागरि नागर नन्दसुहाग रिझैहौं ११२॥

क०। आजु दीपमालिका को पूजनगईहैं सब रैनि अँधियारी हौं अकेली कहा कीजिये। प्रेत औ पिशाचनकी नारी डोलैं घर घर धर धर करेजो होत ताते भयभीजिये॥ श्यामहि सुनाइ कै कहत गोपी बार बार दीपहुबुझाये मैन ताने शर छीजिये। जौलौं घरहाई

आवै मन्दिरलौं हाहा तौलौं आउरी परोसिन वलाय तेरी लीजिये ११३॥

स०। चन्द्रसों आनन खंजनके दृग वैठिवनाइ शृंगार करै। आइगये मनमोहन ताछिन देखन को चित चाह भरै॥ आरसी में करि श्यामकी मूरति औ निज मूरति लाइ गरै। शिवनाथ मनो रविजा जलमें सुमनो रति-नार विहार करै ११४॥

क०। नेक चढ़िगई हौं अटालौं सुन मेरीवीर पायँनमें लालनकी कली झलकात है। चंचरीक लपटि गयेरी सब अंगनमें हांकिहांकि हाथनकी अंगुरी पिरात है॥ निरखि उरोजन सरोज सकुचान लगे दृगन विलोकि मृग खंजन लजातहै। और हौं चकोरनकी कहा कहौं शिवनाथ चन्द्रहूं केधोखे धोखे मुख मड़रात है ११५॥

तथा। नितउठि रूठिवेकी कौनरीति शिवनाथ कौ-नेधौं सिखायो एरी कहां को सयानरी। आये मनभावन मनावन पलटि गये तासों मुख मोरिरही कैसो तेरोज्ञान री॥ वाहि रटलागी राधे राधे तू निठुर भई कबलौं रहैगो तेरो कठिन गुमानरी। उठि चलु प्यारे नन्द नन्दपै मयङ्क मुखी मानतजि करि अली यौवनको दानरी ११६॥

स०। उवटै शुचिअङ्गसुमज्जनजावक केशसँवारिसो अंजनदीन्हों। मुखरागतँवोल अभूषण भूषि सुआरसीलै अवलोकनकीन्हों॥ वालहँसी चितचातुरीचारु सुगन्ध उरोज लगाइकैलीन्हों। मन्दचलै प्रियप्रेम कि मूरति वालकटाच्छन घायलकीन्हों ११७॥

क०। गतिमतिनैननकी सैननकी चञ्चलाई कहाँलौं गनाऊंगुणहिहिसिहसिहनकी। शिवनाथ चातुरी चितौनि चारुचित्तचोरि चित्रिनी चपत चुप चौकनिचलनिकी॥ काल्हिहीते कामकी कथामें मनदेनलागी चरचा न चालौ दिनचारिकचलनकी। ऐसीअलबेली प्यारीयौवनकीमत-वाली कान्हचलिदेखोहाली सुता एक ग्वालकी ११८॥

तथा। दूरिहीतेदुरिदुरिदेखतदगनसोरि नेरेनेकचलौ मैंदिखाऊं घनश्यामरी। आंखिन बिलोके बीरकाहूकीम-ज़तभूख पानीकीकहानी क्यों सिरात प्यासतापरी॥ वन बनमाली आली गोकुलकी गैलनिमें छैलनछबीलोछवि वारीकोरमाकरी। एरीभटूबावरीअयानी तैं न जानी यह लैलैतेरो बीनमें बजावैं नित नामरी ११९॥

स०। पीयविदेशको नाम न लीजिये कैसेकै यामिनि नींदपरैगी। क्योंतनुप्राणरहैं बिननाथ हियाविरहानल ज्योतिजरैगी॥ ह्वैहैतोसोई जोलिखाटकेअङ्कमें कोटिकरौ नहिं रेखटरैगी। मारिमरोरि बसन्तकी मारुत कोयल कूकन घावकरैगी १२०॥

तथा। नामधरौ जोचहौसो कहौ कछु सूझो हमैंसुतौ कैचुकीहैं। लखिलजातैं मैन जिन्हैं तिनसों बलदेवसनेहहिबैचुकीहैं॥ अबकामनहींसमुझावनको मनभावनको मनदैचुकीहैं। अपनेमग आपचलैं हमतो निजजीवनको फल लैचुकीहैं १२१॥

तथा। आखिरको अफ़सोसहीहाथरहैगो अबैहठधा-रिरजाकी। क्यों न हिये हँसि लावतहै अरीबीतिही जाती

घड़ीहै मजाकी ॥ नेकहीहेरनिमें बलदेव कहाकहिये दृग फेरि सजाकी। प्रेमकोबान लगो न हिये तबलौं करिलेयहि भांतिकजाकी १२२ ॥

क०। कामवती नायिका नवेली अलबेली खेली नैहर ते पीतमके भौन गौन आईरी। रंगमहल भीतर पलंगपर- संगहोत अंग अंगसों अनंग ढंग सरसाईरी ॥ लङ्कलच- काइ परयङ्क मचकाइ भरिअङ्कहचकाइ लिपिटाइ छप- टाईरी। पकरि पियाको चाहचौगुनी बढ़ाइबेको रतिमें करति आहि आहि अरे माईरी १२३ ॥

तथा। बास पियपास जाको अतिही हुलास ताको भोगन रसाल रामरस सरसायोहै। चकचौंध देखि देखि चकित चकोरचाहै शशिकेसमान सर शीतल सोहायोहै ॥ वह बहत समीर सिरीदहत हमारोअंग रहत न धीर यों अनंग उमगायोहै। छलसों धरयोनाम अगहन गहनसम बिरहीगहन प्राण अगहन आयोहै १२४ ॥

तथा। बेली रसरेली अलबेली नवलानि संग मुदित मनोजतरु तरुन बिहारेहैं। मंजुमंजु सुमनरसाल मंजरी- ननपै पुंजपुंज गुंजत मलिन्द मतवारेहैं ॥ मीनगतिछीन दीन पियबिन अंगअंग अधिकअधीनहीन बिकल निहारे हैं ॥ राखत न चेत बिरहीननके चित्त चैत चैतचन्दचां- दनी अचेत करिडारेहैं १२५ ॥

तथा। औरनको सुखदभयो हमको दुखद तूहै अद- भुतगति तेरीकहीं न परतिहै। औरनको पोषै तोषै बास मकरन्दनसों रोषै हमहींको अरे मोहींसो अरतिहै ॥ प्रफु-

लित रसाल तापै होतजात कासों कहौं कांपै अंगअंग मेरे बिकल करतिहै। मानत न साखि याते भयो बैसाख सब कोऊ नाम तेरो बेसाखही धरतिहै १२६॥

तथा। बिकल सकल जलथलनके जीवहोत जेठकी जलाकन में पुहुमी तपतिहै। सरिता सरोवर रसाल जल बिन हीन सूखतरु पशुहू पखेरुन विपतिहै॥ ग्रीषम तपनि दूजे बिरहतपनि बाढ़ी तापै यह लपटि झपटि लपटतिहै। सीरेउपचारनते जारत अनंग अंग पिय बिन मान याको कैसे कै रहतिहै १२७॥

स०। चूनरीचारु चुईसी परै चटकीली हरी अँगिया ललचावै। यौबनभार नईसीपरै वनई खिरकीमों नई छबिछावै॥ ऊंचे अटापर चन्द्रमुखी कविशम्भुकहैं झुकि पीक चलावै। दौबिधुबीच मनो बिधिसों बिधना रँगरेज कुसुम्भ चुआवै १२८॥

क०। लरकी लरकपर भौंहकी फरकपर नैनकी ढरक पर भरिभरि ढारिये। हरिकेश अमल कपोल बिहँसनि पर छाती उकसनिपर बेशक निहारिये॥ गहिरीही गति पर गहिरीही नाभिपर हौंनबरजतप्यारे नेक निरवारिये। एक प्राणप्यारीजूकी कटिलचकीली पर ढीलीढीली नज़रि सँभारे लाल डारिये १२९॥

तथा। आजमणिमन्दिर मनोज मदचाखे दोऊ लगनिलगालगीके मगन मजेजपर। द्विजदेव ताहूपै दुहूंको अलिआननकी दूती दूतिदैरही तमीपतिके तेजपर॥ नेसुक सँभारि छलबलन छराको बन्द पौढ़िरहे पाणिधरि

कमलमलेज़पर। छूटे रति समर छपाको सुखलूटि दोऊ नींदेरति मदन उनींदे परे सेजपर १३० ॥

क०। आयो एक प्रथमहिं परभृत भावकरि ताको गुण तोहिं यशुदाहूं सों सुनाइहौं। दूजे चढ़िधायो क्रूर कुटिल अक्रूरबनि ताकोयश युगहू न गावत सिराइहौं॥ अब यह आयो ऊधो सूवोसो दिखाति आलि कालिही तो याहूको कुसंग फलपाइहौं। होय जोसो होय कोटिसमुझावै कोय मथुरा न आली अबकाहू न पत्याइहौं १३१॥

तथा। लागिगये नैन चैन आवत न रैनदिन मेरी जान ऐन मैन मैनकी छुरीहती। कहैं नन्दरामजोम यौवन जलूसभेरे ज़ेवर जड़ाऊ नखशिखलौं जड़ीहती॥ फूलनके हार तामें हारहरेहीरनके ताहूमें बहारदार चौलड़ी पड़ीहती। शिरकी सुरंगसारी छिरकी सुगन्धन सों खिरकी के बीच बाल हिरकी खड़ीहती १३२॥

तथा। पैन्हे पीतसारी दरदामन किनारी लगी मोतियों सँवारी मांग खड़ी बड़ेबारकी। कंचुकी कसत शोभा चौगुनी लसततन यौवन के बीच माल हीरनके हारकी॥ भृकुटी मरोरै कछु नासिका सिकोरै मन्द मन्द मुसुक्यायकै मरोरकरै मारकी। एहो प्राणप्यारी क्यहि कारण तू ठाढ़ी बाजूबन्द बांधे बाजू बाजू पकरे किवांरकी १३३॥

स०। उठिप्रातहि धेनुलै नन्दलला नित मेरी गलीन में आइयोना। आइयो तो कढ़िजाइयो वैसहि बांसुरी नेक वजाइयोना॥ वजाइयो तौ न जगाइयो मैनहि नैनन

सैन चलाइयोना । मुखलाय सुधारस प्याइ हिय म लगाइ हमैं बिलगाइयोना १३४ ॥

तथा । कुचमूल में तूलकी लाय किनारी हमैं नित प्यारी दिखाइयोना । दिखाइयो तौ न छिपाइयो फेरि लटैं मुखपै लटकाइयोना ॥ लटकाइयो तौ मटकाय के भौंह कटाक्ष के नैन चलाइयोना । मुसक्याय मया सरसाय दया दरशाय हमैं तरसाइयोना १३५ ॥

तथा । फल अमृतसे उपजे उरमें बरदान भये सम ईशनके । मुखजोर बढ़ेहैं कठोरमहा जितवैइस सिद्धि दिगीशनके ॥ सदा कंचुकी बीच कसेईरहैं खुलेखूनकरैं दशबीशनके । लखिऊंचे उरोजनपै अँचला मचला मन होत मुनीशनके १३६ ॥

तथा । कन्दुकसे करिकुम्भसे कुम्भसे कुन्दकलीसम टीकटिये हैं । श्रीफलदाड़िमसे दरसे परसे से निहालनिहालभये हैं ॥ ऊंचे उजागर नागरिके कुच प्यारी पियाके समीप ठयेहैं । हैंतो नये सुनु ये सजनी पर जौलौं नये नहिं तौलौं नयेहैं १३७ ॥

तथा । तुवखंजन नैन चकोर बने तियनाहक अंजन दैमरि हैं । जकरे गजमस्त जँजीरनतें तिनको मदप्याय कहा करिहैं ॥ मतवारेन को कोऊ देतकमान लगायके तीर हिये मरिहैं । यह आसों तो ऐसे कटाक्षकरैं परलौं तो सखी परलै करिहैं १३८ ॥

तथा । बारीसी बैस फिरै सबही दिन घेरु करै बिरहा धरिहैं । शशिमंडल देखि ससै ससकै तब अम्बुजकी छबि

ताहरि हैं॥ जब यौवनरूप प्रकाशभयो तब साधनकी मनसा टरिहैं। यह आसौं तो ऐसी कटाक्षकरैं परुलौं तो सखी परलै करिहैं १३९॥

क०। आतुर न हूजे नेकचातुर चपललाल जंघन बिशाल परजंघन जरेरहौ। नूपुर मैं जेहरी मैं नेकहूं न लागे पांव मेरे जोकपोलपै कपोलको करेरहौ॥ कंचुकी न छोरो अंग नेकहू न मोरो कहैनन्दराम करको उरोजपै करे रहौ। जौलौं घरजागती है नँनदजेठानीमेरी तौलौं कही मानो चुपचापही परेरहौ १४०॥

स०। घूंघुट ओट कहाकरु सुन्दरि घूंघुट से कछु तोरि न लैहैं। जो तोहिं रूप दियो करतार ने दूरिखरी हम दूरि चितै हैं॥ जानिके गर्ब्ब कहा कर सुन्दरि कालिहपरोंदिन येऊ न रैहैं। या जिय जानि भजो भगवान कि तोरे छुये बैकुण्ठ न जैहैं १४१॥

क०। लटपटी पाग शिर साजत उनींदेअंग द्विजदेव ज्यों त्योंके सँभारत सबै बदन। खुलिखुलि जाते पट वायु के झकोर भुजा डुलि हलिजाती अतिआतुरी सो छिन छिन॥ ह्वैके असवार मनोरथहीके रथपर द्विजदेव होत अतिआनँद मगन मन। सूने भये तनकछु सुनेई सुमन लखि सूनीसी दिशानलख्यो सूनेई दृगनबन १४२॥

तथा। पूर अँसुवानको रह्यो जो पूरि आंखिन में चाहत बह्योपै बढ़ि बाहिरो बहै नहीं। कहै पदमाकर सुधोखेहूं तमालतरु चाहत गह्योपै गहवर ह्वै गहै नहीं॥ कांपि कदली लौं या अलीको अवलम्ब कहूं चाहत लह्यो

पै लोकलाजनि लहै नहीं। कन्त न मिलेको दुख दारुण अनन्तपै चाहत कह्यो पै कछू काहूसों कहैनहीं १४३॥

स०। झांकतहै का झरोखा लगी लग लागिबेको यहांझेल नहीं फिर। त्यों पदमाकर तीखे कटाक्षन की सरको सरसेल नहीं फिर॥ नैननहींकी घला घलकै घन घावनको कलूतेल नहीं फिर। प्रीति पयोनिधि में घुसिकै हँसिकै कढ़िबो हँसी खेल नहीं फिर १४४॥

क०। सोने कीसी बेली अतिसुन्दर नवेली बाल ठाढ़ीही अकेली अलबेली द्वारमहियां। मतिराम आंखिन सुधाकी बरषासी भई गईतब दीठ वाके मुखचन्द पहियां॥ नेक नेरे जायकरि बातन लगायकरि कछू मन पायकरि आइगही बहियां। सैननि में चरचिलई गानन थकितभई नैननमें चाहकरै बैनन में नहियां १४५॥

तथा। जानै भेद कबिताहि गौरव गहेरहत परमप्रसन्न मुख हास छबि छ्वै रह्यो। द्विजबलदेव कहैं कंचन लतासी चारु चन्द ज्यों उदित भरिरूप रस च्वै रह्यो॥ आलस कछुक अँगियार झेलिसी करत बलित वसीरन बीजबर व्वैरह्यो। आईहै तरुणताई याहिते उँचोहैं कुच सुबुधि सुगन्ध को प्रकाश अङ्ग ह्वैरह्यो १४६॥

तथा। मृदुमखतूल तूल कमरु गुलाबफूल मखमल सेजपै सँभारे पायँ धरती। कच कुच भारनसों दरचल हारो बेग धारत में कज्जल महावरको डरती॥ भनै रघुनाथ हे स्वरूप सुख शोभाधाम निजमृदुता सों रति रम्भाको निदरती। अतिसुकुमारी प्राणप्यारी रतिरंग

समय कैसे प्राणप्यारे को निशंक अंकभरती १४७॥

तथा। सोरह कलाको चन्द पूरण मुखारबिन्द सोरह शृंगार किये सोरह बरस की। आभरन बारह कनक बानी बारह की बारहो चरण चूमे चोप कंजरस की॥ आठो दन्त चौकनसों आठो अङ्ग हीराहार आठहूबरङ्गना सो बिधिना सरसकी। चार खग चार मृग चार फल कीसी छबि चारभुज आरत निकाई है दरसकी १४८॥

तथा। लहलही लहरैं लुनाई की उदित अंग उचके कुचन कैसी कंचुकी है गचकी। मन्द पग धरति मरू करि गयंद गति चन्द्रमुखी चांदनी चकित चाह सचकी॥ कैसे घनश्याम वह बाम बनधाम आवै घाम के लगेते कामलता जाति पचकी। अतिसुकुमार सिसकत भार हारन के बारन के भार कई बार लंक लचकी १४९॥

तथा। चरण धरै न भूमि बिहरै जहांहीं तहां फूले फूल फूलन बिछाई परयङ्क है। भार के डरन सुकुमार चारु अङ्गनमें अङ्ग ना लगावै राज केसर को पङ्क है॥ कवि मतिराम लखि बालापन बीच मुख आतप मलीन होत बदन मयङ्क है। कैसे सुकुमारि वह बाहिर बिजन आवै बिजन बयारि लागे लचकत लङ्क है १५०॥

तथा। छूटत लपट लपटत फिरि छूटि छूटि थकत न दोऊ बिहरत बड़ी बेर के। लंक लचकत अंक भरत निशंक परयंक पर राखे मुकतान कर ढेर के॥ तासमैं कहत शम्भु गोरी के गरे ते टूट छूट चले सुरत करत फेर फेर के। कुच बीच अटको बिराजत है

हार मानो धसी गंगधार फेर शिखर सुमेरके १५१॥

तथा। बाम अलबेली श्याम संग केलिमन्दिर में ठानी बिपरीत रीत सुखद इकन्त पाय। छूटे बार टूटे हार बिलुलित भो शृँगार तनकी न है सँभार छाकीरति रंग छाय॥ रसिकबिहारी प्राणप्यारी छबि-प्यारी लगै चन्दनकी बेंदी मिली गोरे मुख ना लखाय। मैन मदमत्त भुज भरत अनंग जंग ज्यों ज्यों मद लाली चढ़ै त्यों त्यों उघरत जाय १५२॥

तथा। आयो परदेश ते पियारो पढ़ि कामसन्त्र कैधौं यन्त्र तन्त्रनिको पैन्हि आयो छल्लाहै। कैधौं काहू देवता दियो है बरदान दैया खाई अकसीर कैधौं पारद इकल्लाहै॥ ग्वाल कबि करै कूदि कूदि केलि कौतूहल हल हल हूलै पल पल में उछल्लाहै। द्वैद्वै घड़ी दोयबेर चौ चौ घड़ी चार बेर फेर कियो नौ घड़ी को जनरैली हल्ला है १५३॥

तथा। साजित पलंगपै उमंग भरी अंग अंग रंगरंग बसन सँवार पैन्हे सुचपै। मोतिनके छड़े पड़े कानन में सानदार हीरनके हार बेनाबन्दनी सरुचपै॥ ग्वालकबि कहै तहां राजत रसिकलाल ख्यालमें बिशालमन आयो अति उच्चपै। नैनलगे प्यारी ओर ओठलगे प्याले कोर जीय लग्यो रतिजोर हाथलग्यो कुचपै १५४॥

तथा। आये प्राणप्यारे पाये रहसि रसीली बाम दौरि महिकीनी जोम जंगकी झपटसी। रसिकबिहारी मुखचूंबि गलबांहडारी पिय हिय लागी लोह चुम्बक

चपटसी ॥ परसि कपोलप्यारी करिकरि प्यारहेरै कसि भुजभरै सहि मैनके दपटसी । ज्यों ज्यों सियराति गुलाबनकी छुहीसी छाती त्यों त्यों लपटाति तिय पावक लपटसी १५५ ॥

तथा । कुन्दन की छरी आबनूस की छरीसी लगी सोनजुही मिली कैधौं कुवलय हारसों । कैधौं बन्धु कलिका कलंकसों कलित भई कैधौं रति ललित बलित भई मारसों ॥ काली दास कादम्बिनी दामिनी मिली है कैधौं अनल की ज्वाल मिलिगई धूमधार सों । केलि समय कामिनी कन्हैया सों लपटि गई कैधौं लपटानी है जुन्हैया अंधकार सों १५६ ॥

तथा । आली केलिमन्दिर में ल्याई छलबल करि प्यारे पेखि पकरी उछरि परयंकते । भनत कबिन्द्र कैसे थीर रहै थोरी बैस पारदकी रदकै चपलताई शंकते ॥ नीबी करधारि रही झनक बगारिरही झनक पसारिरही बदन मयंकते । लाल भुज भरी बाल ऐसी तरफरी हाल जालकी सी सफरी उछरि परी अंकते १५७ ॥

तथा । ल्याई केलिभवन भोराइ भोरी भामिनी को फूल गन्धकै परसकीनी पौनरुखते । कलित बसन कुशातन कुच कमनीय लीनी गहि पीतम प्रसून सेज सुखते ॥ कवि पजनेश भुज भरत हहाके हिय सीहकै समेट सांस नीबी दाबि दुखते । आहकरि उछरी सचोट पन्नगीसी ऐंठ उमठ अरीरी मैं मरीरी कढ़ी मुखते १५८ ॥

तथा । ल्याई केलि मन्दिर तमाशा को बताय छल बाला

शशिसूरके कलापै किये दावासी। धाइताहि गहन चहत हरिचन्द जूके घूमि रही घरमें चहूंघा करि कावासी॥ धोखादैकै अंकमें भरत अकुलानी अतिचंचल चपलसी लखानी मृगछावासी। आहिकरि सिसकि सकोरि तन मोरि पिय करते झटकि छूटी छलकि छलावासी १५९॥

तथा। साटन के सुरुख बिछौना बिछे सेजपर रंगमेज मेज मनमौज की निसाकरैं। अतर बिनाही तिय तन में अतर भासे सतर उरोजन पै गोठनकी सांकरैं॥ ग्वाल कबि प्यारे लाल नीबीको बढ़ायो कर सरकि चली सी आगे आवन चहाकरैं। आंगुरी तेनाकरैं जुभौंहते मना करैं सुनैनन मैं हां करैं पै मुखते न हां करैं १६०॥

तथा। अंचलके ऐंचचल करति दृगंचलको चंचलाते चंचल चलै न भजि द्वारेको। कहै पदमाकर परैसी चौंक चुम्बन में छलन छपामें कुच कुम्भन किनारे को॥ छातीके छुये पै परै रातीसी रिसाय गलबाहीं के किये पै करै ना हिये उचारेको। हींकरति शीतल तमाशे तुङ्गतीकरति सीक्-रति रतिमें बशीकरति प्यारेको १६१॥

तथा। अधखुली कंचुकी उरोजअध आधे खुले अधखु-ले बेष नखरेखनके झलकैं। कहै पदमाकर नवीन अध नीबीखुली अधखुले छहरि छराके छोर छलकैं॥ भोर जगी प्यारी अधऊरध इतैकी ओर भाषी खीझी झिरिफि उचा-रि अधपलकैं। आंखें अधखुली खुली खिरकीहू है खुली अधखुले आनन पै अधखुली अलकैं १६२॥

तथा। बिकसत जात जाको बारिज बदन जैस बिबिध

बिनोदवारे भावनि भरतिहै। निरखि नखक्षत उरोजन पै लागे परिहासके सकोचनि चलति पछरति है॥ कहै हनुमान मनभावनि सुलोचनीके जागेकी खुमारी अँखियान बिहरति है। प्यारीकी उनींदी वा अटारी उतरनि आज चढ़िरही चित ना उतारी उतरति है १६३॥

तथा। करि रतिरंग पतिसंग ते अलोनी प्रात उठि अँगरात ओपै उलही अपारहैं। भनत कबिन्द्र छूटे सकल शृंगार है न सौत मुखतार है निहार टूटे हारहैं॥ फलरही कलित कपोलन पै पीकलीकैं बलित नखक्षत उरोजन अगारहैं। मुररही बेसर सिकुर रही सारी अङ्ग फुररही आलस बिथुरि रहे बारहैं १६४॥

तथा। अन्धकार धूमधार समरसछूटेबार बिथुरे बिथुरि रतिअन्त सेजपर में। कालीदास श्यामसंग सोई रस बश बाम काम कीसी नीकी बाम कामकेलि घरमें॥ नवलाकी नाभी केहुनी दै कान्ह कुचगहि सोय जोये रतन अँगूठी सोहै करमें। मेरेजान कारोनाग बामीते निकारि फन राख्यो मणिमण्डित सुमेरु के शिखर में १६५॥

तथा। चहचही चुभकै चुभी है चौक चुम्बन की लहलही लांबीलटैं लपटी सुलंकपर। कहै पदमाकर मजानि मरगजी मंजु मसकी सुआंगी है उरोजन के अंगपर॥ सोई सरसार यों सुगन्धन समोई सेज शीतल सुलाने कोने बदन मयंकपर। किन्नरी नरी है कै परी है छबिदार परी टूटिसी परी है कै परी है परयंकपर १६६॥

तथा। गोकुल में गोपिन गोबिन्द संगखेली फाग

रात भर प्रात समय ऐसीछबि छलकैं। देहैंभरी आलस कपोल रस रोरी भरे नींद्भरे नैनन कछूक छपैं छलकैं॥ लाली भरे अधर बहाली भरे मुखवर कबि पद्माकर बिलोके कौन ललकैं। भागभरे लाल औ सोहाग भरे सब अङ्ग पीकभरी पलकैं अबीर भरी अलकैं १६७॥

तथा। छुवन न देतिछाती छबिसों छबीली नारि कौतुक अनेक करै नींदमें समोई है। कहै कबि दूलह त्यों परसे न पावै पीय झुकि छहराय पटतानि देहगोई है॥ वैसी कलेश सहै पै ना रतिरंग चहै तियके चरित्र मित्र जानत न कोई है। पहिले अनूढ़ा भई ब्याहे पर ऊढ़ा भई गौने नवोढ़ा ह्वैकै पीके साथ सोई है १६८॥

तथा। आरस सों आरत सँभारत न शीशपट गजब गुज़ारति गरीबन के धार पर। कहै पद्माकर सुगन्ध सरसावै शुचि बिथुरि बिराजैं बार हीरन के हार पर॥ छाजत छबीले क्षिति छहरि छराकी छोर भोर उठि आई केलिमन्दिर के द्वार पर। एक पग भीतर सु एक देह-रीपै धरे एक करकंज एक कर है किंवारपर १६९॥

स०। आली कहा यह ब्याधि भई छतियां उमँगी मनौं आवतहैं। निशि वासर नेक सोहात कछू नहिं नैन नितम्ब बढ़ावत हैं॥ कौन इलाज करों सजनी तोहिं पूछत लाज लजावत हैं। जिय शंक बढ़ी कटि खीनहि देखि सखी तोहिं औषध भावत हैं १७०॥

तथा। देखे बिना वृषभानुदुलारी के भावे हरी को घरीकी घरौना। कामचढ़े कबिराज कछू ब्रजराज समाज

में आयइसौना ॥ राधे बिलोकि सखीन यों श्यामसों भौंह-नमें कही ऐसी करौना। प्यारे गह्यो बनमाल गरे तर प्यारीगह्यो कर कानतरौना १७१ ॥

तथा। अबका समुझावत को समुझे बदनामी को बीजतो बोचुकीरी। तबतो इतनो न बिचार कियो यहि जालपरे कहौ कैचुकीरी ॥ कबिठाकुर यों रसरीति रँगी सब भांति पतिब्रत खोचुकीरी। अरी नेकी बदी जो बदी हुती भालमें होनी हुती सोतो हैचुकीरी १७२ ॥

तथा। रूप अनूप दई दियो तोहिं तू मान किये न सयान कहावै। और सुनो यह रूप जवाहिर भाग्य बड़े बिरले कोउ पावै ॥ होत न सूमके जात कोऊ जो उदार सुनै सबही उठिधावै। दीजिये ताहि देखाय कृपाकरि जो चलि दूरते देखन आवै १७३ ॥

क०। छातीलागी उचन सकोचनि सकान लागी खान लागी पानकी उनानि रसबतियां। कटि लागी घटनि गटनि चढ़ि जान लागी बैन लागी रटनि जगन लागी रतियां॥ चारुलागी चलन सुधारन अलकला-गी जेबलागी जगन पगन लागी गतियां। नैनलागी फेरनि निहोरनि सखिन लागी मनलागी चोरनि पढ़न लागी पतियां १७४ ॥

तथा। आज आली माथे ते सुबेंदी गिरै बार बार मुखपर मोतिनकी लरी लरकतिहै। धरतहीं पगकील चूरेकी निकरिजाति जब तब गांठिजूरेहूकी भरकतिहै ॥ जानि न परत प्रहलाद परदेशपिउ शशिउ उगोजन सों

आंगीदरकतिहै। तनी तरकति कस्तूरी चरकति अंग सारीसरकति आंखिआई फरकतिहै १७५॥

स०। जाकेलगे सोइजानेव्यथा परपीरमें कोउ उप-हास करैना। सागर जो चुभिजातहै चित्त तो कोटि उपाय करै पै टरैना॥ नेकसी कंकरी जाके परै सोइ पीरके मारे पै धीर धरैना। कैसे परै कल एरी भटू जब आंखिमें आंखिपरै निकरैना १७६॥

तथा। जाकेलिये कुलकानतजी न सिखी सखियान में सीखकी बाता। लोग चवाइनै लाजगमाय रही यक सांवरे के रँगराता॥ सोसब नैकमें नोखे बिसार प्रताप चले तजि नेहकोनाता। मेरे तो चित्तकी चित्तही जाने पर मित्रके चित्तकी जानै विधाता १७७॥

तथा। काहे लिखी पतियां बहुभांतिन नेहकी रीति हमैं दरशाई। काहे कही तुमलीजो निबाह जु प्रीतिकरी हम ढोल बजाई॥ काहे कही हम छोड़िहैं नाहिं तुम्हैं जबलौं तनु प्राणसमाई। काहभई वह बातअरी जगमोहन काहे दयो बिसराई १७८॥

तथा। धरिये किमि धीरकरैं सुधि वादिन जादिन संगम सार करैं। मिलि बैठे यकन्त लियो मुखचूमि गरे लपिटायके शोकहरै॥ जगमोहन पीय सुधारसको भुजमें भुजको उरझाय परै। जिन बीचन हारपरे न हते तिन बीचनमें जपहार परै १७९॥

तथा। गुणगाहकसों बिनती इतनी हकनाहकनाहिं ठगावनो है। यहप्रेमबज़ारकी चांदनीचौकमें नैनदलाल

अकावनो है ॥ गुणठाकुर रूप ये जौहरहै परबीनन को परखावनो है। अब देखु बिचारि सँभारिके माल जमापर दाम लगावनो है १८० ॥

क० । त्यों त्यों कै पियारीको पियाके परयङ्कपर ल्वाइ गईं सखियां सोकेलिके महरमें । आइके निहारी पिय चांदनीसी सेजपर सोवत मराल बाल मानौ मानसरमें ॥ कहैं नंदराम नेक अङ्क में लगावतही चौंकिपरी शावकी कुरङ्ग कैसी थरमें । सूतसी सुरतमें छुरत चपलासी बाम कंज कैसो पानी रानी आवत न करमें १८१ ॥

तथा । धारै लागी अम्बर सुधारै लागी आभरण झारै लागीकुंतल निहारै लागी चालको। मोरैलागी अंगन भ-शेरैलागी भौंहनको तोरैलागी तिनुका बिलोकि भलेभालको॥ कहैंनंदरामकलकंचुकी शिंगारैलागी टारैलागीघूंघट निहारै लागी सालको । मद मुसुकानलागी चांदनीसो-हानलागी हेरि हरषानलागी आनन गोपालको १८२॥

तथा। काहेमेरे ओठ आप आपही मिठानलागे काहेते समीर लागे रोमहरषातहै । काहेअंग अंगिरात अँगिया समात नाहीं क्षण क्षण काहे कटि छीन परी जात है ॥ नन्दराम काहेते नितम्बन में भारभयो काहे गति पांयन की मन्दसी लखाति है । कहाकरों माई निशिनींद नेक नाईं यह देखिकै भोड़ाई मेरो जियरा डेरातहै १८३ ॥

तथा । पौढ़ै लगी सखियन संग रंगभौन जाय अ-ङ्गना अङ्ङ्गकैसी सोवत जगाऊसी । कहैं नंदराम काम कथा बारैलागी कान बातैं करैलागी प्रियप्रेम में पगाऊ

सी। जब तब ठाढ़ी होनलागी पानदान लैकै पीतम के पास कछू दूरिसे भगाऊसी। सौहैं करै लागी अलसौहैं करैलागी भाल भौंहैं करै लागी नन्दलाल सों लगाऊसी १८४॥

तथा। दुतिया के चन्द्र को बिलोकनको चन्द्रमुखी आपुही अकेली गई कोठेपर मोद छाई। कहैं नन्दराम घनश्याम चित्त चोपि चले जीवनकीमूरि आजु गोशे में पकरिपाई॥ बाल बिललाती दूजे मारगही जानी हेरि हिय हरषानी हँसि हालकरी चातुराई। सीढ़ी के डगर जौलौं लालगये ऊंचे पर जीना के डगर तौलौं नीचे को उतरि आई १८५॥

स०। आनँद सों मनमोहन मोहनी केलिकरैं रतिकी रतिवारौ। प्यारी न खोलत नयन तऊ नँदराम कहौ अँचरा उलटारौ॥ नोलि सकोच सों ओट कियो मुख नेक तौ लाज लला उरधारो। राखरह्यो कर कंचुकीपै पिय पाँइ परों अँगिया न उघारो १८६॥

क०। गाढ़े अंक अंक में भरत परयंक पर दम्पति निशंक शंक नेक ना धरत हैं। फारिडारैं कंचुकी उतारि डारैं अम्बर को नन्दराम रति रति मार निदरति हैं॥ चूमत अधर अधरात पछरात जात जात ना पियास पिय घातन करति हैं। टूटि टूटि हारनते छूटि छूटि बारन ते फूटि फूटि मुकता हजारन परति हैं १८७॥

तथा। काहूसोंकहैआली अन्तरकी बातहम दुखभरे घोस कौजों सासुरे गुजाराकरैं। सासु हग फेरेरहैं नँनद

नेरेरेहैं टेरेहैं तापर परोसिन पँवारा करैं ॥ नन्दराम नीकेहू निहारे ते कलंक लगै देवर जिठानी नित ईजति उताराकरैं। पावस व्यतीतभये नैहरको जातिरहे बीस-बिस्वे मैया सबै शीश दैदै माराकरैं १८८ ॥

तथा। मोहींको पठौती नित सुरभी दुहावनको कोई मानो राजकाज इनहीं को दैगयो। नन्दजी को बछा सोहिं मारिबेको दौरो देखि भागी मैं कटीले बन जान्यो प्राणलैगयो ॥ फाटिगयो अंग अंग भंग आँगियाहू भई टूटिगयो हार बार छूटि क्षीर नैगयो। आजु ते न जैहौं कोई केतो कहै नन्दराम देखु मेरेतनुको हवाल कौन ह्वैगयो १८९ ॥

स०। जैसी कही हँसि मोसों भटूतुम तैसी कही वे तुम्हैं न चहाहै। आइहुती यमुनाजलको लगो कंटक पांयन होशरहाहै ॥ आइगयो दुखिया नन्दराम बिलोकत हाल हमार लहा है। बैठिकै कांट निकारै लगो सखि यामें कहौ कि कलंक कहाहै १९० ॥

क०। आली एक स्वपनो बिलोकती हौं रोज रोज तोहूसों कहत मेरोजीव सकुचतहै। गाउँके चवाइनकी मण्डली में धाम धाम रोरी कलंकभरी चौचँद मचतहै ॥ कहैं नन्दराम याको वेगिही उपायकरो नाहीं तो हमारो व्रजछूटिबो रचतहै। बौवा मेरो स्वपनो न झूठहोत माई हाय ताते मोहिं खान पान कछु ना पचतहै १९१ ॥

तथा। कौने या कपोलन में पीकपंक पारिदई टारि दई कौने यह बेंदी भले भालकी। फारिदई सुन्दर दुकूल

कौने कूलन में झारिदिये फूल कौने बनी झोलझालकी॥ कहैं नन्दराम कौने मोतीमाल तोरिदई बोरिदई चूनर त्यों घांघरी बिहालकी। गात गात कौने नखघातदै आली सन आली बतलात यह रचना गोपालकी १९२॥

तथा। येहो बटूबाटके चलैया नेक ठाढ़े होउ हमरे बारज़की अरज़ ओधारोजू। बैयकपढ़ेहो की नजूमको निसारतहौ कबिताकरत कि समुद्रिक सचारौजू॥ औष-ध बतैये सासु नयन कानते बिहीन पियपरदेश ताको आगम बिचारौजू। नींद ना परत निशिअंग ऑगिरात अति नन्दराम मेरी नेक रेखा तौ निहारौजू १९३॥

स०। बैठीहती गुरुमण्डलीमें मनते मनमोहनको न बिसारत। त्यों नँदरामजू आइगये बनते तहँ मोरपखा शिरधारत॥ लाजते पीठिदै बैठी बहू पतिमातु कि आंखि ते आंखि न टारत। सासुकी नयनकी पूतरी में निज पीतमको प्रतिबिम्ब निहारत १९४॥

क०। आपही सुनार घरजाइके जराऊदार जेवर जलूसके बनावने बतावती। भीतरबुलाय दरजीको मर-जीकोबास बेशकलकंचुकी के तंगनतनावती॥ कहैंनन्द-राम त्यों अगार छोड़िके शिंगार छावती बहार हार हार हेरिआवती। यारइहजारके दुलारे ते न बोधकरें कुलको अटन ताते कुलटा कहावती १९५॥

स०। आंजेरहैंहग अंजनसों तनुमांजेरहैं घिसिधूरि कपूरके। त्यों नँदरामजू बेंदीतरे करि कारी लकीर के ऊंचे सिंदूरकै॥ छोड़िदई कुलकानि भटू निशि चाप

उतान करै जगिदूरकै। श्वानहु जो खटकावै कहूं तिय आवै केवांरके तीर ज़रूरकै १९६॥

क०। फाटिगयो हियरा हमारो ऐसे बैनसुनि जाइ हैं बिदेश ताहि लाखलाइ लाखेजाउ। पौढ़ि परयङ्क पै उठाइ मोहिं पीतपट मेरे अधरानको पियूष नेक चाखे जाउ॥ नन्दराम जातहौ वसन्त कन्त आवत है मानिहौं न अवधिको अधारधाम भाषेजाउ। रावरे बियोगमें बिहाल ह्वैहौं नन्दलाल प्राणराखिबेको मणिमाल लाल राखेजाउ १९७॥

तथा। आयेहैं बिदेशते बिहारीवने आनिकसे बैठिगये अंगनअनंग छबिझलकी। दौरिआई देखनको कुटुम्बनारिनारिसब झांकि झांकि हेरत हठीलो त्यों महलकी॥ कहै नन्दराम कुचकंचुकी करेरेपरे नैनन चटापटी निहारिबे बिकलकी। ओढ़नी गिरन्त बारिभीतर उतारिधरी ओढ़िकै निकसिआई सारी मखमलकी १९८॥

तथा। लायहौंमनाइ मैं ज़रूर नँदनन्दनको आपने सुचित्त परयङ्कपै परीरहौ। एकह्वैघरी मैं हद्चारिछै घरी के बीच आवै ना प्रतीत हिये ताकत घरीरहौ॥ कहै नन्दराम प्यारी तेरे मुखचन्द्रपर रीझे बनवारी दोनौं एकहि शरीरहौ। पांयलागतीहौ ताते देति मैं अशीश तुम्हें भाग औ सोहाग अनुरागसों भरीरहौ १९९॥

तथा। घरघर घूमि घूमि हमको लजावतहौ आवत बतावत न जानौं कछु जानहीं। लोककी न लाज ना अकाज परलोकहुको मानत कुचालि आली कहांलौं बखा-

नहीं॥ एककी हजार कहिथाकी नन्दराम कहा कहै मेरी कही नेक उरमें न आनहीं। बन्दकरूं कोठरी में लङ्गर लबारको लातनको देव नहीं बातनसों मानहीं २०० ॥

तथा। लागिगई लैनचैन आवत न रैनदिन मेरीजान ऐन मैन मैनकी छड़ीहती। कहैं नन्दराम जोम जोबन जलूसभरी जेवरजड़ाऊ नखशिखलौं जड़ीहती॥ फूलन केहारनमें हारहरे हीरनके ताहूमें बहारदार चौलरी परी हती। शिरकीसुरंगसारी छिरकी सुगन्धनसों खिरकी के बीच बाल हिरकी खड़ीहती २०१॥

तथा। मन्दमन्दपरीतू गयन्दनकी छन्दनसों नन्द-राम धाम धाम झूमतिफिरति है। बोलिबोलि आलिन के संगमगडोलिडोलि खोलिखोलिअंग मुखचूमत फिरति है॥ मानिहै न मेरी कही जानी मैं तिहारी बात मेरे कहे तेरीकछु मति ना फिरति है। परिजैहौ जार केरे जार मैं बजार कहूं बाटपरी बाटबाट घूमति फिरतिहै २०२॥

तथा। काहूकह्यो आयेघनश्याम घरघायलसी दौरि गई मुदित अटारीके अटानपै। झांकि के झरोखे ते दु-चन्दद्युतिवारिबाम देखी भीर गोपनकी नन्दके मकानपै॥ नन्दराम पलटी उताहिल अनोखीनारि खिरकी समीप गई मिलिबेकसानपै। ताला बिन बालाकरि आलाखिर-कीके पट पीछे को बिलोकैगई प्राननके प्रानपै २०३॥

स०। वोऊभले तुमको तुमहूं उनको बहुभांतिनसों सुखदैबो। त्योंनँदरामजू बेर कुबेर भलो न भटू परभौनको जैबो॥ लाई जो आजु मनाइतौ लाजतै बांहगहे फिरका

पछितैवो। मोहिंगवांरन ह्वै सबहीं नित ऐसे गवांरन को समुझैवो २०४॥

क०। एकमैं तमाशा देखिआई आजुकुंजनमें लीजैना सहेली संग एरी चन्द्रभागासी। नागरिनबेली अलबेली वृषभानुजूकी चलिये अकेली बनबेलीमैन बागासी॥ कहैं नन्दराम योहीं मोहनै मिलाइजाइ दम्पति बिहंगपारिबे को लसलागासी। राधिका कन्हाई दोऊ कंचन के टूक जैसे ताघरी मैं तामैं तहां ह्वैगई सोहागासी २०५॥

तथा। टूटी गुंजमाल अरु छूटीपागपेचन सों अधर दलीतौ आजुदन्तन दलीगई। छातीमैं छबीलेकी हमारे कुच कुम्भनकी कोरनसों पङ्कपरिमल की मलीगई॥वैतो अतुराने अलसाने श्रमसाने अति नन्दराम देखोमति मेरीहू छलीगई। पूछिहैं पियारी काबात हैं बनवारी यह चूक भईभारी संगसारी जो चलीगई २०६॥

स०। पीतम आगमको सुनिबालके अङ्गन में जुसना-दिकसे परैं। त्यों नँदरामजू हासबिलासन चांदनीचन्द सबै धिकसे परैं॥ आननपै अँखियां हुलसैं मनोबारिज बारिज में बिहँसे परैं। तङ्गह्वै तङ्गतनीनके तोरि दोऊ कुच कंचुकीते निकसे परैं २०७॥

क०। परिकै अपारयों सकोचन सरोवरमें कहूं यहि-पार उहिपारही तिराकरैं। कहैं नन्दराम भरी भीतिन के भौंरनमें भूलिभूलि भ्रम झखराजन भिराकरैं॥ घूंघट तौखोलु बलिबोलतौ बिलोलनैनी बोलके नबोल कान मरिये गिराकरैं। आज ब्रजराज को निहारि लेरी

नीके नैन लाज के जहाज पै बहीबही फिराकरैं २०८॥

तथा। आनँदके ऐनहौ सुचैनके अनूपघर रूपअनु-रूप रतिभूप भनिये नहीं। कहैं नन्दराम त्यों पपीहनके प्राणपति प्राणद पुरैनिके प्रपंच ठनिये नहीं॥ जादिनते नन्दलाल कीन्हो परदेश गौन तादिनते रावरे स्वभाव जनिये नहीं। चंचल कृपाणलै कतल विरहीन करौ ज-लद कहाइकै जल्लाद बनिये नहीं २०९॥

त०। दम्पति राजिरहे परयङ्क सुगन्धन की जहाँछै रही धूमैं। यौवन के मदमाते दोऊ नँदरामझुकैं उझकैं झुकिझूमैं॥ मोहनको मनमोहनी में मनमोहनी को मन मोहनहूमें। पीकभरी पलकैं अलकैं लखिलाल हिये ल-लकैं मुखचूमैं २१०॥

तथा। नाहकही समुझावती हैं मनमेरो तौ मेरीकही नहिं मानै। कोईकहै कुलकानिकरौ अरु वेदऋचान को कोई बखानै॥ जो नँदराम निहारती मोहनै तौ फिरना उपदेशती ज्ञानै। कोऊ कितीकौ बकैं तौ कहा सखिपीर जरे की जरै सोइजानै २११॥

तथा। कामहुते कमनीय महा सखि जादिनते वह रूप निहारो। तादिनते मन मानतना नँदराम बहैं दृग-नीर पनारो॥ ब्योंतकछू बनिआवै नहीं बलकैसे दिखैये करेज किनारो। कासों बिथा कि कथा कहिये मनतौ ह-मरो कहिबे को हमारो २१२॥

तथा। चितमेंबसी सांवरी सूरति वा अब और कछू पहिंचानतना। करिथाकी सबै उपचारन को परिपंच



अक्रूरजी का श्री कृष्ण चन्द्र जी को रथमें सवार करा के मथुरापुरी में लेजा-
ना तथा गोपियों को श्री कृष्ण चन्द्र जी की ओर देख२ के शोक करना

प्रपंच प्रमानतना ॥ नँदरासजू लाजके अंकुशको मन मेरो मतङ्ग्ज मानतना । हमकासौं बिथा कहिये मनकी कोउ पीर पराई को जानतना २१३ ॥

क० । द्वारेउठिजात घूमिदेहरी पै बैठिजात नैनअकुलातपर आयें परसैं नहीं । घरमें रह्यो न जात बाहेरबह्यो न जात अंकुर बिथाके हियेबीच सुरझै नहीं ॥ कहैंनन्दरास ऐसे हालमें बिहालभई कीजैकहाराम कोटिभांति सुरझै नहीं । चारिमुखवारो चहैं चारिलख देखेदुख येदई बिचारि चारिआँखें सुरझैं नहीं २१४ ॥

विरह विषयके कबित्त व सवैया २ ॥

क० । कानन समीर सेवैं भृकुटी अपाङ्ग अङ्ग आसन अजिनमृग अंजन अनाधाके । अरुण बिभागीकोर बिशद बिभूतिअङ्ग त्यागेनींद बिषयनिमेष बिघबाधाके ॥ कृष्णसिंह कामकला बिबिध कटाक्षध्यान धारणासमाधिमनमथ सिद्धि साधाके । प्रेमके प्रयोगी सुखसम्पति सँयोगी अति श्यामके बियोगीभये योगीनैनराधाके १ ॥

तथा । इतहरिफेरि पीठि उतकरि टेढ़ीडीठि लरकीसो पंचशरबैठ्यो बांधि बरकस । छिनछिन छीनभई बिथा नितनितनई दुखसांझ नईनई कौनधरैधरकस ॥ गंगापतिइहै उरखटत अँदेश एक पठयो सँदेशहू न ऐसे हरि करकस । इतनेपै घाउकरि लोन बुरकावतहौ हमको बिभूति ऊधोकुबिजाको जरकस २ ॥

तथा । बिरह बिहारीके बिकल बिलखात बाल बौरी

देखो तसबीरनम्बर १ ॥

सीलगति दुखअतिशय मलानकी । चण्डीदत्त आहिकै धरैहै पग इत उत घूमिकै गिरीहै ज्योंधरीहै देह आन की ॥ सांसना भरत पै शिथिलसी दिखाईदेत होनी ना मिटाय मिटै विधि बलवानकी । अतर लपेटी कालिह कुंजनमें भेंटी आजु धूरिमें धुरेटीलेटीबेटीबृषभानकी३॥

तथा । बोलिगयो काग बड़ेभोर आजु आंगनमें अंगनि उमँगिअनुराग सरसतिहै । वाहन बहालीबढ़े बाजूबन्द टूटिजात छूटिजातनरा शिर सारी सरकति है ॥ नीवीनिबिकाय अधिकाय सुखढाकन त्यों आतुरअनङ्ग के उरोज थरकतिहै । आनन अनन्द की ललाईआनि छाई चाही आवै आज साईं आंखिबाईं फरकतिहै ४ ॥

तथा । भोरहीचलत परदेश प्राणप्यारे सुनि मेरी दुखधाइआइ गगनघन छायेहैं । बूंदऊ न छूटै लालचलबेको ऊठै त्योंत्योंमेरोप्राणछूटै अबक्यों न भरिलाये हैं ॥ कहै धनसिंह महाबारिदसे देखियत वारितनुदेतती क्यों बारिधि कहायेहैं । संकटसहाये काम एकऊ न आये हाइ गरजन आये मेरी गरज न आयेहैं ५ ॥

तथा । नायकनवल नीको नेहते सुआये गेह ताहि तकिनेह कियो मोंमति उतावरी । हाहाकै नरायन निहोरिकरजोरिहारे तऊमों कठोर हियेदरद न आवरी ॥ हाय अबसोतेगयो हितूजो हमारो वह सोचनि धरतिनैन आंसू बहि आवरी । कौनसुनै कासों कहौं अबनाहमारोकोऊ मेरी भटू मोहिंघनश्यामहिं मिलावरी ६ ॥

तथा । सोई मेरी बीर जोई लावै बलवीरताहि देहौं

दोऊवीर मेरो बिरह बँटाइले। भंजन छपाकीपीर छपैना छपायेपीर छपाकर छपैतौ छपाकर छपाइले॥ मदन लगोहै धाय धायसों कहौरी धाय येरी मेरीधाय नेक मोहूं तनचाइले। देह मेरी थरथराइ देहरी चढ़ो न जाइ देहरी तनक हाथ देहरी नँघाइले ७॥

तथा। आज महादीननको सूखिगो दयाको सिन्धु आजुही गरीबनको सवगाथ लूटिगो। आजु द्विजराजनको सकल अकाजभयो आजु महाधीरजको धीरजहु छूटिगो॥ मल्लकहैं आजु सब मंगन अनाथ भये आजुही अनाथनको करम सो फूटिगो। भूप भगवन्त सुरलोक को गोपाल भयो आजु कवितान को कलपतरु टूटिगो ८॥

तथा। कालिही सहेलिन में जातिहुती यमुना को इतही ते कान्ह कछुतान अनुराग्यो है। सुनिकै श्रवण लखि नैनन सरूप वाको चपल चितौनि मानों मैनशर लाग्यो है॥ भावत न भीर कोऊ जाइनहीं तीरकछु सुधिना शरीरकेहूं कियो मंत्र जाग्यो है। भनैकवि रामदीन मन में विचारि देखौ भूत वाहि लाग्यो याहि नन्द पूत लाग्यो है ९॥

तथा। जबते गोपाल मधुवन को सिधारेआली मधुवन भयो मधुदावन विषमसों। सैनकहै सारिका शिखण्डीखँजरीट शुक मिलिकै कलेश कीनों कालिन्दी कदम सों। यामिनी वरण यह यामिनी में याम याम बधिक को युगती जनावै टेरि तमसों। देह करै करज करेजो लियो चाहतिहैं कागभई कोयल कगायोकरै हमसों १०॥

स०। ब्रजवासी वियोगिनि के घरमैं जग छांड़िकै क्यों जनमाई हमैं। मिलिबो बड़ीदूर रह्यो हरिचन्द दई दुखनाम धराई हमैं॥ जगके सगरे सुखसों ठगिकै सहिबेको यहीहै जिवाई हमैं। केहिबैर सोहाय दईबिधिना दुख देखिबेही को बनाई हमैं ११॥

तथा। कुबिजा जगके कहा बाहर है नँदलालने जाउर हाथधर्‍यो। मथुरा कहा भूमिकी भूमि नहीं जहँजाय के प्यारे निवास कर्‍यो॥ हरिचन्द न काहू को दोष कछू मिलिहै सोइ भागसे जो उलर्‍यो। सब को जहां भोग मिल्यो तहां हाय वियोग हमारेही बांटेपर्‍यो १२॥

क०। तब तो बखानी निज शीरता गमानी कैकै प्रेम के निबाह भार गरब गरूरेहौ। जानतों पियाकै कह्यो प्रथम पयान हरिचन्द अबबैठे कित दुरिदुरि दूरे हौ॥ हाय प्राणनाथबिनु भोगत अनेक बिथा खोई सुख आशा लागि अबलैं मजूरेहौ। आजोंलन तजिकै न जाओ लजबाओ मोहिं हाहामेरे प्राणनिरलज्ज तुम पूरेहौ १३॥

स०। जानतहौं नहीं ऐसी सखी इन मोहन जैसी करी हमसों दई। होतन आपने पीय पराये क्यों कह बोलनिसांची अरीभई॥ हाहा कहा हरिचन्द करौं बिपरीत सबैबिधिने हम सों ठई। मोहन है निरमोही महा भये नेह बढ़ाइकै हाय दगादई १४॥

तथा। जानिकै मोहन के निरमोहहिं नाहक बैर बिसाहिबेरपरी। त्यों हरिचन्द बिगारिकै लोक सों बेदकी लीकमेलैं निदरेपरी॥ आपुनीही करनी को मिल्यो

फलतासों सबै सहतेही सरेपरी। यामें न और को दोष कछू सखिचूक हमारी हमारे गरेपरी १५॥

तथा। नेहलगाय लुभायलई पहिले ब्रजकी सबही सुकुमारियां। बेणु बजाय बुलाय रमाय हँसाय खिलाय करी मनुहारियां॥ सो हरिचन्द जुदाह्वै बसे बधिकै छल सों ब्रजबाल बिचारियां। वाहजु प्रेमनिबाह्यो भलो बलिहारियां लालन वे बलिहारियां १६॥

क०। घटाघहरात है पौन हहरात है बुन्दझहरात है गातहै कांपिनी। कोकिला कूकते हूकहिय होतहै राम चरितकहेकेनसों आपनी॥पीयबिन योगिनीसीबनी भौनमें मौनसी बिरह जप जापिनी। फूलसब शूलभे कली कांटाभई शतिरकासिनि भई सेजभई सांपिनी १७॥

तथा। नैनलाल कुसुम पलाश से रहे हैं फूल माल गरे बनमाल झालरिसों छाईहै। भँवरगुँजारहरिनामको उचारतिभि कोकिला सों कुहकि वियोग रागगाई है॥ हरीचन्द तजि पतझार घरबारसबै बौरी बनिदौरीचारु पौनऐसी धाईहै। तेरे बिछुरे ते प्राणकन्तके हिमन्त अन्त तेरी प्रेमयोगिनी वसन्त बनिआई है १८॥

तथा। पीरोतन पर्यो फूलो सरसों सरससोई मन मुरझानोपतझारमानोलाईहै। सीरीश्वासत्रिबिधसमीर सी बहति सदा अँखियां बरसिमधुझारेसी लगाई है॥ हरीचन्द फूलमन मौन के ससूसनसों ताहीसों रसाल वाल बदिकै बौराईहै। तेरे बिछुरते प्राणकन्तके हिमन्तअन्त तेरी प्रेमयोगिनी वसन्त बनिआईहै १९॥

स० । जियसूधी चितौन की साधैरही सदा बातन में अनखाय रहे । हँसिकै हरिचन्द न बोले कबौं मनदूरहीसों ललचायरहे ॥ नहिं नेकु दया उरआवत क्यों करिकैकहा ऐसे सुभायरहे । सुखकौनसो प्यारे दियो पहिले जेहिके बदले यों सताय रहे २० ॥

तथा । जानत कौनहै प्रेमबिथा केहिसों चरचा या वियोगकी कीजिये । को कही मानै कहासमझै कोऊ क्यों बिनबातकी रारहि लीजिये ॥ कूरचवाइन में पड़िकै हरिचन्दजू क्यों इन बातन छीजिये । पूछत मौन क्यों बैठिरही सब प्यारे कहा इन्हैं उत्तर दीजिये २१ ॥

तथा । सब आशतो छूटी पिया मिलवेकी न जानै मनोरथ कौनसजै । हरिचन्दजू दुःख अनेकसहैं पै अड़े हैं टरैंना कहूंको भजें ॥ अबसों निरशंकह्वै वैठिरहैं सो निरादरहू सों कछूनलजैं । नहिं जानीपरै कछुया तन को केहि मोहते पापी न प्राण तजैं २२ ॥

तथा । मोहनसों जबै नैनलगे तबतो मिलिकै समुझावन धाई । प्रीतिकि रीति औ नीति कही मिलिबेकि अनेकनबातसुनाई ॥ वेऊदगादैजुदाह्वैगई हरिचन्दजु एकहु काम न आई । हायमैं कौन उपाय करों सखिया अपनी ह्वैगई जु पराई २३ ॥

तथा । कितको दुरिगो वह प्यार सबै क्यों रुखाई नई यह साजत हौ । हरिचन्द भयेहो कहाके कहा अनबोलिबे ते नाहिं छाजतहौ ॥ नितको मिलनो तो किनारे रह्यो मुख देखतही दुरिभाजतहौ । पहिले अप-

नाय बढ़ाय कै नेहनरूठिवे में अब लाजत हौ २४॥

तथा। पहिलेमुसुकाइ लजाइकछू क्योंचितैमुरिमोतन छामकियो। पुनिनैनलगाइबढ़ाइकैप्रीति निबाहनको क्यों कलामकियो॥ हरिचन्दकहाके कहा है गये कपटानसों क्यों यहकामकियो। मनसाहिंजो छोड़नहीं की हती अपनाइके क्यों बदनाम कियो २५॥

तथा। हाय दशा यहकासों कहौं कोउनाहीं सुनै जो फेरहूं निहोरन। कोऊ बचावनहारो नहीं हरिचन्दजूयों तोहितूहैं करोरन॥ सोसुधिकै गिरिधारनकी अवधाइ कै दूरिकरो इनचोरन। प्यारे तिहारे निवासकीठौरको बोरतहैं अँसुवानरजोरन २६॥

तथा। हितकी हमसों सब बात कहौ सुखमूलसबै बतरावतीहौ। पैपिया हरिचन्दसों नैनलगे केहिहेतुथै बातैं बनावतीहौ॥ यहां कौनजो मानै तिहारो कह्यो हमैं ज्ञातन क्यों बहलावतीहौ। सजनी मन पास नहीं हमरे तुम कौनको का समझावतीहौ २७॥

तथा। जबसों हम नेहकियो उनसों तबसों तुमबातैं सुनावतीहौ। हम औरनके वशमें हैं परे हरिचन्द कहा समझावतीहौ॥ कोउ आपुन भूलिहै बूझतो तुम क्यों इतनो बतरावतीहौ। इन नैननको सखी दोषसबै हमैं झूठहि दोष लगावतीहौ २८॥

तथा। जिनके हित त्यागिकै लोककी लाजको संगही संगमें फेरोकियो। हरिचन्दजू त्यों मग आवत जातमें साथ घरी घरी घेरो कियो॥ जिनके हितमें बदनाम भई

तिन नेकु कह्यो नहिं मेरो कियो । हमैं व्याकुल छोड़िकै हाय सखी कोउ औरके जाइ बसेरो कियो २९ ॥

तथा । धाइके आगे मिलीं पहिले तुमकौनसों पूछिकै मोहिंसों भाखो । त्योंतुमने सबलाजतजी केहिके कहे येतो कियो अभिलाखो ॥ काज बिगारि सबै अपनो हरिचन्दजू धीरज क्यों नहिं राखो । क्यों अवरोइकै प्राण तजो अपने किये को फल क्यों नहिं चाखो ३० ॥

तथा । पहिले बिनजाने पिछाने बिना मिली धाइकै आगे विचारे बिना । अपुनेसों जुदा ह्वैगई तुरतैं निज लाभ औ हानि सँभारे बिना ॥ हरिचन्दजू दोषसबै इन को जोकियो सबपूछे हमारे बिना । बरिआई लखो इनकी उलटी अबरोवहिं आपु निहारे बिना ३१ ॥

क० । इनदुखियान को न चैन सपनेहूं मिल्यो तासों सदा ब्याकुल बिकल अकुलायँगी । प्यारे हरिचन्दजू की बीती जानि औधिप्राण चाहत चलेपै येतो सङ्ग ना समायँगी ॥ देख्यो एकबारहू न नैनभरि तोहिं याते जौन जौन लोकजैहैं तहां पछतायँगी । बिना प्राणप्यारे भयेदरश तुम्हारे हाय मरेहूंपै आंखैं येखुलीही रहिजायँगी ३२ ॥

स० । मैं बृषभानुपुरा की निवासिनि मेरी रहै व्रजबीथिन भावरी । एकसँदेशो कहों तुमसों पैसुनों जोकरो कछू ताको उपावरी ॥ जो हरिचन्दजू कुंजनमें मिलिजाहिं करीलखिकै तुमबावरी । बूझोहै वाने दया करिकै कहिये परसों कबहोयगी रावरी ३३ ॥

तथा । आजुलौंजो न मिले तोकहा हमतो तुम्हरे सब

भाँति कहावैं। मेरो उराहनोहै कछुनाहिं सबैफल आ-पुने भागकोपावैं॥ जो हरिचन्दभई सो भई अब प्राण चले चहैं तासों सुनावैं। प्यारेजुहै जगकी यहरीति बिदा की समय सबकण्ठलगावैं ३४॥

क०। जानदेरी जानदे बिचार कुलकानहूंको गाव-नदे मेरेकुलटापनके गाथको। मैंतौ रहीभूलि बिनबात को बिचारेजौन प्रेमकोबिगारे छांडु ऐसे सब साथको॥ देखो हरिचन्दकौनलाभपायो यामें पछिताय रहिगई धनपाय खोयो हाथको। जारौ ऐसी लाज आवे कौन काज जानैंआज लखन न दीनों भरि नैन प्राणनाथ को ३५॥

स०। सदाब्याकुलहीरहैं आपुबिना इनकीहू कछू कहिजाइये तो। इकबारहूं तोहिं न देख्यो कभूं तिनको मुखचन्द दिखाइये तो॥ हरिचन्दजू ये अँखियां नितकीं हैं बियोगिनि इन्हैं समुझाइये तो। दुखियानको प्रीतम प्यारेकबौं बहराइके धीरधराइयेतो ३६॥

तथा। रोवैंसदा नितकी दुखियांबनिये अँखियां जि-हिधोससोंलागी। रूपदिखाओ इन्हें कबहूं हरिचन्दजू जानि महाअनुरागी॥ मानिहैं औरनसों नहिं ये तुव रङ्ग रँगीकुललाजहित्यागी। आंसुनको अपने अँचरान सों लालन पोंछि करो बड़भागी ३७॥

तथा। घरबाहरकेन को काम कछू नहिं को यहरारि निवारिसके। हरिचन्दजू जो बिगरीबदिकैं तिन्हैंकौनहै जौन सँवारिसकै॥ समुझाइप्रबोधि कै नीतिकथा इन्हैं

धीरज कोऊ न पारिसकै। तुम्हरे बिनु लाखनकौनहैं जो यह प्रेमके आंसू निवारिसकै ३८ ॥

तथा। संगमैं जेनिशिबासरही जिनतेंकछुबातेंनमैंने छिपाईं। जे हितकारिनी मेरी हुतीं हरिचन्दजू हायगईं सोपराईं ॥ सो सब नेह गयो कितको मिलिबेकी न एकहू बातबताईं। औरै चवावकरैं उलटो हरि हायये एकहू काम न आईं ३९ ॥

तथा। हौं कुलटा हौं कलङ्किनीहौं हमने सब छांड़ि दयो कहा खोलौ। आछीरहौ अपनेघरमें तुमक्यों यहां आइ करेजहिछोलौ ॥ लागि न जाइ कलङ्कतुम्हैं कहूंदूर रहौ सँगलागीनडोलौ। बावरीहौं जो भईसजनी तो हटो हमसों मति आइके बोलौ ४० ॥

क०। आयो सखीसावन बिदेश मनभावनजू कैसे करि मेरोचित हायधीर धारिहैं। ऐहैं कौन झूलनहिंडोरे बैठि संगमेरे कौनमनुहारिकरि भुजाकंठपारिहैं ॥ हरीचन्द भीजत बचैहै कौन भीजिआय कौन उरलाइ काम ताप निरवारिहैं। सांनसमय पगपरि कौन समुझैहै हाय कौन मेरी प्राणप्यारी कहिकै पुकारिहैं ४१ ॥

तथा। आई आज कित अकुलाई अलसाई प्रात हीसे मति पूछेबात रंगकित ढरिगो। सोनेसेयागात छूके सोनो भयो आप कै वा आतप प्रभातहीको प्रगट पसरिगो ॥ हरिचन्द सौं तनकी मुखद्युतिछीनी कैधा आगनी बरन कहूं पायवायररिगो। नीलपट तेरो आज औरै रँगभयेकाहे सेजान निछुरि पियाते पीरो परिगो ४२ ॥

स०। जानतही नहींहौ जगमें किहिको सबरे मिलि भाषतहैं सुख। चौंकत चैनको नामसुने सपनेहू न जानत भोगनको रुख॥ ऐसन सों हरिचन्दजू दूरही बैठन को लखनो न भलोमुख। मोंदुखिया के न पासरहौ उड़िके न लगै तुमहूं को कहूंदुख ४३॥

तथा। गरजेघन दौरि रहैं लपटाइ भुजा भरिकै सुख पागीरहैं। हरिचन्दजू भीजिरहैं हियमें मिलिपौन चले मद जागीरहैं॥ नभ दामिनीके दमके सतराई छिपी पिय अंग सुहागीरहैं। बड़ भागिनि वोई अहैं बरसात में जे पिय कंठसों लागीरहैं ४४॥

तथा। ऊधोजू सूधोगहो वह मारग ज्ञानकी तेरे जहां गुदरीहै। कोऊ नहीं सिखमानिहै ह्यां इकश्यामकी प्रीति प्रतीति खरीहै॥ ये ब्रजबाला सबै यकसी हरिचन्द जू मण्डलीही बिगरी है। एक जो होय तो ज्ञान सिखाइय कूपही में यहां भांग परीहै ४५॥

क०। कबहूंक बारिन में कुंजन निवारिन में इत उत बेलिन को चौंकि चितवन है। कासन कपासन पै फिरत उदास कबौं पल्लवन बैठि बैरि दिन रितवतहै॥ हरीचन्द बागन कछारन पहारनमैं जित तित पर्यो गुनि नेह हितवत हैं। सूखे सूखे फूलनपै तरुगन मूलनमैं मालती बिरह भौंरि दिन बितवत है ४६॥

तथा। काले परे कोस चलिचलि थकगये पाय सुख के कसाले परे तालेपरे नसके। रोय रोय नैननमें हाले परे जाले परे मदनके पालेपरे प्राण परबसके॥ हरीच-

न्द अंगहू हवाले परे रोगन के सोगन के भाले परे तन बल खसके। पगन में छाले परे नांघिबे को नाले परे तऊलाल लालेपरे रावरे दरस के ४७॥

तथा। थाकी गति अंगन की मति परिगई मन्द मुख झांझरीसी ह्वैके देहलागी पियरान। बावरीसी बुद्धिभई हँसी काहू छीन लई सुखके समाज जित तित लागे दूर जान॥ हरीचन्द रावरे बिरह जग दुखमयो भयो कछू और होनहारलागे दिखरान। नैन कुम्हिलानलागे बैनहू अथानलागे आओप्राणनाथअबप्राणलागेमुरझान ४८॥

तथा। चौंकपरी सुखन समोई लेत सासनको आंसू ढार कहै सुन सखी अभिरामरी। उतही त्रिसासी व्रजबासी कान्ह भैंटोभटू सारिका सुवाके शोरकीने काक कामरी॥ एकहीं निहारी हेम पूतरी स्वपन माहँ चाह्यो और सिन्धुशोभाललितललामरी। कित वहठाम कित मणिन के धाम आय किते सुखग्राम किते गये घनश्यामरी ४९॥

स०। बनगैलनि छैल लख्यो इकसैं तिहिकी द्युति मोहियेहूलतिहै। दिये दीनदयाल तिहूंपुरकी उपमा लघु ह्वै नहिं तूलतिहै॥ कल नाहिंपरै बिनुदेखे प्रभा मति को पलना करि झूलतिहै। जबहीं जब वा सुधि होय हिये तबहीं सबहीं सुधि भूलति है ५०॥

क०। हे अशोक शोकहरि हरिको मिलाय मोहिंलोहि को शपथ करि सांचो निज नामको। हे पलाश आशा पूरि दूरि करि निज नाम अहे पारिजात करि पूरो मम काम को॥ हे रसाल लाल को लखाय ये रसाल लू-

प है तमालधरे हो स्वरूप तुम श्याम को। ताते तुम्हैं जानिये गुपाल मिले दीनद्याल काहे को बिहाल हाल देखियत बामको ५१ ॥

तथा। बदरी तू बदरी बिलोक्यो कहूं घनश्याम काहेको बतावै सांचो नाम याको बेरी है। कहिरी निवारी तोहिं कान्ह ने निवारी कहा देति न दिखाय अब काहेकरैदेरीहै ॥ येहोकरबीर करबीर उपकारधीर हमैं बखीरको बताय आशतेरी है। करन कुसुम हे करन करि दीन बच हरिके जताये ह्वै हरन पीर मेरी है ५२ ॥

स०। तजिकै कुलकी कुलकानि सबै तुम सों हम आनिकै प्रीतिकरी। भुवनेश अहो भई हौं ब्रजमैं बदनाम सोऊमनमैंन धरी॥ निबही न सोई अबतो तुमसों लगीतोरिबे मैं नहिं एकोघरी। परमेश्वरई अब जानत हैं कहते न बनैहमपै जोपरी ५३ ॥

क०। भई हौं बिहालबाल लालके बिछोह काल सांवरेसनेह देह दशा भूलिगई है। जागि मुरझातकरै बातें घनश्यामहीकी पियापियाचातकीसी हिया रटलई है॥ अहो प्राणनाथ हाथदीजिये हमारे माथ साथते न तजो बिरहागि ताप तई है। दुरति न क्यों प्रभा फुरतिहिये में नई श्यामकी सुरति करि भई श्याममई है ५४ ॥

तथा। अलक अँधेरी मैं लियो है मन धनचोरी अब तो हमारे कान्ह तरफैं बिकल प्रान। लीजे न कलङ्क हमैं विधिके बियोग अनी बनीहै निशङ्क बङ्क भृकुटी तनी कमान॥ अनल उचाट रूप लाटमैं तचाई भारी कारी-

गर कामने सुधारी अभिराम सान। चाहसों चितौनि कोर चुभी चित बीच मेरे एरे चितचोर तेरे लोचने अचूकबान ५५ ॥

तथा। मुनिनकेमनअलि पुंजजहँ गुंजत हैं सोऽहंपद कंजुमंजु हमैं परसाइये। नीलकण्ठसुखधाम एहोघन-श्याम देव मन्द मन्द मुसुकानि बुन्द बरसाइये ॥ गोप की किशोरी भोरी चितवैं चकोरी चारु ताको तिनओरी नाहँ नाहिं तरसाइये। छांड़ि छलछन्द व्रजचन्दनिज जानिहमैं आनँदको कन्द मुखचन्द दरसाइये ५६ ॥

स०। बिरहानल ज्वालकेझारनतें भुवनेश नितै मुरझानिपरे। अँगअङ्गमलीन भयेहैं सबै अबनेकुनहीं पहिंचानिपरे॥ कसकै उर अन्तर ऐसीबढ़ी हमसों कछु नाहीं बखानिपरे। कहिकै तुमसों हमजानिचलीं अब कीजिये जो जियजानिपरे ५७ ॥

क०। बिरह पयोधिते कृपाके सिन्धु दीनबन्धु कीजे पार निराधार हियके जहाजको। प्रेमनेम तापधीर पथीह्वै अधीररहे एहो बलबीर लखो बिकल समाज को॥ गोकुल के गोकुलको ब्याकुल उबारे प्यारे हुते जबबारे धारे धराधर राजको। स्वामी शिरलाज मेरे टेर कितसुनोआज ऐसेव्रजराजतेरेकाजतजीलाजको ५८ ॥

तथा। तकिताकि चहुंओर जकिसी रही है थकि बकि बकि उठैछकि छैलकी लगनमें। हाहाबलबीरको बताय मेरीबीरएरी धायधाय बूझतिहै कुंजकेमगनमें॥ नन्दके किशोर चितचोर कित खड़े ह्वैहैं गड़े ह्वैहैं कहूं कुशकण्ट-

कपगन में। अजहूं न आये वनमाली कितगये आली बोली चटकाली लाली लहकी गगन में ५९ ॥

तथा। प्राण के अधारे मेरे बारे ये पधारेचहैं भूपके अखारे जहां भारे सजे शूर मैं। पीर बढ़ीहै शरीर बूड़ति बियोग नीर धीरधरौं कैसे करौं आंखिनके दूरमैं ॥ डारे वरु कंस कारागार में ज़ंजीर भरि एरी बीर जाउ जर धन धाम धर मैं। जोपै ये कन्हैया बलभैया दोऊ लाल मेरे खेलैं कहि मैया बैन नैनके हजूर मैं ६० ॥

तथा। जाय जनि प्राणके पियूष मोहिं मांगनदै कौन अनुराग सन आंगन बिहारि हैं। अरिकै मथानी धरि माखन को खैहैं कौन भौन बीच लाखन खिलौन को सुधारि हैं ॥ एरे मेरे छैया तू कन्हैया मैं बलैया जाउँ मैया मैया टेरि कौन मोहिंको पुकारि हैं। कंस धूत दूत को सँदेशो सुनि चले पूत कौन पुरुहूत धार धराधर धारि हैं ६१ ॥

तथा। कहिये महर बात शहरतजेपै प्रात कहा कह्यो तात जब तुमको बिदाकियो। आई सुधि नाहिं तुम्हैं कोश-लेशहूंकी कछु पबिते कठोर बरजोर ह्वैरह्योहियो ॥ जिये नहिं एक पल जलसे बिहीन मीन क्यों प्रबीन होय खोय प्राणप्रिया को जियो। धन्य तुम नाथ कहाकहों मैं तिहारी गाथ आपनो अमोल लाल और हाथ मैं दियो ६२ ॥

तथा। पीवपीव पातकी पपीहा ये पुकारैं नित सहज सुभाय नहीं पावक पसारैहैं। पादप पलाश के प्रसूनन अँगारनसों लसिलसि डारन अँगारनसों झारैहैं ॥ भुव-

नेश ऐसिये परीती बिरहानल मैं बावरे अनंग अंग बिष क्यों बगारै हैं। आपु तो जरेको दुख जानत भलीही भांति काहे जरे अंगन को फेरि अब जारैहैं ६३॥

तथा। नन्द बिलखात कहिं सुनिरी महरि बात नाती लिये जात हम भूले न कृपालको। अजहूं कहावैं गिरि-धारी बनवारी उत जानैहैं हमारी सुधि देवकी के लाल को॥ भूपति की सभा में सिखावै बृद्ध राजनीति सेवै नव नात आप गोकुलकी चालको। मोती मणि लाल नग सोहत बिशाल जऊ तऊ न कृपाल तजैं गुंजन की मालको ६४॥

स०। कूर अकूर लिवायगये भई तादिनते अँखियां ये दुखारी। नीर पगारते धारबहै बिरहानल ज्वाल दहै सब नारी॥ गाढ़सों जो जो बचाये दिवाकर सो बहुरे सब बैर सँचारी। ऊधो किये उरपाहन से रहै जानत मैं रसिया गिरिधारी ६५॥

क०। सुन्दर सुखारे अनियारे कारे कारे घन धारे बहु बेष धामधारे बरसतुहैं। तरुणातरारे न्यारे न्यारे उदगारे पौन दादुर दरारे धुनि धारे दरसतु हैं॥ पी पीकै पुकारे पपीहाउ प्यारे प्यारे सारे दुन्दुभि धुधुकारे अनंग सर-सतुहैं। अचरज यामैं कहुँ कौन भुवनेश जो पै श्याम मिलबेको मन मेरे तरसतुहैं ६६॥

स०। दादुर बोल मचै चहुँ ओर सुनै बिरही हिय ताप बढ़ावत। पावस की झमकी रतियां पतिकी छति-यां बिन कौन बितावत॥ बोलहिंगे अलि कुंजन में बन

के मुरवा धुनि टेर सुनावत। काह कहौं सखि नाह बिना अब ये बदरा बदराह बतावत ६७॥

क०। जादिनते प्यारे पिय पीतम सिधारे कहूं जानि ब्रजमण्डल घनेई घने उतपात। द्विजदेव तादिनते बैठी दूरिमन्दिर मैं सुमुखि सखीनहूं की नेकहूं सुनी न बात॥ बूढ़ो बिनदांतको बिचारि शठ तोको ताते आज यहि आंगन में निकारि देखायो गात। अबला अबल जानि तुहूं इतरात अरे नीरद बिसासी कहा करत बिसासघात ६८॥

तथा। भूले भूले भौंर बन भांवरैं भरावैं कोऊ बरबसहीतो कियो चाहैं परवसुरे। द्विजदेव तापर अलापैं ये कलापिनकी भरिभरि देईं गोद नित अपयसुरे॥ ताहूपै सुतेरे खन तीखन संतापनते नेकहूं बचावहोत मायके न ससुरे। तियन निकारि भले पायन पसारि अरे बावरे अनंग अब तूही ब्रज बसुरे ६९॥

तथा। अब मतिदेरी कान कान्हकी बसीठिनि पै झूठे भूठे प्रेमके पतौवन को फेरिदे। उरझि रहीरी जो अनेक पुरबातैं सोऊ नातेकी गिरह मूंदि नैनन निबेरिदे॥ मरन चहत काहू छैलपै छबीली कोऊ हाथन उठाय ब्रजबीथिन में टेरिदे। नेहरी कहांको जरि खेहरी भईतो अब देहरी उठाय वाके देहरी पै गेरिदे ७०॥

तथा। आये अलि ऊधो प्रेमपथको करन सूंधो रूंधो निज इवास बास तजोरी घरनिको। जासु नाम रूप रेख अलख अलेख भेव भजो सोई देव सेव करो कद-

रनिको ॥ कीजिये उपास न सखीरी गुणहीनही को शासन शरीर करो आसन धरनि को। जटा की बनाये घटा योगी कनफटा होय राधो ज्ञान छटा साधो कान मुंदरिनको ७१ ॥

तथा। जनम को पत्रहै हमारे कर प्यारे ऊधो जानैं हम यशुदाके बार गुन नामको। लाखन उपाय दही माखन चुराय प्रात चाखनकै भाजि जात हुते नन्दधामको॥ सोदर हलीके बेद मोदर कहाय इत आठों याम मानि हित पूजैं तिहि दामको। अगुण अनामी अज कहो किमि बार बार अहो हो लबार कहां बचो व्रज बामको ७२ ॥

तथा। पारसै परसि लोह सोहत भे हेमहोय ते न फिरि चुम्बक सों जाय लपटावहीं। जाको मन बीन स्वर लीनह्वै प्रबीन भयो सो न सुनि कींगरीकी धुनि हरषावहीं ॥ सुधा सिन्धु रागि जासु क्षुधा तृषा गई भागि सोतो मृगबारि लागि नहीं मुधा धावहीं। श्यामकी सँयोगी हम गोरस की भोगी ऊधो कैसे बनि योगी योग माहँ मन लावहीं ७३ ॥

तथा। मिल्यो आय हृदय सिंधु सांवरो सलोनो रूप कीजिये उपाय दाय काढ़े फिर कढ़ैना। कहो किन सूढ़ हमें बूढ़ प्रेम कान्हर सों ह्वैरह्यो अरूढ़ और और बूढ़ बढ़ैना॥ बालपनको पढ़ायो सुआ जो पढ़ोसो पढ़ो फेरिकोटि करैतो भी आनकछू पढ़ैना। काहे बिनु काम कहो योगको प्रसङ्ग ऊधो श्यामरङ्ग रँगी तापै और रङ्ग चढ़ैना ७४ ॥

तथा। श्याम के पठाये आये सखाहो सुहाये ऊधो लागे मन तोलन तो आछी विधि तोलिये। प्रेमधार मैं ठिकान ज्ञानको न है सुजान लैहैं कोऊ यसी बाराणसी बीच डोलिये॥ जानैं हम कहा भोली बसी हैं वियोग टोली सीखो तुम योग ऐसी बोली मति बोलिये। होहु जनि दाहक सिखावो योग चाहक को गाहक के बिना नग नाहक न खोलिये ७५॥

तथा। दरदबिदारनि शरद चांदनीको त्यागिकरै कौन मन्दहै पसन्द जेठधूपको। गंगजल तजि कौन मारुथल थकै धाय कौन खाय खरी निज पाणिपाय पूपको॥ सूधो पथ छोड़ि ऊधो भ्रमै कौन कण्टकमें भजै को कलंकी रंक छांड़ि भारि भूपको। बासर बिभावरीहूं सांवरी सुरति रसै झांकै कौनि बावरी अँधेरे योग कूपको ७६॥

तथा। साधिकै समाधि कोऊ कन्दरा अगाधि पैठि बैठिरहो योगीबनि शीशचढ़ि प्रानहै। संयमादि साधन अराधन करतरहो कोऊ गहो ज्ञान कोऊ तपको विधान है॥ साँचीगुण गोविंदके साँची कहैं ऊधो तुम्हैं निरगुण ते न कछू हमैं पहिंचानहै। कोऊ किन ध्यान धरै ज्योति वा निरंजनकी ह्वैरहे हमारेश्याम अंजन समानहै ७७॥

तथा। रासको बिलास मृदुहास की सुरति जब ऐहै तब मोहनसों क्यों न मन उचाटिहैं। चांदनी शरद की बढ़ायहै दरददेह सुधिकी करद लगे क्यों न उरफाटिहैं॥ बैठि वन बेली बीच मेली भुजलता ताहि श्याम ताहि कंठ हेली सेली किमि ठाटि हैं। धारि जपमाला को

बिसारि नंदलाला ऊधो बाला मृगछाला ओढ़ि कैसे दिन काटि हैं ७८॥

तथा। उठैगुण गाय गाय भरैसांस हाय हाय करै न सोहाय कछूबरियपतितु है। सुधिबुधि दीन्हु मैं न ऐसी बिथाकरी मैन चित्त तो रमैन सो बिकल भयो अतिहै॥ सुमिरि सुमिरि कविराज सुख गोकुल के को कहि सकतु लैकै ऐसी भईगतिहै। रहौ न परति भौन भावत न पानी पौन आधौपल माधौको न राधे बिसरतिहै ७९॥

तथा। आधीलै उसास मुख आंसुनसों धोवै कहूं कहूं जोवै आधे आधे पलन पसारिकै। नींद भूख प्यास ताहि आधीहू रही न तन आधेहू न आखर सकत अनुसारिकै॥ द्विजदेवकीसों ऐसी आधि अधिकानी जासों नेकहु न तन मनराखत सँभारिकै। जा दिनते जोरि मनमोहनललापै दीठि राधे आधे नैननते आई तू निहारिकै ८०॥

तथा। लीबेको चलीती बहुभांतिनको चैनबन ऊंचीकै भुजानभरि अंचल छिपाई लाज। छीबेको चलीती वह्न पानिपभरोइ तन छ्वाय छ्वाय आई हियो पावक वियोग साज॥ भभरिरहीसी अभिलाषा मनही की मन द्विज-देवकीसों कछु भूलिहू भयो न काज। पीबे को चलीती ब्रजचन्दको अमन्द हास पाय चली प्यारो विष बिरह बिथाको आज ८१॥

तथा। तुम चारि याम रजनी के जागौ आन साथ हम बिरहानलकी ज्वालन सों जागती। ह्वै घर बसी जे तिहारे घर बसी प्यारे हम परबसी ह्वैहैं तिनकी धौं कहा

गती॥ भनत कवीन्द्र देखैं भालमें महाउर की भोरही निहारि और भोरलगि जागती। आंखें जे हमारी लागीं तुम सों अनोखे लाल तिन अब आंखिन की पलकैं न लागती ८२॥

तथा। सिसकिसिसकि हियो कसकि कसकि उठै ताके अफ़सोसन न कढ़यो भौन कोने सों। एकता न लागे मुकुतानके अनेकहार बकसै दराज काजरूपेसों न सोने सों॥ भनत कवीन्द्र ऐसे नाह सों गुनाह बिन कियो मैं बिगार धारटरै कहाटोनेसों। एरी तू कुमति मोसों कलह करायो अब सुलह करावै कौन सांवरे सलोने सों ८३॥

तथा। आयोहै अक्रूरक्रूर करनी सुनी है वाकी गोकुल को छांड़ि श्याम मथुरा सिधारि हैं। जाकेलये पतिपरिवार लोक लाज छांड़ी ताहि हम छांड़ि धीर कैसे उर धारि हैं॥ जलज से लोचन जलद से उमँगि आये गिरी मुरझाइ वृषभानुकी कुमारि हैं। सखिन उठाइ चारु चंदन लगाय तन भसम उदोत लाली बिरह दवारि हैं ८४॥

स०। कबहूं ब्रजकुंज के पुंज बिलोकत लेत उसास उदास ठढ़ी। कबहूं हरि के पद चिह्न निहारि बिलोचन वारिज बारिचढ़ी॥ कबहूं यमुनातट बेणु बजावत धाइ कदम्बकी डारचढ़ी। कबहूं शिवनाथ निहारत धेनु मनो ब्रजनाथ के मोहमढ़ी ८५॥

तथा। आवैगो कुंजबिहारी जबै नरनारि सबै मिलि मंगल गाइकै। बजैगी अनन्द बधाई तबै गुरु लोग सबै मिलि हैं उरलाइकै॥ लोग बिदाकरि सांझहि श्याम

सुजानहि कोमल अंग लगाइकै। बहुरो कबहूं दिन ह्वैहैं भटू ब्रज आयो पिया कहिहैं कोउ आइकै ८६॥

तथा। कुञ्जनको बसिबो सजनी उपचार अनेक ते मान मनावते। करसों करग्रन्थि कपोलन छ्वै भरिअंक भटू बहुरो उरलावते॥ मेरे लिये हरि चम्पकली अवली गुहि हार हिये पहिरावते। नैनभरी भरि ग्वालि कहै सखि औधिगई पर कन्त न आवते ८७॥

तथा। कहियो बृषभानुललीसों भटू हिये तेरोइ प्रेम मढ़्यो बिसवासहै। प्यारी दयाकरती रहियो सब भूलि दियो रसको परिहास है॥ तेरेई बैन प्रसून सु ये तुम आनँदकन्द कियो उरबास है। तेरोई रूप बस्यो शिव· नाथ सोई इन नैनन ज्योति प्रकासहै ८८॥

तथा। वै दिन भूलिगये मनमोहन रंचक छांछके कारण आवते। पांयनसों परिकै बरजोर केती मनुहारिकै प्रीति लगावते॥ गोधन संगहुते बनते चुनि मालती हार बनाइकै लावते। आप भये रसिया शिवनाथ हमैं लिखि कागद योग पठावते ८९॥

तथा। सूखी शमीसी भ्रमीसी सबै रतिनायक शा- यक शूल सही है। नैनन सोतचलै सरितान ज्यों त्यों तनपीरी परी पुलही है॥ टाड़ ढरो पहुँचानलौं आवत श्वासन की सिसिकी उमही है। श्याम तिहारे बियोगन ते जरि आधेही रूप की राधे रही है ९०॥

क०। ढुरि ढुरि परे मोती मांगहू ते बार बार लुरि लुरिपरै बेनी जंघन लौं आवती। सरकि सरकि जात

कंचुकी कुचन पर थरकि थरकि गात अंगन उड़ावती ॥ छूटि छूटि जात बेंदी भालते फरकि अंग टूटि टूटि जात लाख बिरह बटावती। गिरि गिरि जात कील पायल की शिवनाथ फिरि फिरि बिलोकै द्वार सगुन मनावती ९१ ॥

तथा। माने कानिकाहूकी न आनत कछूक उर लाज काज मानहु रसातल तले गये। हारीहौं सिखाय तऊ ठानत न क्योंहू तोय ऐसेही कछूक छलछन्दन छलेगये॥ द्विज देव जादिनते दरश दिखाय कहूं अतिही निकट मनमोहन चलेगये। होते जो हमारे तो हमारी कही मानतेरी बीस बिसे आली मेरे नैन बदलेगये ९२ ॥

तथा। कलित अमोल गोल ललित कपोल पर कुंडल चलित सोहैं मोहैं मुखचन्द सों। सोमति चकोरी भईभोरी प्रीतिथोरीनाहिं ताकीरुचि जाचैंनाहिंराचैं छलछन्दसों॥ युगुति नजानैं यदुपतिके मिलन कीसो जाउ जरि योग जग जानोजात फन्द सों। ताको हम जानैं पर सूकरसमान ऊधो सूधोनाहिं नेह जिन कीनों नँद नन्द सों ९३ ॥

तथा। को कहैं सिधाये मथुरा को यशुदा के जाये रहतलुभाये प्रति कुंजके सदन हैं। कौनकरै योग सोग नितही संयोग हमैं वारैं कबि लोग जापै कोटिन मदनहैं॥ हरैं दुखफन्द मन्द मन्द मुसकानि समय आनँद को कन्द चारु चन्दसों बदनहैं। धेनुको चरावत बजावतहैं बेनु खड़े ऊधो लखिलीजे यह नन्द के नँदनहैं ९४ ॥

तथा। छाई निठुराई है कन्हाईके हियेमें अब लिखिकै पठाईपाई योग मई पतियां। कैसे धरैं धीर बल बीर के

बियोग बिषे मोचैं दृग नीर पीर शोचैं दिन रतिया॥
भीजत छपायो हमैं छोह सों छबीलोछैल कुंजनकीगैलमें
बुलाय लाय छतियां। मेलिगलबाहीं कहिकदमकी छांहीं
ऊधो भूलैं हम पाहीं नाहीं श्याम की सुबतियां ९५॥
तथा। जादिनते कान्ह मधुपुरको पयानकियो हियो
कै पषान नाहिं शोच बधूजनकी। तादिनते देखिये नि-
हारि धीर धारि ऊधो लगीसी दवारि प्रभाभई कुंज बन
की॥ टूक टूक होत दिल कूकसुनेकोकिलकी लागतअचूक
हूक आये सुधि तनकी। कबहूं न भूलहिं बिलोकनि
वे भ्रूमरोर करकैं करेजनि में कोर कटाच्छनकी ९६।
तथा। जा दिनते मोहनगयेहैं तजिगोहनको तादिन
ते गोकुलकी गलीलगैं आरह्वै। चहूंओर चलतउसास
केसमीर जोर आई घेरि घेरि शोकलपटैं अपारह्वै।
चिंत चिनगारी भारीझपटैं सही न जाहिं पाहि पाहि करैं
गोपबधू निराधारह्वै। जो न होती नैननीरधार ये अपार
ऊधो जातो बिरहागि बीच ब्रज जरि छारह्वै ९७॥
तथा। सांचै सखाश्यामके जनैया उरधामकेहो काहे
अभिराम उतरहे हठतानिकै। ऐहैं गिरिधारी कबहारी
गिनतीकै दिन कहिहो हमारी ऊधो बिनती बखानिकै॥
राधादृगते बहाहिं राधा नामको बिलोम बाधा भईचहैं
फिरि गोकुलमें आनिकै। करिये सहायआय नातोबहि-
जायघोष एहो ब्रजराज तोष कैसेरहै ठानिकै ९८॥
तथा। जबतेगये हैं मधुसूदन मधुपुरीको कूदनलगो
है हियप्राण अतिलोलभे। उठैं ज्वालजालह्यां मयङ्कके

मयूखनतें दूखन लगेहैं अङ्ग भूखन अतोलभे॥ कहिये कहांलों कथा दुखकी अथाह ऊधोकीजै निरबाह अब काह अनबोलभे। कीमतिघटी है अतिह्यांतो फूल मालन की लालनकी खोजतै सरोज बहुमोलभे ९९॥

तथा। दशा हरषाय ह्यांकी भली भांतिसों बुझाय पाँयपरों ऊधो कहोजाय प्राणप्रियते। कहांगईं बतियां वे छतियां सिरानवारी चीकनी लगेंहैं प्यारी मनो सनी घियते॥ दीन्ही मतिदासी रतिलीन्ही कठिनाई अति चीन्हीगई बातैं घातैं कीन्ही ब्रज तियते। कै हैं सुख ह्यां बिशाल ऐहैं जवहीं गुपाल जैहैं कढ़िकुबिजाको शाल जाल हियते १००॥

तथा। नीर बलबीर छबिहीन दृगमीन ऊधो कैसे जियैं दीन ताके तापमें तपायकै। औरना उपाययदुराय सों कहोगे जाय चूकको बिहाय मम बिनती सुनायकै॥ नन्दके दुलारे ह्वैकै बैनकहैं चैनवारे प्राणनके प्यारे ह्यां हमारे ढिग आयकै। मुरली को टेरि अधरानधरि हेरि हमैं फेरि एकबेरि जाहिं दरश दिखायकै १०१॥

तथा। एकतो गवांरीनारी जातिपांतिते बिहीन लीन दोष कीचमति घोसबीच बासहै। बोधन हमारे कछु गोधनको धन रंज शोधन करति फिरैं बन बन घासहैं॥ ताहू पर मान करि रूसैं मनमोहन सों छोहन हमारे हरिकीनो रसरास है। आपनी कुचालकी कहां ते कहैं हालऊधो दीनकेदयालुकी दयाकी एक आसहै १०२॥

तथा। शोचहै न माखन चोराइवेको शिवनाथ शोच

है न नीरभरी गागरीके ढारेको। शोचहै न दधिकेलुटाइबे कोगारिनको शोचहै न मेरीबीर चीरफारिडारेको॥ शोच हैन मोतिनकी लरी चटकाइबेको शोचहै न काकाकीसों बालकके मारेको। शोचहै न रूखीरूखीसांवरे कि बातन को शोचहै सखीरी एक औचक सिधारेको १०३॥

तथा। छ्वै हैं नाहिं इन्दीबर न्हैहैं ना कलिन्दीमाहिं नाहिं अबसखी श्यामबिन्दी हू लगायहैं। आनि जानि नीलमणि भूषणनि मेरी बीर दूरिकरि एरी मृगमदको बनायहैं॥ आली काकपालीकी न सुनिहैं रसाली कूक अबतो तमालनके कुंजमें न जायहैं। देखिहैं घटानको न चढ़िकेअटानबामश्यामसंगबैरअबहमहूंचढ़ायहैं१०४॥

तथा। वेई ग्वालबाल वेई गोधन के जाल लखो सोय बिलखाय नन्दराय भयो चेरोरी। वही कालिन्दीको तट बंशीबटछांह वही वही कुंजलता पुंजबनको बसेरोरी॥ होत न हुलासहीको क्योंहूहमें हरिब्रज नाहिं लगैनी-को फीको चन्द ज्यों सबेरोरी। चाली वा रसाली हंस-वाली नाहिं भूलै क्षण आली बनमाली बिन खाली यह खेरोरी १०५॥

तथा। दईदई करिकै हौं दुखीभई हायदई सुनैनहीं दई यह कैसो निरदई है। मेलिकै संयोग हमें केलिको कराय भोग फेरिसोगहेतु या बियोग बेलिबईहै॥ तास-रसजासु नैन कोटिमैन प्रमाणेन आली अभिराम श्याम मणिछीनलईहै। पन्नगीसीपरी अधमरी अरीलोटैं हम घरी घरी हरीकी बिथाते मतितईहै १०६॥

तथा । बीते बहुदिना फिरि मिलो ना सँदेश आय चित्त में अँदेश पाय आँसूधार ढरकै । कहा करों दई पीरदई यह मोहिं नई अवधि प्रतीति रही सोऊलगी खरकै ॥ रति-यां न आवे नींद बतियां गुने गुविन्द आये सुधि छतियां मों वारवार करकै । आवन चहत मनभावन भरोस एक आज अभिराम मेरी वाम बाहु फरकै १०७ ॥

तथा । कोऊ कहैं ग्वाल बाल लियेसंग खेलैं लालको-ऊकहैं बैठरहे बंशीवट ठांवरी । कोऊकहैं चीर चोरि चढ़े हैं कदम्ब जाय कोऊकहैं एरी अब हरिसों मिलावरी ॥ कोऊकहैं अघासुर उरको विदारी आये कोऊकहैं केशीमा-रिआये ब्रज गांवरी । ऊधो कहैं सुनो श्याम वेतो ब्रजबा-ल सब आठोयाम हियधाम लखैं छवि शवरी १०८ ॥

तथा । कोऊ कहैं आज ब्रजराज को गहोंगी जाय स-खा के समाज छांड़ि लाज भरो भांवरी । कोऊ कहैं रासमें नचायहों मचायधूम हियमें लगाय होंरी मूरतिवसांवरी ॥ देखियेकृपालु ब्रजवालनके जाय हाल शवरे वियोगतें ब-कैहैं जिमि बावरी । ऊधो कहैं सुनो श्याम वेतो ब्रजबाल सब आठों याम हिय धाम लखैं छबि शवरी १०९ ॥

तथा । कोऊ कहैं भले चले जाहुलै मुरारी दही सही ब्रजनारी तो बँधाओं तुम्हैं दावरी । कोऊ कहैं गोहनैन जैहैंब्रजराज आज कोऊ कहैं मोहनैमनाय जायल्यावरी ॥ कोऊ कहैं मानधरि देखिहैं न हरिओर कोऊ कहैं नन्दके किशोरै मैं न भावरी । ऊधो कहैं सुनोश्याम वेतो ब्रजबाल सब आठों याम हियधाम लखैं छवि शवरी ११० ॥

तथा । कोऊ कहैं कैसीलसी सोहतिचमेली बेली मोहैं महाहेली सजीशरद बिभावरी । कोऊकहैं गयेकहां कुंजते प्रभाके पुंज एरीसखी याहीसमै हमें तू बतावरी ॥ कोऊ कहैं कालीदह कूदे बनमालीजाय कोऊकहैं आय आली होयजनि धावरी । ऊधो कहैं सुनो श्याम वेतो ब्रजबाम सब आठों याम हियधाम लखैं छबि रावरी १११ ॥

तथा । कूजन न पावैं पिक मोर बन बागनमें ठौरठौर गोपीगनको किलन आदरैं । पथी मधुबनकेनृपनके समान ब्रज सुंदरी करनकी बिभूषण बनीगरैं ॥ रावरी उपासी भई बावरी कलासी श्याम दक्षिण निदरि बाम बाम की बिनै करैं । आचरज भारी इक सुनिये बिहारी अब बेदकी ऋचाहूं ज्योतिषी के पांय पै परैं ११२ ॥

तथा । ऊधोकहैं जैसो वृषभानुकीललीको हाल सुनिये कृपालुवाकी ह्वांज्योंबैकटतिहैं । कबहूंके गायउठैंख्याल कैतिहारीचालकबहूं बजाय बेणुबनमें अटतिहैं ॥ बूझे बिनबकैहमैं माखन चुरायोनाहिं आलीह्वैकुचाली तुम झूठी यों नटतिहैं । जाय घनश्याम अब देखिये निकुंज धाम राधाराधाराधानाम आपनो रटतिहैं ११३ ॥

तथा । केसरि की खौरि भाल हिये बनमाल वही वैसही अनूप रूप ठाट को ठटतिहैं । ओढ़ि पट पीत लैलकुट कालिन्दी के तट रावरे सुभायनसों गायन हटति हैं ॥ प्यारी चलिकुंजकहै सैनमैं बराखबैन खोलै नाहिं नैन जब नींदउचटति हैं । जाय घनश्याम अबदेखिये निकुंज धाम राधाराधाराधानाम आपनो रटतिहैं ११४ ॥

तथा। कोऊ ब्रजबामा अरी श्यामा समुझावैं खरी बिकल धरणिपरी धीरज न धारतीं। रतीहै रतीकु जाकी सूरति रतीके आगे तिलखों तिलोत्तमा को बार बार वारतीं॥ प्रभुहित देवनकी सेवन करहिं ठाढ़ी बाढ़ी प्रीति गाढ़ी कोऊ आरती उतारतीं। तबहीं पपीहा धुनि सुनि धामधामनते धायधाय गोपबधू धुरवा निहारतीं ११५॥

स०। गोपिन के अँसुवानके नीर पनारे बहे बहिके भये नारे। नारेभये नदियां वहिके नदियांनद ह्वैगये काटि करारे॥ बेगिचलौ तो चलौ ब्रजको कबितोषकहैं बहु प्राणन प्यारे। वै नद चाहत सिन्धुभये अब सिन्धुते ह्वैहैं जलाहलसारे ११६॥

क०। विरह बिकल भई लागी पछितान बाल ढूंढ़त फिरत बनबन प्राणप्यारेको। अति अकुलानि भरी द्रुमनि लतानि पूंछै कहो अहो देखेकहूं नन्दके दुलारेको॥ शशि को प्रकाश हुतो जहांलागि हेरेहरि फिरि फिरि देखे करि अधिक अँध्यारेको। पुलिनमें आय गुणगाय मनमोहन के बोली सुखदीजे आय लोचन हमारेको ११७॥

स०। दीठिपरे जबलौं मनमोहन तौलौं निहारतही रही प्यारी। मोहनी मूरति मोहनी के मन छाई न कैसेहूं जाय बिसारी॥ क्षीणपरी तिय आनन की छबि होत प्रभात ज्यों चन्द उजारी। भारी बिथा न सँभारी परी तिहिबार गिरी वृषभानुदुलारी ११८॥

तथा। तजिमोहिं बिदेशगये सजनी नहिं आये कहौ दिन कैसेभरौं। बहु केलिकरी मनमोहन के सँग ते मनते

कबहूं बिसरौं ॥ दुखदैन मनोज लग्यो निरदै हिरदै न परै कल कैसी करौं । वहि नीरज नैन निहारे बिना कहि बीर मैं धीरज कैसे धरौं ११९ ॥

क० । पाती मैं कहांलौं लिखौं कहियो पथिक जाय भायो सोई कियो रहौ काहूके कहनहौ । जानिके अधीन तजी तलफत मीनलौं न आनी उरदया भरे कपट मैं ऐन हौ । सांवरे मैं तरसत रावरेके गोहनको कहा कहौं मेरे मनमोहन को मौनहौ । कैसे धरौं धीर नैन देखे बिन चैन है न प्यारे सुखदैन हाय लगे दुख दैनहौ १२० ॥

स० । सूरति तेरी बसै उरमें अरु तो सुधि जाय नहीं बिसराई । मो मनमोहन होयरह्यो नित होतरहै हितकी सरसाई ॥ कागद सांझ कहांलौं लिखौं गुण जात लिखे नहिं तेरी निकाई । तेरे बियोगते ताती हुती जब पाती पढ़ी तब छाती सिराई १२१ ॥

क० । फरकन लागी बांह आंख फरकन लागी प्यारे मनमोहन को मिलन जनावै हैं । आंगी दरकन लागी तनी तरकन लागी बोलि बोलि बायस हियेको हुलसावै हैं ॥ चन्दन समीर चन्द दुख सरसावते हे ते वे मेरे मन माहिं सुख सरसावै हैं । आज मोहिं होत सब सगुन सुहावने हैं जानति हौं आली बनमाली आज आवै हैं १२२ ॥

तथा । पथिक सँदेशो जाय कह्यो मनमोहनसों बहुरि कहनलाग्यो बिरह कहानीसी । रावरेई ध्यानधरैं गुणनिको गानकरैं रावरे बियोगसों रहत बिलखानीसी ॥ वाको चित लागत न कहूं गृहकाजनिमें देह दुबरई सोंन

जातपहचानीसी। बार बार बाँचिबाँचि छातीसों लगावतिहै पाती प्रेमसानी जानि रावरी निशानीसी १२३ ॥

तथा। आवन सुनत लगी मारग बिलोकनको नैनन को चावभयो मुखदरशन को। नागरीके श्रौननको चौगुनो भयोहै चाव प्रीतमके मीठे मीठे बैननि सुननको॥ करनको चावभयो सरस परसको है रसनाको चावभयो बतियां करनको। अधरन को चाव रसपानको भयो है नयो चावहै भयो मनमोहन मिलनको १२४॥

स०। राधिकाके मिलिबेको गोबिन्द कितेक दिनान लों देहहितासी। प्रीतिकरी रसरीतिकरी भरी नाहीं में हां अरु हां हियनासी॥ यों कविग्वाल बिशाल बढ़ायके छांड़िगयो सिगरी गुणगासी। दासी की फांसी फँसाय गरो अविनासी बन्यो यह आवत हांसी १२५॥

तथा। वह नाथहुते तब साथहुते मथुरापतिनाथ कहावतई। कछु और के और भये सब तौर रुखाईलई रसिया ह्वै दई॥ कबिग्वाल अचंभो यहीयकहै भला और तो बात भई सो भई। सुधि केलनकी भुज मेलनकी वह खेलन की कहा भूलिगई १२६॥

क०। घटाघहरातहै पौन हहरातहै बुन्द झहरात है गातहै कापिनी। कोकिला कूकते हूकहिये होत है शम्चरित्तरकहै कौनसों आपिनी॥ पीयबिनुसोगिनी योगिनी सीवनी मौनमें मौनसी बिरहजप जापिनी। फूलसबशूल भेकलीकांटाभईरातिरकासिनिभई सेजभई सांपिनी १२७॥

तथा। प्यारे जी बियोग में तिहारे चित चैन गयो

भलो खानपानसब मुरझाई छाई है । घूमि घूमि प्रेमसों निहारिबेकी गौनसमै लेरेहाय एकपल सुधिनाहिं जाई है ॥ पंखहू न दीन्हें राम कैसे उड़ि मिलोंजाय हाफ़िज़ चलत अबकोऊना उपाई है । मिलिबो बिछुरि और मिलिके बिछुरि जैबो बिधनाकेवशजो हो तासों का बिसाई है १२८॥

तथा । जाकेदेह रोगहोय औषध बिचार करै जाको तन कंचन हि दवा कहा दीजिये । अनतरपट भये कोर खोजिबो अवश्य कह्यो नेरे नितरहे खोज कहा लीजिये ॥ रामलाल अमृतके सागर को छोड़ कौन पोखरन तटजाय खारी जल पीजिये । ऊधो तुम बार बार कहा ध्यान ध्यान कहो ध्यान सूं नजाय ताहि ध्यान कहा कीजिये १२९ ॥

तथा । बूड़त समुद्र दुख पोतभये ऊधो तुम प्रभुको सँदेशो पाय आनँद उलहियो । जायबेको तुमको प्रताप कहो कैसेकै हमको तुम्हारो दर्श दुर्लभ सुलहियो ॥ चित में अपाने आप आपही बिचारि देखो देहलों नातोनेक नेहको निबहियो । ऊधो कृपाकै बहुभांति आपु पायँन परि मेरी गुपालजूते जयगुपाल कहियो १३० ॥

तथा । प्यारे मनमोहन तिहारे बिछुरेते वृषभान की कुमारीभई खरी कलिकानहैं । जलबिनमीन ज्यों बिकल तलफतअति कहैकबिकृष्ण ऐसीहोत आनबानहैं ॥ ज्यों ज्यों करियत उपचारनकी भीर त्यों त्यों बढ़त है दूनी पीर आंखिनही प्रान हैं । बिरहकी ज्वालनिसों जरिवे के लेखे वाको मरिबेको बचन अशीशाके समान हैं १३१ ॥

स०। नेकहींके बिछुरे सबही सुख साज भये दुखदायक भारे। नैननीर झरीबरसैं तरसैं छतियां बिन प्राणपियारे॥ आली बियोगबिथा ढरिबेते भलो मरिबो मन मान्यो हमारे। एकको दुःख मरे मिटि जात बियोग में होतहैं दोऊ दुखारे १३२॥

तथा। लालतिहारे वियोगते बाल बिहाल खड़ी तलफै सफरीसी। बातन तापके त्रासन ते सखि कोउन जायसकै नियरीसी॥ ह्वैरहे जेठकी ज्वालनिमें जहँ जाड़ेकीराति तुषार भरीसी। ताही उसीरके धाममें बामसो जाड़ेकी रातिमें जात बरीसी १३३॥

क०। वजी गुपाल बांसुरी परी परेम फांसुरी दृगन हुलास आंसुरी सुचित्त चारु तानमें। चली गयन्द गामिनी मनो स्वरूप दामिनी मनोज पुंज कामिनी कलानिधान ध्यानमें॥ परीप्रताप वेलजाल पावती न नन्द लाल भामिनी भई बेहाल मैनके व्यथानमें। शरीर ना सँभारती सुनैन नीर ढारती हरी हरी पुकारती हरी हरी लतानमें १३४॥

तथा। जगमगतनरंग सोहति अतिचारुसंग भूषण मन अंगअंग कुण्डलछबिकानमें। जरकसी दुकूललाल बिरखसी लखातिबाल झरकसी झुकातचाल धूमसी सिखानमें॥ घरी घरी उठै कराहि बावरी बियोग नाह फैलि अंगअंगदाह कामकेकृशानमें। निमेषको बिसारती इते उते निहारती हरीहरीपुकारती हरीहरीलतानमें १३५॥

तथा। कुसुमकलितकेश रात बेनामनभाल भ्राजत

पूरितप्रकाशपुंज बक्रचंद्रमानमें । चली लपेट वस्त्रश्वेत शोभामतिज्योन्हदेत ज्योंतरंगक्षीरचलै क्षीरके निधानमें ॥ पाईप्राणबिबशभाबि रसनारहीदशन दाबि लोचन जल भरकिये प्रताप मान पानमें । महा मनोज आरती बिलोल पादधारती हरीहरीपुकारती हरीहरीलतानमें १३६ ॥

तथा । कुंजनतनरँगरसाल मंजुल बिधु वदन बाल जीते हैं कोटि चन्द शारद प्रभानमें । गहे अन्योन कर न कौल प्रमदाकुल काम नौल लौल रुचिर सुनत सुर नारद चित तानमें । यमुनाके तीर तीर सुमिरत बलबीर धीर ब्याकुल प्रतापभई कान्हअत्र ध्यानमें । सुवास को बिसारती न आंसको सम्हारती हरी हरी पुकारती हरी हरी लतानमें १३७ ॥

तथा । आंखनते आंसुनके प्रवाह नितव्यापेरहैं कारे भयेशोभा प्रतापकुच पटकै । आहकेदाहमें दहत निशि बासर देह कृशतकलेवरमें खालरह्यो सटकै ॥ ऊधोकृप कर कहियो सँदेशो एतो गहिके चरण सरोज दाहि नट कै । ब्रजकी नवेली यह बिरहा बिकलबश तजिहैं परान अब कान्ह कान्ह रटकै १३८ ॥

तथा । सींचि सींचि चन्दन सुगन्धन सों अंग ऊधो फूलनसों सांवरे समारे छबि लटके । कुंज कुंज बेलिनमें नवेली अलबेलिनको लैलैपरताप डोलै ओटपीतपटके । तेई गातमेरे आवरणके चढ़ायबेको सांवरे पठाई योग पाती निजकटके । ऊधव उपाव अब दूसरो न आनिरह्यो तजिहैं परान अत्र कान्ह कान्ह रटके १३९ ॥

तथा। नेक नन्दबाबाजी के आंखिनते सूझै नाहिं यशुदासों गईहैआश जीवन कीघटके। हूकिहूकि हारन में चरती न धेनुऊधो सूखि सूखि शाखरहे बृन्दाबनबट के॥ राधाजी की बाधा परतापहै कही न जात होयरही मुरदा कलेश बीच नटके। बारएक कैसेहूं मिलावो प्राणप्यारे नातौ तजिहैं परानअबकान्हकान्हरटके१४०॥

तथा। हँसिरही सिगरी चवाई या गोकुलकी भटकी न नेक गुरु जनहूं के हटके। लीनह्वै मुरली के स्वर में प्रताप दीनी कुलकी कुलीनता नशाइ कर नटके॥ तेइ पीव मेरे अब चेरेभये कूबरी के ऊधो नहिं जानीही बि-धाता के घटके। तेहू नाहिं बिसरत बिसारे हिय हूक बान तजिहैं परान अब कान्ह कान्ह रटके १४१॥

तथा। अन्तउर दाहको प्रबाह अति ब्यापत है देखि कै प्रवाह ब्यापै यमुनाके तटके। सुनि सुनि कूकबन को-किल कपोतन की हूकह्वै आवत प्रताप सुधि नटके॥ चित्रसी ठाढ़ी ह्वै शोचती बिलास ऊधो चितमें उचाट होत बाट बेनुबटके। सहीजाय कौनपै बिहारी की बिरह शूल तजि हैं परान अब कान्ह कान्ह रटके १४२॥

तथा। होति जो पषानकी हमारीयहछाती बीर टूटि जाती तेरे नैन बज्रकेबिघातमैं। लोहेकी जोहोती चुभि जातीचुम्बचुम्बकमैं मानभरी होती छूटिजाती सौंहखात मैं॥ काठकी जो होती जरिजाती बिरहानलमें कहैं नन्द राम आहदाहसरसातमैं। हायप्राणनाथ हाथजोरि पायँ माथ धरौं मैंनमान्यों तब अब काह पछितातमैं १४३॥

तथा। अंगन अनंग रंग अंगना उमंग भरी जाइके उसंगभरी भानुजाके ओखामैं। फूलिरहे फूलन के वृन्द मकरन्दयुत चौगुणी अनन्दत्योंमयूरनकेधोखामैं॥ नंद-राम कामिनी बिराजत लतान तर चौंकि चौंकिपरै नंद-नंदनके धोखामैं। दाबिकेदुकूल ताको मारि मैन शूलन को झारि झारि फूलन को झांकती झरोखामैं १४४॥

तथा। सोगई निशङ्क आजएरी परयङ्कपर बङ्कभौंह वारो मोहिं अङ्क मों लगा गयो। मुरली मुकुट कटि तट पीतपट तैसे अटपटीचाल चित मेरो उरझागयो॥ कहैं नन्दराम मुरि मन्द मुसकाय नेक समुभि न पायों कछू कान में सुना गयो। आगयो अचानक देखा गयो मयं-कमुख हागयो कितै कि मोहिं सोवत जगागयो १४५॥

स०। सीरे समीरन की वह झूकनि कैलिया कूकनि क्यों सहि जायगी। कैसी बिहाल परी वहबाल तचीतन तापन सों दहि जायगी॥ हाथ कछू फिरि लागिहै ना नँदराम हिये कि हिये रहि जायगी। हाल मिलौ नँद-लाल नतौ अँसुवान की धारही में बहि जायगी १४६॥

क०। आली वह भूलत न चाल वनमाली की मरा-लहूउताली ताल ताली ठनिबो करैं। हास के बिकास चारु चन्द्रिका प्रकास कहा बास के बिलास बीजुरीन तनिबोकरैं॥ कहैं नन्दराम घनश्याम की निकाई पर कोटि काम वारिने बिधान बनिबो करैं। बाम सब काम छोड़ि श्याम अभिराम के सुआठों याम बैठि गुणग्राम गनिबो करैं १४७॥

तथा। आपनो हवाल कछू भाषत घनघोरन सों मोरन को शोर सुनि चौंकति चकति है। आगि आगि आगिकहि पौनकी झकोरन को नावत गुलाबलै उसास उचकति है। कहैं नन्दराम धाम खम्भ परिरम्भनके रम्भनको देखिआउबाउसों बकतिहै। ऐसी मनभूतकरी बौरी मज़बूतीकरी भूतनको भूतकहि सूतना तकति है १४८॥

षट्ऋतु वर्णन॥

वसन्तऋतुके कवित्त व सवैया॥

क०। फूले हैं रसाल नवपल्लव बिशाल बनजूही औ पलाश मल्ली आदि बहुको गनै। कूजत बिहंग पिक कोकिलादि एक संग गुंजत मलिन्द बन बीथिकानि मैं घनै॥ बहत समीर मन्द शीतल सुरभि धीर रहत न योग युत मुनिगनकेसनै। एरेब्रजरंग ऐसे समै रहो संग नतु दहन अनंग मिसु गोपिकानके तनै १॥

तथा। सुमन अनन्त फूले बिपिन लसन्तपौन सौरभ वहत भौंरगुंजे रसमन्तहै। सुतरु फलन्त कूककोकिल कलन्त तजे ध्यान मुनिसन्त जहां कालिको अगन्तहै॥ सबै रसवन्त औ बियोगिनिको गन्तजहँ रतिहीको तन्त तोष सुकवि भनन्तहै। बेधेरतिकन्त पाय तरुणी थकन्त अब जाहु कित कन्त ऋतुभूपति बसन्तहै २॥

तथा। संगकी सहेली रहीं पूजत अकेली शिवा तीर यमुनाके बीर चमकचपाई है। हौंतौ आई भागत डरत्त हियरातें घेरै तेरेशोच करी मोहिं शोचित सवाई है॥ बंचिहै बियोगीयोगी जानि सरदार ऐसी कण्ठतेकालिल

कूककोकिल कढ़ाई है। बिपिन समाज में दराज सी अवाज होति आजु महाराज ऋतुराजकी अवाई है ३॥

तथा। सुखदसमीर भीर रूखी ह्वै चलन लागी घटि चली रैनि कछु शिशिर हिमन्तकी। फूलैलागे फूल फरि बौरै बन आम लागे कोकिलै कुहूकै लागीं माती मदमन्तकी॥ हरीचन्द कामकी दुहाईसी फिरन लागीं आवै लागी क्षण क्षण सुधि प्यारे कन्तकी। जानी परै आजु बिरहीन की सिरानी अब आयो चाहैं रातैं फेर दुःखद बसन्तकी ४॥

तथा। बनबनआगिसी लगाइकै पलाशफूले सरसों गुलाब गुल्लालाकचनारो हाय। आइगयो शिरपै चढ़ाइ मैनबाननिज बिरहिन दौरिदौरि प्राणन सँभारो हाय॥ हरीचन्द कोइलैं कुहूकी फेर बन बन बाजै लाग्यो जग फेरि काम को नगारो हाय। दूर प्राण प्यारो काको लीजिये सहारो अब आयो फेरि शिरपै बसन्त बज्र-मारो हाय ५॥

स०। सखिआयो बसन्त ऋतूनको कन्त चहूँदिशि फूलिरही सरसों। वर शीतल मन्द सुगन्ध समीर सता-वनहार भयो गरसों॥ अब सुन्दर सांवरो नन्दकिशोर कहै हरिचन्द गयो घरसों। परसों को बिताय दियो बरसों तरसों कब पायँ पिया परसों ६॥

क०। आयो परवाना पात डार छांह तम्बू तानि कोकिला दिवान बोर तोर पतनाधैं चुनि। छड़ीदार कैलिया पहारा देति आठौंयाम बायू फूलसेजिया मजे-

जिया विछावैतुनि ॥ झण्डा लालसेमर सुगन्ध हरकारा बर बाजत नगारा जो मलिन्दगन गावै धुनि। शब्द देराजभो द्विवाकरजू पक्षिन के दक्षिन के देश ऋतुराज आज आवै सुनि ७॥

तथा। विरही दुखारी कामकीन्हो अधिकारी चञ्च-रीकगनजारिदेसु कियोहै देवारीसों। पेड़पतझारी कल कैली बोलीभारी शुभ सौरभपसारी छीन छायो फूल-वारीसों॥ भनतादिवाकरजू छाकेभये कोकिल बसन्ती सारी युवती शरीरपैन्है प्यारीसों। फिरेलागे बिटप बेला केफूलफूलेलगे व्यापेलगे सबमें बसन्त वायुदारीसों ८॥

तथा। पुनि सरसालक मरन्दन लपटिकर दक्षिणसे आइ शुभलागत शरीरमें। मन्दमन्द चालसे मरालके लजात तात वपुहवै पवित्रतानहाये गंग नीरमें॥ सुखद सोहावन सोहावन मुनीशमन नारीसों नवोढ़ागति चल अतिधीरमें। भनत दिवाकर सुधासों निशि सनीप्रीति जानी कयाबहारहै बसन्तके समीरमें ९॥

स०। आजसुभायनहीं गई बाग बिलोकि प्रसूनकी पांतिरही पगि। ताहिसमय तहँआयेगोपाल तिन्हैंलखि औरैगयो हियरोठगि॥ पै द्विजदेव न जानि पस्यो धौं कहांतयहिकालपरे अँशुवाजगि। तूजोकहै सखिलोनो स्वरूप सो मो अँखियांनमें लोनी गईलगि १०॥

तथा। फूलनदे अबै टेसूकदम्बन अम्बनबौरन छा-वनदेरी। री मधुमत्त मधूकन पुंजन कुंजन शोरमचावन देरी॥ क्यों सहिहै सुकुमारि किशोरि अरी कलकोकिल

गावनदेरी । आवतही बनिहै घरकन्तहि बीर वसन्तहि आवन देरी ११ ॥

क० । कीधौं मोरशोरतजि गयेरी अनेक भांति कीधौं उत दादुर न बोलत न येदई । कीधौं पिकचातकचकोर कहूं मारिडारयो कीधौं बकपांति कहूं अन्त्रगतह्वैगई ॥ झींगुर झिंगारैं नाहिं कोकिल चिसारैंनाहिं बैनकहैं जैसिंह दशों दिशहूं सोगई । जारिडारे मदन मरोरि डारे मोरसब जूझिगयेमेघकैधौं दामिनीसतीभई १२ ॥

स० । मदमाती रसालकिडारनपै चढ़ी आनँद सों यों बिराजतीहैं । कुलजानिकी कानिकरैं न कछू मनहाथ परायहि मारतीहैं ॥ कोऊकैसीकरै द्विजतूहीकहै नहिंनेको दया उर धारती हैं । अरी कोलियाकूकि करेजनकी किरचैंकिरचैं किये डारतीहैं १३ ॥

तथा । भूरसेकौने लिये वनबागये कौनेजु आंवनकी हरिआई । कोयल काहे कराहतिहै वन कौने चहूंदिशि धूरि उड़ाई ॥ कैसीनरेश बयारिबहै यहकौनधौंकौनेसों माहुरनाई । हाथ न कोऊ तलाश करै ये पलाशन कौने दवारिलगाई १४ ॥

क० । कूलनमें केलिनकछारनमें कुंजनमें क्यारिनमें कलितकलीन किलकन्तहै । पदैपदमाकर परागहूंमेंपौनहूंमें पातिनमें पीकन पलाशनपगन्तहै ॥ द्वारमें दिशानमेंदुनीमेंदेशदेशनमें देखोद्वीपद्वीपनमें दीपति दिगन्त है । बीथिनमें ब्रजमें नवेलिनमें बेलिनमें बननमें बागनमें बगरयो बसन्तहै १५ ॥

स० । आयोबसन्त दहन्तसखी घरआये न कन्त न पाये सँदेशन । शम्भुकहैं पथिकाये सबै अरु कोउबिदेशी रहे न बिदेशन ॥ चन्द्रमुखीदृगतेअँशुवा ढुरिआनि पड़े कुच याही अँदेशन । मानोमयंक सरोजनमें मुकताहल लैलै चढ़ावै महेशन १६ ॥

क० । जबते हमारे प्राणप्यारेहैं पधारे उत धीर नहिं धारेजात पीरहिय में जगैं । शीतलसमीर भयो तीरकालिन्दीकेतीर बीरबलबीर बिननीर दृगनतेंडगैं ॥ केसरी समान जब बिरह परैहैंभान योगज्ञान येगयन्दयूथतबहीं भगैं । बोली कोकिलानकी करैहैं शूलहूल हमैं ऊधो ये कदम्बनके फूल गोली से लगैं १७॥

तथा । औरैभांति कुंजनमें गुंजरत भौंरभीर औरडौरझौरनमें बौरनके ह्वैगये । कहैं पदमाकर सो औरैभांति गलियानछलिया छबीलेछल औरैछबि छ्वैगये ॥ औरैभांतिविहग समाजमें अवाजहोत ऐसो ऋतुराज के न आजदिन ह्वैगये । औरैरस औरैरीति औरैराग औरैरंग औरै तन औरैमन औरै बन ह्वैगये १८ ॥

तथा । पातबिनकीन्हें ऐसीभांति गणबेलिनके परत न चीन्हें जेये लरजतलुंजहैं । कहैं पदमाकर बिसासीया बसन्तकैसो ऐसे उतपात गातगोपिनके भुंजहैं ॥ ऊधो यह माधोसों सँदेशो कहिदीजो भले हरिसों हमारोह्यां न फूले बन कुंजहैं । किंशुकगुलाबकचनार औ अनारनकी डारनपै डोलत अँगारनके पुंजहैं १९ ॥

स० । बूझतुहौ कहा वाकीदशा भुवनेशजूबातवृथा

बहिजायगी। सांचीकहेपतियाहुनहीं नहिंकांची कछूहम सोंकहि जायगी॥ आशनहीं बचिवेकी अबै पर प्यारी जऊरहतेरहिजायगी। बीसबिसे बन फूले पलाशन देखि अँगारनसों दहिजायगी २०॥

तथा। कोकिलकूकि कलोलकरैं कलकोइल कूजै नि-कुंजनमें। कीरउदोतकपोतकेगोत छकेमद सों खगुंजन में॥ किंशुककेतकी कुन्दजुही बिकसो भुवनेशजू पुंजनमें। काहेनऐसीसमैअलितोहिं सोहातअहैरसभुंजनमें २१॥

क०। कलितकमण्डलकमलकलिकाके कीर किंशुक कुसुमबरअम्बर सुहायोहै। ठौरठौर मौरनकी श्रेणीजप माल मौर सजे हैं रसाल जटाजूटसोंबढ़ायोहै॥शिखिनके गोत कीर कोकिल कपोतसंग पढ़ैं ह्वै उमंग चहूं ओर शोर छायोहै। कन्त बनमालीको पठायो लाली सों ल-सन्त आलीरी बसन्त धनिसन्त बनिआयो है २२॥

तथा। गानकोकिलानको सुबांसुरीकी तानमनो सजैं बनमाल फूलजालयेअनन्तहैं। सोहतसमद अलिकोक नदपैं झपातमुखपैं प्रभात जनुलोचन लसन्तहैं॥ उड़त पराग पटपीत फहरात सोई हियो हहरात बिरहिनि को तुरन्त हैं। आयोरी बसन्त श्यामा कन्तको बनाय वेष देखो बिलसन्त यह कैसो छबिवन्तहैं २३॥

तथा। ललितलताकेनवपल्लवपताके सजैं बजैं कोकि-लानके सुकलगानके निशान। ठौरठौर मौरनपै भौंरभीर भौंरकरैं दौरदौर गावत नकीबनकी तौरगान॥ फूलनकी सैन मैन सैनसी करै हैं चैन शीतलसुगन्धमन्दमारुत चल

तवान। सजिकै समाज साज बिरही बिकलकाज यहि ब्रजराज ऋतुराज आज हरैंप्रान २४॥

तथा। जामेंपंचशरधुनि सुखमा बिराजरही देंइसुबि-नोदमें सुबाससदागति है। कुंदनकीकला चहुंओरझला-मलैहोति मनो उमापतिकी उदोति ज्योति अतिहै॥ माधवसे बैरसाल बिकसे बिशालबेला ठौर ठौर जामें शुकबानी हुलसति है। किधौं सुखराशीहै बसन्त ऋतु दीनद्याल किधौं अबिनाशी पुरीकाशी बिलसतिहै २५॥

तथा। सबकुल यूथमिलि बन्धुजीव सोहत हैं केसर में अंबर सुखग जन बास है। करैं अलिगान फिरैं भौंरी मुद भरी सङ्ग चहूं ओर आवत गुलाब की सुबास है॥ सजे अति मुक्त द्युति झालरति काननमें कुंदन किकला फैलिरही आस पास है। मौरहे रसाल रटै शाखा द्विज दीनद्याल व्याह को समाज धौं बसन्तको प्रकासहै२६॥

तथा। सोहै शुक बानी चहुँओर मंजु कानन में षट पदी धुनि प्रात बेला बिलसंतहैं। केतक अशोक पर से वत सुधीर द्विज बोलत रसाल सुमनस बिकसंत हैं॥ तरुणीके देखनको नैनन नचावै जित माधवीसुराते युत बात बिकसंत हैं। उपजै बिशाल रुचि देखत ही दीन-द्याल किधौं संत सभा किधौं शोभित बसंत हैं २७॥

तथा। भूले भूले भौंर बन भांवैं भरेंगे चहूं फूलि फूलि किंशुक जकेसे रहिजायहैं। द्विजदेवकी सोंवह कूजनि बिशालि कूर कोकिल कलंकी ठौरठौर पाछताय हैं॥ आवत बसंत के न ऐहैं जोपै श्याम तोपैबावरी ब-

छायसों हमारेऊ उपाय हैं। पीहैं पहिलेई सों हलाहल मँगाय या कलानिधिकी एकोकला चलन न पायहैं२८॥
स०। नागर सेहैं खड़े तरु कोऊ लिये कर पल्लव में, फल फूलन। पांवड़े साजि रहेहैं कोऊ कोउवीथिन बीच पराग दुकूलन॥ फूलझरैं द्विज देवके ऊपर कानन माहँ कलिंदिजा कूलन। आगम में ऋतुराज के आज सबै विधि खोय सबै निज शूलन २९॥
क०। औरै भांतिकोकिल चकोर ठौरठौर बोलैं औरै भांति शबद पपीहन के ब्वैगये। औरै भांति पल्लवलिये हैं वृंद वृंदतरु औरै छवि पुञ्ज कुञ्ज कुञ्जन उनै गये॥ औरै भांति शीतल सुगंध मदडोलै पौन द्विजदेव देखत न ऐसे फल ह्वै गये। औरै रीति औरै रङ्ग औरै साज औरै सङ्ग औरै बन औरै छन औरै मन ह्वै गये ३०॥
स०। देखत ही वनफूले पलास बिलोकत ही कछु भौंर की भीरन। बावरीसी मति मेरी भई लखि बावरी कंज खिले घटे नीरन॥ भाजि गयो कढ़ि ज्ञान हिये ते न जानि पस्यो कब छोड़िकै धीरन। कंधन कौन के लोचन होयँ पराग सनेह रसाल समीरन ३१॥
क०। फेरिवैसे सुरभि समीर सरसान लागे फेरिवैसे बेलि मधुभारन उनैगई। फेरि वैसे चहकि चकोर चहुँ बोले फेरि फेरिवैसे कैलिया की कूकन चहूं भई॥ द्विज देव फेरिवैसे गुंजी भौंरभीरै फेरि वैसे ही समय आयो आनँद सुधामई। फेरिवैसे अंगन उमंग अधिकाने फेरि वैसेही कलूक मति मेरी भोरी ह्वैगई ३२॥

तथा। फेरिवैसे बेलिमंदडोलन चहूंधा लागी फेरि वैसे फूलन की मंदझरिलागीहोन। फेरि वैसी भूमिभई बासित सुवासन सों फेरि वैसे पूरित परागन भये हैं पौन॥ द्विजदेव फेरिवैसे सोहे तरु पुंजकुंज कुंजनमें फेरिवैसे मोरह्वैगयेहैंमौन। फेरिवैसे पलटि गई हैं गृहवापिकाऊ फेरिवैसे पलटि गये हैं चारों ओर भौन ३३॥

तथा। फेरिवनबौरेमन बौरेसे करनलागे फेरिमन्द सुरभि समीरह्वै कितन्तगो। फेरिधीर नाशन पलाशनमें लागी आगि बहुरिविरहिजूह डरपि इकन्तगो॥ द्विजदेवदेखि इन भाइन धगाते फेरि जानिये कहांधौं भाजि सोहिमन्त अन्तगो। फेरिउरअन्तरते उगरि गयोई ज्ञान फेरिवनवागनमें वगरि वसन्तगो ३४॥

स०। फूले निकुंजघने द्रुम मंजुल भृङ्गलतानतानकहे। अतिशीतल मन्दसुगन्ध घने चहुं तीक्षण तीर समीरवहे॥ धुनिकोकिलकीर कपोलनके भर काननकानन जातसहे। उरशालत शूलसमूह प्रताप वसन्तमें कन्त वसन्तरहे ३५॥

तथा। नितहेरतबाट थकीं अंखियां दुहूं पावकसे अँशुवान बहे। दिनके गिनते धिसि छोरगये जियरा अव धीर अधीरगहे॥ कहियो इतनोई सँदेशो भटू बिछुरे बलकै तव काहकहे। अब पाहन सो हियरोके प्रताप वसन्तमें कन्त वसन्तरहे ३६॥

क०। डोलेहैं तमालपत्र पांवड़े अवाई सुनि गावतहैं गुनीजन इत उतछाहके। फूलिउठे कुन्दये मलिन्द वेग

चायउठे कूकिउठीं कोकिला कलापी चित्तचाहके ॥ प्यारे आमबौरउठे पक्षीगण दौरउठे चांदनी चँदोवाजबलागे नरनाहके। गिरिमें गुलाबनकी गद्दीचारुचम्पेकी बागन बीचडेरेहैं बसन्त बादशाहके ३७ ॥

तथा। ताळनपैताळपैतमालनपै आलनपै लालमालबालपै रसाल सरसो परै। पढ़ेकवि रामचन्दकुंदकंद बंदनपै चंदनपै चंदपै मलिन्द दरसो परै ॥ केकी केल केसर करंज केतकीपैकंज कारकूल कोकिलकदम्ब परसो परै। रंगरंग रागनपै संगही परागनपै वृंदावन बागनपै बसंत बरसोपरै ३८ ॥

तथा। सुमन समुद्रहूते शीश मोरफंदहूते चारुमुख चन्दते अनन्द दरसो परै। पीतपट बसनहूते कुंदसे दशनहूते मंद बिहसनहूते रस सरसो परै ॥ मंदरवितानहूते बंशी सुर गानहूते मैनपैन बानते पराग परसो परै। भूषण विलासहूते लाल गुंजमाळहूते पौर बनमालते बसंत बरसो परै ३९ ॥

तथा। पीरीतन सारी शीशपरते उतारिडारी जबते बसंत ने आगम जनाई है। पीरो आभूषण तन पीर करन लागो सखी बिना पीवप्यारे पियराई उरछाई है ॥ ऋतुकी पियराई सभाइन्द्र मनभाई हमको पियराई दुखदाईहो आईहै। जोई पियराई तनहूक होत मेरी आली सोई पीरेफूल सौति मालिन बीन लाईहै ४० ॥

तथा। आयोहै बसंत बौरे बागन बसीहै धूम बेलिन पगपुंज अरुपीरो दरशानहैं। गुंजिरहैं भौंर ठौर ठौर

फूलेफूलनमें फवतसमीरमें सुगन्ध सरसानहैं ॥ नंदराम देखौतो पपीहरा पुकारतहै पीउ पीउ प्यारी के पियूष अधरानहैं । कैसे लाल चलिबेकी चरचा चलावत हौ ऐसे समैं ऐसेबैन बानके समानहैं ४१ ॥

तथा। लोकनसवाँरो तौ सवाँरो ना बिगारो कछु लोकनसवाँरि नर नारि न सवाँरतो। कीन्हो नरनारि तौ न प्रेमको प्रचारदेतो प्रेमको प्रचारो तौ न मैन को प्रचारतो॥ मैनको प्रचारो तो प्रचारो ना सँयोग देतो कीन्हो जो सँयोग तो बियोगना बिचारतो। नन्दराम कीन्हो जो बियोग बिधनातो भूलि बौरे बन बागन बसन्तना बगारतो ४२ ॥

तथा। आसनमें आसन अकासमें अवासनमें आलिनमें आलिनकी आलिनमें दौरिगो । कहैं नन्दराम त्यों बिहङ्गनमें बागनमें बनमें बिनोदनमें बौरनमें बौरिगो ॥ क्षितिमें छबीलनमें छपामें छपाकर में छत्तिन में छातिनमें छैछिकला छोरिगो। देखुरी बसन्तमें बतावत है कंत मैन सारी सरसन्तमें अँगारन बिथोरिगो ४३ ॥

तथा। फेरिवैसे कुंजनमें गुंजरनलागेभौंर फेरिवैसे कैलिया कुबोलन रौंलगी। फेरिवैसे पातन पै पूरिगो परागपीत फेरि त्यों पलाशन में आगिसी बरैलगी ॥ फेरि वैसे पपिहा पुकारैलगे नन्दराम फेरि वैसे धाम धाम सौरभ भरैलगी। फेरिवैसे ऊधमी बसन्त बिसवासी आयो फेरि वैसे डारनमें डाकसी परैलगी ४४ ॥

तथा। आयोरी बसन्त कूकि कैलिया पुकारै लगी

हमसी गरीबिनीको गात गारिडारैगी। मंदमंद मारुत सुगन्ध सरसान लगी ज्वालको जगाइकै जरूर जारि डारैगी॥ नंदराम बागन में फूलैलगी बेलीघन करिकै अधीरिनी सुधीर टारिडारैगी। एरी तसवीर तौ देखादे मोहिं मोहन की आखिर कदम्बन की डारैं मारि डारैगी ४५॥

तथा। जालिम जुलमदार जाहिर जहान जौन डगर डगर विष बगर बगरिगो। कहैं नन्दराम ब्रज गांवकी गरीबिनिन रावरे की चेरिन पर बेरिन को मारिगो॥ ऊधोजी हवाल कहिदीजो नंदलाल जीसों गोकुलकी गैल गैल गजब गुजारिगो। फूलैना पलाश ये पलाश कै बसंतबाज काढ़िकै करेजा डार डारनपै डारिगो ४६॥

तथा। नदिन मैं नारन मैं नारंगी अनारन्न मैं नवल निवारनमैं तौर बदले गये। नन्दराम ग्रीषम गुसामैं गरमीमैं गैल गहब गुलाबन सों अंग मसलेगये॥ ऊसर के अंगनमैं नीर नदी रंगन मैं तरल तरंगन मैं हरिण छलेगये। हेमगिरि मंदर मैं हिमगिरि कंदर मैं अन्दर के अन्दर मैं बन्दर चलेगये ४७॥

तथा। गरजैं ना मेघतोम तरजैं ना छूटिछटा लरजैं न लौंगलता दादुर दरारैना। बोलैं ना कलापी ये कदम्बन की डारन पै कूकि कूकि कोकिला कुठारन सों मारैना॥ कहैं नंदराम मेरी कही मानु मेरीभटू बंदकरु भौंरनसों झीली झनकारैना। प्राणनको प्यारो परदेश में परोहै पीय पावसमैं पापी ये पपीहरा पुकारैना ४८॥

तथा। आवै ना बलाक पिय गावै ना बिथाके गीत धावैना धरापै धौल धारा धधकारैना। छावैना छराका छितिछोरलौंछवीलीछटा छन्दनअपामें पौन डारडाहरारैना ॥ कहैंनन्दरामहौं पछारीपरी ग्रीषमकी तीषनतहूं पै बुन्दबाणनसों मारैना। इन्द्रतेकहौकी मैं मरीहौं आपहीते धनु रकत चमोरी तरवारिसी निकारै ना ४९॥

तथा। चंचलाकी चमक चहूँघा चोख चायन सों चाहि चाहि चित्तमें कृपाणचोटकैरहै। इन्द्रको शरासन शरासन सरसबाण बुंदके विधानन विनोदनबितैरहै॥ कहैंनन्दराम तैसे चातक चकोर जोर बोलिबोलि बिरही बलाक बिषबैरहै। आदर कै राखों प्राण कैसेहूकयनादरलै यमके बिरादर ये बादरउनैरहै ५०॥

स०। जादिनते परदेशगये पिय तादिनतेतनुतापसी दौरत। आवते वेगि इते नँदरामजू देखते बाग बसंत समीरत॥ चंदउदोत न होतउतै अरबिन्द मलिन्द के वृन्दन भौरत। याहीअँदेशमहामनमें सखिका वहि देश नहींबनबौरत ५१॥

ग्रीष्म ऋतुके कबित्त व सवैया ४॥

क०। ग्रीषमप्रचण्डघामचण्डकरमण्डलतेउमड्यो है देव भूमिमण्डल अखण्डधार। भौनते निकुंज भौन लहलहीडारन ह्वै दुलही सिधारी उलही ज्योंलहलही डार॥ नूतन महल नूतपल्लवन छ्वै छ्वै सेद लवनि सुखावत पवन उपवन सार। तनक तनक मणि कनक नूपुरपाय आयगई भनक भनक झनकाये वार १॥

स० । ग्रीषममें तपै भीषमभानु गई बनकुंजसखीन केमूलसों । घामते कामलता मुरझानी बयारकरै घन श्याम दुकूलसों ॥ कम्पति औ प्रकटे परस्वेद उरोजन दत्तजू ठोढ़ीके मूलसों । ह्वै अरबिंद कलीनपै मानों भरै मकरंद गुलाबके फूलसों २ ॥

क० । भरियत गहरे गुलाब हद हौदन सुधरियत रजत फुहारे तदबीरके । ढरियत ढारन सुढारन नहर नीर दरियत घनसार शरद गँभीर के ॥ करियत तर अतरन सों बिछौना कवि शोभजुउघरियत बातायन तीरके । चन्दन पलँग अरबिंदनकी सेजपर सुंदरि सिधारी आजमंदिर उशीरके ३ ॥

तथा । दोऊ अनुरागभरे आये रंगभौन भाग मघवाशचीको लखिलागत सहलहै । बैठेएक आसनपै एकै संग एकैरंग चरयोना परतअंग कोमलकहलहै ॥ एक नै ले अतर लगायो देव दोउनके छिरक्यो गुलाबकीन्हों बिजन बहलहै । लैकै करबीने परबीने अलियां अलापैं मंजुसुरपुंजनसों गुंजत महलहै ४ ॥

तथा । शीतलमहल महाशीतल पटीरपंक शीतल कै लीप्यो भीति क्षितिछाति दहरैं । शीतल सलिलभरे शीतल बिमल कुण्ड शीतल अमल जलयंत्र धारा छहरैं ॥ शीतल बिछौननपै शीतल बिछाईसेज शीतल दुकूल पैन्हि पौढ़े हैं दुपहरैं । देव दोऊ शीतल अलिङ्गनदेत लेत शीतल सुगन्ध मन्द मारुतकी लहरैं ५ ॥

तथा । शीतलहखाने तामें खासे खसखाने सोंधे

अतर गुलाबकी बयारें रपटतहैं। भूधर सँवारे हौद छूटत फुहारे और बारे भारे तावदान धूप दपटतहैं॥ ऐसे समै गौन कहु कैसेकै बनै तो प्यारे सुधाकेतरङ्ग प्यारो अङ्ग लपटत हैं। चन्दन किवांर घनसार की पगार दई तऊ आनि ग्रीषमकी झार झपटतहैं ६॥

तथा। शीतलगुलाब जलभरिचहबच्चनमें डारिकेक-मलदलन्हायबेको धसिये। अङ्कभरि प्यारी नेह नदिन सुदिन भरि बारिके बिहारते न बाहिरनिकसिये॥ कालि-दास अंगअंग अगर अतरसंग केसर समीर नीर घन-सार घसिये। जेठमें गोबिंदलाल चंदन के चहलन भरि भरि गोकुल के महलन बसिये ७॥

तथा। खासे खसखाने खासेखाने तहखाने नल छूटत सरोजकी सुगंध रपटीरहै। अतर अरगजे सों केसर गुलाब नीर छिरके किवांर द्वार झार झपटीरहै॥ कृष्ण लाल जेठमें गमन कैसे कीजे प्यारे चंदन मलैके पंक अंक दपटी रहै। ज्वाल उदभटी कुचवटी कामगटी तटी हटी मरहटी नटीलटी लपटीरहै ८॥

तथा। जीवन को त्रासकर ज्वाला को प्रकासकर भोरहीं ते भासकर आसमान छायोहै। धमका धमक धूप सूखत तलाव कूप पौनको न गौन भौन आगी में तचा-योहै॥ तकि थकि रहे जग सकल बिहाल हाल ग्रीषम अचर चर खचर सतायोहै। मेरेजान काहू वृषभानु जग मोचनको तीसरो त्रिलोचन को लोचन खोलायोहै ९॥

तथा। उछरि उछरि भेकी झपटैं उरगपै उरग पग

केकिनके लपटैं लहकिहैं। केकिनको सुरति हिये कीना कछूहै भये एकी करी केहरिन बोलत बहकिहैं॥ कहै कवि ब्रह्म बारिहेरत हरिन फिरैं बैहरि बहति बड़े जोर सों जहकिहैं। तरनि के तन्न तवासी भई भूमिहरी द-शहूं दिशानमें दवासी यों दहकिहै १०॥
तथा। जेयें बिना जीरण सों जलकी जिकिर जीभ जय्यो जात जगत जलाकन के जोरते। कूप सर सरिता सुखाय सिकताते भई धाई धूरिधौरन धराधर के ओरते॥ बेनीकवि कहत अनातप चहत सब अगिनसों आतप्र प्रकाश चहूंओरते। तवासों तपत धरा मण्डल अखण्ड-ल सुमारतण्ड मण्डल दवासों होत भोरते ११॥
तथा। अमल अटारी चित्रसारी वारी रावटी में बारह दुवारी में किवारी गन्धसारकी। कामानल छाय रह्यो चांदनी बिछौना पर छबि फबि रही क्षीरसागर कु-मारकी॥ श्रीपति गुलाब वारे छूटत फुहारे प्यारे लपटैं चलत तर अतर बयारकी। भूषण नेवारी घनसार भीजि सारी भार तऊना बुझानी नेक ग्रीषमके झारकी १२॥
तथा। चंडकर झारन झकोरत सरोष पौन तोरत तमाल गन मन्द दिन भारोसो। धर्षकै धरणि गिरितम कै प्रताप जाके देखत मजेजरेज जगत निदारोसो॥ तरु लीणछाया सर सूखत समुद्र बन करण बिचारि देखो आतप अँगारोसो। छावत गगन धूर धावत घघात आवै चाप चढ़ो ग्रीषम गयन्द मतवारोसो १३॥
तथा। तपै इतजेठ जगजात है जरत जासों तापकी

तरनि मानो भरनि करत है। इतही असाढ़ उठे नूतन सघन घन शीतल समीर हिय हीतल भरत है॥ आधे अंग ज्वालनके जाल बिकराल आधे सुखद समोद हिय धीरज धरत है। सेनापति ग्रीषम तपत ऋतु भीषम दै मानो बड़वानल सों बारिधि बरत है १४॥

तथा। चलै लूक पवन लुकारी जनु संबत के मानो भाल जरे देह मुख जरे बाघके। मारतंड तेजसे बिकल भये जल थल रावटी उशीर राजा जाने निशि माघके॥ पीये पीये करत जहान रहे रातौ दिन सरिता तलाब आब पीपी पोषेदाघके। भनत दिवाकर अनलते अधिक आंच कांच चुवै कांकरी दुपहरी निदाघके १५॥

तथा। फहरैं फुहारनीर नहर नदीसी बहैं छहरैं छबीन छाम छीटिन की छाटीहै। कहै पदमाकर त्यों जेठ की जलाकैं तहां आवैं क्यों प्रवेश वेश बेलिन की बाटी है॥ बारहूदरीन बीच चारहू तरफ़ तैसो बरफ़ बिछाय तापै शीतल सुपाटीहै। गजक अँगूरकी अँगूरसे ऊँचो हैं कुच आसव अँगूरको अँगूरही की टाटीहै १६॥

स०। ऋतु ग्रीषमकी प्रतिबासर केशव खेलत हैं यमुना जलमें। इत गोपसुता वहिपार गोपाल बिराजत गोपिनके गणमें॥ अति बूड़तहैं गति मीननकी मिलि जाय उठैं अपने थलमें। यहि भांति मनोरथ पूरि दोऊ जन दूरि रहैं छबिसों छलमें १७॥

क०। चलति उसासकी झकोर घोर चहूंओर नहीं है समीर जोर मृधा कहैं लोगहै। शोचनकी लहरैं न ठ-

हरैं सकोचन ते रविकर होय नहीं श्यामहै धुसोग है॥ मृगन भ्रमत मेरे मनके मनोरथ ये फेरे नहिं फिरै लगी प्रीति तृषा को गहै। धीर धरैं वीर कैसे तपत उशीर भौन नाहीं यह ग्रीषमरी भीषम वियोग है १८॥

तथा। पतितदुजन कोहै देतिसुमनै सुखाय लगे अति काननमें आततापमें बली। मित्र वृषकोहै जहां भारी दुखकारी बनो बोलैं दगराते दिनकाल वृथाही छली॥ जीवन जलावति है लावति है आगि मनो दीनदयाल सारस न मिलै जलकीथली। देत नाहिं बसन सुवसन उतार बिन कीधौं यह ग्रीषमकै घोर खलमंडली १९॥

पावसऋतु के कवित्त व सवैया ५॥

क०। कण्टकित होत गात बिपिन समाज देखे हरी हरी भूमि हेरि हियो लरजतुहै। निपट चवाई भाई बन्धु जे बसत गांव दांवपरे जानिकै न कोऊ बरजतुहै॥ एते पै करनध्वनि परत मयूरनकी चातक पुकारि तेहताप सरजतुहै। अरजो न मानी तू न गरजो चलति बेर एरे घन बैरी अब काहे गरजतु है १॥

स०। बरसैंबनकुंजनपुंजलतासिकमंजुमयूरनकोसरसैं। मधुघोरकिशोरकरैं घनये चपलाचलचारु कलादरसैं॥ अलिहोबलतूचलबेगि इहाउत तो बिन प्राणपिया तरसैं। उमड़ैदुमड़ैघुमड़ै घनआज सिहींबुँदियानमड़ोबरसैं २॥

क०। पौन हहराई बनबेली थहराई चारु लहराई सौ-रभ कदम्बनकी सानते। झिल्ली झननाई पिक चातक चिच्याई उठै बिज्जुछहराई छाई कठिन कृपानते॥ कहैं

परमेश चमकतजुगुनू नचाय मेरे मनआई ऐसी उक्ति अनुमान ते। विरही दुखारे तिन पर दईमारे मानो मेघ बरसतहैं अँगारे आसमानते ३ ॥

तथा। कारीघटाकामरूप कामको दमामोबाज्यो गाज्यो कन्निग्वाल देखिदामिनि दफेरसी। लपकिझपकि आयो दादुर सुनायोस्वर हमहूं विरह सखि मदनकी रेरसी॥ बालम विदेश बसे चातक के बोलकसे ज्यों ज्यों तनुदहै त्यों त्यों औरै हरिबेरसी। बूंदन को छन्द सुनि आंखैं मूंदि मूंदिलेत आयोसखिसावन सँभारे शमशेरसी ४॥

तथा। कूकिउठीं कोकिलान गूंजिउठी भौंरभीर डोलि उठे सौरभ समीर सरसावने। फूलिउठीं लतिकाहू लौंगन कि लोनी लोनी झूलिउठीं डालियां कदम्ब सुखपावने॥ चहकि चकोर उठे कीरकरि शोर उठे टेरिउठीं सारिका विनोद उपजावने। चटकि गुलाब उठे लटकि सरोज पुंज खटकि मराल ऋतुराज सुनि आवने ५॥

तथा। नीलपट तनुपै घटानसी घुमाइराखौं दन्तकी चमकसों छटासी बिचरतिहौं। हीरनकी किरनै लगाइ राखै जुगुनूसी कोकिला पपीहा पिकबानी सों ढरतिहौं॥ कीच अंसुवान की मचाऊं कवि देवकहै प्रीतम विदेशहैं सिधारिबो हरतिहौं। इन्द्र कैसो धनुसाजि बेसरि कसति आजु रहुरे बसन्त तोहिं पावस करतिहौं ६॥

तथा। घनको घमंक औ बनक बकपांतिन की बीजुरी चमक करबालसी देखातरी। ललित लतान लखि गतुहै नदान और कहै परमेश त्यों बहत बेशबातरी॥

मोरनको शोर चहूंओर होत ठौर ठौर दादुरकी दूंदि घोर करै तनु घातरी। सुख सरसावन लगेरी लोग गावन को बिना मनभावन न सावन सोहातरी ७॥

तथा। छोटे छोटे कैसे तृण अंकुरित भूमिभये जहां तहां फैलीं इन्द्रबधू बसुधानमें। लहकि लहकि सीरी डोलत बयारि और बोलत मयूरमाते सघनि लतान में॥ धुरवाधुकारैं पिक दादुर पुकारैं बक बांधिकै कतारैं उड़ैं कारे बदरान में। अंस भुजडारे खरे सरयू किनारे प्रेमसखी वारिडारे देखि पावस बितानमें ८॥

स०। धावन कोऊ पठाऊं उतै उनतौ इहिऔसरमें कहे आवन। गावन एरीलगे मुरवा धुरवा नभमंडल में लगे धावन॥ छावन योगी लगे शिवलाल सुभोगी लगे हैं दशा दरशावन। तावन लागो वियोगिनको तनु सावन बीरलगे बरसावन ९॥

क०। पौनके झकोरन कदम्ब झहरान लागे तुङ्ग फहरान लागे मेघमण्डलीन के। भनत कबीन्द्र धरा धारन भरन लागे कोशहोन लागे बिकसित कन्दलीन के॥ उटज निवासिनको त्रास उपजनलागे सम्पुट खुलन लागे कुटज कलीन के। माचो बिरहीन के अहीन स्वर झिल्लिन के दीनभये बदन मलीन बिरहीन के १०॥

तथा। वियत बिलोकतही मुनिमन डोलिउठे बोलि उठे बिरही बिनोदभरे बनबन। अकल विकल ह्वै विकाने पथिकजन ऊर्ध्वमुख चातक अधोमुख मण्डलगन॥ बेनी कबि कहत मही के महाभाग भये सुखद सँयोगिनि

बियोगिनि के ताप तन। कंजपुंज गंजन शिखीदल के रंजन सो आये मान भंजनपै अंजन बरन घन ११॥

तथा। घुमड़ि घुमड़ि आये बादर उमड़िधाये सांवरे विदेश छाये औसर करारे में। दादुर पपीहा मोर शोर चहुंओर करैं मारतसरोरि उठि कामज्वार जारे में॥ धूम जलधारैं करैं उमँगि सलिलसैं गाजकी गजौ नरैं बैस मतवारे में। झूकैं झुकिजाती चढ़ी झूलि झूलि गाती देखि फाटै बीर छाती हा कुठौर भये भारे में १२॥

तथा। ग्रीषमते तचिबाचि पावस मरूकै पाई तामैं फूकैं जुगनू झवकैं लागैं पौनकी। हूकैं उठैं हिय में कनूकैं लखें बुन्दनकी झिल्लिहूनमूकैं यह बिसासी बैरी भौनकी॥ चपला चहूंकैं त्यों त्यों तनमें भभूकैं उठैं ऊकैंमारे मुरवा कहों मैं कौन कौन की। दादुरकी हूकैं धाय करत अचूकैं उर कोकिलकी कूकैं तापै बूकैं देती नोनकी १३॥

स०। चहुंघाते घरी घरी घेरिघना घनकी घटाघोर घनी घहरै। छिनही छिन छीननको बरछी क्षितिलौं छन छाय छटा छहरै॥ चकवा चकई वक चातक चोरिन की चिचियानि चहूं चहरै। बिलखाय बियोगिनि बेदन से विजयानँद बैठरहे वहरै १४॥

तथा। झूमिरहे घन घूमिघने बलि बोरत भूमि मनो चहुंघा घिरि। है अफसोस न रोसकरौं बिनहौस लतारहि रूखनसों भिरि॥ बेनी पपीहन मोरनहूं हहरान न दूंढ़ि करै बहुते फिरि। जीडरपै तड़पै बिजुरी परै काहू बियोगिनि पै न कहूं गिरि १५॥

क०। कूकैलगीं कोइलैं कदम्बन पै वैठि फेरि धोये धोये पात हिलि हिलि सरसैलगे। बोलैलगे दादुर मयूर लगे नाचन फेरि देखिकै संयोगीजन हिय हरसै लगे॥ हरीभई भूमि सीरी पवन चलन लागी लखि हरिचन्द फेर प्राण तरसै लगे। फेरि झूमि झूमि बरषाकी ऋतु आई फेरि बादर निगोरे झुकि झुकि बरसै लगे १६॥

तथा। आयो ऋतु पावसलौं यौवन चढ़ाई करि शैशवको फन्द बन्द छोरन चहतहै। ग्रीषम सनान मिट्यो जात गुरुजन भीत पवन सुछन्दता झकोरन चहत है॥ कामको घनेरो घन बरसि सनेह बुन्द तनमन प्राण सबै बोरन चहतहै। बयस नदी में लालप्रेमको प्रवाह बाढ्यो लोक लाज सीमा हाय तोरन चहतहै १७॥

तथा। कूकैलगीं कोकिलैं कदम्बन पै रातो दिन मोर पिकशोरहू सुनात चहुँ पास है। मन्द मन्द गर्जत घनेरी घटा घूमि घूमि बहत समीर धीर संयुत सुबास है॥ जित तित नारीनर गावैं सुखपावैं अति झूलत हिंडोरे लाल बाढ़त हुलासहै। हिये झरसावनको काम सरसावनको बुंद बरसावनको सावन सुमासहै १८॥

तथा। कैधौं वहि देश जहां प्रीतम पियारे बसैं घोरे घटा नहिं घूमि घूमि घहरावै है। कैधौं चमकत नाहिं चपला चहूंधा तहां कैधौं ना सुरेश कवौं बुंद झरलावै है॥ कैधौं काम कुटिल न व्यापत करेजे कैधौं कोऊ नाहिं मेघ औ मलार राग गावै है। कैधौं लाल पावसकी रातमें

पपीहा पापी बार बार पीपीकर कूकना सुनावै है १९॥

तथा। कौन परी चूक मोसों एरी मेरी बीर जासों कीनी मनमोहनने ऐसी हाय घतियां। छाये परदेश पायों कछु ना सँदेश यही जियमें अँदेश कबहूं भेजत न पतियां॥ कामकी सताई दिन रोयकै बितावों लाल कैसे कल पावों पीरहोति अति छतियां। तापै कलपावनको बिरह बढ़ावन को आई दुखदायी फेरि सावन की रतियां २०॥

तथा। आयो पुनि पावस अमावस निशाभो दिन छिनबिन प्यारे क्यहिभांतिन बितायहौं। किरचैं करेजाहू की कोकिलैं करन लागीं मोरशोर सुनि किमि चित ठहरायहौं॥ बेदरदी बैरी बदबदरा बड़ेई बुरे नित प्रति तासों प्राण कैसे कै बचायहौं। परत न एकौ पल कल लाल क्योंहूं हाय काके गरेलागि कामतपनि मिटायहौं २१॥

स०। ऋतु पावस आइगो भागनते सँग लाल के कुंजनमें बिहरौ। नहिं पायहो औसर और युवत्व कहा अब लाज लजाइमरौ॥ गुरुलोग औ चौचँदहाइनसों बिरथै क्यहि कारण बीरडरौ। चलि चाखैं सुधा अभिलाखैं करो यहि पाखै पतिव्रत ताखैधरौ २२॥

तथा। डोलैपौन परसिपरसि जल बूंदनसों बोलै मोर चातक चकित उठी डरि मैं। कहांलौं बखाऊं दईमारे मैन बाणनसों थकिरही केतिको उपाई करि करि मैं॥ दत्त कवि प्यारे मनमोहन न पाऊं कहौ मन समझाऊंरी कहां

लौं धीरधरि मैं। छाये मेघ मगन सुहाये नभमण्डल में आये मनभावन न सावनकी झरि मैं २३॥

तथा। दूरि यदुराई सेनापति सुखदाई देखो आई ऋतुपावस न पाई प्रेमपतियां। धीर जलधर की सुनत धुनि धरकी सोदरकी सुहागिनकी छोहभरी छतियां॥ आई सुधिवरकी हिये में आइखरकी सुमिरि प्राणप्यारी वह पीतमकी बतियां। भूली औध आवनकी लाल मन भावनकी डगभई वावनकी सावनकी रतियां २४॥

तथा। मदमयी कोयल मगनह्वै करतकूकैं जलमयी मही पगपरते न मगमें। झिल्लुनाचै घनमें विरह हिय बचिनाचै मीचु नाचै व्रजमें मयूर नाचैनगमें॥ श्रीपति सुकबिकहै सावन सुहावनमें आवन पथिकलागे आनँद भो अँगमें। देहछायो मदन अछेह तमक्षितिछायो मेह छायो गगन सनेह छायो जगमें २५॥

तथा। भूली किधौं ह्यांकी पीर बाढ़ी है उहांकी झरैं नैन झरनाकी सुधिआय उरवाकी है। चपला चलाकी करै नटकी कलाकी तैसी दौर बादराकी औ धुकार धुरवा की है॥ है न कछु बाकी औध आसरा निशाकी ता में आह परै डांकी ये झकोर पुरवाकी है। टेर पपिहा की करै सेल समताकी डरै करै उर झांकी से पुकार पुरवाकी है २६॥

तथा। छायो नभ बरसत बारिद विजयनन्द आनँद अथोर चारोओर उमड़तहै। पायो मुद मालती के

कुंज कुंज गुंजतहै भृङ्गपुंज इन्दगेह गेहते भगतहै॥ धायो देश देशते बिदेशी सब कण्ठलायो निज निजको भयो सोदसों जगतहै। आयो सखी सावन सुहावन सही पै मोहिं बिन मनभावन भयावन लगतहै २७॥

स०। कर कागद लैकै वियोगिनि नारि लिखै इमि प्रीतम को पतियां। यहि पावस में परदेशछये बलिहारी तुम्हारी शिला छतियां॥ सखियां पियसंग हिंडोरे चढ़ीं कहैं गीत में गाभी भरी बतियां। अलिकारी डरावरी सांपिनिसी मोहिं शालति सावनकी रतियां २८॥

तथा। सखियां कोउ झूंकते झूलन के डरिलागहिं प्रीतमकी छतियां। कोउ डोर धरेकर एकत्यों एक ते पीकी बचावतिहैं घतियां॥ कोउ गाइ मलार रिझाइ रहीं अरु कोउकरैं रसकी बतियां। कब पीर निवारिहौ मों हियकी पिय जाती हैं सावनकी रतियां २९॥

क०। कीधौं उन बन घन घेरि न घुमड़ि आवे कीधौं कीच भूतलमें प्रकटी नहींनई। कीधौं दबिदादुररहे डराइ ब्याल के कीधौं पापी पपिहै पियाकी टेर ना दई॥ घासी-राम कीधौं बक बाजन की त्रास मान्यो कीधौं वहि देश वीर पावस नहीं ठई। कीधौं काम श्यामजू के तनुते नि-कसिगयो कीधौं मेघजूझे कीधौं बीजुरी सती भई ३०॥

तथा। कीधौं वहि देश घन घुमड़ि न बरषत कीधौं मकरन्द नदी नद पथ भरिगे। कीधौं पिक चातक चतुर चक्रवाक बक कीधौं मत्त दादुर मधुर मोर मरिगे॥ मेरे मन आवत न आली प्यारे आवत जो कामकूर निकरि

महीतेधौं कि करिगे। कीधौं पंचशरहर फेरके भसम कियो कीधौं पंचशरजूके पांचोंशार सरिगे ३१॥

तथा। कीधौं मोर शोर तजि गयोरी अनेक भांति कीधौं उत दादुर न बोलत नयेदई। कीधौं पिक चातक चकोर काहू मारिडार्यो कीधौं बकपांति कहूं अन्तर्हित ह्वैगई॥ बालन कहत घरआये नहिं लालन जो जेती बिपरीति रीति मानहुँ उतैठई। मदन महीपकी दुहाई फिरि देशतेधौं कीधौं मेघजूझे कीधौं दामिनी सतीभई ३२॥

तथा। धीरगयो हीको सुनि शोर बरहीको बीर नाम लैकै पीको या पपीहा आनि पीको है। मेघ अवली को शोर पौन अवलीको बहै मार अवलीको हाय मार अवलीको है॥ नाहसे पथीको कहूं आइबो न ठीको कहै देखि अवनीको रंग लागत न नीकोहै। डारै अघजीको मोहिं कीने अघजीको यह जानत न जीको भेद हरत न जीको है ३३॥

तथा। पीउपीउ करत मिले जो मोहिं आज पीउ सोने चोंच चातक मढ़ाऊं अतिआदरन। कठिन कलापिन के कण्ठन कटाइ डारौं देत दुख दादुर चिराय डारौं दादरन॥ मोतीराम झिल्लीगन मन्दिर मुँदाइ डारौं बधिक बुलाइ बांधौं बनकी बिरादरन। बिरहा की ज्वालन सों जिरहजराइडारौं श्वासनउड़ाऊं बैरीबेदरदबादरन ३४॥

तथा। लगीसो लगाय लंक खेहनि खराबकरौं मारि करौं मोरन अहार मारजारेको। सुकबि निधान कान आंगुरिन मूंदिमूंदि सुनिहौं न घोर शोर झिल्ली झनकारेको॥

भेकनकी भीर सहसानन मिटायडारौं मेटिडारौं गरब गरूर घनकारेको। पाऊं जो पकरि कहूं जालसों जकरि तन फीहाफीहा करौं या पपीहा दईमारेको ३५ ॥

तथा। कैधौं वा विदेश घनघुमड़ि न छावैंकहूं कैधौं वा विदेश कहूं दामिनी न दरसै। कैधौं वा बिदेश मोर शोर ना मचावैंजोर कैधौं वा बिदेश बेगबोलिकै न हरसै॥ कैधौं वा विदेशमें न झींगुर झनकझुण्ड कैधौं वा बिदेश न जुगुनू ज्योति सरसै। कैधौं वा विदेश में न रामचरित रसै जो कैधौं वा विदेश घटा घेरिकै न बरसै ३६ ॥

स०। निज नैनन को बरसा बरसा तरसातन आंसुन धोवती हैं। कहूं रामचरित्रन रोवतीहैं दिलकी दिलही बिच गोवतीहैं॥ हमतो नित पावसकी निशिमें सखि सूनीसेज टकटोवतीहैं। धनि वै धनि पावसकी रतियां पतिकी छतियां लगि सोवती हैं ३७॥

तथा। धनि वै जिन प्रेमसने पियके उरमें रसबीजन बोवती हैं। धनि वै जिन पावसमें पिसिकै मेहँदीकरकंज मलोवती हैं॥ धनि वै जिन सूरति साजि सजैं हम लाजकै बोझको ढोवती हैं। धनि वै धनि सावनकी रतियां पतिकी छतियां लगि सोवती हैं ३८॥

तथा। धनि वै जिन पावसकी ऋतुमें नित प्रीति में प्रीति सँजोवती हैं। धनि वै जिन कारीघटा में अटा बिच बिज्जुछटा छबिछोवती हैं॥ धनि वै जिन रामचरित्र हिये हिलिहौसन हर्षित होवती हैं। धनि वै धनि पावस की रतियां पतिकी छतियां लगि सोवती हैं ३९॥

क०। पौन भकभोर घनघोर घने घटा अटा आटा बिचबिरहके तापतन तापिनी। कहूं कल ना परै कामिनी कोकरै दरै दुखदापते दामिनी दापिनी ॥ दादुरौ झींगुरौ मोर सब शोरते रामचरित्तर बधे बोलि पिक पापिनी। भूत भूषणभयो चुरी चुरइलिभई राति रकासिनि भई सेजभई सांपिनी ४० ॥

स०। अब सावनमें इतनी गरमी भरमी मतिभोग न भावतहै। ऋतुमें अनरीतिभई सजनी रजनी दिन जो उबिआवतहै॥ कबि रामचरित्रकहै किमि कै सुखसे इये तापन तावतहै। बरसातमें बारिभरे बदरा बरसावत ना तरसावतहै ४१ ॥

क०। लागे भरिजोर मोर कुहुकन कुंजनमें पपिहा पियाको नाम लैलै कै पुकारैरी। कहैंनृप रामपरतापकारी कोलियाहू कूक देतीहूकै अरु झिल्ली झनकारैरी ॥ दादुर रटनि सुनि हियरा फटनलाग्यो जुगुनू चमकि सुधि सकल बिसारैरी। हाय प्राणप्यारे बिनु घेरि घन आये चहुँ बिरहब्यथा में मारमार मारडारैरी ४२ ॥

तथा। उमड़ि घुमड़ि घन बरषनलागे चहूं दशहूंदिशामें लागी दमकन दामिनी। पौनको भकोर अङ्गअङ्ग को मरोरदेत सावनकी कारी अतिभारी लगै यामिनी ॥ रामपरताप ऐसीसमै जाके प्याराढिग वाको अतिआनँद वो धन्य धन्य भामिनी। मेरेप्राणप्यारे तो बिदेशमें बसत हाय परी सूनीसेज तलफति ह्यांमें कामिनी ४३ ॥

तथा। कैधौं वहि देश में घमडिघन घेरैं नाहिं कैधौं

वहि देश दामिनीहूं नाहिं दमकै। कैधौं वहि देश में न बरसत बारिद रामपरताप कैधौं झिल्लीहूं ना झमकै॥ कैधौं वहि देशमें न बहति बयारि कहूं मन्द मन्द शीतल सुगन्धभरी रमकै। कैधौं वहि देशमें पपिहराहूं पीउपीउ टेर दैदै पीउको चेतावै न उधमकै ४४॥

स०। प्यारे औ प्यारी अटापर बैठिकै देखत दोऊ घटाको छवारी। बारहिं बार गराजत बादर दामिनियां करती ज्यों पटारी॥ बोलैप्रिया हँसि पीतमसों यह कारी घटा उनई है अटारी। रामप्रताप संयोगी सुखी पै बियोगिनिको भई बूंद कटारी ४५॥

तथा। घेरीघटा घहराय रही दरकाबतु है बिनप्रीतम छाती। कामिनियां हियरा तरसावत दामिनियां चहुँते दरशाती॥ रामप्रताप झकोरत पौन भई दुखदायिनि सावनराती। तापै बियोग बढ़ावतहै वह पी कहां बोलिपपीहरा घाती ४६॥

तथा। की वहि देश बसे जहँ प्रीतम घेरि घटा न कबू घहरैहैं। की वहि देश न दामिनि दीपति बूंदन मेह नहीं छहरैहैं॥ की वहि देश न रामप्रतापजू पौनझकोर चहूं लहरैहैं। की वहि देशमें पापी पपीहा पिया न कहै जो पिया बहरैहैं ४७॥

क०। पीउपीउ रटत पपीहा ऋतुपावस में दादुर पुकार सो न बांचीकुल चादरन। कोकिल की बोलन मयूर मेरु नृत्यनसों झिल्ली झनकार सुनिभये जिव कादरन॥ होतो यहकाल आलीआल जो दिवाकरजू हाव भाव कर-

तो कलोल अतिसादरन। जाइ वह देशको वसतहै हमार साईं रोज़रोज़ बिरह बढ़ावै बैरी बादरन ४८॥
तथा। आयो ऋतुपावस मुरेरमेरुबोलेभोर धुरवाधुंधार बुन्द बारिके भरै लगी। भनत दिवाकर सुरेश चाप ऊगेव्योम दादुर दराजसी अवाज करैलगी॥ झाइझाइ बात घहरात घनघोर शोर चातककी शोर चहुँओर बगरैलगी। झिल्ली झनकार बकपांती हहकार सुनि नेकु ना सोहात आली अंग थहरैलगी ४९॥
तथा। पवन वज़ीर बीर दादुर सिपाही सब पावस मुसाहब पयोद राखे तंबूतानि। भनत दिवाकर द्विरद शोर घोरघन चपला निशान साज धनुइन्द्र किरपानि॥ बरही सवार बकपांति हहकार पिक चारण पुकार बोले बीररसजूहू बानि। बूझके बेहालबाल आयो रतिनाथसैन कादर कियोहै ब्रजनाथ बिन सूने जानि ५०॥
तथा। झमकि झमकि झूलि रागकी सिखत्ति रीति छहरि छहरि बुन्द गिरत अकाशते। भनत दिवाकर करत मोर शोरबन बिहरे बहूटी बीर मेदिनी हुलासते॥ चातक चवाई चाई सुरति बढ़ावै चाव चूनर सुरंगसंग बासीहै सुबासते। सावन सिरायो मनभावन न आयो आली कादर करत कारी बादर प्रबासते ५१॥
तथा। पालेंगे शचान पिक कोकिल हेवानहेतु बेनी कोलुराइगाड़ दादुर लुरावोंगे। भनत दिवाकर सुरज शीशफूल ज्योति आहर सुखाय जिवभूमि प्रफुलावोंगे॥ बिरह दवारि ज्वाल पेड़ पात जारिडारो बार बगराइ के

अधार लजवावोंगे। रूंधन उसाल लुक पावनप्रकाश करि प्राविट प्रबल तोको ग्रीषम बनावोंगे ५२॥

तथा। कैधों वह देशशेष दादुरचब इडारो कैधौं शैल शिखर शिखीन बैठबोलेना। भनत दिवाकरकी इन्द्रके न देश वह धारामें न धारजल गान वह टोलेना॥ भरी लोगन मूकभई शब्द सुनावै नाहिं बिपिन बिहङ्ग सङ्ग करत कलोलेना। ऐसेसमय छन्द मोहिं बुन्दन उठाय हाय पावस निरानो श्याम आवत अबोलेना ५३॥

तथा। सरिता कलोलकरे बनिता हिंडोलधरे चपलाचमक चहुँओर नभ दौड़ोना। लतालपटत तरु संगन चलतमरु सुरवारहतहरु नेकुसंगतोड़ोना॥ भनत दिवाकर समुद्र ग्राह मड़ो कच्छ अच्छत प्रतच्छप्रीति राखतहै थोड़ोना। सावन भयावन अँधेरी रैनिभादौं कान्ह रहैगी अकेली भौन राधे संगछोड़ोना ५४॥

तथा। भादौंकी अँधेरी धुरवाकी लटकेरी पाकशासनकेरी छिन छिन छोड़े बानरी। बोलत भयान भोगी बासना तजतयोगी पतिसे बिहीन ना सोहात खानपानरी॥ भनत दिवाकर करार दरियावछोड़ी नावके नवाह बादशाह छोड़े शानरी। पावसप्रबलमेरे पिय को छोड़ायदीन्हों दोषन बिदेशीकरै कैसे कै पयानरी ५५॥

तथा। बूढ़के बढ़तकाम पावस सुखदधाम मेघ अभिराम श्याम बक व्योम उसके। भनत दिवाकर बिहङ्ग चोचा खोता खाइ करत बहार सुलहार लेत खुसके॥ देखि हरिआई भूमि गाइन हुलास होत रागकी प्रकास

वो त्रिकासकास कुसके। कुवसहरात घहरात घन छन
छन घन घन आली यह कौन चालीरुसके ५६॥

स०। जाइकेद्वारकाबैठिरहे जुलहेअबलाब्रजकीदुखभा-
री॥आवतमेघनयेउनयेजुगुनूदरसेसरसेनिशिकारी॥ को-
किलकूककरे हियहूक उलूकसोबोलतपीकपुकारी। आंसु
झरैंअँखियासेतिया छतियांकरकेबकेहाय बिहारी ५७॥

क०। श्यामसम बादर तड़ित पीत चादर से आ-
दरसे बात लगे मीठी घनघोरसे। छातीवनमालसे ल-
से हैं धनु देवराजमे तिनकी पांति बकबंशीटेर मोरसे॥
भनत दिवाकर सुआनन निशाकर से हीरन से जुगु-
नू धमारनके शोरसे। एरे पापी पावस अमावस के
राति अस कस अनुहारि पिय तोरे मन चोरसे ५८॥

स०। घहरानी घने घन घोरघटा करि शोर उठे ब-
हुमोरअटा। घनश्यामैमिले तिय ताहीसमै चलीदामि-
नीसी फहरै दुपटा॥ वाकेनैनघनेघने घालैंकटाक्ष भनै
भुवनेश सुकौनछटा। जनु बिश्व फतै करिबेके हितै फर-
कावै मनोभव भूप पटा ५९॥

क०। घहरि घहरि घनघेरि चहुँओर छाये छहरि
छहरि छबि शोभा सरसारैंरी। पवन झकोर जोर दादुर
मयूरशोर चोपभरे चारों ओर झिल्ली झनकारैंरी॥ एरी
मेरी बीर बनै धारत न धीर अब पातकी पपीहा पीव
पीवकै पुकारैंरी। यन्त्रको न धारैं अरु मन्त्रको उचारैं
जाते ताजिकै प्रवास मनमोहन पधारैंरी ६०॥

स०। बन बागनके प्रतिकुंजनमें घनी लोनी लवङ्ग

लता लहरैं। बसिकै नभमण्डल में भुवनेश भले क्षण जोन्हहियो थहरैं॥ बरषैं घन आंसुन ब्याजन नीर तऊ पै अधीर भये घहरैं। पपिहाऊ पिया रटलायो करैं मन मानुष को नहिं क्यों हहरैं ६१॥

तथा। चमकीसी फिरैं चपला चहुँघा द्युतिदन्तन की जबहीं सरसै। सुनिकै भुवनेश जु बैनसुधा सम कोकिल बोलनिको तरसै॥ यह मेरेही अंगनके परसादते पावस की सुषमा दरसै। लखिकै अलकैं घन आंसुन ब्याज बड़े बड़े बूंदन सों बरसै ६२॥

क०। गरजैं चहूंघा घनघोर मोर शोरकरैं लरजैं लतान वृन्द शोभा सरसाईहै। दामिनी दमाकैं जुरिजुगुनू चमाकैं कहुँ कोलिया दमाकैं भरी कूकैं सुखदाई है॥ मन अनुरागै प्रीति रीति उरजागै लखि इन्दुभटू रागै बन बागै छहराई है। अरज बिहारी पै हमारी भुवनेश येती मिलन योगुयेश पावसऋतु आई है ६३॥

तथा। पवन झकोरैं झकझोरैं झोरैं बुन्द बोरैं घने घनघोरैं घोरैं दौरैं चहुँओरैरी। बिज्जुछटा कोरैं बिन थोरैजी रसालकोरैं आवत अषाढ़ भारी ठौरैं ठौरैं खोरैं री॥ जोरैं प्रेम भोरैं चित्त धीरज बिथोरैं नाहिं मानत निहोरैं कान दादुर ये फोरैरी। तोरैलाज छोरैकुलकानि बरजोरैबीर मोरनकी शोरैं मोरैं मनहिं मरोरैरी ६४॥

स०। घूमिघने घुमरैं घनघोर चहूं चढ़ि नाचत मोर अटारी। त्यों द्विजदेव नई उनई दरशाति कदम्बनि की छविन्यारी॥ चूनरिसी क्षिति मानो बिछी इमि सोहति

इन्द्रबधूकी पत्यारी । काहि न भावति ऐसी समय ठकुराइनि या हरियारी तिहारी ६५ ॥

क० । चूनरी सुरंग सजिसोही अंग अंगनि उमंगनि अनंग अंगनालौ उमहति है । सौंध बैठि झांकती झरोखनिते कारीघटा चौहरे अटापै बिज्जुछटासी जगति है ॥ द्विजदेव सुनिसुनि शब्द पपीहराके पुनिपुनि आनँद पियूषमें पगतिहै । चावन चुभीसी मनभावन के अंक तिन्हैं सावनकी बूंदें ये सुहावनी लगति है ६६ ॥

तथा । सावनके दिवस सुहावने सलोने श्याम जीति रति समरबिराजै श्यामाश्याम संग । द्विजदेवकी सों तनु उघटि चहूंघारहो चुम्बनको चहल चुचात चूनरीको रंग ॥ पीतपटताने हरषाने लखैं लपटाने उमहिउमहि घनश्याम दामिनीको ढंग । रतिरन भीजे पैन मैन मद छीजे अरु रस बश होतऊ तनक पसीजे अंग ६७ ॥

तथा । कारो नभ कारी निशि कारियै डरारी घटा झूकन बहत पौन आनँदको कन्दरी । द्विजदेव सांवरी सलोनी सजी श्यामजू पै कीने अभिसार लखि पावस अनन्दरी ॥ नागरी गुणागरी सुकैसेडरै रैनिउर जाकेसंग सोहैं ये सहायक अमन्दरी । बाहन मनोरथ उमाहैं संगवारी सखी मैनमद सुभट मशाल मुखचन्दरी ६८ ॥

तथा । घहरि घहरि घन सघन चहूंघा घेरि छहरि छहरि बिषबुन्द बरसावैना । द्विजदेवकीसों अब चूक मति दाबि अरे पातकी पपीहा तू पियाकी धुनि गावैना ॥ फेरि ऐसो औसर न ऐहै तेरे हाथ येरे मटकि मटकि

मोर शोर तू मचावैना। हौंतो बिन प्राण देह चाहत तजो-
ई अब कतहिमरिशिमतू अकाश बीचधावैना ६९ ॥
तथा। घूमिकै चहूंघा धाय आवैंजलधर धार ताड़ित
पताके वांके नभमें पसरिगे। द्विजदेव कालिन्दी समी-
पनके नीपनके पात पात योगिनी जमातनते भरिगे ॥
चातक चकोर मोर दादुर सुभट जोर निजनिज दांवठांव
ठांवन सँभरिगे। बिन यदुराय अब कीजै कहा माय हाय
पावस महीपके चहूंघा घेरे परिगे ७० ॥
तथा। उमड़िघुमड़ि घनछांड़त अखण्डधार अति
ही प्रचण्ड पौन झूकन बहतुहै। द्विजदेव संथा कोला-
हलहै चहूंघा नभ शैलते जलाहलको योग उमहतुहै॥
बुधि बल जाको सोई प्रबल निशाको मेघ देखि ब्रज सूनो
बै आपनो गहतुहै। येहो गिरिधारी राखो शरण तिहारी
अब फेरि यहि बारी ब्रज बूड़न चहतुहै ७१ ॥
तथा। जबते हमारे प्राणप्यारे हैं पधारे उत धीर
नहिं धारेजात पीर हियमें जगैं। शीतल समीरभयो तीर
कालिन्दी के नीर बीर बलबीर बिनु नीर दृगते डगैं ॥
केशरी समान जब बिरह परैहै मान योग ज्ञान ये गयन्द
यूथ तबहीं भगैं। बोली कोकिलानकी करैहैं शूल हूल
हमैं ऊधो ये कदम्बनके फूल गोलीसे लगैं ७२ ॥
तथा। दूबरी भईहै देह कूबरी सनेह सुने ऊबरी न
शोकसिन्धु पाय ज्ञानबोहितै। रहीं अकुलाय हायकरैं
शिरको नवाय कहैं यदुराय रहे केतेदिनकोबितै॥ गाढ़
ये अषाढ़ देखि बढ़ति बियोगबिथा दामिनी दमक मोर

शोरहैं जितै तितै। आये घनश्याम काहू बामने सुनाई टेरि चौंकि चौंकि उठीं चन्द्रमुखी चहुँधा चितै ७३॥

तथा। सावन सोहावन या लागत भयावनसों आवन अवधि अब शोचैं गजगामिनी। ऐहैं कबहूंधौं बलबीर ह्यां कि नाहिं ऊधो कैसेधीरधरैं ये अधीर ब्रजकामिनी॥ जहां तहां योगनकी ज्योतिजगै ज्वाल जैसी यमकी जमातिसी जनाति जाति यामिनी। जारैहै पपीहरा पुकारै पीउपीउ टेरि घेरिमारैबादर दरेरि मारै दामिनी७४॥

तथा। लीने लेत ज्ञान कोऊ छीने लेत आनिबानि लूटेलेत कोऊहठि लाजके समाजको। द्विजदेवकीसों या अँध्यारीकी अँधाधुँधिमें लेत कोऊ कान्ह सुख सम्पति के साजको॥येरीमोरी तोहिं जऊ मानि मानदोषतऊसमय बिचारि कीजै ऐसे ऐसे काजको। तोहिं इतमानक अनादरन घेरो उत बादरन घेरोजाय जायब्रजराजको ७५॥

तथा। बरसतमेह नेह सरसत अंगअंग झरसतदेह जैसे जरत जवासोहै। कहै पदमाकर कलिन्दीके कदम्बनपै मधुपनकीन्हो आय महत मवासोहै॥ ऊधोयह ऊधम जतायदीजो मोहनको ब्रजसों सुबासो भयो अगिन अवासोहै। पातकीपपीहा जलपानको न प्यासो कह्यो ब्यथित बियोगिनि के प्राणनको प्यासोहै ७६॥

तथा। सोहत सुभगबैल बाहन बिमलतन बिशद बकालीशेषहार लपटायोहै। सादरसों लाय वर बादर बिभूति अंग दादुर उमंगधुनि डमरू बजायोहै॥ कारी घटा गजछाछधारा जटाहै बिशाल दामिनी छटा त्रिशूल

सुन्दर सुहायोहै। काटिहै कलेश मोद दैहैरी भटू बिशेष धरिकै महेश वेष सावन लखायोहै ७७॥

तथा। केकिनके नाचगान कुहूकूक कोकिलकी रटनि पपीहराकी नामधुनि ठानीहै। बूंदनके पात अलिलोचन स्रवतजात जाततृणजात पुलकावलिनिशानीहै॥ माल है विशाल बकपांतिनकी दीनदयाल बारिबाह नये बृन्द बन्दना बखानीहै। झलाझलझल चपलाकीद्युति ध्यान भई पावस न होय भक्तिकला प्रकटानीहै ७८॥

तथा। घनकी घनकघनघटा घनकत आलीदामिनी दमक देत दीपक प्रकासहै। बूंदनके फूल जाल धनुलै बिशाल माल आये झुकि मेघ सो प्रणामको हुलास है॥ मोरनके शोर चहुँओर बिनय दीनदयाल पवन झकोर चोरकरैं आसपासहै। पूजन करत प्रीतिरीति प्रकटाय यह पावस न होय परमेश्वरको दासहै ७९॥

तथा। श्यामछबिधरेफिरैं धुरवा धरणि छैरी इन्द्र-धनु पीतपट पटक दिखायोहै। दामिनी दमक द्युतिदेत देत चोर सोई कुण्डल अमोल लोल गतिचमकायोहै॥ बिशद बलाकनकी पांति बनमाल अलि मन्द मन्दमेघ बांसुरीलो स्वर गायोहै। आवन अवधि रही प्यारे मन-भावनकी सावन सुहावन सों साज सजि आयोहै ८०॥

तथा। पावसमें जागि अनुरागिरी सरोज नैन रैनि दिनदेत उपदेशको मनोज मुनि। नन्दके किशोर बिन कैसे रहै जीव छिन पीउपीउ होति पपिहाकी चहूं ओर धुनि॥ अंग थहरानलगे लता लहरान लखि सांख नाहिं

धीर पीतपट फहरानलगि । घटा घहरान छिन छटा छह-रानलगी हियो हहरानलगो झरि झहरान सुनि ८१ ॥

तथा । आली प्राण गाहक बकाली ये बलाहकमें दाहकसी जगैं पीर इन्द्र गोपगनते। धीरधरै वीर किमि पेखि शुनासीर चाप उठत समीरले कलापतपलनते ॥ ठौर ठौर मोरनकी कोर चहुँओर चितै हिये बरजोर ह्वै मरोरछिन छनते। दामिनी दमकदेखि उठीबरि कुंजवाम लखि घनश्याम झरिलगीरी दृगनते ८२ ॥

तथा । पावस न प्यारीचढ़ो सैनसाजिमैनभारी कोकि-लानकीब नौल धौल धुजाबकमाल । बन्दीजन मोरगन बुंदजोर बान घन दादुर निशानदेत दीह दीहनदीताल॥ प्यारेके निरादरते कादर करनिहारे कारे कारे धूम धारे बादर हिरद जाल। दामिनी दमकपर बालकी चमक शाल करति विहाल हमें वाल बिना नन्दलाल ८३ ॥

तथा। झूमत झुकत झूमिझूमि घूमिघूमिचले भ-ामसों भिरत मनो बलके उमंगये । बारबारगरज सुनावैं बरजे न जाहिं नहीं हैं उदारधार मदके तरंगये ॥ दन्त बकपांतिते डरावै विन कन्त भारे अंकुश समीर होन मानें कारेरंगये। करिये सहाय आय या छिनमें श्याम घन होहिं न सघनघन मदन मतंगये ८४ ॥

तथा। सांझहूंसकारे झनकारे होत नदीनारे पावस के मांझ झांझ झिल्लिन तजतये। दामिनी मशालको दिखावै तालदादुरदै मोर चहूँओर नाचनाटको सजत ये ॥ धुरवामृदंगनकी धीर धुधुकारठानै राते नैन माते

कलगानको भजतये। शोकको जनम ब्रजओक में भयो है ऊधो सांवरे बिरहते बधाये बजतये ८५॥

तथा। सावन सुहावन बिशेखि नभधनुलेखि यादि होति झटपट पीत अभिरामकी। तकि मृगपांती बिलपाती अकुलाती मति आवति सुरति वह मौलसिरीदामकी॥ मोरचहुँओरदेखि मुकुट सुरतिहोति चपलाचमक देखि कुण्डल ललामकी। ऊधो ब्रजबाम कैसे धीरधरैं सूनेधाम लखिघनश्याम सुधिआवै घनश्यामकी ८६॥

तथा। सांचीकहै रावरेसों भांवरेलगे तमाल आवै जेहिकाल सुधि सांवरे सुजानकी। फूल भार भरी डार जैसे यमजार ऊधो कालिन्दी कछार सजै धार ज्यों कृपानकी॥ चपला चमकलगैं लूकहै अचूकहिये कोकिलकुहूक बरजोर कोरवानकी। कूकमोरवानकी करेजाटूकटूक करैं लागतिहै हूक सुनि धुनि धुरवानकी ८७॥

तथा। पावसमें नीरदै न छांड़ै छिन दामिनिहूं कामिनी रसिक मनमोहनको क्यों तजै। अचलापुरानी पुलकावलीको आनी उर धाय रजवती सरि सिन्धु संगको तजैं॥ नीरको नपुंसक कहत कबिधीर सबै होयकै अधीर तेऊ नारी नारीको भजैं। कुसुमित लतालखो लपटी तमालनसों लालनसों कहौ ऊधो क्यों न अजहूंलजैं ८८॥

तथा। कलनपरहिये कन्हैयाकी सुगैयालखे चलन समैयामें ललनकह्यो आवनो। औधिआस श्वासरहीं प्यासअधरामृतको आयोयह सावनो न आयोमनभावनो॥ पीरेबादुकूलकी सुरति आयेशूलउठै कूलकालिंदी

को हूल लागत डरावनो। पावस रसम देखि दहत अ-समबाण ऊधो क्यों खसम कह्यो भस्म चढ़ावनो ८९॥

तथा। गये कहि आवन न आये यहि सावनमें ऊधो मनभावन भुलायरहे हैं तहीं। ह्वैरहीं बिहालबालब्रजकी गोपालबिना रैनिदिना नैनते अपार धारह्वैबहीं॥ बैठि जन पुंजठाम यमुना निकुंजधाम छांड़ि श्यामपाहि ह्यां सुहातनाहिं है कहीं। गरजैंहैं घनघोर लरजैंहैं बन मोर नन्दके किशोर सुनि अरजै अजौंनहीं ९०॥

तथा। ऐहैं कबहूं धौं हरि कहौ तुम सूधो ऊधो ब्रज की बधूटी जूटी बूझतिहैं वेरि वेरि। देहको परस स्त्रु सरस सनेह वह होयगो दरस घनश्याम को कि नाहिं फेरि॥ आयोयह सावन न आये मनभावन क्यों लगोहै डरावन मनोज जनु फौजघेरि। दूमैं द्रुमडारछोर झूमैं पिक बरजोर घूमैं घनघोर मोर जूमैं चहुंओरटेरि ९१॥

तथा। जादिनसे प्राणरखवारेने पधारे ऊधो तबते हमारे उर भारे खेद दैंसबै। कोकिल कुहूकहूकलगै वि-ज्जुकलालूक टूकटूककरैं हियो मेघ गरजैंजबै॥ घेरदुख सैनमति धीरजसकै न धारि आवत न चैन दिन रैनिमनमैं अबै। पैहैं सुख नैन मम लखे सुषमाके ऐन आये सुख दैन यह बैन सुनिहौं कबै ९२॥

तथा। गुंजरनलागीं भौंर भीरैं केलिकुंजनमें कैलि-याके मुखते कुहूकानि कढ़ैलगी। द्विजदेवतैसे कछु गहब गुलाबन ते चहकि चहूंघा चटकाहट बढ़ैलगी॥ लागो सरसावन मनोज निज ओजरति विरहीसतावन की ब-

तियांगढ़ैलगी। होनलागी प्रीति रीति बहुरिनई सी नवनेह उनईसी मतिमोहसों बढ़ैलगी ६३ ॥

तथा। होयरहीं हरीहरी ब्रजकीसकल भूमि फूलनके भारझूमिरहीं द्रुमडारीहैं। लहरैं कलिन्दनन्दनी की नीकीलसे नभ उमड़ि घुमड़िरहीं घटाघुरवारीहैं॥ प्यारी मनमोहनजू झूलत हिंडोरेजहां सुरभि समीर धीर चले सुखकारी हैं। प्रेमबश भीजत फिरतफेरि बरषा में बनमें बिहार करैं राधिकाबिहारी हैं ६४ ॥

तथा। जोबन प्रवेशमें बिदेश मधुसूदन जी निपट अँध्यारीकारी सावनकी यामिनी। यकटक रटत पपीहा पिक नीलकंठ हियो चमकत दमकत ज्यों दामिनी॥ सूनी सेज मन्दिर में सुन्दरी बिसूरै बैठि प्रीतमसुजान बिन कैसे जिये भामिनी। नैन भरिढरै मुखहरेहरे करै हाय उछरि उछरिपरै कामभरी कामिनी ६५ ॥

स०। घनघोर घटा चहुँ ओर चली चिनगी जुगनू चमकावनोहै। मुरवानके कूकअचूकहिये सहि हूकमहा पछितावनोहै॥ मनमाहिं सदामुददम्पति के बिरही जन ताप तपावनो है। अलि सावन में मनभावनते रहि दूरि महापछितावनो है ६६ ॥

तथा। चाहचढ़ी चितमें हितकी उत कोनहुके रसमें अनुरागे। लेतनहीं सुधि देत महादुख ये घुरवा मिलि आय अभागे॥ कौलौं रहौं धरि धीर कृपानिधि बोल उराहनके कढ़लागे। बेलीलगी गरबृत्तनके पियदक्षिण ह्वै परदेश में पागे ६७ ॥

क०। आयो ऋतुपावस प्रताप घनघोरभारी सघन हरीरी बन मण्डन बढ़ायेरी।कोकिल कपोत शुक चातक चकोर मोर ठौरठौर कुंजन में पक्षी सब छायेरी॥ यमुना के कूल औ कदम्बनकी डारनपै चारोंओर घोरझोरमोर-न मचायेरी।एरीमेरीबीर अबकैसेकै मैं धीरधरों आये घनश्याम घनश्याम नहिं आयेरी ९८॥

तथा। श्वेत श्वेत बकके निशान फहरानलागे ईंचि ईंचि चपला कृपाण चमकायेरी। घहरन भुशुण्डी की अवाजसी करन लागे बुन्दन के झरनन झीने झरलाये री॥ भनत प्रताप रतिनायक नरेशजू ने धीरगढ़ तोरिबे को पावस पठायेरी। एरी मेरी बीर,अब कैसेकै मैं धीर धरों आये घनश्याम घनश्याम नहिं आयेरी ९९॥

स०। आपसमें, चपला चखचुंधित चौंकि अचौंकि भुजान भरेंगे। साहसकैं रसकैं मुसकैं सिककैं बसहीत-ल ताप हरैंगे॥ पी परदेश करे हियपीर अधीर भये हम हाय जरैंगे। पावस में पियप्यारी प्रमोदित कोऊ बि-लासी विलास करैंगे १००॥

तथा। सोइगई पछिरात मैं आज तहीं मनमोहन आइगयोरी। तौलौं घनेरी घटा लखि के इन मोरन शोर मचाइ दयोरी॥ ऐसो वियोग दयो विधना सखि सापनेहू न सँयोग भयोरी। कासों कहा कहिये नँद-राम भयो उर सौगुनो शोच नयोरी १०१॥

शरदऋतुके कवित्त व सवैया ६॥

क०। अम्बरअमलहोत चन्दकी बढ़तज्योति खं-

जनकी गोत मानो परी आइ नाकते। भनतद्विवाकर तरं- ङ्गगङ्ग स्वच्छभयो उग्यो है अगस्त जल सूखे जनु सांकते॥ जहँ तहँ पथिक चलन लागे चारोंओर शरदनरेश कियो तिय पिय छांकते। दिनतो बितत संग सखिन हितत सतराति ना कटत बिनुश्याम चन्द्रांकते १॥

तथा। दीपदान देवन दिवारीको चढ़ाते सब जुआ खेलिदम्पति हिये में हरषाती है। बेश्यागन रसिक रि- झावैं कै शिंगारदेह मुखमुसुकाति हरे राग बरषाती हैं॥ भनत दिवाकर अटापै घाट बाट गेह रोशनी तमाम चहुँ कोन दरशाती है। प्यारो ब्रजराज बिनपापी द्विजराज सखी राति ये दिवारीकी अराति सम आती है २॥

स०। शीत समय परदेश को पीय पयान सुन्यो वह रोवनलागी। याऋतुमें हरिक्योंहूंरहैं घर देवता पूजि मनावन लागी॥ और उपाव लख्यो न कछू तब साजि कै बीन बजावनलागी। प्यारी प्रबीण भरे स्वर मेघ मलार अलापिकै गावन लागी ३॥

क०। फूले आसपास कास बिमल अकाश भयो रही न निशानी कहूं महिमें गरदकी। गुंजत कमलदल ऊपर मधुप मैन छापसी दिखाई आनि बिरह फरदकी॥ श्रीपति रसिकलाल आली बनमाली बिन कछु न उपाय मेरे दिलके दरदकी। हरद समान तन जरद भयो है अब गरद करत मोहिं चांदनी शरदकी ४॥

तथा। मन्द मुसुकाति चन्दज्योतिमें उदोतिहोति कुन्द में दिखावै द्युति दशन रसालकी। खंजन लखा-

वै कान्ह नैन मनरंजन से पानिलौं सुहावे कला कंजन बिशालकी ॥ भौंरनकी गुंजपुंज मंजुल मँजीरनसी हँसनि चलावै गति श्यामके सुचालकी । आयोरी शरदकाल दरद बढ़ावनको जरद करैहै हमें शोभाधरि लालकी ५॥

तथा। तारागण भूषण सघन अङ्ग अङ्गनने बसन मयूखनसों रहीलोनी लसिकै। दन्त कुमुदावली चमक चारु चोरैचित्त जोरे मुखचन्दको सुमन्दमन्द हँसिकै॥ मालती सुगन्ध सनी शालती हियेमें साल रहे नँदलाल कहूं याकेख्याल फँसिकै। शरद बिभावरी न होय सुनि बावरी तू दांवरी लियोहै यह सौति श्याम बांसिकै ६॥

तथा। डोलै नभबीथिन में बोलै धरि मौनव्रत भये सित भूति लाये रहे तित छजिकै। जीवन द्विजनको दै जीवन मुकुटहोय बनेहैं बिमल बाम चपलाको तजिकै॥ दीजैनहिं दोष एक ऐसे अलि ऊधव को श्यामभये बाम अब करो जो गरजिकै। नीरद शरद के दरददलि देश देश करैं उपदेश येऊ यतीवेष सजिकै ७॥

तथा। रतनजटित त्यों घटित घर चारों ओर दरन दिवारन किवारन मुदाये हैं। परदा पसम के असम के पड़ेहैं गोल गेंदवा गलीचन गिलम गुदवाये हैं॥ मंजु कवि आतश अँगीठी धूप धूम धूम धूम झूम झूम शुचि सौरभ सुहायेहैं। केलि कलक्रीड़ा व्रीड़ा हँसन बसनद्युति दम्पति दिपति दिव्य शीत सिसराये हैं ८॥

तथा। चन्द्रमा प्रकासनमें चन्द्रमुखी हासन में अवनि अकासन में कासन में छाई हैं। नन्दराम तालनमें

इन्दी बनमालन मैं चंचरीक जालन मैं अधिक अमाई है॥ माइत्रकाकी डारिनमैं मालती कियारिन मैं फूली फुलवारिन मैं सौगुणी सोहाई है। कासकैसी खेतिनमैं बालुकासमेतिन मैं सूरसुता रेतिनमैं शरद समाईहै ९॥

तथा। हैरही तयारी महारानी रासमण्डलकी मल्लिका व मालती सो तहां अमित अगारहैं। कहैं नन्दराम गई सरी सेत सारी साजि गोपकी कुमारी हिये हीरनके हारहैं॥ षोड़श कला सों आजु उदित कलाधरहै चांदनी के भारनसों छोड़े अभिसारहैं। सेत चांदनीमें सेत चांदनी धँदोवा तने मानो क्षीरसिन्धु परे पारा के पहार हैं १०॥

तथा। षोड़श हज़ार बाल षोड़श शृंगार साज़ि षोड़श बरषवैस मुदित बिहारहै। बाहुन सों बाहु जोरि मोरि मोरि अंगनसों कीन्हो महामण्डल अखण्डल अपारहै॥ कहै नन्दराम तैसे तार औ सितारामिलि चूरी खनकार स्वरपंचम उचारहै। भूतलादिशान बिदिशान आसमानहूलों छम छम छाई घुंघुरूकी झनकारहै ११॥

हेमन्तऋतुके कवित्त व सवैया ७॥

क०। ओकओक लोकसब करत कलोलनिशि कोकन कोशोक भो कलानिधि को काफांसो। भनत दिवाकर लगावत अतरअंग बारत हुताशन डरपके बराफांसो॥ राजा औ अमीर पशमीनाके बहारलेत मोजरा बरंगना करावत इजाफांसो। आयो ये हेमन्त कन्तलहत अनन्त सुख सन्त जड़सेनलेत जगत जुराफांसो १।

तथा। पलपल दिनदिन यामिनि घटन लागी भामिनी जगन लागी यामिनी एकन्तमें। भनत दिवाकर सँयोगिनी सुखीनी कीनी दुखिनी बियोगिनी लगीनीं हंसहन्तमें॥ घरधरधरधर बाजत कपाट फट सटपट सेज पै मजेज छबिवन्तमें। सखी यह पाखमें जो आयो ना हमारोकन्त होंगे प्राणअन्त नहिंपायके हेमन्तमें २॥

तथा। अगरकी धूप मृगमदको सुगन्धबर बसन बिशाल जाल अंगढांकियतु हैं। कहै पदमाकर सुपौन को न गौनजहां ऐसेभौनउमँगि उमँगि छाकियतुहैं॥ भोग औसँयोगहित सुरतहिमंतहीमें एतेसबसुखदसुहायेबाकियतु हैं। तानकीतरङ्ग तरुणापन तरणि तेज तेल तूल तरण तमूल ताकियतु हैं ३॥

तथा। छाई है हिमन्त बात तन्तकी बतायदेत अन्तको बराय जिय अन्तको न जाइये। द्विजबलदेव कहै कसकहि दूरिकरि कामकी कलोल कान्ह कामद मचाइये॥ अतर तमोल तेल तूलनके तुंगसाजि तातीसी सोहाती सेज तापै इतआइये। करतहैं आनताजि मान को समान नेकमानिये प्रमाण निशिभानु उरलाइये ४॥

तथा। छाइ शीतलाई मुरझाई कलाकुंजनकी मानो मनरंजनकी पाइकै जुदाई है। कापै कहिजाई दिनहूंकी लघुताई जनुरही ललताई लखि प्रीति सकुचाई है॥ रैनि अधिकाई भयो बिरह सहाई तासु शीत चहुँघाई बिनु मीत भीति धाई है। पीर सरसाई फूले सरसों सरसभाई हिमऋतु आई ना कन्हाई सुधिपाई है ५॥

तथा। तुलसीलसी सुअंग अतिसे उमंगदेति जासु मैन बास योगीजन बिलसन्तहैं। शीतल सँवारैं उरकलादरशाय करि जातन बिलोक शोक कोक बिलपन्त हैं॥ जासुकी बिभावरी बिशालखो दीनद्याल मित्ररूप सबहीके सुखद बसन्तहैं। किधौं हैं हिमन्तके सुतन्तसित सन्तसभा किधौं सुषमा लसन्त कमलाके कन्तहैं ६॥

तथा। सूर ऐसे सूरको गरूररूरो दूर कियो पावक खिलौना करदियो है सबनको। बातनकी मारहीते गात की भुलातसुधि कांपत जगत जाकी भय आनमनको॥ गिरिधरदास रातलागै कालरातकीसी नाहिंसों लगत भामराखत चरनको। आयो है हिमन्त भूमिकन्त तेजवन्तदीह दन्तन पिसावतो दिगन्तके नरनको ७॥

तथा। कंजना सुखाये ये सुखाये रंजमनही के शीत ना वढ़ाई नीत प्रकटीसमन्तहै। रात ना अधिककरी रति अधिकाई भाई दिन ना घटायो कर्मबासना तुरन्तहै॥ गिरिधरदास पौन शीतल असहहैन प्रेमके प्रबाह जग चलन टरन्तहै। राधिकाके कन्तको भगत मतिमन्दहै कि ब्रज शीतवन्त ऋतु प्रकट हिमन्तहै ८॥

तथा। अतिही अराम दैन ऐनको अराम अभिराम आठौ ओर ओरयो ऐश अवलनमें। आसन अनूप आप ईशहैं अनीश जापे अच्छि अवलोकिहै उदासी अम्ब जनमें॥ गिरिधरदास एको उपमा न आवतहै ईंगुरसी आछी अरुणाई अधरनमें। अगधर इन्दुमुखी ओजसो अमल ऐसे लसे अननसे अजब अगहनमें ९॥

तथा। भावन लगी है अंशुपावन प्रभाकरकी छावन लगी है गति शीतकी दिगन्तमें। रात अधिकानी दिन ह्वानी त्यों प्रतक्षभई सृष्टि सियरानी है गरमसललसन्त में॥ कहै तोष हरि सजू सूहेरंग अंगपट चाहत उमंग कन्त कामिनी इकन्तमें। सेवैं भाग्यवन्त मदमादकल-कन्त सुख श्यामाकोअनन्त छबिवन्त या हिमन्तमें १०॥

तथा। चारोओरमोर बैठे दावचारोओरन लों ज्यों मनमथराखोहिमनदुहाईमें। जावक अरगजाके तिलक बिराजरहे भागभरेभागनकी जगमगताईमें॥ अलक च-मर घनश्याम बाजे नूपुरादि बँटत हँसन अवलोकन बधा-ई में। थिर चर ऐसोराज देखो देखो सखी आज दुहुँन रजाईपाई एकही रजाईमें ११॥

स०। नवल निकुंजवनो रसपुंज चहूंदिशि हेम बि-तान है तानो। आछेपरे परदा मखतूलके तूलको चारु बिछायो बिछानो॥ केलिकरें गिरिधारनजू सँगलै तिय को मध आतशखानो। पावकही की शिखानके संग अनंगहि पावक पूजत मानो १२॥

तथा। सेजसजाई रजाईसमेत जहां तहँ आई प्रिया जो सुअन्तकी। गाढ़ सुराहै तुरन्त अँची तब कीनी शुरू कछु बात इकन्तकी॥ त्यों हरितोषजू सो हँसकै रसकै चसकै सिसकै छबिवन्तकी। हूलै हिये झुकझूलै सुसूरति भूलै नहीं हमैं केलि हिमन्तकी १३॥

क०। आयो है हेमन्तजोरजाड़े के प्रसंगनसों रेशमकै झंगनमैं अंगनदुरायेदेत। कहैनन्दराम त्यों हमामहूं न

कामसरै धामधाम आला पौन पालाकों उसाये देत ॥ तूलपेटपीठिन अँगीठिनमें डीठिलगी तरुनी बिहीन तन कम्प सरसायेदेत। दोगुनो कहौतौ चितचौगुनो चुरात हेरि नौगुनो न सौगुनो समीर शीतनायेदेत १४ ॥

तथा। आसवनिशाला भलभौनकिनिकालादेत प्यालापरप्याला तौहूंशीत सरपेटेलेत। कहैं नन्दरामजरैदीपनकीमालालगे पेचिया बिशालाधूमधाला अरपेटेलेत॥ दोहरेदुशाला ऊनशाला छौनशाला पट्टशाला कीटशाला छीटशालागरपेटेलेत। बंदकियेताला तोपेतूलकेमसाला उरलागे वेशवाला तौनपाला भरपेटेलेत. १५ ॥

शिशिरऋतुके कबित्त व सवैया ८ ॥

क०। गिरेव्योमबरफ़ झरफ़ के सनाका चले मखमली गादीचाँदी पेंचुआ लगेरहे। भनत दिवाकरदुशाला वो बिशाला आला हरतकशाला रसख्याला ते पगे रहे ॥ छाती से लगाय छातीताती कुचथाती मिसि मैन मदमाती करमाती में जगेरहे। शिशिरके शीतकेत भीत समशीतचीत जीतलेत पाला जो सुबालाके सँगेरहे १ ॥

तथा। सीरीभयो जल सुसमीर थलसीरी भयो सीरी आसमान बानपान सीरी परिगे। भनत दिवाकर बसन वो दसनसीरी बदन सदन बन सीरी सब करिगे ॥ सुन्दर दुकूलसीरी तूल फूलमूलसीरी पूल धूलराहवाह सीरीसमठरिगे। शिशिरके शीत यह कीन्हो है अनीत इत थीत है उरोज एक सीर संग लरिगे २ ॥

तथा। गुलगुली गिलमैं गलीचा हैं गुनीजन हैं

चिकैं चिराकैहैं चिरागनकी मालाहैं। कहैं पद्माकर हैं गजक गिजाहू सजी शय्या हैं सुरा हैं सुराही हैं सु-प्याला हैं॥ शिशिरके पाला को न व्यापत कसाला तिन्हैं जिनके अधीन एते उदित मसालाहैं। तान तुक तालाहैं विनोदके रसालाहैं सुबालाहैं दुशालाहैं विशा-ला चित्रशालाहैं ३॥

तथा। माणिक महलमें प्रमाणिक बिछाये सेज हीरन के हार तेजसेजपै धरेभले। द्विज बलदेव त्योंही कंचन लतासी बाल पूर मनमोद कै कपूरपंगमें मले॥ अमित अरामै भोग देत बसुजामें अरु शीतके तमामैं ते समा मैं जायकै जले। शिशिरकी सीकरन सोई है बशीकरन हीकरन हेतु पिया तोकरतहैं गले ४॥

तथा। पटुसों छपावै परछिद्रन को आठों याम अति अभिराम जगपूरैं जन कामरी। जासुसंग पायकै उमंग माहँराते सब माते गुणगावैं शुभराग रंग बामरी॥ ल-खो या सुमनरहे हरि अनुरागिरटै दुज शाखाबर बाग जासु धामरी। शीतल सुभाय चित्तयाके मित्रहूको ध्याय सिसिरिभै सज्जन न सज्जनभे श्यामरी ५॥

तथा। सोहैंसरसोंहैं सरसोंहैं सरकारिडारैं नैनलगैं सरसोंहैं बिरहीको दिनरातिहै। अम्बर सुहावै औ प्रभावै बरही की बरसीकर परत निशि सब को सिराति है॥ गावतहिंडोलैं गर नागरी गरीयगिरा कहूंकहूं कोकिल की काकली सुनाति है। चन्दन दिखात कहूं दीनद्याल बन्दन मैं निन्दतिहै पावस कै शिशिरसोहाति है ६॥

तथा। विश्वनाकँपावतहै कांपति घनीसी आय सी-
सीना करावती करतअतिदीनाहै। रदनाबुलावतहैं रद
निज पीसेसोई चन्दना स्रवत मुखचन्दको पसीना है॥
गिरिधर दास पीरो खेतना शरीर यह कंज मुरझायेना
निगाह भूमि लीनाहै। लेतसीरीसांसेंकर श्यामसों प्रथ-
म रति शिशिर न एरी यह नागरी नवीनाहै ७॥

तथा। बाहर गयेते घर आवन लगे हैं लोग घर के
बसैयन पयान कियो साफ़ासो। ज्ञानिन को ज्ञान अरु
ध्यानिन को ध्यान मान मानिन को मान फास्यो मृगमद
नाफ़ा सो॥ ग्वाल कवि कहै प्याला वाला ये दुहून ही
में सबहीने जान्यो ठीक आनँद इज़ाफ़ा सो। जोमदार
जीवन को जोम को जगैया बड़ो आयो अब जाड़ो ज-
ग करन ज़ुराफ़ा सो ८॥

तथा। गाले अति अमल भराले तोशकोंमें फेर ऊ-
पर गलीचे जाले डाले बिछवाले अब। सेजपर सेज-
बन्द ख़ूब खींचवाले खाले पान रसवाले औ गजक स-
जवाले सब॥ ग्वाल कवि प्यारी को लगाले लिपटा ले
अंग ओढ़िकै दुशाले में मजाले सिसिकाले जब। मं-
जुल मसाले मिले सुराके रसाले पीले प्याले पर प्याले
मिटैं शीत के कसाले तब ९॥

तथा। आलरंग रंग के तनाले दरवाजनमें परदेमुँ-
दाले वेझरोखे ज्यौंन आवैपौन। चारोंओर गरम गुदाले
बिछवालेगाले डाले धूप अगर अँगीठीदहकाले भौन॥
मंजुकवि खाले जरा गजक चढ़ाले मद बीड़ियां चबाले

भरी बिबिध मसाले जौन । भुजन फँसाले तियउर लि-
पटालेअरे दुबकिदुशाले ये कसाले तूमिटालेक्यौंन १० ॥
तथा । सोने की अँगीठिन में अगिन अधूम होई
होइ धूम धार हूतो मृगमद आला की । पौन को न गौ-
न होय भरक्यो सुभौन होय मेवन के खौन होय उब्बि-
यां मसाला की ॥ ग्वाल कबि कहै हूरपरी से सुरंगवारी
नाचती उमंग सो तरंग तान तालाकी । वालाकी बहार
औदुशाला की बहार आई पाला की बहार सें बहार ब-
ड़ी प्याला की ११ ॥
तथा । झर झर झांपे बड़े दरदर ढांपे तऊ थर थर
कांपै मुख बाजत बतीसी जात । फेर पशमीनन के चौ-
हरे गलीचा तापै सेज मखमली बिछी सोहू सरदीसी
जात ॥ ग्वाल कबि तैसे मृगमद सों धुकाये भौन ओढ़ि
ओढ़ि छार भार आगहू छपी सी जात । छाको सुरासी-
सी तौलौं सीसीना मिटैगी जौलौं कुच उकसीसी छाती
छाती सों न मीसीजात १२ ॥
तथा । बिबिध बनातैं कीमखाबकी कनातैं तामें दी-
रघ दुचोबेहैं सिचोबे हक हद्दी में । चांदनी है चोबन पै
परदे दरीचन में दोहरे दुलीचेहैं गलीचे गोल गद्दीमें ॥
ग्वाल कबि भांति भांति भोजन हैं भामिनी हैं दीप हैं
दुशाला हैं मसाले मैनमद्दीमें । चापकै चुहद्दीसाज सेज
पै बिहद्दी बैसकरै सीतरद्दी तब डूब्योजाय नद्दी में १३ ॥
तथा । सुघर सजाई कोठरीनमें बिछाई सेज छतपि-
छवाई छाई गमक कहा कहों । मृगमद कुंकुम सिंचाई

बीरी कीचभाई नशाकी पिलाई इनहूंते शीतना दहों॥ कहीं धधकाई कहीं मीठी अँगीठीकी आंच कहींतोउढ़ाई दुशालाते कसाखालहों। कहैनाथ होईहै जाड़ाको भ-जाई जबै तेरी या रजाई में रजाई ते दबकिरहों १४॥

तथा। सुभगपलंगपै बिराजै नाथ साथसब बिबिध शिंगार साजि जेती पुरबाला हैं। ओढ़िकै दुशालाउरकं-चुकी बिशाला ओढ़ि मोतिनकी माला हीर हारहू बिशा-लाहैं॥ कंचन अँगीठीसों सुमीठी मीठी धूमउठै मनुकाम श्यामहेत रच्यो धूमजालाहैं। शोभन भनत एते उदित मसालाजामें तामें बिच केलिकरैं ओढ़िकै दुशालाहैं १५॥

तथा। शीशाके महलबीच कहल हिमाचलकी पहल हुलाई वर्फ चहल कमालामें। चन्दन सों लागतकुरंग सार अंगनमें अनल अँगीठी जिमि बारिहौदशालासों॥ लागत गलीचाऊनशीतल सिवार तूल दीपक नक्षत्ररघुनाथ रसथालामें। बालाउर बीचजात मालासी जुड़ात जात पालासम लागत दुशाला शीतकालामें १६॥

तथा। चिड़िया चुहुचुहानी रजनी बिहानी जानीप्र-कटी प्रभात बानी गोपिनके गीतमें। कालिदास औचक सी सेजते उतरि प्यारी अनल लगाई चली चितै नव-नीतमें॥ गात अँगरात अलसात अलबेली भांत भाव-तो तजो न जात शिशिरके शीतमें। फेर परयंक पर ओ-टमर ओढ़ि पटपीतमैं लपटि लपिटाय रही पीतमें १७॥

दोहरेकाफ़ियेकेकवित्त व सवैया ६॥

क०। कहाकहों प्यारेजू बियोगमें तिहारेचित्त बिरह

अनललूक भरकि भरकि उठै। कैसेकै बिताऊं दिन जो-
यनके हाहा काम करलै कमान सोपै तरकि तरकि उठै॥
भूलै नाहिं हँसनि तिहारी हरिश्चन्द तैसी वाकी चितवनि
हिय फरकि फरकि उठै। बेधि बेधि उठत विषीले नैन
बाणमेरे हियमें कटीली भौंह करकि करकि उठै १॥

तथा। आजु कुंजमंदिरमें छकेरंग दोऊ बैठे केलिकरैं
लाज छोड़ि रंगसों जहकि जहकि। सखी जन कहत
कहानी हरिचन्द तहां नेहभरी केकीकीर पिकसी चहकि
चहकि॥ एकटक बदन निहारे बलिहारलैलै गाढ़े भुजभरि
लेत नेहसों लहकि लहकि। गरे लपटाय प्यारी बारबार
चूमि मुख प्रेमभरी बातैं करैं मदसों बहकि बहकि २॥

तथा। एरी प्राण प्यारी बिन देखे मुख तेरो मेरे जिय
में बिरह घटा घहरि घहरि उठै। त्योंहीं हरिचन्द सुधि
भूलत न क्योंहूं तेरी लाबो केश रैन दिल छहरि छहरि
उठै॥ गड़ि गड़ि उठत कटीले कुचकोर तेरी सारी सो
लहरदार लहरि लहरि उठै। सालि सालि जात आधे
आधे नैन बान तेरे घूंघटकी फहरानि फहरिफहरिउठै३॥

तथा। करकर आयो जब स्वर स्वर नीर बाढ्यो भर
भर बाज्यो ढोल घर घर जान्यो है। दरदर दौर्‍यो जाय
नर नर आगे दीन बरबर बकत न नेक अलसान्यो है॥
शरशर शोधे धन तरतर तोरै पात जरजर काटत अ-
धिक मोद मान्यो है। फरफर फूल्यो फिरै डरडरपै न मूढ़
हरहर हँसत न सुन्दर सकान्यो है ४॥

तथा। जगमग पग तजि सजि भजि राम नाम काम

क्रोध तन मन घेरि घेरि मारिये। झूठ मूठ हठ त्यागि जाग भाग सुनि पुनि गुण ज्ञान आनि आनि बेरि बेरि डारिये॥ गहि ताहि जाहि शेष ईश शोध सुर नर और वात हेत तात फेरि फेरि जारिये। सुन्दर दरद खोय धोयधोय बारबार सार संग रंग अंग हेरि हेरि धारिये ५॥

स०। कै यह देह जराय के छार किया कि किया कि किया कि कियाहै। कै यह देह जमीं महँ खोद दिया कि दिया कि दिया कि दियाहै॥ कै यह देह रहै दिन चारि जिया कि जिया कि जिया कि जियाहै। सुन्दर काल अचानक आय लिया कि लिया कि लिया कि लिया है ६॥

तथा। भाजन आयगढ़्यो जिनने भरिहैं भरिहैं भरिहैं भरिहैं जू। गावत है जिनके गुणको ढरिहैं ढरिहैं ढरिहैं ढरिहैं जू॥ आदिहु अन्तहु मध्यसदा हरिहैं हरिहैं हरिहैं हरिहैं जू। सुन्दरदास सहायसही करिहैं करिहैं करिहैं करिहैं जू ७॥

क०। हटकि हटकि मन राखत जु क्षण क्षण सटकि सटकि चहुँओर अब जातहै। लटकि लटकि ललचाय लोल बार बार गटकि गटकि करि बिषफल खात है॥ भटकि भटकि तार तोरत महीनकर भटकि भटकि कहूँ नेक न अघातहै। पटकि पटकि शिर सुन्दर युगनहारि फटकि फटकि जाय सुनो कौन बातहै ८॥

तथा। जोई जोई देखै कछु सोई सोईमन आय जोई जोई सुने सोई मनहीको भ्रमहै। जोई जोई सूंघे जोई

खाय जो सपर्श होय जोई जोई करै सोई मनहीको कर्म है॥ जोई जोई गृह जोई सोई सोई त्यागी सोई सोई अनुरागी सोई मनहीं को श्रमहै। जोई जोई कहै सोई सुन्दर सकल मन जोई जोई कलमें सोई मनहीको धर्महै९॥

स०। सोवत सोवत सोयगयो शठ रोवत रोवत कै बेर रोयो। गोवत गोवत गोयधस्यो धन खोवत खोवत तैं सब खोयो॥ जोवत जोवत बीत गये दिन बोवत बोवतलै बिषबोयो। सुन्दर सुन्दर राम भज्यो नहिं ढोवत ढोवत बोझहि ढोयो १०॥

क०। उमड़िघुमाड़े घन आवत अटानचोट छन घन ज्योति छटा छटकिछटकि जाति। शोरकरैं चातक चकोर पिक चहुँओर मोरग्रीव मोरिमोरि मटकि मटकि जाति॥ सावनलौं आवन सुनोहै घनश्यामजूको आंगनलौं आय पाये पटकि पटकि जाति। हिये बिरहानलकी तपनि अपार उरहार गजमोतिनको चटकि चटकि जाति ११॥

तथा। बैठे हैं अमली सबपीसतहैं भांग कोई छानत हैं कोई तहां पीवैं मन पूरिपूरि। कहैं रससिन्धु फेरि खातहैं अफीम कोई गालवा चुमावैं कोई ठाढ़े भये दूरि दूरि॥ मलत तमाखू कोई पीवत हैं हुक्का ऐंठि चाटैं मुख श्वान आय भये वह सूरिसूरि। कोई के चेहरापर भिनकै हैं माखी आये भये सब नशामें जो देखो यह चूरिचूरि १२॥

तथा। लांबी लांबी लटैं लोनी लटकत लङ्कलौलौं लीकलागि लोचन उड़त झकझोरि झोरि। छूटि गये

सकल शिंगार हार टूटि गये लूटि गये लपटि भुअंग अंग कोरिकोरि ॥ सकुचि सयानी अँगरानी प्राण प्यारे बाल प्यारे यशवंतके निकट तन तोरितोरि। तोरितोरि चितहित जोरिजोरि लाड़िलेसों छोरिछोरि कंचुकी जँभात मुख मोरिमोरि १३ ॥

तथा। आयो ऋतुराज आज देखत बनैसी आली छायो महामोद सो प्रमोद वन भूमि भूमि। नाचत मयूर मद उन्मद मयूरनि को मधुर मनोज सुख चाखैं मुख चूमि चूमि ॥ पण्डित प्रवीण मधु लम्पट मधुप पुञ्ज कुञ्जन में मञ्जरी को लेतरस घूमि घूमि। हेलीपौन प्रेरित नवेली सी द्रुमन वेलि फैली फूलडोलनि में झूलि रही झूमि झूमि १४ ॥

तथा। अमल अनार अरबिन्दन को वृन्दबार बिंबाफल विद्रुम निहारि रहे तूलि तूलि। गेंदा औ गुलाब गुललाला गुलावास आब जामें जीव जावक जपा को जात भूलि भूलि ॥ फेरन फबत तैसी पांयन ललाईलाल ईंगुर भरे से डोल उमड़त झूलि झूलि। चांदनी सी चंदमुखी देखौ ब्रजचंद उठैं चांदनी बिछौना गुलचांदनी सी फूलि फूलि १५ ॥

स०। सुनिबोल सोहावन तेरेअटा यह टेक हिये में धरौंपै धरौं। मढ़ि कंचन चोंच पखौवन में मुकताहल गूंदि भरौंपै भरौं ॥ सुख पींजर पालि पढ़ाइ घने गुण औगुण कोटि हरौंपै हरौं। बिछुरे हरिसोहिं महेश मिलैं तुहि काग से हंस करौंपै करौं १६ ॥

क०। छूटी शिवशीशते प्रचण्ड तेजधारा धसी काटत अघ ओघन के पातक हितै हितै। कहैं प्राणनाथ गंग तेरीही तरंग देखि गये स्वर्गलोक सब पातकबितै बितै॥ सुरसरि महारानी की महिमा बखानै कौन वेद औपुराण यश गावत नितै नितै। यम आगे पाप रोवैं पाप आगे यमरोवैं चित्रगुप्त आप रोवैं कागज चितै चितै १७॥

स०। जबते दरशे मनमोहनजू तबते अँखियां ये लगीं सो लगीं। कुलकानि गई सखि वाहि घरी जब प्रेम के फन्द पगीं सो पगीं॥ कहैं ठाकुर नेह के नेजन की उर में अनि आनि खगीं सो खगीं। तुम गांवरे नांवरे कोऊधरो हम सांवरे रंग रँगीं सो रँगीं १८॥

क०। आश करि आयों हुतो मैया पास रावरे मैं गांठहू के पास दुख दुरि दुटि दुटि गे। कहै पद्माकर कुरोग से सँघाती तेऊ गैलमें चलत घूमिघूमि घुटिघुटि गे॥ दगादार दोय दीह दारिद बिलाय गये फिकिरिके फन्द बिनछोरे छुटिछुटि गे। जौलौंआउँ आउँ तेरेतीर पर गंगा तौलौं बीचही में मेरे पाप पुंज लुटिलुटि गे १९॥

तथा। जलभरे घूमैं मानौं भूमैंपरसत आइ दशहूदिशानि घूमैं दामिनी लये लये। धूरिधार धूसरित धूम से धुंधारे कारे धारे धुरवानि धावै छबि सों छये छये॥ श्रीपति सुजानकहैं घरी घरी घहराइ तावत अतन तन ताप सों तये तये। लालबिन कैसे लाज चादररहैगी अब कादर करत मोहिं बादर नये नये २०॥

तथा। कियो जब क्रोध मातु चढ़िउ कै सिंह माहिं

असुरन फाख्योहिय जियहोय धक्कधक्क। खैंचिकै कृपाण हस्त लीन्हों जब मातुकाली माख्यो भटयोधन को पेट फाख्यो भक भक॥ लीये खून खप्परहै बिन्दुनाहीं जाय पावै पियै मातुकालिका औ युद्धकरै जकजक। रुंडअरु मुंड मेरे लोटनी पसारे भूमि कहै रामलाल काली खून पियै चक चक २१॥

तथा। दमकेदशौंदिशा लुनालीड्योढ़दामिनिके घन के नगारे भारे उर उलझन के। झनके झनाक झुण्ड झींगुर बिगुर बाजै सनके समीरतीर शक्रशरासनके॥ सनके समर मद्र मेचक्र झिलमधारे ठनके नकीबदर्प दादुर दमनके। मनके नदनके बिन कामिनी कदनकेये आये बीर बादर बहादुर मदनके २२॥

तथा। घहर घहर घहरात चहुँवाले घेरि सघन सघन घनघूमि बरसतहै। छहर छहर छहरात क्षिति मण्डलपै छूटिछूटिबुन्द छर्राछर्राको छरतहै॥ भहर भहर भहरात भौनभीति भारी भीतिभारी भारती के भौनहूं भरत है। थहरथहर थहरात गेरोगात आली प्यारो बिजयानन्द बिदेशमें बसतहै २३॥

तथा। न्यारी होहु नीरते तो देहिं चीर ऐसी सुनि न्यारी भईं नीरहूतेतीरमें कढ़ेकढ़े। कहैं गिरिधारी दंत कसन बसन श्याम रसना पिरानी हाहाबिनती पढ़ेपढ़े॥ सीत जो मही के बीचनीचे करिपावती तौ कौतुक दिखावती बिनोदन बढ़ेबढ़े। छीनिलेती अम्बर पीतम्बर समेत अब कहौं कान्ह बातैंजू कदम्मपै चढ़ेचढ़े २४॥

तथा । कारी अँधियारी रैनिबिजुली चमकै ऐनदादुर के बैन मेघ बरसत फुहूंफुहूं । पौनकीझकोर झोरझिल्लिनके शोर घोर चातक चकोर मोर कुहुकत कुहूंकुहूं ॥ ताहि समय सुखकारि छाती से लगायो प्यारे आंशू चलै लागे प्यारे नैननसे लुहूंलहूं । मसकि मसकि प्यारो ज्यों ज्यों लपिटात जात त्यों त्यों मुखमोरि मोरि करत उहूं उहूं २५ ॥

तथा । लिपटि लतासी परयंकपटिया मों रही डोलै ना डोलाये कर पांयन दुहूं दुहूं । केती केती बातन सों हरिजू बुझाय हारे कोकिलाकि नाई प्यारी कुहुकै कुहूं कुहूं ॥ मेरी ओर फेरमुखबीराहू न खात काहे उर से लगायेकर बोलत सुहूंमुहूं । मसकिमसकिप्यारो ज्यों ज्यों लपिटातजात त्योंत्यों मुखमोरिमोरि करत उहूंउहूं २६ ॥

तथा । जोरिजोरि जोरि दृग मोरि मोरि मोरिमुख चोरि चोरिचोरि चित चषनि चितैगई । झुकिझुकि झांकनि झरोखा झांकिझांकि जात ताकिताकितीछनसे तीरतन दैगई ॥ सुमतिप्रबीण सुखचन्दसोंउदोतहोत मृदुमुसकानि सें चकोरचित्तकैगई । लुकि लुकिलोचन सकोचन सों हेरि हेरि लगीसी लगायकै लपेटि मनलैगई २७ ॥

स० । यों अलबेली अकेली कहूं सुकुमार शिंगारन कैचलै कैचलै । त्यों पदमाकर एकनके उरमें रसबीजनि बैचलै बैचलै ॥ एकनसों बतराय कछू छिन एकनकोमन लैचलै लैचलै । एकनकोतकि घूंघुटमें मुखमोरि कनैखिन दैचलै दैचलै २८ ॥

तथा। तुम्हरेई लिये ब्रज बीथिनमें फिरके बिन देखे तई तो तई। नहिं काहू कि खोरि है यामें कछू दई मोहिं व्यथाजो दई तो दई॥ हनुमान इती बिनती है सुनोबिछुरै निशिमेरी गई तो गई। उनहींको लगाओ लला छतियां हमको बदनामी भई तो भई २९॥

क०। लटकि लटकि मेघबारि झहरान लगे तड़पि तड़पि बिज्जु करै रव घोरि घोरि। फैली हरिआई नीर बिहरी बहूटी बीर पापी सर सरिता करार जल छोरि छोरि॥ भनत दिवाकर बरस बायु झूंकि झूंकि झांकि झांकि बिपिन बिटप देत झोरि झोरि। वही कालबाल ब्रज सांवरो पियाके सेज कुच चुभकाति मुसक्यात मुख मोरिमोरि ३०॥

स०। बिन भेदन भेदन जाने कछू मतिकी अनुसार लही सो लही। नहिं बेदपुराणकी रीति कछू अनरीतिकी टेक गहीसो गही॥ समझाय नहीं समझै गुरुके गुरु को अपमान लही सो लही। यह तामस ज्ञान अनन्य भनै पुनि मूरख गांठि गही सो गही ३१॥

क०। ब्रजमें बसंतराग बागमें बसंत बन बेलिनबसंत सरसंत आमबौरमें। भनत दिवाकर समीर नीर तीर तीर बनिता बसन्त कर दीन्हें और तौरमें॥ ठौर ठौर कोकिल को बोल अनमोलभयो बगरोबसन्त है सलिंदनके झौरमें। और और लौर लौर घर घर जहँ तहँ कियोहै बसन्त सलसन्त सब दौरमें ३२॥

तथा। चंचरीक चंचलकै गुंजत निकुंज जहां चहूं

चारु चमकैं चमेली फूलि फूलिकै। तहां एक दीनयाल सांवरो लख्यो रसाल आवत मतंगचाल चलो झूलि झूलिकै॥ मन्द मुसुकानि वीच एरी चितखींचि लियो नाहिं ठहरात जात गात भूलि भूलिकै। इच्छन हैतीछन निरीछनकीकोर बांकी उठैंवरजोरमेरे हिये हूलि हूलिकै ३३॥

तथा। जादिनते मोतनकालिन्दी तटजातछैल इन्दीवर दृगनिते देख्यो मुरिमुरिकै। तादिनते पीर दीनयाल किमिधरों धीर विरहागिदहेअंगरहेचुरिचुरिकै॥ अरी भटू गड़ीहै कटीली वह दीठि मोहिं सुपने लखाति फेरि जाति दुरिदुरिकै। वाकेनैन ठगन ठगोरीडारिभोरी करि मेरो चित्त वित्त लूटिलीनो जुरि जुरिकै ३४॥

तथा। आजराधे रावरे को आनन विलोक्यो घनश्याम तुम प्रेमकी घुमारीसी धराधरै। रतिकीरमाकी उरवशीकी तिलोत्तमाकी दीपति दसाकी धाम राखीहै धराधरै॥ दीपको दवायकै सरोज संकुचायकै सो आरसी निकाई ताकी बाँधिहै बराबरै। छाई रतनाकर छपाय कै प्रभाकरको छूटिके छपाकरके ऊपर छरापरै ३५॥

तथा। मुखों रुख फेरेदेति घूंघुटन छोरेदेति चूमियोनभोरेदेति बदन मयंककी। लाजतेन चूनरी लपेटति नगोवै हरे हरे गरे रोवै हिठै हिलकि न अंककी॥ भनत कविन्द्रलाल करके परसहोत धरते मिटै न सरसाई बाल शंककी। जकरि जकरि जंघै सकरि सकरि परै पकरि पकरि पाणि पाटी पर्य्यंककी ३६॥

तथा। चन्दकी मरीचिकान तोरि विधुराय दीन्हों

कैधौं हीरा फोरिकै कनूका धरि धरि गये। कैधौं काम मन्दिरकी झंझरी बनाई बिधि कैधौं सोनजुही के पुहुप झरिझरिगये॥ कामिनी मनोरथ के आलबाल शिवनाथ मैनख मतंगमाते बेलिचरि चरि गये। अमलकपोलनपै दाग नहीं शीतलाके डीठि गड़ि गड़ि गई गाड़ परिपरि गये ३७॥

तथा। कञ्चनके खम्भदोऊ सुरँग रँगायडांड़ी मरुवा पिरोजा लाल पटुली खरी खरी। सोरहू शिंगार किये झूलति है चन्द्रमुखी पहिरे सरसहार चमकै खरीखरी॥ खन आसमान जाय धरती लगाय पाय फहरात चीर ताहि दाबति घरीघरी। कहै बुध राम को है नायका नबेली ऐसी मानो आसमानते बिमानलै परीपरी ३८॥

तथा। लाल बनमाललाल बेंदी भाल लाल लाल योवनकी ज्योति औ कपोल लाल लाल हैं। अंगलाल रंग लाल संगकी सहेली लाल लाल पान बीरी मुखअधर लाल लालहैं॥ लालत्लाल चन्द्र चांदनी प्रकाश लाल लाल लसैं लाल संग ग्वाल बाल लाल लाल हैं। गोपाललाल लाल रहस रच्यो वृन्दावन कुंजलाल येते सब लाल में गोपाल लाल लालहैं ३९॥

तथा। चितैचितै चहुँ चमकत चञ्चल चपल चातुरि चकृत चौंकि चमकि चमकि उठै। औझकिउझकि झुकि झुकि झझकिझझकि झिल्ली झनकारनसों झमकि झमकि उठै॥ भुवनेश भरतदरारैं दबेदादुरन देखिदुरि

देखिदेह दमकि दमकि उठै। बरही बलाकनि बिलोकि बद्दलनि बर बिधुबदनि बनिता बमकिबमकि उठै ४० ॥

तथा। चोथते चकोरैं चितचोरैं चहुंओरैं चेति चकित चितचिंता सों चमकि चमकि जात। भुकि झझकोरिझोरि झटितझरोखे झांकि झारिझार झौरन सों झमकि झमकिजात ॥ भुवनेश लोनेलोने लोचदार लोचननि ललितलतान लखि लमकिलमकि जात। तपित तरुनितिय तीषेतनतापनिमैं ताकिताकि तारापति तमकितमकि जात ४१ ॥

तथा। कामअरुक्रोधलोभ मोहमदमातसर्य इनकी ज़ँजीरन को जारिहै पै जारिहै। कहै पद्माकर पसारि पुण्यचार्‌यो और चार्‌यो फलधामनमैं धारिहै पै धारिहै॥ छोमछल छन्दनको बाढ़े पाप बृन्दनको फिकिरि कुफन्दनको फारिहै पै फारिहै। एकैबार बारिजिन गङ्गाको पियोहै तिन्हैं तारनि तरंगिनी या तारिहै पै तारिहै ४२॥

तथा। झिल्लीझनकारैं पिकचातकी पुकारैं बनमोरन गोहारैं उठैंजुगनू चमकि चमकि। घोर घनकारे भारे धुरवा धुरारेधाम धूमन मचावैं नचै दामिनी दमकि दमकि॥ भूकन बयारी बारिलूकन लगावैं अंग कूकन भभूकन सों औरमों खमकि खमकि। कैसेरहैं प्राण प्राण प्यारे यशवन्तबिन छोटी छोटी बूँदनसों बरसैं झमकि झमकि ४३ ॥

तथा। नैननि मरोरिनीर नेसुकनिचोरिदंत अधरन दरेरिकै आई फिरि खोरिखोरि। अंग झकझोरि झोरि

भृकुटी सिकोरि कोरि मन मन भनति कछूक मुख मोरि मोरि ॥ कंचुकी सुछोरि छोरि नीके करकंजसों कुंजनि द्वो रैदुहुं जंघनको जोरिजोरि। भोरहीकहांधौं भभरिभामिनिभौनबैठीभरतिउसासैं भुवनेशतृणतोरितोरि ४४॥

तथा। गोहन तजैगो तवरूसै मतिमोहनसों मानिनी गुमानछांड़ि बरज्योंमैं बेरिबेरि। मानीनाहिं रंचऊबिरंच वस वानी मन जाते दहै हियो कियो सोई अबफेरिफेरि॥ तजीहै गुपाल बाल भई है बिहाल हाल हरीहरी करिकै मुरुछिपरीटेरिटेरि। छकी है छबीली छैल छोह मोह छाकनिसों लगी धकधकी थकी कुंजनिमैं हेरिहेरि ४५॥

तथा। करति कलोल गहि चूमति कपोल लोल नथ अनमोल वोल बोलतिहै रसकी। त्योंत्यों पीय हीय लपटायके दिवाकरजू दोऊकुचछातीसों लगायकर मसकी॥ घसकि घसकि मुख फेरि फेरि हेरि हेरि लचकि लचकि कटि छोड़ति न चसकी। कोकके कलान ते करति बिपरीतिरति सोरह शृंगार किये सोरह बरसकी ४६॥

तथा। नीलपट पहिरि अँध्यारी में सिधारी नारि यारकर झोर गलमेले बांहरुखते। बैठि परयङ्क अङ्क लायकर कुचगहि मसकि करतकेलि हेलि हेलि सुखते॥ उछरि उछरि फंद सरस अनंदकंद लोट पोटह्वैके बोली मंद मंद मुखते। मानो ढिगपरासि रसोइया दिवाकरजू तूरितूरि रोटी झट खात जात भुखते ४७॥

तथा। नीरते निकरि कर तरनीतनूजा तीर तरनी प्रणाम करो दोऊकर जोरि जोरि। भनत दिवाकर सुन-

त बेपरद बात नेक सतराति मुसकाति मुख मोरि मो-
रि ॥ प्रीतिकियो गोपीजन गुपुत तिहारो संग होतना
परायो पति यतन से कोरि कोरि। चढ़े जो न होत का-
न्ह कदम की डारपर करसे मरोरि वंशी चीरलेती छो-
रि छोरि ४८ ॥

स०। करि हैं करि चाव कहा वै सबै हम श्यामपैचित्त
दई तोदई। भुवनेश नहीं परवाह कछू बदनाम हमैं जो
कई तोकई ॥ भयोकाह कहो इन बातनसों कुलकी कुल-
कानि गई तो गई। उनको कहा लागति है सजनी हम
सों लटीबात भई तोभई ४९ ॥

क०। भादों भरे सर बहैं नदी नारे घर घर धरा पै
मेघ झरि झरि झरतिहै। भरि भरि नयननि मैन मारी
हारी बरि बरि अरिअरि बीरबीरबीर मैं कहति है ॥ धरि
धरिदेखो कर हियो होत धरधर थरथर कांपै धरधीरना
धरति है। हरिहरि जीव जात देखेलत्ता हरिहरि हरि
हरि हर हर रसना रटति है ५० ॥

स०। मधुरी मुसक्यानि मनोहर मैं मतिमेरी जुआ-
नि ठगी सोठगी। अरु ये गहबीले गुलाब के पात से
गातन दीठिलगी सो लगी ॥ सजनी बहिनेहमई बति-
यानिते कामकी ज्योति जगीसो जगी। अबकोऊ कितो-
ऊ कहैं सजनी जुहौं श्यामके रंग रँगी सो रँगी ५१ ॥

क०। नैननकी कोरसों मरोरि तन तोरि तोरि जोरि
जोरि नेहप्रेम कोर कोर बैगई। नासिका सिकोरि रस
तिनकासो बोरिकर लटकन लटक चटाक चोटकै गई ॥

कहत प्रताप रागरंगकी तरंगनसों जंगन बजायकै अ-
नंग अंग दैगई। कटिमटकाय दैदैतालै औ बताय नथ
भूमि झूमि झुमका झिकोरि मन लैगई ५२॥

तथा। बरसै पुनरबसु धराहै उदारा जहँ इन्द्रगोप
गोपिकाली फिरैं घूमिघूमिहैं। द्विज हरषावैं पय प्यावैं
चहुँ ओरनितें अम्बर सुहावैं शिखिआवैं जूमजूमिहैं॥
चपला सहित वसुयाम जामैं घनश्याम गति अभिराम
अतिचलैं भूमि भूमिहैं। चहूंघा तमालै हैं कदम्बै तालैं
दीनद्याल पावसरसालै कै बिशालै भूमिभूमिहैं ५३॥

तथा। रोषकरि पकरि परोसतें लैआईघरै पीको प्रा
णप्यारी भुजलतनि भरै भरै। कहै पदमाकर ये ऐसीदोष
को जो फिर सखिन समीप यों सुनावति खरै खरै॥ प्यो
छल छिपावै बात हँसि बहरावै तिय गदगद कंठ दृग
आंसुन झरै झरै। ऐसी धनधन्य धनी धन्यहै सो वैसो
जाहि फूलकी छड़ीसों खरी हनत हरै हरै ५४॥

तथा। दोऊ छबिछाजतीं छबीली मिलि आसन पै
जिनहिं बिलोकि रह्यो यातन जितैजितै। कहैपदमाकर
पिछौंहैं आय आदरसे छलिया छबीलो कत बासरबितै
बितै॥ मूंदेतहांएक अलबेलीके अनोखे दृग सुदृग मि-
चाउ नेक ख्यालन हितैहितै। नेशुक नवाय ग्रीव धन्य
धन्यदूसरीको औचकऔचकमुखचूमतचितैचितै ५५॥

तथा। मंजुल मलिन्दगुंजैं मंजरीन मंजुमंजु मुदित
मुरैली अलबेली डोलैं पात पात। तैसेई समीर शुभ
शोभै कविद्विजदेव सरस असमशर बेधतबियोगीगात॥

चोथती चकोरिनी चहूंधा चारु चांदनीन चाख्यो चांई चतुरचकोरते चहचहात। धीरना धिरात चित्त चौगुनी पिरातआली कन्तबिनहायदिनऐसेई सिरातजात ५६ ॥

तथा। शोचिकै सकोचि अति लाजन संभारि तन आंगनके पास आय आय घूमिघूमि जाति। छिनैव तैसेई मलिन्दनकी सुनिसुनि बैठेहूं बियोगिनी व्यथासों भूमि भूमि जाति॥ वाकी ऐसी दशा देखि बार बार आईभीच बीचही बिचारिचवखटचूमिचूमिजाति। लह लही ललित लवंग लतिकासी बाल ख्यालहीते पौनके पै ढूमिढूमिजाति ५७ ॥

तथा। सजि ब्रजबाल नँदलाल सों मिलै के लिये लगनिलगालगिमैं लसकिलसकिउठै। कहैपदमाकरवि-शगऐसीचांदनीसी चारोंओरचौकनिमें चसकिचमकिउ-ठै॥ भुकिभुकिभूमिभूमि भिलझिलझेलझेलझरहरी भांपनमें झमकिझमकिउठै। दरदरदेखो दरीखाननमें दौरिदौरि दुरिदुरि दामिनीसी दमकिदमकि उठै ५८ ॥

तथा। सोसनी दुकूलनिदुरायेरूप रोशनी है बूटेदार घांघरीकी घूमनि घुमायकै। कहैपदमाकर त्यों उन्नत उ-रोजनपै तंगअंगियाहैतनी तनिनतनायकै॥ कुंजनकी छांह छकि छैलके मिलैकेहेतु छाजती छपामें योंछबीली छबि छायकै। छैरही छरीहै छरी फूलकी छरीसी छपि सांकरी गलीमें फूल पांखुरी बिछायकै ५९ ॥

तथा। कानसुनिआयसु सुजान प्राणपीतमको आ-लि सखियान सजे सुन्दरिके आसपास। कहै पदमाकर

सुपन्ननको हौजहरे ललित लनालव भरे हैं जल बास बास ॥ गूंदि गैंद गुल गंज गौहरन गज गुल गुपतगुलाबी गुल गजरे गुलाबपास। खासे खसबीजन सुखान पौन खाले खुले खसके खजाने खसखाने खूबखास खास ६० ॥

स०। धीरधरे न मलै जमलै तनु ताप दुरै न पुरैनके पातन। त्यों द्विजदेव कपूरकी धूरन जातनवाकी व्यथा जलजातन ॥ ऐसिये श्याम सुनी कुशलातहौं छज्जन छज्जन छातन छातन। बूढ़िनकी अरु बारिनकी ब्रजकी युवतीन के बातन बातन ६१ ॥

क०। जकिजकि जातगात लेखनी लखत नैन थकि थकिजात पेखि पङ्कज के पातरी। भरिभरि आवैदेह नेह के झकोर जोर करिकरि आवत न क्योंहूं सुखबातरी ॥ येरी मेरी बीर पीर बिरह बिथाकी अंग कैसेहू न काहूसों कछूक कहिजातरी। कीजे कहा राम काम बैरीकी अकल मोहिं झूंठेहू सँयोगको न योग दरसातरी ६२ ॥

तथा। ताकिये तितै तितै कुसुमसों बुकोईपरै प्यारी परबीन पांउ धरत जितै जितै। कहै पदमाकर सुपौन ले उताली बनमाली पै चली यों बाल बासर बितैबितै ॥ भारहीके डरन उतारि देति आभरन हीरनके हार देति हिलिन हितै हितै। चांदनी के चौसर चहूंधा चौक चांदनी में चांदनीसी आई चन्द चांदनी चितै चितै ६३ ॥

तथा। सजनलगी है कहूं कबहूं शृँगारनको तजनलगी है कहूं एतब सवाँरीकी। चखन लगी है कछू चाहपद-

।कर त्यों लखन लगी है मंजु मूरति मुरारी की॥ सु-
दरगोबिन्द गुण गननलगी है कछु सुनन लगी है बात
।कुरे बिहारी की। पगनलगी है लगी लगन हिये सों नेकु
।गन लगी है कलूपीकी प्राण प्यारी की ६४॥

तथा। लचकै ललित लंक मचकै उरोज ऊंचे हचकै
।मेल तिय हिय न परै परै। नैननको चापधरै मंदमुख
।ासकरै फिरिफिरि अंकभरै मिलत गरैगरै॥ श्रीपति
।ोहात बारिजात से बदनपर रूपसरसातरूरे मुकतालरै
।रै। मेरे जान कातिक को पूरण मयंक पर चहुँघा न-
खत माल गेरत हरैहरै ६५॥

तथा। कविपजनेश केलि मन्दिर चिराग माल पन्न-
नके परम प्रभासी प्रभा फूटिफूटि। हीरन जटित जेब-
दार परयंक पर दोऊ रहे रति विपरीत सुखलूटिलूटि॥
ढुरद ढुरेफन के ढुरते ढरत स्वच्छ सुमन गुलाब दल
छबियुत छूटि छूटि। प्रफुलित कंज दल दीरघ दृगी के
मृदु मुख महताब तेपरी से परैं टूटिटूटि ६६॥

तथा। मुखौरुख मोरेदेति घूंघरो न छोरेदेति चूमिबो
न भोरेदेति वदन मयंक की।लाजन ते चूनरी लपेटति
नगवै हरै रै गरै रोवै हटै हिलकीन अंक की॥ भनत
कबिन्द लाल कर को परस होत धरको मिटै न सरसाई
बाल शंक की। जकर जकर जांघैं सकर सकर परे पकर
पकर पान पाटी परयंक की ६७॥

तथा। लांबी लांबी लटैं लोनी लटकत लंक लौलों
लीक लागी लोचन उड़त झकझोरि झोरि। छूटिगये

सकल शृंगार हार टूटि गये लूटि गये लपटि भुवंग अंग कोरि कोरि ॥ सकुचिसयानी अँगरानी प्राणप्यारी बाल प्यारे यशवन्त के निकट तृण तोरि तोरि । तोरि तोरि चित हित जोरि जोरि लाड़िले सों छोरि छोरिकं-चुकी जम्हात मुख मोरि मोरि ६८ ॥

तथा । वारिधि विरह बढ़ो गोपिन हिये अभङ्ग दुख के तरङ्ग उठैं अङ्गनि लहकि लहकि । रूपहो मसालसा-सुन शिवनाथ साथ बिन छिनै छिन लालसा रही हैं वे ललकि ललकि ॥ लगी टकटकी नैनछकी प्रेम छाकनि सों जकीसी वियोगी बैन बोलहिं बलकि बलकि । बूड़ो ब्रज चाहत मँझार नन्द के कुमार मीननते घुनीधार धा-वति ढलकि ढलकि ६९ ॥

तथा । शवरे बियोग सुनो सांवरे कृपाके ऐन राधा नैनते नदी चली तरंग जोरि जोरि । दापकरि धाई शोक सिन्धु के मिलाप हेतु ऊरध समीर नीर रह्यो झकझोरि झोरि ॥ तृणके समान गुरुजनके सकोच बहे ढहे हैं नि-मेष तट लाज तरु तोरि तोरि । परी भीर भारी गिरिधा-री कीजिये सहाय बासवलों चाहति बहायो ब्रज बोरि बोरि ७० ॥

स० । बरशंभु जटातजि भागीरथी मथिसागर मध्य धसी सो धसी । करिकोटि प्रकार बुझावै बुझै न शिला में कृशानुकसी सो कसी ॥ अब होनी जो होय सो होय प्रताप मयंक में लङ्कलसी सो लसी । मृदुमूरति सुन्दर सांवरे की अबतो उरबीच बसी बसी सो बसी ७१ ॥

क०। दौरिदौरि देविन सनावति मयङ्कमुखी होरि होरि आलिनके पांयन परति है। घोरि घोरि चंदन करतथार शिवनाथ बोरि बोरि बाती घृत आरती सरति है॥ तोरि तोरि गजमणि की माल चौक पूरतिहै छोरि छोरि भूषण निछावरि धरति है। कोरि कोरि अंजन लगायो दृग कोरन लौं जोरि जोरि सेज घिरि भावरी भरति है ७२॥

स०। सोहन श्याम सरोजन सी इन नैनन नोक नई सो नई। बस धोखेइ मैं अधराधर कंज अली रस चाटलई सो लई॥ निज कोमल प्राण प्रताप निरे निर्दयी के हाथ दई सो दई। अब मांगति हौं करजोरे यहै घर जाहु लला जो भई सो भई ७३॥

क०। छाय रहे चारों ओर नाद सब यंत्रनके गावतीं नवेली ललितादि सब गोरि गोरि। गति सों नई नई न्रत्यत सुढंग आछे लेत त्यों सुरपंचचल ताननन तोरि तोरि॥ भनत प्रताप अहगन नचाय आय मुरि मुसक्याय घूमि जात चित चोरिचोरि। देखि देखिनूठन अनोखी ऐसी माधो जीको बारबार राधा मुसक्यात मुख मोरिमोरि ७४॥

तथा। लोनी लोनी अलकैं बिलोकती कपोलन पै बिन्दुभ्रम आभा मुख झलकत है लोरिलोरि॥ नैनरत नारे नागबेली के बदन भीने बिगलित गिराश्रेणी प्रेम रस बोरि बोरि॥ पीवत पिवावत मधु भूमत हँसत अरु गावत हैं लावत प्रताप अंक जोरिजोरि। देखि देखि

विकल मदनवश माधोजीको बारबार राधा मुसक्यात मुख मोरिमोरि ७५ ॥

तथा। गोरे गोरे गातन गोराई की झलक झलकत दामिनी दमकवारों अंगप्रति कोरि कोरि। रोमरोम भीनेरंग मदवो मदनदोऊ घूर्णते चखनअंग लोमझकझोरि झोरि॥ भनत प्रताप यह भूतल मरोरि मोरि छोरि छोरि आंगी जूंभलेति तनु तोरि तोरि। जोरि जोरि लोने लोने नैन द्वै के माधो जीसों बार बार राधामुसक्यात मुख मोरि मोरि ७६॥

क०। एकतो जगे दूजे मधुकी खुमारी छाई तीजे शीतल समीर करे मंदरस बोरिबोरि। चौथे ये बसंत राजे कुसुमित निकुंज मंदिरतीर कालिंदीके लेत चितचोरिचोरि॥ भूमि भूमि लेटत उठत मन बिहँसत घूमत प्रताप राते नैन तनु तोरि तोरि। भोरकी अनोखी ऐसी दशा देखि माधो जीकी बारबार राधा मुसक्यात मुख मोरिमोरि ७७॥

तथा। सोरहू शृँगार नोखी घूंघुट किनारी द्वार उर बीचब्रीड़ा आतंक कछु थोरिथोरि। अंग थहरात मुख मण्डल प्रस्वेद मंडित नैनन मनाय हाहा खात बिधि कोरिकोरि॥ भनत प्रताप केहूं काहू को लखात नाहिं हारे हैं अपार प्रेम सिंधु मध्य पोरिपोरि। देखि देखि सांवली सखीरी रूप माधोजीको बारबारराधा मुसक्यात मुख मोरिमोरि ७८॥

स०। इन नैननमें वह सांवरि मूरति देखत आनि

अरी सो अरी। अबतौ है निबाहिबो याकोभलो हरि-चंदजू प्रीति करीसो करी॥ उनखंजनके मदगंजन सों अँखियाँ ये हमारी लरीं सो लरीं। अब लोग चवाव करैं तो करैं हम प्रेमकेफन्द परीं सो परीं ७९॥

तथा। तुम चाहो सो कोऊ कहो हमको नँदवारे के संग ठई सो ठई। तुमहीं कुल बीनें प्रवीनें सबै हमहीं कुलछांड़ि गई सो गई॥ रसखानि ये प्रीतिकी रीतिनई सो कलंककी मोटैं लई सो लई। यहि गांवके वासी हँसौ सो हँसौ हम श्याम कि दासी भई सो भई ८०॥

क०। रूपकी अपार राधा ठाढ़ी निज सद्मार जाकी छबिपरि रति वारिये सो कोरि कोरि। मोहिं देखि नेक वह लजाय के ढढ़ाय भौंह बाजी चितवनि मांझि लीनी चित चोरि चोरि॥ मोरि मतरे मोह जमुहान अंगरानी पुनिआलस बलित नैन बटुरारे ढोरि ढोरि। नीठि नीठि गई भौन भीतर सरोजमुखी डीठि सों मिलाय डीठि नीकै नहु जोरिजोरि ८१॥

तथा। नैन नवनागरके तलसे तुरंग अंग छबिकी तरंग यह रंगन धरैंधरैं। मदन प्रवीन तिन्हैं फेरिबो सधावतहैं घूंघुट की ओट ऐसे कौतुक करैं करैं॥ कीने चाह आंबगी सों चूकिकै चपल तिपरोई उड़ोहै तेउमंग सों भरैं भरैं। लाज बागबस तरफततांई भरे करत खुदी सी पग धरत हरैं हरैं ८२॥

तथा। अति अभिराम श्याम रतिमंदिरमें विहरत उमंग अनंग रंग भरि भरि। नखदान रददान चुंबन

अधरपान आलिंगनकरत अनेकभाय भरिभरि ॥ सुरति के आरंभही लजावती सखी निपटलजाय जियगई कहूं ढरिढरि । ढाढ़स हिये में गहि निधड़क ह्वै लाज कै आय ठाढ़ीभई निपट ढिठाई ढीठ ढरिढरि ८३ ॥

तथा। केलिकला कुशल कुरंगनैनी पिकबैनी जाकी छविपर सौतिवारिये करोरिकोरि । सैननसों पागी अनुरागी पतिसंगजागी मैनके बिलासनसों लेत चितचोरि चोरि ॥ सरकी सकुच मनमोहनके निकट कछुक मुलकी अंगरानी तनु तोरितोरि । शोभा वह मोपै कहूजात न बखानी कर अंचलकी ओटजमुहानी मुँहमोरिमोरि ८४॥

तथा। रूपकी उजारी वृषभानुकीदुलारी राधे तेरी ये निकाई हेरि सौति सब हारि हारि । तेरे गुण गायबे को तेरेही रिझायबेको तेरीप्रीतिहीको पनुगह्यो गिरिधारि धरि ॥ तेरोनाम तेरो ध्यान तेरही हिये में धरे तेरोरस बश उन गायहू बिसारि बिसारि । तूही उरबसी ह्वैके उर बसी मोहनके तेरीछवि ऊपरको उरवसी वारिवारि ८५॥

तथा। कृष्ण प्राणप्यारे प्रात प्रीतिके पधारे मेरे देखे मैन मूरति विरहगयो भागिभागि । मरगजेबागे रसपागे लटपटी पागें आसरमगन अंगरहे अंक लागिलागि॥ रावरे लसत अतिलोचन ललितमये कोकनद अरुणबरुण निशिजागिजागि । मेरेजान प्राणपति वाही प्राण प्यारेके परम अनुराग में रहे हैं अनुरागि रागि ८६ ॥

तथा। हरि हरि रटत वढ़त बिथा छिन छिन बरि बरि उठत वाके नेरे जात जरिजरि । करि करि थकी है

उपाय सब आली अब कछु न बिसाय उरशोचभार भरि भरि॥ येहो बलिवैद अब रावरे सरसही बचै तौ बचैबाल बलिवाकी पीर हरि हरि। तीखी ताप टारिये धरम उर धारिये निवारिये गहरु करुणाके ढार ढरिढरि ८७॥

तथा। जरी है विषमज्वर गिरी है अचेत वह घिरी है चहूंघा व्याधि वृन्दनमें खरि खरि। कञ्चन से तनुको अतन वृथाबारतहै रतननवारिये यतनहरि करि करि॥ ऐसीगति देखी होती मरत परेखैं अब कछु ना बिसात छिन छिन जात बरि बरि। लीजिये जगतयश कीजिये धरम यह दीजिये सुदरशन वाकी ताप हरिहरि ८८॥

तथा। आजब्रज देख्यों होरी खेलको समाज वह शोभा मेरे नैननमें रहीहै बिहरि बिहरि। राधा बनमाली को बिलास लखि आली सच मघवाके कोरिक गुमान जात गरि गरि॥ ज्यों ज्यों प्यारी झुकि झुकि झांपत बदन बिहँसत सतरात रसिकोसों रुख करि करि। त्यों त्यों छवि देखिछक्यो कृष्ण प्राणप्यारे लाल झिझका-वत गुलाल मुठी झूठी भरि भरि ८९॥

तथा। नीझर तड़ाग जलयन्त्रन के बिमल सलिल परसत ऐसे ढारसों ढरे ढरे। कृष्ण कहैं जहांतहां सीरी छांह देखि देखि बिरमिरहत तरु तरु के तरे तरे॥ सु-मन पराग रजपागि रह्यो अंग अंग स्वेदकण बूंद मकरन्दके धरे धरे। सुरभि समूह छाक्यो दक्षिण दिशा ते बायु थाक्यो सो बटोही चल्यो आवत हरेहरे ९०॥

तथा। बेरबेर ढांके बड़डरडर झांके तऊ कड़कड़ दां-

ते बाज ज़ुरिज़ुरि जात। नेकहोत न्यारे तोपै थरथरकांपै प्यारे ओढ़ि ओढ़िशालमालहूते लुरिलुरिजात॥ शोभन भनतभाग भाग आग आगे जात लखि छारभार पुनि पुनि मुरिमुरिजात। शिशिरके शीलमें अनीतशीतमान भीत सेजके पुनीत नीत दोऊ दुरिदुरिजात ९१॥

तथा। इन्दीवर नैननपै भृकुटी कमान निजरूपके गुमान मानरति के पचै पचै। रूपकेसी रास बाल सोहै मणिमन्दिर में उन्नत उरोजभार लंक को लचै लचै॥ कहै नन्दराम जब औचक उघार मुख कंजसे कपोल चित्त चौगुनो सचै सचै। चौंकिपरे चहकि चकोर चारो ओरन ते चंचरीक चारु चमकाहट मचै मचै ९२॥

तथा। सुन्दर सुजान घनश्याम अभिराम कोटिकाम छविहारक विहारक विशाल साल। कहैं नन्दराम राग रंगमें प्रवीन मीन पीन वनितान प्रेम सागरकी जाल जाल॥ नेहको निधान नटनागर छबीलो छैल छाजत छटान कामिनीलकंठ मालमाल। चन्दते दुचन्द अरविन्दते अनूप अति आनँदको कन्द ब्रजचन्द नन्दलाल लाल ९३॥

तथा। प्यारी को सुनायकै कहत श्याम ग्वालन सों आजुमति आइयो हमारे संग लायलाय। यन्त्र मन्त्र तन्त्रको विधानतो इकन्तही में बनत दुरायेते विशेषफल दाय दाय॥ कहैं नन्दरामकामनाको कलपद्रुमहै याको सिद्ध पायेते अशेष सिद्ध पाय पाय। योगयमघटके अ-

टकके बिकटबन बंशीवट तटएकमन्त्रको जगायगाय९४॥

तथा। सम्पाके समीप जायबेको अतिआतुरहै च-म्पाको निहारै फुलवारिन खरे खरे। तालनपै जाय के मरालनसों हेतकरै शावक मृगीनको बोलावत हरेहरे॥ कहै नन्दराम चोपिचन्द में लगावै चख बैठेरहै सेजपै सरोजन धरे धरे। जादिनते बाल नन्दलाल तोहिं देखो कहूं तादिन ते सूरति बिसूरति परे परे ९५॥

तथा। कारी कजरारी भारी घूमि घूमि अम्बर में काल्हि कैसी घटा आजु घेरिहै न घेरिहै। नागर नवे-ली मोहिं गागर उठायबेको काल्हिहीकी भांति आज टेरिहै न टेरिहै॥ कहै नन्दराम ऐंचि अंचल उरोजन ते आज दुहूंकन्धनपै फेरिहै न फेरिहै। आजधौं मिलैगी ना मिलैगी यमुना के घाट मिलैगी तो वैसे हँसि हेरि है न हेरिहै ९६॥

स०। सखि देखतही मनमोहन को कछु औरही डौरन ह्वैरही ह्वैरही। रँग आनन लोचन बैनन में नँद-रामजू नैनन दैरही दैरही॥ थकि मोरन के मत में परि चोपि चकोरनको मत कैरही कैरही। भ्रमि भौंरनकी गति लैकै कुरंग किशोरनकी गति लैरही लैरही ९७।

क०। ताकिये न ताती योतिपाय तवा तेमतन ताप तो निवारी में पटीर पङ्क ताय ताय। सीरे उपचार कै कहांलौं गहिराखौं प्राण अबलौं जियाय कंजपातन की छाय छाय॥ कहै नन्दराम सुनो येहो घनश्याम निशि बासर बितावत तिहारे गुण गाय गाय। चहतौं बिचारी

बन्नवारी बनवारी ररै तुमको विहारी दया आवत न हाय हाय ९८ ॥

स०। हरि हेरि हमारे हिये विष बीजन बैगयो बैगयो बैगयोरी। ठनि ठौर कुठौर सनेहकी ठोकर दैगयो दैगयो दैगयोरी॥ नँदरामजू त्यों बिरहानलते तन तैगयो तैगयो तैगयोरी। चित मेरो चुराय के चोर अरी मन लैगयो लैगयो लैगयोरी ९९ ॥

क०। जूझो मेघनाद नारि आरतको नादकरि शोचति विषाद सों विनोदन बितै बितै। कहै नन्दराम दिगपाल जीति बाहुबाल प्रबल प्रबल वीर विक्रम रितै रितै॥ येहो प्राणनाथ मोहिं लीन्हों क्यों न साथ आजु करिकै अनाथ गये लक्षनै जितै जितै। नीर भरे नैना बत काहूकी सुनैना अतिरोवति सुनैना बांह नाहकी चितै चितै १०० ॥

तथा। कोपकरि राम पहुँचे जब लङ्कागढ़ शङ्काभई भूरिभौन भीतर बसे बसे। बोलै यातुधानी यातुधानन सों बानी जात हांकहू सुखानी भारी भीतमें धसे धसे॥ नन्दराम काजर से कारे कारे भालु कपि सागर किनारे पिया देखिये लसे लसे। डोलिये न ह्यांते कहूँ खोलिये न द्वारपट खोलिये न छाती बैन बोलिये रसे रसे १०१ ॥

एक श्रेणीके कवित्व व सवैया १० ॥

क०। झूठो धन झूठो धाम झूठो सुख झूठो काम झूठो देह झूठो नाम धरिकै भुलायो है। झूठो तात झूठी मात झूठे सुतदारा भ्रात झूठो हित मानि मानि झूठी

मन लायो है ॥ झूठो लेन झूठो देन झूठो मुख बोलै बैन झूठे झूठे करै फैन झूठहीको धायोहै। झूठही मेरो तेरो झूठही में पचिगयो सुन्दर कहत सांच कबहूँ न आयो है १ ॥

तथा। झूठे हाथी झूठे घोड़ा झूठा आगे झूठा दौड़ा झूठा बांधा झूठा छोरा झूठा राजा रानीहै। झूठीकाया झूठी माया झूठे झूठे धन्धेलाया झूठा मूआ झूठाजाया झूठी याकी बानीहै॥ झूठा सोवै झूठा जागै झूठा जूझै झूठा भागै झूठा पीछे झूठा आगे झूठे झूठी मानीहै। झूठा लीया झूठा दीया झूठा खाया झूठा पीया झूठा सौदा झूठा कीया ऐसा झूठा प्रानी है २ ॥

तथा। बिषहीकी भूमि माहिं बिषके अंकूर भये नारी बिष बेलि बढ़ी नखशिख देखिये। बिषही की जड़ मूल बिषही के डार पात बिषही के फूल फल लागेजू बिशेखिये॥ बिषके तांतु पसारि उरझाय आंटीमार सबनर बृक्षपर लपटेही लेखिये। सुन्दर कहत कोऊ संततरु बचिगये तिनके तौ कहूं लता लगीनहीं पेखिये ३ ॥

तथा। उदरमें नरक नरक अधद्वारनि में कुचन में नरक नरकभरी छाती है। कण्ठमें नरक गाल चिबुक नरक बिम्ब मुखमें नरक जीभ लारहू चुचाती है॥ नाक में नरक आंखि कान में नरक बहै हाथ पांव नखशिख नरक दिखाती है। सुन्दर कहत नारी नरकको कुण्ड यह नरक में जायपरै सोई नरक पातीहै ४ ॥

तथा। सुखमाने दुखमाने सम्पति बिपतिमाने हर्ष

माने शोकमाने माने रङ्क धनहै । घटि माने बढ़ि माने शुभहू अशुभमाने लाभमाने हानिमाने याहीते कृपन है ॥ पापमाने पुण्यमाने उत्तम मध्यममाने नीच माने ऊंचमाने माने मेरो तनहै । स्वर्गमाने नरकमाने बन्ध माने मोक्षमाने सुन्दर सकलमाने ताते नाम मनहै ५ ॥

तथा । भईहूँ अतिबावरी बिरह घेरी बावरी चलत हैं चवावरी परांगी जाय बावरी । फिरतहूं उतावरी ल-गतनाहीं तावरी सवारीको बतावरी चल्यो है जात दांव री ॥ थकेहैं दोऊ पांवरी चढ़त नहीं पावरी पियारो नहीं पांवरी जहर बांटि खांवरी । दौरतनाहीं नावरी पुकार के सुनावरी सुन्दर कोऊ नावरी डूबतरारै नावरी ६ ॥

तथा । बांधे द्वारकाकरी चतुर चित्तकाकरी सो उमिरि बृथाकरी न रामकी कथाकरी । पापको पिनाकरी न जानै नाक नाकरी सो हारिलै की लाकरी निरन्तरही नाकरी ॥ ऐसी सूमताकरी न कोऊ समताकरी सो बेनी कविताकरी प्रकाशतासताकरी । देव अरचाकरी न ज्ञान चरचाकरी न दीनपै दयाकरी न बापकी गयाकरी ७ ॥

तथा । बाजी उठिधाईं बाजी देखिबे को दौड़ीआईं बाजी मुरझाईं सुनितान गिरिधरकी । बाजी न धरत धीर बाजी न सँभारैं चीर बाजिनकी बिरह अनल अति भरकी ॥ बाजी हँसिबोलैं बाजी करत किलोलैं बाजी संगलागी डोलैं सुधिरही नहिं घरकी । बाजी कहैं कहां बाजी बाजी कहैं कहूं बाजी बाजी ब्रजबांसुरी तो सांवरे सुघरकी ८ ॥

तथा। खगमोहे मृगमोहे नगमोहे नागमोहे पन्नग पतालमोहे धुनिसुनि जासुरी। सुरमोहे नरमोहे सुरन सुरेशमोहे मोहिरहे सुनिकै सुर अरु आसुरी॥ भनत गुमान कहौं मोहिबेकी कहा बाचि चर औ अचरमोहे उ-मँगि हुलासरी। गोपिनके वृन्दमोहे आनँद मुनिन्दमोहे चन्द्रमोहे चन्द्रके कुरंग मोहे बांसुरी ९॥

तथा। कुन्दकी कलीसी दन्तपांति कौमुदीसी दीसी बिच बिच मीसी रेख अमीसी गरकि जात। बीरी त्यों रचीसी बिरचीसी लखैं तिरछीसी रीसी अँखियां बैस फरीसी फरकिजात॥ रसकी नदीसी दयानिधिकी नदीसी थाहचकित अरीसी रतिडारीसी सरकिजात। फन्द में फँसीसी भरि भुजमें कसीसी जाकी सीसी करिबे में सुधासीसीसी ढरकिजात १०॥

तथा। मदन तुकासी कीधौं राधे कुन्दुकासी मनो कुंजकलिकासी कुचजोरी बिकासीहै। गांसीभरी हांसी मुख भासी मोहफांसी मद यौबन उजासी नेह दियाकी शिखासीहै॥ जाकी रति दासी रस रासीहै रमासी कौन कहै तिलोत्तमासी रूपसदनबिकासी है। कामकी कलासी चपलासी कबिनाथ किधौं चम्पक लतासी चारु चन्द्रि-का प्रकासी है ११॥

तथा। अटकिचली है पग मटकि धरणिलखि पायल कीझनक मुठौन अनवटकी। क्षीनकटि पीन कुचमीन से नयन सखि सटकि चली है सकुचि लगीहै निकटकी॥ बल्लभरसिक लखि चटक बदन मांझ उलटित्रटपारयुग

धार मरघटकी। सटकी लखन तऊ नटकी ललनमति लटकी लपटमें लपटिआई अटकी १२॥

तथा। लजीले सकुचीले शरमीले सुरमीले से कटीले औ कुटीले चटकीले मटकीलेहैं। रूपके लुभीले कजरीले उनमीले बरछीले तिरछीलेसे फँकीले औ गँसीले हैं॥ ललित किशोरी झमकीले गरबीले मानों अतिही रसीले चमकीले औरँगीले हैं। छबीले बंकीले अरु नीले से नशीलेआली नैना नन्दलालके नचीले औ नुकीले हैं १३॥

स०। बसुआधरमें बसुधाधरमें औ सुधाधरमें त्योंसुधामें लसै। अलिवृंदनमें अलिबृन्दनमें अलिवृन्दनमें अतिशयसरसै॥ हियहारनमें हरहारनमें हिमहारनमें रघुराज लसै। ब्रज बारन बारन बारन बारन बारन बार बसंत बसै १४॥

क०। छाई छबिहीरनकी रविज्योतिजीरनकी राजाराम चीरन की चिलकारी अलकैं। अबला अहीरनकी पाली दधिचीरनकी सोनेसी शरीरनकी गारीदैदै बलकैं॥ पिचकारी नीरनकी मारसम तीरन की देवदान चीरन की मांगबको ललकैं। सोहैं करैं बीरनकी उड़नि अबीरन की मुखलाली बीरप की बीरन की झलकैं १५॥

तथा। सनसन डोलिपौन सनसन सूख्यो सन सन अंग दुखसन होत हारिघरी। बनबन बीनिलीन्हों बनबन ब्यौरिब्यौरि बनत न बरणत क्योंहूंउरधरधरी॥ लेखराज ऊंखऊ पियूषसों बिशेषशेष राखिनाहिं अन-

भेष देखिदेखि करबरी। अबहरबरी सरबरी मिलै कैसे कन्त आरहरी आरहरी आरहरी आरहरी १६॥

तथा। सुन्दरसुजानपर मन्दमुसकानपर बांसुरीकी तानपर ठौरन ठगीरहे। मूरतिविशालपर कंचनकीमालपर खंजनसी चालपर खौरनखगीरहै। भौंहैंधनुमैनपर लोने युगनैनपर शुद्धरस बैनपर वाहिद पगीरहे। चंचलसे तनपर सांवरे बदनपर नंदके नँदनपर लगन लगीरहे १७॥

तथा। बारिजात पारिजात पारिजात हारिजात मालती बिदारिजात सोंधेनकी झरीसी। माखनसीमैनसी मुरार मखमलसम कोमल सरसतरु फूलनकी छरीसी॥ गहगही गरुई गोराई गोरी गोरे गात श्रीपति बिलौर शीशी ईंगुरसों भरीसी। बीज थिरधरीसी कनक रेखकरीसी प्रवालद्युति हरीसी ललित लाललरीसी १८॥

तथा। दूरि यदुराई सेनापति सुखदाई देखो आई ऋतु पावस न पाईप्रेमपतियां। धीरजलधरकी सुनत धुनिमरकी सोदरकी सुहागिलकी छोह भरी छतियां॥ आईसुधि बरकी हियेमेंआइ खरकी सुमिरि प्राणप्यारी वहप्रीतमकी बतियां। भूलीऔधि आवनकी लालमन भावनकी डगभई बावनकी सावनकी रतियां १९॥

स०। वेथिरकी बतियां कहिकै थिरजे थिरकी कहि वेथिरकीहै। वेखिरकी खिरकीनि बतावत कैखिरकी खिरकी खिरकी है॥ येसरदार सुनैसवरी नवरीनवरी नवरी

टरकीहै। वेघरकी न बिचारत ये परकी परकी परकी परकीहै २० ॥

क०। रूसनमें दूसनमें लालमन मूसनमें मैनकीमसूलनमें धीरकैसे रहैरी। कोकिलकी कूकनमें पौन मन्द भूकनमें औसरकी चूकनमें फेरि पछितैहैरी॥ बेलिननवेलिनमें सङ्गकी सहेलिनमें खेलनमें केलनमें मनसा समैहैरी। वृन्दावन कुंजनमें फूलनके पुंजनमें भौंरनकी गुंजनमें भूलि मान जैहैरी २१ ॥

तथा। टेढ़ीटेढ़ी भौंहैं चढ़ीहैं चितवनि टेढ़ी टेढ़ीही तिलकभाल केसर बिशालकी। टेढ़ी किरीट टेढ़ी कलँगी पखानखोंसे टेढ़ीही सुहात चारु कुण्डल बिशालकी॥ टेढ़ीही ग्रीवकरि मुरलीधर अधरनमें टेढ़ीही शाखा ठाढ़े तरवर तमालकी। टेढ़ीपरताप सब लागत कुलकानि टेढ़ी मेरे मनबसी टेढ़ीमूरति गोपालकी २२ ॥

तथा। फूलनफरश फूलफबे फूलफूल दिखें फूलनके खम्भा फूलझालर सुहातहैं। फूलनकेछत्तर चमरहूसुफूलनके सुखिसखि फूलनको बेजनडुलातहैं॥ फूलन को मन्दिर रच्योहै शिवनाथ शुभ भूलधनु देख फूल फूले न समातहैं। फूल कनफूल अङ्गफूलनको भूषण है फूल सेजपर दोऊ सुख सरसात हैं २३ ॥

तथा। चातक चिहुकमत मुरवा कुहुकमत झींगुर झिहुकमत भेकीमननायमत। चकवा चिकारमत पपिहा पुकारमत बुन्दझरधारमत धारघहरायमत॥ कृष्णलाल गायमत पीरउपजाय मत बालम बिदेशपाय मैन तन

तायमत। पौनफहराय मत चपला चवायमत धायमत धुरवा औ घन घहरायमत २४॥

तथा। घहर घहर घहरात चहुँघातेघेरि सघनघन उमड़ि घुमड़ि बरसतहै। छहर छहर छहरात क्षितिमण्डलपै छूटि छूटि बुन्द मानो छर्राकोछरतहै॥ भहर भहर भहरात भौन भीति भारी भीति भारी मारती के भौनहूं भरतहै। थहर थहर थहरात मेरो गात आली प्यारो बिजयानँद बिदेश में बसतहै २५॥

तथा। खाती हरखाती रसजाती मदमाती हिये काती सी लगाती टेर बिरही बिघातीकी। जतीलै छिराती मत आती न दयाती न चुपाती तालगाती न पिराती उतपातीकी॥ पातीकेहूभांति तौ बिसाती जो पोसाती औधराती सियराती जो ब्यथाती ताती छाती की। न्हाती क्षतजाती मैं नुचाती रोम पाती काढ़ि बातीलै जलाती जीभ कैलिया कुजातीकी २६॥

तथा। कंचन लतसीखासी आसीमैनकासी भासी बोल रसरासी मैं सुधासी सरसातिहै। तीरसी तिरीछी बरछीसी है चितौन तेरी सानपरसीसी बखसीसीसी लखातिहै॥ कामकीछरीसी मछरीसी प्रेमसागरकी रूप की भरीसी नँदरासमैं दरसातिहै। सीसीमतिकीजै मैन दीसी सुधा मीसी ईसी सीसी सुनि तेरी मैनसीसी गरि जाति है २७॥

तथा। कुंदकी कलीसी दंतपांति कौमुदीसी दीसी बिम्बाबिच मीसी रेख अमीसी गरकिजात। बीरीत्यों रची

सी थिरचीसी तिरछीसी लसै रीसी आँखियांकै सफरीसी त्यों फरकिजात ॥ रसकी नदीसी थाह दयनिधि कौन दीसी चकित अरीसी रतिदुरीसी सरकिजात । पीयफँद फँसीसी ऐसी होत जो कशीसी ताकी सीसी करिबे में सुधा शीशीसी ढरकि जात २८ ॥

तथा । सुनत झमाके त्यों छमाके भूरि भूषणके सागर छमाके सिद्धि चौं कृत छमाके हैं । जातही छिपाके उठि दौरत छिपाके अँग आवत छिपाके जे न छाके छतछा के हैं ॥ कायल क्षुधाके वसुधाके कीरधाके ओंठ चाखत सुधाके ये मजाके बिम्ब पाके हैं । नन्दराम ताकेदृग ताकेहैं मृगा के कहां काके समताके जो रमाके उपमाके हैं २९ ॥

तथा । अम्बुज तटानफैलि फूटत फटान जैसे धावत नटान छबिछाईहै छटानकी । चातक रटान नदीनद उपटान जल जंगल बटान महामारुत कटानकी ॥ भीगत पटान बुन्द चुवत लटानसुखी तन लपटान मानों मदन घटानकी । पीवके तटान ओढ़े कुसुमी पटान अरु ठाढ़ी है अटान लहरें लेतहै घटानकी ३० ॥

तथा । जाके चखचांके ताके छाके मुनिदेव सब काके दुनियाके बीच बांके उपमा के हैं । लाज बरषा के कैघटा के मघवाके ताके पूरण कलाके कहि आनँद पताके हैं ॥ थाके कंजनाके कैचलाके देखि लजित मृगाके बिधिना के सुषमाके हैं । कुंडहैं सुधाके वसुधा के सुख वाके बीच बिन सुरमा के नैन श्याम सुरमाके हैं ३१ ॥

तथा । काम वनितासी चारु चंपकलतासी स्वच्छ प-

भग सुतासी कैतो ऐसी मैनता की है। गोविन्द सुरीसी मंजु देखी आसुरी सी सुधासिन्धु निसरीसी किन्नरी सी प्रभाकीहै॥ कोऊमैनकासी कोऊकहै इन्द्रासी कोऊ इन्दु की कलासी कहै ऐसीमति जाकीहै। रूपमदछाकी चली इतै उतताकी ढूंढ़ि वाकी समता की कविता की मति थाकी है ३२॥

तथा। दीपक शिखाकी खासी मैनका तिलोत्तमासी रतिसी रमासी राधिकासी रूपरासी है। सत्यासी सतिभामासीशकुन्तलासीसीतासी शिवस्वाहासुषमासी है॥ कंजकी कहासी कै कलाहै कलानिधि की मनसा महासी मुखहांसीमें प्रकासीहै। शम्भुसाली कासी सुरपालबालिकासी बाललाल मालिकासी हरितालिकाउपासीहै ३३॥

तथा। देखि कमलासी जैसी चन्द्रिका प्रकासी मुख बीरहू उदासी दृग अंजन लागबासी है। परमप्रकासी सो अकासी देखि मलिन भयो पहिरे श्वेत धोती मुख लटैं छूटी खासीहै॥ बिना बनमाली आली फूलनको न योगलागै याहीते शोचतमनठाढ़ी उदासीहै। येहो ब्रजबासी सुधारूप की पियासी तुम्हें पूछै एकदासी हरितालिका उपासी है ३४॥

तथा। फूलनके अनवट औफूलके बिछिया औ फूलन की पायजेब बाजत गतिन्यारीहै। फूलनको लहँगा औ संजाफलागी फूलनकी फूलनकी अँगिया पर फूलीबेलिकारीहै॥ फूलनकी सारी सोहत अतिकिनारी फूलन को हरवा गरबीच डारी है। कहत कबि केशवदास सुनुरी

सखी आज राधाजी के बदन पै फूली फुलवारी है ३५॥

तथा। चन्दन लिपायो चौक चांदनी चँदोवै तामें चांदनी बिछौना फैलीलहर सुगन्धकी। चांदनीकी साज नीकी चन्दसम चमकन चारों ओर चन्दमुखी चन्दज्योति मन्दकी॥ चांदनी सों चार चारु चांदनीसी फैली हठी चांदनीसी हांसी कै मिठाई सुधाकन्द की। चन्दन की चौकीबैठी चन्दन लगाय भाल चन्दसे बदन राधे रानी ब्रजचन्द की ३६॥

तथा। काम सरसीसी रमा उमा दरसीसी पट फूल अरसीसी घनदामिनि उसीसीहै। प्रेम झरसीसी मोह कसन कसीसी लोकलज्जा उकसीसी कान्हरूपमें रसीसी है॥ लरीलरसीसी कटिराजै हरिसीसी हठीउरमें बसीसी द्युतिजगमेंजसीसीहै। सिद्धकरसीसी हिय अंगनससीसी करे रतिकी हँसीसी दीसी उरमें बसीसी है ३७॥

तथा। प्रेमकी झरीसी देखोलालन लरीसी अब चाल में करीसी राजै कटिमें हरीसी है। भागमें भरीसी वासोहाग अगरीसी रासरूपकी धरीसी रमाउमा किन्नरीसी है॥ नीति अगरीसी ब्रजजोन्हि बगरीसी हठी चलिये गोपाललाल सोहै सुघरीसी है। दीपति परीसी है लसत सुरसरीसी है हेमकी छरीसी है सदन की बरीसी है३८॥

तथा। रमासी उमासी इन्दुमासीकी सभासी हठी छबिकी जमासी भाल दीन्हे बिन्दु रोरीके। तारासी तरंगनासी मैनका तिलोत्तमासी शची मंजुघोषा गिरा गावैं गुनगोरी के॥ बिमलासी नवलासी नल अबलासी

खासी मदनबिलासी चन्द्रिकासी तनजोरी के। छोड़मग-रूर जुरिआवती जरूर सबै रहतीं हजूर ठाढ़ी कीरति किशोरी के ३९॥

तथा। चांदनी के आंगन बिछौना नीके चांदनी के चांदनी सों देखि अँखियान सुख लह्यो है। चांदनीसों चीरचारु चांदनीके आभूषण चम्पकके गातन बखानो जाते कह्यो है॥ हठी आस पास बैठीं सुघर सुजान सखी जिन्हैं देखि रतिको गुमान जात बह्यो है। राधेमुख चन्द की निकाई ब्रजचन्द आज अवनी अकाश लौं प्रकाश फैलिरह्यो है ४०॥

तथा। कौलतैं मुलामैं कौनछबि कमलामैं तुलैंफूलन तुलामैं चढ़ी प्रेमके पलामैं हैं। सबै बसुयामैं छांड़िछांड़ि निज धामैं सुरपालन की बामैं करैं पौन अचलामैं हैं॥ रूपके झलामैं देखी नन्दके ललामैं हठी रत अबलासैं कहा शोभा नवलामैं हैं। चन्दकी कलामैं न चमङ्कचपलामैं ऐसी ललित ललामैं राधे करती सलामैं हैं ४१॥

तथा। रम्भाको रमाको इन्दुमा को औ तिलोत्तमा को उमाको रमाको की समाको हठी झावरो। कमला को बिमलाको नवला को चपला को सुषमा को उपमा को भूलो चित्तचावरो॥ मैनकाको मोहनीको शची सत्यभामाहूं को रतिरुक्मिणिजू को करिये निछावरो। तारा को तरंगनाको तरनकला को ऐसे रूपनको रूप राधे रानी रूप रावरो॥ ४२

स०। बड़ोई प्रताप बड़ोई सुहाग बड़ोई प्रभाव सु-

भाविकराखै। बड़ीगुनमान बड़ीई सुजान सरूपनिधान पुरानन भाखै॥ बड़ेबड़े देव देवतनकी घरनी मुखदेखन को अभिलाखै। बड़ीदिलदार बड़ेबड़ेहार बड़ेबड़ेबार बड़ी बड़ी आंखै ४३॥

क०। सुररखवारी सुरराज रखवारी सुखशम्भु रखवारी रबिचन्द रखवारी है। ऋषि रखवारी विधि वेद रखवारी गिरिजानिकरी कीरतिकी कीरति सुभारी है॥ दिग रखवारी दिगपाल रखवारी लोक थोक रखवारी गावैं धराधर धारी है। ब्रज रखवारी ब्रजराज रखवारी हठीजन रखवारी बृषभानुकी दुलारी है ४४॥

तथा। रुक्मिणीसी रतिसी शचीसी सत्यभामा सी तू भीषमकी मासी जमनासी जगनासी गोतमासी है। रम्भासी रमासी औसुकेशी मंजुघोषा कीसी नवलासी उमासी प्रमासी को समासी है॥ तारासी तरंगनासी मेनका तिलोत्तमासी राधा महरानी हठी छबिकी जमासी है। कमलासी कमलासी नवला नवीनराजै छाजत छमापै इन्दुमासी चन्द्रमासी है ४५॥

तथा। रमाको कहाहै रतिरम्भाको कहाहै जेबखाने बिधिचारो मुखचारो देवनौगुनो। शचीको कहाहै सत्यभामाको कहा है अरु चन्द्रको कहाहै जामें राजतहै औगुनो॥ चम्पाको कहाहै चामीकरको कहा है चारु करकै बिचार निरधार हठी जो गुनो। राधेमहरानीजूको रूप सब रूपन ते दुगुनोहै तिगुनो है चौगुनोहै सौगुनो ४६॥

स०। कटिके तटमें पटपीतलसै बिलसै बनमाल हि-

ये टटकी । चटकीली ललाके लिलाट लसी वह केसरि जासु कला छटकी ॥ घटकी सुधिभूलिगई सटकी उकुलाजलखे छबि वा नटकी । अटकी बटमें मति देखिभटू सुभईरी लटू न हटै हटकी ४७ ॥

क० । प्रताप हेतहालकी कही न जात बालकी लसे दुकूल चालकी इतै निरेख नैगई । बिलोकि सुन्दरीहँसी हियेसुबक्रमाधसी मयंकसी कलाकसी कला प्रयोग वै गई ॥ गती गयन्द राटसी लचक्क लक्क साटसी सुआय लाय लाटसी हियो लपेटि लैगई । सनेह सिन्धुबोरिकै कटाक्षकोर भोरिकै चटाक चित्त चोरिकै कपाट पट्ट दैगई ४८ ॥

तथा । बन्दन शशीसी उर में बसीसी शुचरचीसी पीयबसीसी छबिदेखे दुख सरकि जात । कंचुकी कसीसी चारु उपमा लसीसी किधौं कुन्दकी कलीसी पर्य्यंक पै थिरकि जात ॥ कबिचुन्नीलाल बिधिकारीगर रचीसी बिम्बरदन रचीसी कञ्जसी खरकिजात । प्रेमफन्द में फँसीसी करनेक सीसी किधौं सीसी करबे में सुधासीसी सी ढरकिजात ४९ ॥

तथा । खंजनसे कंजसे तुरंगम से सफरी से कतरे रसालसे कुरंगनके शावकसे । अंजनसे रंजनसे चंचलसे माहुरसे आरसी अनंग कैसे शावकके नावकसे ॥ वारन से आरनसे पानिपते उथले से शालिग्राम मूरतिसे डोरे रंग जावकसे । ताकनि तिरीछी प्यारी भाषत दिवाकर जू दृगन दराज से झपेट बाज लावक से ५० ॥

तथा। जाकी खूब खूबी खूब खूबनमें खूबी खूब ताकी खूबखूबी खूब खूबी अवगाहना। जाकी बदज़ाती बदजाती यहां पंचन में ताकी बदजाती बदजाती ह्वां उराहना॥ ग्वालकबि येही परसिद्ध सिद्धहैं परसिद्ध वहै जाकी यहां वहांकी सराहना। जाकी यहां चाहनाहै ताकी वहां चाहना है जाकी यहां चाह ना है ताकी वहां चाह ना ५१

तथा। चन्दन चपेटी जात सुषमा समेटी जात पीछे चलीचेटीजात भेटीजात कानकी। चाल अटपेटी जात सखिलखि लेटीजात सकुचिसुभेटीजात छेटीजातसान की॥ जाकेसुख पेटीजात चन्द्रछवि मेटीजात छविहू धुरेटीजात टेटी जात भानकी। मदन दपेटीजात लाजन ससेटीजात अतर लपेटीजात बेटीबृषभानकी ५२॥

तथा। चीरफहरावन भुलावन सँयोगिन को हियो हुलसावन रिझावन सोहायो है। सुधि बिसरावन तरसावन सतावन जगावन अतन शोरमोरन मचायोहै॥ धीरजगवावन बिझकावन झुकावन तावन तड़ित रसाल घनधायो है। बिनमनभावन बढ़ावन बिरहप्राण सावनवितावन बियोगिनको आयोहै ५३॥

तथा। मतलबके राजा औ परजा सब मतलबके मतलबकीनगरी औ मतलब सरदार है। मतलबकी पूजा औ सेवासब मतलबकी मतलबकी बन्दगी औ मतलब करतार है॥ मतलबके माता औ पितासब मतलबके मतलबके भाई औ मतलब घरनारहै। कहतहौं बारबा-

१ सुनो मेरी एकबार कलियुगके मंत्री सब मतलब के यारहे ५४ ॥
तथा। जागीहैतमाशे मैं कि पागी रोषराशे सें किलागी मित्रवाशे चित्तचाह चित्तचाहेते। मनतकवीन्द्र शालिवाहनके गर्व कैधौं गाहनकै दौरी है उमाहन उमाहेते ॥ जावकजपान अरु नावक के वानपेखि पावकप्रमान उपमान अवगाहेते। लालहूते लाल औ गुलालहूते लाल आजु लाललाल आंखैंभईहैं लालकाहेते ५५ ॥
तथा। बादल पटान कारे साटित सटान जनु धावत नटान ज्यों बिज्जु सटकानकी। अम्बर झुमटान ज्यों लपटत सुभटान देव बिजय निशान वृन्द उदितकटान की ॥ मनेजगेश्वर ऋतु पावसभट जानियो चातकरटान कूक कोयल हटानकी। नदके तटान ओढ़े कुसुमी पटान ठाढ़ी देखत अटानचढ़ी लहरैं घटानकी ५६ ॥
तथा। अधखुली कंचुकी उरोज अधआधेखुले अध खुले बेष नखरेखनके झलकैं। कहै पदमाकर नवीनअध नीबिखुली अधखुले छहरिछराके छोर छलकैं॥ भोरजगिप्यारी अधऊरध इतैकी ओर भाषी झिखझिरफि उचारि अध पलकैं। आंखैं अधखुली अधखुली खिरकी हैं खुली अधखुली आननपै अधखुली अलकैं ५७ ॥
तथा। हौंहूंगई जानतित आयगो कहूंतेकान्ह आनि बनितानहूको भपकि झलोगयो। कहैपदमाकर अनंग की उमंगनि सों अंग अंग मेरे भरि नेहको छलोगयो॥ ठानि ब्रजठाकुर ठगोरिनिकी ठेलाठेल मेलाकै मँझार

हित हेतकै भलोगयो । छाहकैछला छ्वै छौगुनी छ्वै छरा छोरन छ्वै छलिया छबीलो छैल छाती छ्वै चलो गयो ५८ ॥

तथा। घर ना सोहात ना सोहात बन बाहिरहू बाग ना सोहात जो खुशाल खुशबोही सों । कहै पद्माकर घनेरेघनत्रासत्योंहीं चन्दना सोहात चांदनीहूं योगजोही सों ॥ सांझहू सोहात ना सोहात दिनमांझ कछू व्यापी यह वात सो बखानतहौं तूही सों । रातिहू सोहात ना सोहात परभात आली जब मन लागिजात काहू निर-मोहीसों ५९ ॥

तथा। वदनसुधाकरै उघारत सुधाकरै प्रकाश बसु-धाकरै सुधाकरै सुधाकरै । चरण धराधरै मृणालऊ धरा धरै सुऐसे अधराधरै ये बिम्ब अधराधरै ॥ पैनेदगहाकरै निहारत कहाकरै सुबेनी कबिताकरै त्रिबेणी समताकरै । सुरतिमें सीकरै सुमोहनै वशीकरै बिरंचिहू यशीकरै सु सौतिन मसीकरै ६० ॥

तथा। मदनतुकासी किधौं राधे कुन्दकासी मनोकंज कलिकासी कुचजोड़ी हबिकासी है। गांसीभरी हांसी सु-खमासी मोहफांसी मद यौवन उजासी नेह दीयाकी शि-खासी है॥ जाकीरति दासी रसराशिहै रमासी कौन ति-लोत्तमा ऐसी रूपसदन बिकासी है । कामकी कलासी चपलासी कबिनाथ किधौं चम्पकलतासी चारु चन्द्रि-का प्रकासी है ६१ ॥

तथा। बांकीचारु चन्द्रिका बिराजै भाल बांकीखौरि

बांकी भौंह चञ्चल चितौन चख बांकी है। बांकीनकवेसरि मधुर मुसक्यानि बांकी कहै हनुमान बांकी अधर ललाकीहै॥ मुखराशि भूषण शृङ्गार चन्द्रकलाकीन्हे बांकी परयङ्कबैठी मूरिभ्करनाकी है। झुकिझुकि झूमिझूमि भांकी करैं देवबधू कहैं अनुपम शिरीराधिकाकी भांकी है ६२॥

तथा। नथकी चलन कलकिङ्किणी कलन हियहार की हलन छबि ऊरज उतङ्गकी। लंककी लचक परयंक की मचक इत उतकी हचक रङ्गकी रचकसुसङ्गकी॥ स्वेद की भलक भरि नेहकी छलक कवि रामजू ललक कोक मदन बिहङ्गकी। जोमकी जमक त्रिपरीत की गमक तहां तियकी हुमक अरु कुमक अनङ्गकी ६३॥

तथा। कबिपजनेश केलिमधुप निकेत नवदर मुख दिब्य घरीघटिका लटीकी है। त्रिधुपरबेष चक्र चक्ररवि रथ चक्र गोमती के चक्र चक्रताकृत घटीकी है॥ नीवी तट त्रिबली वलीपै द्युतिकोश तुण्डकुण्डली कलित लोम लतिका बुटीकी है। उपटी किटीकी प्रभा टीकी वधूटीकी नाभिटीकी धूर्य्यटीकी वो कुटीकी सपुटी की है ६४॥

तथा। श्याम घनघोर श्याम सदनमें मोर श्याम चली श्याम ओर श्याम वसन वनायकै। द्विजवलदेव कहै कारी निशिकारी दिशि कारी कंचुकीको कसि कारे कंज लायकै॥ कामदसे कारे केश कचरि फणेश कारे कारी हितकारी वै कलिन्दी तटआयकै। तन कृष्ण मन कृष्ण धनकृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण रट लायकै ६५॥

तथा। श्याम द्रुम श्यामतनु श्याम निशिश्यामबन श्याम नभ श्याम श्याम श्यामघनश्याम हैं। श्यामनैनी श्यामबैनी गूंदी श्याम माणिकसों दीन्हींश्यामखोरकै चली श्याम कामहैं॥ मंसाराम श्यामचोली भुजनिकसी है वाम धरेश्याम चीरधाई भौंर भीर श्याम हैं। श्याम कुंजधाम सराजाम श्याम कैकैगई श्यामा श्याम जहां श्याम ज़हां श्यामा श्यामहैं ६६॥

तथा। कारी सारी सोहत किनारी कोर काननलौं ककना कनककारी कारी करमैठई। कारीलोनीलतिकासी उरज भुजंगी कारीठोढ़ी ठकुराइन की कारी कारी सो भई॥ कारीअभिलाष ब्रजपासकारी त्योंहींउतरीअटासे कारी कारी मगकोलई। कारीदिशि कारी निशि कारेनैन काननलों कारी कंचुकीको पैंधि कारे कान्हपैगई ६७॥

तथा। कारीकारीरैनि तैसी कारीकारी बादरीमें कारी कारी सारी कारी कारी कचबेली त्यों। कारेकारेकाजर सों कारे करिडारे नैन कारी कारी कंचुकी उरोजनपै मेली त्यों॥ कहैनन्दराम कारोकारो अंगराग अंग कारी कारी बाल या निकारी पै पहेली त्यों। कारी कारी कुंजवे तमालतरु कारे कारे कारे कारे कान्हरपै जात है अकेली त्यों ६८॥

तथा। केकी कारिकारी मनहारी होत प्यारी प्यारी जातकी कुमारी सुखकारी कलकारी है। नरदेवकारी कारी मण्डित डेरारी घटा भूमिपै सुरंग इन्दुमारी की पत्यारीहै॥ बल्लरी पत्यारी पतियारी डारी भूमि डारी तें-

सई तमाल डारी न्यारी छबिधारी है। कारी सुदकारी निशि बायुशीतकारी तामें यारी हरियारी मोहिं सावंती तिहारी है ६९ ॥

तथा। निशि अँधियारी यारी कारी घनश्यामघटा निरखी सुखकारी औ अटारी सुकुमारी है। अञ्जनदृगन साजि सुषमा सरोजश्याम हारी मनहारी तनमन वारि डारी है ॥ बरजरतारी की किनारी श्याम सारी धारी हेतु बनवारी भुवनेश छबि न्यारीहै। नणभाछहरारी सुघन घहरारी घटा तामें छबिसारी हिमकारी उजियारीहै७०॥

तथा। कारे घन कारे बन कारे नाग फणन के पांवरे पसारे पग देत न सकातिहै। बेनी लटकारी कारी मृगमद खौरिकारी कारीये पहिरि सारी कारी भारी रातिहै॥ भनत कबिन्द्र कारे कान्हर के मिलिबे को आजही तो सिगरी करहिही दिखातिहै। कारी अँधियारी तासों अधिक अँध्यारी साजि प्यारी चली जात की कहूं की करामातिहै ७१॥

स०। सांवरी सारी सखी सँग सांवरी सांवरे धाहि बिभूषणधै्वकै। त्यों पदमाकर सांवरेई अँगरागिन आंगीरची कुचद्वैकै॥ सांवरी रैनिमें सांवरी पै घहरें घनघोर घटाक्षितिछ्वै कै। सांवरी पांवरीकी देखुही बालिसांवरे पै चली सांवरी ह्वैकै ७२॥

क०। लाल लाल अम्बर अनोखे नैन लाल लाल लाल लाल अधर ललाई है दशनमें। लालनलाल रेशम के फूलरा सुकेशनमें छायरहे छाती पर छाजत कुचनमें॥

लाललाल करण बिराजैं कंज लाललाल लाललाल चरण चमक मुकतन में। कहै नन्दराम वाम रूपकी रसाला आला हेमकैसी माला ब्रजबाला चली बनमें ७३॥

तथा। रंगलाल रूपलाल अधर अधिकलाल दृगन के डोरे लाल कोरैंलाल पलकैं। चीरलाल चोली लाल लालडोरे गुहेवाल बेसरकी बेंदी लाल हियेमांझ झलकैं॥ कहै मृगलोचनी सोहाग भागतेरे आज सोहै लालभाल बेंदी और सोहैं अलकैं। पान लाल पीकलाल पीकहू कि लीकलाल एते पायप्यारी लाल लालहू को ललकैं ७४॥

तथा। लाललखि लाल रविमण्डल अभात भात लालही बसन लखि लाल ललकतु है। लाल अधरानकी सुलाली लसी लोचन में आली पान लालीसी कपोल बिलसतु है॥ भनै भुवनेश वेश बिन गुणमाल उरधारिकै बिशाल बनमाल निदरतु है। पगलाल पाग लाल एते लाल पाय अब मेरे लाल मोहिंलाल नाहक करतुहै ७५॥

तथा। नैन लाल बैनलाल अधर औ बीरी लाल लाल लाल दशन सनेह की लगन में। चीरलाल पाग लाल जरीको इजारलाल कलँगी शिरपेंच लाल माणिक नगन में॥ सेजलाल कुंजलाल छत्र चौंर व्यंज लाल सुषमा प्रताप लाल वसी है दगन में। बाली औ बुलाक लाल केसरिकी खौरलाल लाल लाल मेहँदी रची लाल के पगन में ७६॥

तथा। हरे बेलि हरी भूमि हरे द्रुम रहे झूमि हरी हरी कुंज हरी बागन सघन में। हरी हरी बूंद हरे बादर

बरषा पै हरे हरी हरी यमुना लहराय रही तनमें ॥ हरे छत्र हरे चौर हरी हरी सखियां सब हरी हरी झलकै प्रताप हरे मन में। हरे हरे फूलके शृंगार किये प्यारी पिय झूलत हिंडोले हरे हरे हरे वनमें ७७ ॥

तथा। हरी हरी भूमि जहां हरी हरी लोनीलता हरे हरेपात हरे हरे अनुराग में। कहैं नन्दराम हरे हरे यमुनाके कूल हरित दुकूल हरे हरे मोती मांगमें ॥ हरेहरे हारन में हरित बहारन में हरी हरी डारनमें हरेहरे भागमें। हरे हरे हरिको मिलन जात हरे हरे हरी हरी कुंजन में हरे हरे बाग में ७८ ॥

तथा। पीले पीले गोलन कपोलन बिराजि रहे पीले पीले कुण्डल दुचन्द द्युति दरसै। पीले पीले हारउर गेंदा गुलदावदीके पीले पीले कुसुम सुकेश छविसरसै ॥ पीले पीले केशरिके अंगराग अंगन में पीले पीले पौन ते पराग पुंज परसै। नन्दराम पीले पीले किंशुक झरत जात मानो प्यारी अंगनते पीलोरंग बरसै ७९ ॥

सिंहावलोकन छन्द ११ ॥

स०। लाल हैं भाल सेंदूरभरे मुख सिंदुर चारुबाहैं बिशाल है। शाल है शत्रुनको कबिदेव अतिसिद्धित सोम कला धरे भालहै ॥ भालहै देवजू सूरज कोटि सो काटत कोटि कुसंकट जाल है। जाल है बुद्धि बिबेकन को यह पारबती को लड़ायतो लाल है १ ॥

तथा। नामहिं के सुमिरे सुख पायहौ और न काम गिनौ जग कामहिं। कामहिं कोई न आयहैं ये सुत मातु

पिता प्रिय बन्धु औ वामहिं ॥ वामहिं हैं सिगरे भवके सुखहोत नहीं क्षणहू बिसरामहिं। रामहिं राम ररौ रे ररौ सब बेद पुराण को है परिनामहिं २ ॥

तथा। डरिहौं नहिं नेक यशोमति सों गहि मोहनको बशमें करिहौं। करिहौं सब खेल गोपाल सों आज भले सुख साजि हिये धरिहौं ॥ धरिहौं फगुवा मिसही मिस सों पटपीत उठाय हिये भरिहौं। भरिहौं पिचकारिन रंग सुरंग उमंग सों लालनपै डरिहौं ३ ॥

तथा। धाये हैं आज घने घनघोर सो बोलत मोर बियोग जनाये। जनायके मोहिं बियोग सों यौवन मारत कामके बाण चढ़ाये॥ चढ़ायके लाये हैं श्याम घटा बदरा चहुँ ओर महाझरिलाये। लायके मोहिं कहां बिलमें अजहूं नहिं पीउ बिदेश सों धाये ४ ॥

तथा। मोरी बिथासे अजान है फागुन आयो अबीर अबीकन झोरी। झोरी गुलालकी कालडसी होरीकैसे खेलौं मैं पिया चितचोरी ॥ चोरी कहाकरी सांची कहो अब फागुनहीं कोउ लाख कहोरी। होरी न होरी अहोरी सखी हियो दाहन को यह बैरिन होरी ५ ॥

तथा। सावँरी सूरति मोहिलियो मनगेह सोहात सोहात न गावँरी। गावँरी कैधौं न कुंजन में हरिहाय किते अब ढूंढ़न जावँरी ॥ जावँरी तो कुलकानि मिटै सब लोग लोगाई धरैं मिलि नावँरी। नावँरी तो अपनो करिले मोहिं आनि मिलायदे सूरति सावँरी ६ ॥

तथा। फागरी आयो सखी हमको बिन प्रीतम मैन

की आगसी लागरी। लागरी मेरी गोहारि सखी कर बेगि उपाय सबैरही जागरी॥ जागरी होत है राग चहूं दिशि मेरेहिये बिरहा दियो दागरी। दागतो मेरो जबै मिटिहै मिलि मोहन के सँग खेलिहौं फागरी ७॥

तथा। करकी पसुरी जब लागिलई जबते ऋतुपावसकी बरकी। बरकी सुधि आय गई जबहीं बरषैं बरषा वो धराधरकी॥ धरके नभबुन्द महादुरकै सजनी न लखै द्युति चादर की। दरकी छतियां सुमिरे बतियां पतियां न लिखैं अपने करकी ८॥

तथा। बालरी आई चहूं दिशिते तिन घेरिलियो नँदनन्दको लालरी। लालरी झोरी अबीर भरे मुसक्याय रँग्यो सखी श्यामको भालरी॥ भालरी बेंदी भली झलकैं उर सोहत मोतिन की अलिमालरी। मालरी लोनी न कोऊ लखै अवलोकि रहीं वसुदेव को बालरी ९॥

तथा। बालरी आई लिये रँगकेसरि खेलत मोहन के सँग फागरी। फागरी खूबमचो ब्रजमें अवलोकि वसन्त सोहावनो लागरी॥ लागरी नेहनयो हरिसों निरखैं निज पूरब को कृत भागरी। भागरी लोनी न कोऊ लखै अवलोकि रहीं नँदनन्द को बालरी १०॥

तथा। अरजी लिखि मोहन को सजनी ऋतुआई वसन्त सबै लरजी। लरजी डरियां जो पलाशन की पगरायल कोकिल की मरजी॥ मरजी सुनि कामचढो सजिकै शशि युवतिन की परजी परजी। परजी परजी अब देह सबै लिखुरी मनमोहन को अरजी ११॥

तथा। फागरी आयो सोहायो चहूँ दिशि गावत सुन्दरि सुन्दर रागरी। रागरी मेरोगयो हरिलै अब कासों कहों अपनो ये अभागरी॥ भागरी हूसे छुटै न शरीर रहो इनबातनको उरदागरी। दागरी मेरो तबै मिटिहै जब मोहनके सँग खेलिहौं फागरी १२॥

तथा। हारिगई मगहेरि चहूं दिशि दादुर शोर करैं अतिभारी। भारीहै दुःख मेरे जियमों नहिं आये पिया मोरीसुद्धि बिसारी॥ सारीसवाँरत गावतगीत बिनापिउ लागत मोहिं कटारी। टारिसकै बिधिरेख न कोउ मन शोधिकहो यह विप्र बिहारी १३॥

तथा। आवतगाढ़ अषाढ़के बादर मोतनु में अति आगिलगावत। गावत चाव चढे पपिहा जिनमोसों अनङ्गसों बैर बढ़ावत॥ धावत बारिभरे बदरा कवि श्रीपतिज हियरा डरपावत। पावत मोहिं न जीवत प्रीतम जो नहिं पावस में घर आवत १४॥

तथा। नई नोखी भईहो कहा तुमहीं उमहीं रहती मतिदीन्हीं दई। दईकाहूकी बीरी न लेतभटू तुम्हैं येबतियां कहो को सिखई॥ खईमों न बड़ो भयो कोऊकहूं क्षण ही अतिही रिस पूरिगई। गई भोर में नाहीं न नाहींकरो लखो कैसी घनेरीघटा उनई १५॥

तथा। गायहैं लोग लुगाई सबै जब्र आनँद कोटिहिये उपजायहैं। जायहैं खेलनफाग सुहागन भागभरी अनुरागन छायहैं॥ छायहैं बीर अबीर गुलालन दम्पति

अङ्ग तरङ्गन नायहैं । नायहैं कान्ह जो बेनी प्रबीण तो जातन प्राण बिलम्ब लगायहैं १६ ॥

तथा । लागरी ना इनबातनमों हरि आयहैं जान बडे निज भागरी । भागरी बैरिनकी चरचाते तजैं गुरु मान पिया रसपागरी ॥ पागरी सोहै न पांयनमें कबि पा-रसहै तुतो बुद्धिकी आगरी । आगरी लागै तिहारे हठै मनमोहन के उठि कण्ठ सों लागरी १७ ॥

तथा । बावरी तूतो बकै बहुतेरो लग्योनहिं नेक कहूं यह घावरी । घावरी घायल जानतहैं जिनके निशि बा-सर प्रेमस्वभावरी ॥ भावरी भोजन भौन न नींद हिये उरझी वह मूरति सांवरी । सांवरे रंगमें हौं मैंरंगी न चढ़ै अब दूसरो रङ्गरी बावरी १८ ॥

तथा । कोहै अरी वह गैल चलोगयो बेणु बजावत सांवरो सोहै । सोहै सदा अँग अङ्ग बिभूषण बीरसुधा सबको मन मोहै ॥ मोहिं बतावहियो हितकै बलिगांव औ ठावँ जहां अब जोहै । जोहै सोहै सुनुमेरीभटू जनि झांक झरोख को जानिये कोहै १९ ॥

तथा । गायहौं देवी गणेश महेश दिनेशहि पूजतही फलपायहौं । पायहौं पावन तीरथ नीरसों नेकुजमी हरि को चितलायहौं ॥ लायहौं आछे द्विजातिन को अरु गो-धनदानकरौं चरचायहौं । चाय अनेकनसों सजनी घन आनँद मीतहिं कण्ठलगायहौं २० ॥

तथा । सूझै न मोबन बाग तड़ाग सबै बिधि फूल पला-श न सूझै । सूझै न मोघर काज सखी नहिं सासु जेठानी

कि बात न बूझै॥ बूझै न मंगद बेणु नये नये सैनन नैनन में नहिं सूझै। सूझै वही वनमालगरे सिगरो जग सांवरो सांवरो सूझै २१॥

तथा। कान्हकी बांसुरी ऐसी बजी मन भैरो हरो सुधि नारही प्रानकी॥ प्रानकी कौन गुमान करै अनुमान विचार कियो सुर तानकी॥ तानकी तेग लगी जियमें हियमें अतिशोच करै वृषभानकी। भानकी भौन को भूली फिरै जबते परी कानमें बांसुरी कान्हकी २२॥

तथा। लालहि घेरि रही ललना मनो हेमलता लपटानी तमालहि। मालहि टूटत जात न जानत लूटतहैं रसरास रसालहि॥ शालहि सौतिन के उरमें चलरी उठि वेगि दै ताल उत्तालहि। तालहि देत उठी ततकाल लगायो गोपाल के गाल गुलालहि २३॥

तथा। तालरी बाजत भूरि मृदङ्ग छुटै बहुरंग भयो नभ लालरी। लालरी गुञ्जन की उरमाल अबीर भरे भरि झोरिन शालरी॥ शालरी होत बिलोके बिना नँदनन्दन आजु रच्यो ब्रज ख्यालरी। ख्यालरी लोने कहा वरणे मनमोहन नाचत दै करतालरी २४॥

तथा। हरीहै सबै सुधि बुद्धि हरी लिल सेज परी तनु चेत नरीहै। नरीहै कहां रतिरूप रतीकन सोने के सांच ढरी पुतरी है॥ तरी है मनोज महानदकी नृप शंकर शोभित लोल डरी है। डरीहै खरी यहि पावसमें पिक शोर सुने लखे भूमि हरी है २५॥

तथा। गायहौं मंगल चारु घने लखि आवतही तनु

ताप बुझायहौं। झायहौं पांय गुलावन सों कमखाव के पांवरे पुंज बिछायहौं ॥ छायहौं मन्दिर बादले सों शशि नाथजू फूलनकी झरि लायहौं। लायहौं सौतिन के उर शाल जबै हँसि लालको कण्ठ लगायहौं २६॥

तथा। धावन भेज सखी वहिदेश बसै ज्यहि देश पिया मनभावन। भावन ओर या लूक लगी तनु बीचलगी जियरा झरसावन ॥ सावनमें न भयो हनुमन्त दोऊ मिलि झूलि मलारहि गावन। गावन मोहिं सोहात नहीं बदरा बदशाह लगे जुरि धावन २७॥

तथा। हरजीवन नेह भरी न रहे घरजी मनमोहन के गरजी। गरजी सुनिकै उनकी मुरली ततकाल हिये में लग्यो शरजी॥ शरजीवन देह न ऐसी परी सो मनो धन प्राण गये धरजी। धर जीभ गई लठराय तऊ मुखसे निकसे हरिजी हरिजी २८॥

तथा। लैगई मोहिं कलिन्दी के कूल दुकूल देखाय ठगोरसी कैगई। कैगई आज बिथातनु में मनही मन मैन मरोरन देगई॥ दैगई दाग दगा करिकै औधेश कहैं तनु तापन तैगई। तैगई नेक न लाई कछू सुधि गोरी गुवालिनि मो मन लैगई २९॥

तथा। धनि वै जिहितात औ मातजनो जिहि देह धरी सो घरी धनिहै। धनिहै कवि ठाकुर धामवही जहां डोलै लली सो गली धनिहै॥ धनिहै उनको जो तुम्हैं दरशैं करसों परसैं सो महाधनिहै। धनि मैं धनि तू धनि तेरो हितू अरु जाकी धना सो धनी धनिहै ३०॥

तथा। छायकै प्रेम गये जबते तबते मैं बची सखी कोटि उपायकै। पायकै पावसकी ऋतुसों अब को बचिहै उठी कोकिला गायकै॥ गायकै सो नँदलाल कहैं चपला चमकै चहुँओरसों आयकै। आयकै हाथ मिले नहिं मोहन मेरी अटापै घटारही छायकै ३१॥

तथा। कोरनलौं दृगदेलीहौ काजर कारीघटा उमड़ी घन घोरन। घोरनते जो चली अलि सुन्दरि बोलत ज्यों सखी बारके मोरन॥ मोरनकी गतिनाचतहै नहिं मानत है हटको बरजोरन। जोर न अंजन देहु सखी अँगुरी कटिजैहैं कटाक्षकी कोरन ३२॥

तथा। आजुरी देखु घटाघन सुन्दर सावन कीन्हों सोहावन साजुरी। साजुरी भूषण भोग शृँगार सो तेरोई आजु बनोसब काजुरी॥ काजुरी आजुघरी वह नेहकी तेरे अधीन खड़े ब्रजराजुरी। राजुरी वारों तिहूंपुर को मुरलीधर आये मयाकरि आजुरी ३३॥

तथा। गहुरे हरिकेपदपङ्कज तू परिपूरोसिखावनहैयहुरे। यहुरेजगझूठोहैदेखुचितै हरिनामहैसांचोसोईकहुरे॥ कहुरे न कहूंपरद्रोहकी बात सुबंशकहै कोउसो सहुरे। सहुरेमनतोसोंकरों बिनती रघुनाथ निरन्तरको गहुरे ३४॥

तथा। गरजी पुनि घोर घटा सजनी रजनी दिन ऊबत भीतरजी। तरजी तड़िता नभ शोरसुने सुमुने मुने कानभयो मरजी॥ मरजी हित हाहाकरी कितनो अरजी न कबूल कियो बरजी। बरजी नहिंमानत मेरी भटू भयो चातक मो जियको गरजी ३५॥

क०। आईहै बहार बनबेलिन नबेलिन में बहुधा चमेलिनमें भौंरभीरछाईहै। छाईहै क्षपाकरकी मरीचिका दरीचिनमें तिनहूं लखि तनको तनुताप ताईहै॥ ताईहै सकल सुधिबुधि यशवन्त मेरी जबते प्राणप्यारे प्राणप्यारी बिसराई है। राई है न नेक कहूं नवमें कलेवर में कहियोहो कन्तसों बसन्तऋतु आईहै ३६॥

स०। लटकी छबि देखि वहां तरुणी तनुछांह परी पियरे पटकी। पटकी कहु प्रीति बिलोकनपै नहिंमानत नेक कही हटकी॥ हटकी हट सौंहटजाय उते कब नन्दन चालचलै नटकी। नटकी कहुँप्रीति बिलोकन पै लट छूटि कपोलन पै लटकी ३७॥

तथा। आयहो ना ऐसे सावनमें मनभावन पावस कैसे बितायहौ। तायहौ का तन तापनतें मन आपन होय सो लेख भेजायहो॥ जायहौ जल्द चले पुनि पाछहि रामचरित्तर देर ना लायहो। लायहो और कछूना हमैं जो बनै तो तुहीं चटसों चलेआयहो ३८॥

क०। गायगोरी मोहनी सुराग बांसुरीके बीच कानन सुहाय मारमंत्र को सुनायगो। नायगोरी नेहडोरी मेरेगरमें फँसाय हृदयथलबीच चाय बेलिको बँधायगो॥ धायगोरी रूप वाको अतिही अनूप हिय दीनघालआय आयचितको चलायगो। लायगोरी रोरी बरजोरी मति भोरीकरि तबहींते हाय लाय बिरह लगायगो ३९॥

स०। आयोअषाढ़सुनो सजनी रजनी दिनघेरिघटा घनछायो। छायो बिदेशहि रामचरित्र अँदेश लग्यो है

सँदेश न पायो ॥ पायोभले अपनेवश कैधौं कहूंकोउ सौ-
तिनसेज लुभायो। भायो कहा उनके मनमाहिं कि पाव-
स आयो पिया नहिं आयो ४० ॥

तथा। सावन शोकनशावनहै नहिं रामचरित्र मेरे
मनभावन। भावनमोहिंघटाघनकी बनकी हरियालील-
गी लुकलावन ॥ लावन कोउकहै उनको उनको करजोरि
कहौ गुण गावन। गावनमें सबको सुख है हमको दुखही
दुखहै दरशावन ४१ ॥

तथा। नईहै तुम्हें अवलोकतलाल लली यह चंचल-
तानमई है। मई है बिचारि कहौं बलदेव नेवारन धीरज
सैनदई है ॥ दईहै बचैमन ना सुनतै तनमैन महीपतिकी
कलईहै। लईहै उरोजन श्रीफलई यह नारि नईन की
रीति नईहै ४२ ॥

क०। दमकेदशौदिशा दुनालीज्योंढ़ दामिनी घनके
नगारे भारे उर उलझनके। झनके झनाक झुंडझींगुर
बिगुर बाजैं सनके समीर तीर शक्र शरासनके ॥ सनके
समरमद मेचक झिलमधारे ठनके नकीब दर्प दादुर
दमनके। मनके नदनके बिनकामिनी कदनके ये आये
वीर बादर बहादर मदन के ४३ ॥

स०। गईहरिनींद पियास क्षुधा जबते बन कोयल
कूक दईहै। दईहै हुआं बिरहीबन पल्लव फूलो गुलाब
बहार भईहै ॥ भईहै दशौदिशि भौंरन गुंज सुशीतल
मन्दसुगन्ध लईहै। लईहै नहीं सुधि पीतमजी शिरपै
ऋतु आय बसन्त गईहै ४४ ॥

तथा। पीरहैदूरि पपीहाके मतजैये वहां जहां सौ-तिकोतीरहै। तीरहै बैरी न बोलो यहां कखरौरन गुंजत भौंरकी भीरहै॥ भीरहै धीरज राखिबेको ह्लाद बसन्त मनोज की बीरहै। बीरहै कोऊ नहीं यहि गाउँमों बूझत कोऊ न काहूकी पीरहै ४५॥

उपमाके कवित्त व सवैया १२॥

क०। हाथी कैसो कान कीधौं पीपरको पान कीधौं ध्वजाको उड़ान कहूं थिर न रहत है। पानी कोसो घेर कीधौं पौन उरझेर कीधौं चक्र कोसो फेर कोऊ कैसेकै गहत है॥ रहटकी माल कीधौं चरखाको ख्याल कीधौं फेरिखात बाल कछू सुधि न लहत है। धूमकोसो धाव ताको राखिबेको चाव ऐसो मनको स्वभाव सोतो सुन्दर कहत है १॥

तथा। अश्वबिन दौरनहीं हुकम बिन तौरनहीं ब्याह बिन मौर नहीं जेब पाई। दयाबिन दान नहीं द्रव्य बिन मान नहीं तालबिन तान नहीं जात गाई॥ योगबिन युक्तिनहीं गुरुबिन उक्तिनहीं रामबिन मुक्तिनहीं वेदगाई। डोरबिन चंगनहीं तेगबिन जंगनहीं अंगबिन रंग नहीं होत भाई २॥

तथा। भोजन ज्यों घृत बिन पन्थ जैसे साथीबिन हाथी बिनदल जैसे दारु बिनबानहै। रावरंग रानी बिन कूप जैसे पानीबिन कबि जैसे बानीबिन सुगर बिन तानहै॥ रसरास रीति बिन मित्र ज्यों प्रतीति बिन ब्याह काज गीत बिन आदर बिन दानहै। रंग जैसे केसर बिन मुख

जैसे बेसरबिन प्यारीबिन रैन ज्यों सुपारीबिन पा नहै ३ ॥

तथा। बिद्या बिन द्विज औ बगीचा बिन आंबनको पानी बिन सावन सोहावन न जानीहै। राजा बिन राज काज राजनीति सोचे बिन पुण्यकी बसीठी कहो कैसेधौं बखानी है॥ कहैं जैदेव बिनहितको हितूहै जैसे साधुबिन संगति कलंककी निशानी है। पानी बिन सर जैसे दान बिन कर जैसे शीलबिन नर जैसे मोतीबिन पानीहै ४॥

तथा। गुन बिन कमान जैसे गुरु बिन ज्ञान जैसे मान बिन दान जैसे जलबिन सरहै। कण्ठबिन गीत जैसे हेत बिन प्रीति जैसे बेश्याबिन रीति जैसे फलबिन तरु है॥ तार बिन यन्त्र जैसे स्याने बिन मन्त्र जैसे पुरुषबिन नारि जैसे पुत्र बिन घरहै। बाणी बिन कबि जैसे मन में बिचारि देखो धर्मबिन धन जैसे पक्षी बिन परहै ५॥

तथा। चन्द्रबिन रजनी सरोजबिन सरवर तेजबिन तुरंग मतंग बिना मदको। बिनासुत सदन नितम्बिनी सुपति बिन बिनधन धरम नृपति बिन पदको॥ बिनहरि भजन जगत सोहै जन कौन नोन बिन भोजन बिटप बिना छदको। प्राणनाथ सरस सभा न सोहै कबि बिन बिद्या बिन बातन नगर बिना नदको ६॥

तथा। नैन जैसे सलिल चाहैं सलिल जैसे बिमल चाहैं बिमल जैसे कमल चाहैं सीता ज्यों रामको। पावस ज्यों पपीहा चाहै बहिन ज्यों भैया चाहै राधा ज्यों कन्हैया चाहै परदेशी धामको॥ गरजैसे मोरचाहै चन्द्र ज्यों चकोर चाहै चकई ज्यों भोरचाहै कामिनी ज्यों काम

को । सुख जैसे तन चाहै शूर जैसे रनचाहै वैसाही मेरा मन चाहै प्यारी तेरे नामको ७ ॥

तथा । हीराकी झलक जैसे जुगनू की दमक जैसे दामिनीकी चमक जैसे मोती झलकानहै । सुधाकोसीर जैसे नावकको तीर जैसे जादूको बीर जैसे करत पयानहै । शोभाको मूल जैसे फुलझरीको फूल जैसे तेजक त्रिशूल जैसे राखो धरीसान है । पुहुप बिकसान जैसे ज्योति शशि भान जैसे कञ्चनकी खान जैसे तेरीमुसक्यानहै ८॥

तथा । अश्व बिन बीरभोंड़ो गांसी बिन तीर भोंड़ो स्वादबिन क्षीरभोंड़ो नीरभोंड़ो झीलको । श्रीपतिसुजान कहैं राहबाटरेत भोंड़ो भूपति अचेत भोंड़ो खेत भोंड़ो बिलीलको ॥ पूरबको पौन भोंड़ो ऊंटचढ़ि गौन भोंड़ो बिधाधरमौन भोंड़ो भौन भोंड़ो भीलको । सांझभोरशौनभोंड़ो श्वाननकोचैनभोंड़ोशीलबिननैनअरुबदनबखीलको९॥

तथा । शीलवान नरनीको बालकको घरनीको दान युत करनीको उजियारो चन्दको । बिद्याको बिबादनीको रामगुण नादनीको कोमल मधुर स्वादनीको होतकन्द को ॥ गऊकोनवनीतनीको जेठमास शीतनीको श्रीपति जू मीतनीको बिनछलछन्दको । कारनीको झटपट श्याम रङ्गनीकोलट बटनीको बंशीबट नटनीको नन्दको १० ॥

तथा । तेलनीकोतिलको अजमेरको फुलेलनीको साहिबदलेलनीको सैलनीको चन्दको । बिद्याकोबिबादनीको रामगुणनादनीको कोमलमधुर सदा स्वादनीको कन्द को ॥ गऊकोनवनीतनीको जेठहूकोशीतनीको श्रीपतिजू

मीत नीको बिना फरफन्दको। जातरूपघटनीको रेशम को पटनीको वंशीबट तटनीको नटनीको नन्दको ११॥

तथा। चोरी नीकी चोरकी सुकवि की लबारीनीकी गारी नीकी लागति श्वशुरपुर धाम की। नाहीं नीकी मानकी सयान की जवान नीकी ताननीकी तिरछी कमाननीकी कामकी॥ तातहू की जीतिनीकी निगम प्रतीति नीकी श्रीपतिजू प्रीतिनीकी लागै हरिनामकी। रेवा नीकी बान खेत सुन्दरी सुठैवानीकी मेवानीकी काबुलकी सेवानीकी रामकी १२॥

तथा। ताल फीको अजल कमल बिन जल फीको कहत सकल कवि हवि फीकोरूमको। बिन गुणरूपफीको ऊसरको कूप फीको परमअनूप भूपफीको बिनभूमको॥ श्रीपति सुकवि महाबेगबिन तुरीफीको जानत जहान सदा जोहफीको धूमको। मेहफीको फागुन अबालकको गेहफीको नेह फीको तियको सनेह फीको सूमको १३॥

तथा। फूलबिन बागजैसे बाणीबिन रागजैसे पानी बिन तड़ाग अरु रूप बिनअंगहै। धनबिनसाज जैसे सोचे बिन काजजैसे राजाबिनराज्य जैसे नदीबिनतरंगहै॥ एकअंगी प्रीतिजैसे वेश्या बिनरीति जैसे प्रेम बिन मीत जैसे शोभा बिन रंगहै। प्यारी बिन रैन जैसे हाफ़िज बिचारि देखो शीलबिन नैन अरु साधुबिन संगहै १४॥

तथा। नर नीको शीलवान घर नीको धनवान कर नीको युतदान कहत जहानहै। रूपवान नारिनीकी द्वारेचारभारिनीकी शीतल बयारि नीकी तेज जन्नभानहै॥

बिषबुझ्योतीरभोंड़ो बैदबिनपीरभोंड़ो तालबिनतीर औैर मौनी बिद्यावानहै। रागभोंड़ो तानबिन तलवार सान बिन हाफ़िज़ अधिक भोंड़ो मित्रको पयानहै १५॥

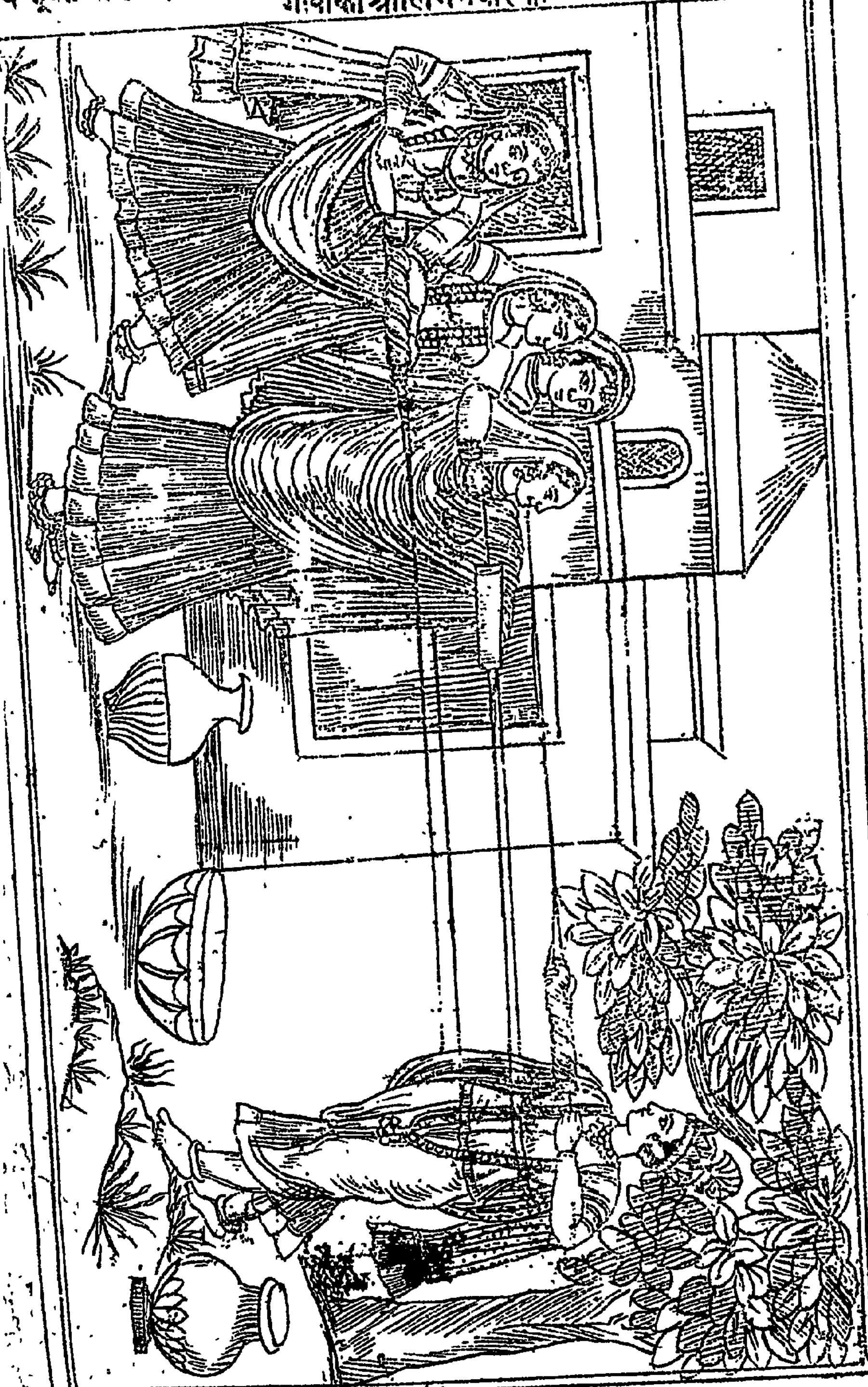
तथा। माथे पैं मुकुट देखि चन्द्रिका चटकदेखि छबि की लटक देखि रूपरस पीजिये। लोचन बिशाल देखि गरे गुंजमाल देखि अधरको लाल देखि चित्त चोप कीजिये॥ कुण्डल हलन देखि अलकैं खिलन देखि पलकैं चलन देखि सरबस कीजिये। पीताम्बर छोर देखि मुरली की घोर देखि सांवरे की ओर देखि देखिबोई कीजिये १६॥

तथा। नटको न धाम ना नपुंसकको काम नाहिं ऋणी को अराम बास बेश्या ना सहेलरी। ज्वारीको न शोच मांसहारीको न दयाहोत कामीको न नातोगोत छाया ना सहेलरी॥ देवीदास बसुधामें बनिक न सुनो साधु कूकर को धीरज न मायाहै सहेलरी। चोरको न यार बटपारको न प्रीति होत लाबर न मीतहोत सौति ना सहेलरी १७॥

तथा। जारको बिचार कहा गणिका को लाज कहा गदहा को पान कहा आंधरेको आरसी। निर्गुणीको गुण कहा दान कहा दारिद्रीको सेवाकहा सूमकी अरण्ड कीसी डारसी॥ मद्यपीको शुचा कहा सांच कहा लम्पट को नीचको बचन कहा स्यारकी पुकारसी। टोडरसुकबि ऐसे हठीते न टारटरैं भावैंकहौसूधी बात भावैंकहौफारसी १८॥

स०। ईंटकोबन्धन नीमको चन्दन नीचकोनन्दन बामकोघूसा। मातेकीगान डफालीकीतान औगूंगाको ज्ञान

श्रीकृष्णचन्द्रजी का गोपियों के संग में होरी खेलना व गोपियों का श्री कृष्णचन्द्र जी के ऊपर पिचकारियों से रंग छिड़कना और श्री कृष्णचन्द्र जी का एक गोपी को आलिंगन करना.



कपूत को रूसा ॥ रङ्ककी रीझ औ मौजीकी खीझ अजानकी प्रीति जुवार को चूसा। राज को दूसरो छेरी को तीसरो रेंड़को मूसरो खासर खूसा १९ ॥

तथा। सांप सुशील दयायुत नाहर काकपवित्र औ सांचो जुवांरी। पावक शीतल पाहन कोमल रैनि अमावसकी उजियारी॥ कायर धीर सती गणिका मतवारो कहा मतवारो अनारी। मोतियराम विचारि कहैं नहिं देखी सुनी नरनाह की यारी २० ॥

क०। सम्पति सुमति नीकी विपति सुधीर नीकी गङ्गातीर मुक्ति नीकी नीकी टेक रामकी। पतिव्रता नारि नीकी परहित बात नीकी चांदनी कि राति नीकी नीकी जीत कामकी॥ बालकृष्ण वेदविद उग्रनीकी भूसुर कि भक्ति नीकी नीकी है रहनि हरि धाम की। अगन की हानि नीकी तातकी मिलन नीकी स्वरमिली तान नीकी प्रीति नीकी रामकी २१ ॥

फाग व होरी समय के कबित्त व सवैया १३॥

क०। बाजै डफढोल बाजै फागके समाज साजे ग्वालनके झुण्डलै गोविन्द फौज जोरी है। बांधे शिरचीरा हीरा झलकै कलँगिन मैं अंगनि तरंग रंग भूषण करारी है॥ केशरिया बागे अनुरागे प्रेम पागे मन माखन समागे फहरात पट छोरी है। लीन्हे भरिझोरी पिचकारी रंग बोरी आजु होरी आजु होरी बरसाने आजु होरी है १ ॥

तथा। फागुखेलि श्यामसंग सदन सिधारी प्यारी

देखो तसवीर नम्बर १८॥

राचै द्युति दामिनि सों भामिनि भरी अनंग। कविराव राना बैठि रतन सिंहासन पै दर्पभरी दर्पण लै भूषण सँभारै अंग॥ चन्दमुख चन्दनते चन्द की कलासी खा: सी कंचन की झारिन में जल भरिल्याई गंग। कोमल कपोलन में धोवती गुलाल लाली त्यों त्यों होति आली अति गहब गुलाबी रंग २॥

तथा। उतते कन्हाई लरिकाई के सखन लीन्हे करि चतुराई केलि होरीकी मचाई है। इत वृषभानकीकुमारी सुकुमारी प्यारी आलीगण आली में रसालीसी सोहाई है॥ लालन गुलालनकी लालनपै डारैं मूठि चलै पिच-कारी सुख कारी दुहुँघाई है। केसर रँग साने सुरंग नेह सरसाने डारैं बरसाने बरसाने झरिलाई है ३॥

तथा। होरीहोरी करत अबीर भरिझोरी लीन्हे खोरी खोरीफिरैं ग्वालबाल समुदाई है। तामें नँदलाल लाल चीराजरी धरेगरे भावत बिशाल बनमालकी सोहाई है॥ कीरति किशोरी संग गोरी यूथयूथ मिलि भरी अनुराग फाग श्याम सों मचाई है। केसर रँगसाने सुरंग नेहसर-साने डारैं बरसाने बरसाने झरिलाई है ४॥

तथा। आजु नन्दजू के है अनन्द भरे खेलैं फाग कोटि चन्द ते दुचन्द भाल द्युति लाल की। आभरण ही-रन के माणिक ललाई आई तैसी छबिछाई है बिशाल बनमाल की॥ अबिर उड़ावैं मूठिमूठि सी चलावैं सखी देखिये लुनाई नटनागर गोपाल की। सजे पीत पटपर मुरली लकुटपर मोर के मुकुटपर गरद गुलाल की ५॥

तथा। कीरति किशोरी संग श्यामैं लखि भई भोरी होरी देखि आई आज प्यारे बल बीरकी। सारी जरतारी की किनारी में गुलाल राजै तैसी छबि छाजै उत काश्मीर चीरकी॥ हरैंहरैं आवैं मन्द मन्द स्वरगावैं दोऊ मिलि मुसकावैं द्युति धावैंरी शरीरकी। नैनकोर ओरपर बरुनीकीछोर पर मोहन मरोर पर ओप है अबीरकी ६॥

स०। नन्द के मन्दिर जाउ सबै दुलही घर राखि मिलैं फगुवाके। होरी बढ़ावनको घरके गये आये हैं भोर भये रतियाके॥ भीतर भौनके लाय धरो ये केवांर उठाय नजायँ यहांके। सासुके ये सुनि बैन विशाल सों फूलि गये सब अंग तियाके ७॥

तथा। ऊधम ऐसो मचो ब्रजमों सब रंग तरंग उमंगनसीचैं। दै पिचकारिन छंजन जातिन ह्वै छबि छाजत केसरी कीचैं॥ त्यों पदमाकर होहुँगई हुति पीछे गोपाल गुलाल उलीचैं। यकसंगहिं जो फिरि मैं रपटी तो वैभये ऊपर मैं भई नीचैं ८॥

तथा। नाहक दो दिन माह रहो अब फागुन ते सब रंग मचैंहैं। गोपनमें मिलिकै बलदेव इतै नँदनन्दनहूं चलि ऐहैं॥ त्याग किये गृह तौ न बनी बलबीर अबीर जरूर लगैहैं। ना कहिबो हौं पाक कछू फिरि आपनि खोरि सबै अजरैहैं ९॥

तथा। फागकी रैनि अँधेरी गलीनमें मेल भयो सखि सांवरेजीको। हौं घरलीन अचानक दौड़ि लगावन काज गुलालको टीको॥ वाने गुलाल लगायो अली

जब लीन्हो मुठीमें अबीर सो नीको। बस्त्रहुँ छांड़ि कन्है-
या गयो न भयो सखि हाय मनोरथ जीको १० ॥

तथा। खेलन फाग सबै निकसीं अरु रंग गुलाल
लिये भरि झोरी। मूठि चलावत ग्वालिनपै अरु श्याम-
लके मुख आवनरोरी॥जबहीं हँसि हेरि गह्यो अँचरा पर
सादसी प्रीति गुलालसी जोरी। मोसे दुरैहो कहा सज-
नी निठुरे निठुरे कहुँ ऊंटकी चोरी ११ ॥

तथा। खेलिय फाग निशंकह्वै आज मयंकमुखी वड़
भाग हमारो। लेहु गुलाल दोऊ कर में पिचकारिन रंग
हियेमहँ मारो॥ भावै तुम्हैं सो करो मोहिं लालन पांव
परौं जनि घूंघट टारो। बीरकी सों हम देखिहैं कैसे अ-
बीरतौ आंखैं बचायकै डारो १२ ॥

तथा। फागके भीर अभीरन त्यों गहि गोबिंद लैगई
भीतर गोरी। भायकरी मनकी पदमाकर ऊपर नाय
अबीर कीझोरी॥ छीनि पिताम्बर कम्मरते सो बिदादई
मींजि कपोलन रोरी। नैन नचाय कही मुसुक्याय लला
फिरि आइयो खेलन होरी १३ ॥

क०। खेलै लगीं फाग संग रम्भासी रसीली नारि
नागरी गुलाल मुख मेले नन्द बेटे सें। कोऊ पिचकारी
रंग बसन उघारि मारि झपटि उतारि रंग बोरी कोऊ
फेटेमें॥ होरी होरी बोली गोरी बैस सब थोरी थोरी श्याम
श्यामा रोरी लैलपेटे श्याम पेटमें। तौलौं मुसुक्याय कुच
पकड़े दिवाकरजू धरेबाज कोक मानो एकही झपेटमें १४॥

तथा। नटके बटासे कलधौतके घरासे खासे लीन्हे

छटासे रतिराजजूके गट्टासे। दाड़िम नरंगी बेलबीज शैल शिखरसे सीव से दिवाकर जू आनक उलट्टा से॥ साहुल से गोल से सिंघौरा वटस्मार ऐसे अतिही कठिन पीन सीन पनवट्टासे। चक्रवाक शावक से लालरंग जावकसे बालाके उरोज धरे बाजके झपट्टासे १५॥

तथा। लैलैकर झोरी जुरिआई इतै गोरी उतैहोरीखेलिबेको ग्वालजालहू बनाया कीच। छायगो छिनै में योंगुलाल मेघमाल ऐसो द्विजदेव जासों न जनायो परै ऊंच नीच॥ ऐसी भई धूंधर धमारकी सुताही समय पावस के भोरे मोर शोरकै उठैं अपींच। घनके समान ज्योंज्यों दौरैं घनश्यामत्योंत्यों संपासी दुरतआली चम्पाघनवीचबीच १६

तथा। आलीहौंगईहौं आज भूली बरसाने कहूं तापै तू परैहै पदमाकर तनैनी क्यों। ब्रजवनिता वै बनितान पै रचैहैं फाग तिन में जु ऊधमिनि राधा मृगनैनी यों॥ घोरिडारी केसरि सुबेसरि बिलोरिडारी बोरिडारी चूनरि चुचातिरङ्गनैनी ज्यों। मोहिं झकझोरिडारी कंचुकी मरोरिडारी तोरिडारी कसन विथोरिडारी बेनी त्यों १७॥

तथा। मधुर मधुर मुख मुरली बजाई धुनि धमकि धमारनकी धाम धाम कैगयो। कहै पदमाकर त्यों अगर अबीरनकी करिकै घलाघली छलाछली चितैगयो॥ को है वह ग्वालिनि गुवालिनिके संगमें अंगछबि वारों रसरंगमें भिजैगयो। वैगयो सनेह फिर छ्वैगयो छराको छोर फगुवा न दैगयो हमारो मन लैगयो १८॥

तथा। अवधि बिताई येतीकरी निठुराई पिया पाती

नपठाई गुणराजनजरूरी मैं। ऋतुपति आई पाती अति ही सोहाई फिरी कामकी दुहाई दुखदारुण दरोरी मैं॥ फूलेहैं पलाश औ हुलास सब बाधनके अंग अंग अतर अबीर भरे झोरी मैं। मदन बढ़ोरी प्राण चाहत कढ़ोरी सखी और खेलैं होरी हम हारी होत होरी मैं १९॥

स०। फागमचो सिगरे ब्रजमों नभबादर लाल गुलाब से छाये। नागरी औ मनमोहननागर सामने होत चितै मुसुकाये॥ मानगयो छुटि मोदभयो मन दोऊ सनेह भरे बतलाये। मूठी अबीर चलाय सुगन्ध लगावत के मिसिसों लपिटाये २०॥

स्वप्नदर्शन बिषय के कबित्त व सवैया १४॥

स०। सोवत आजसखी सपने द्विजदेवजू आयमिले बनमाली। जौलौं उठी मिलिबे कहँ धाय सोहाय भुजानभुजानपै घाली॥ बोलि उठे ये पपीगन तौलगि पीव कहां कहि कूरकुचाली। सम्पतिसी सपनेकी भई मिलिबो ब्रजराजको आजकोआली १॥

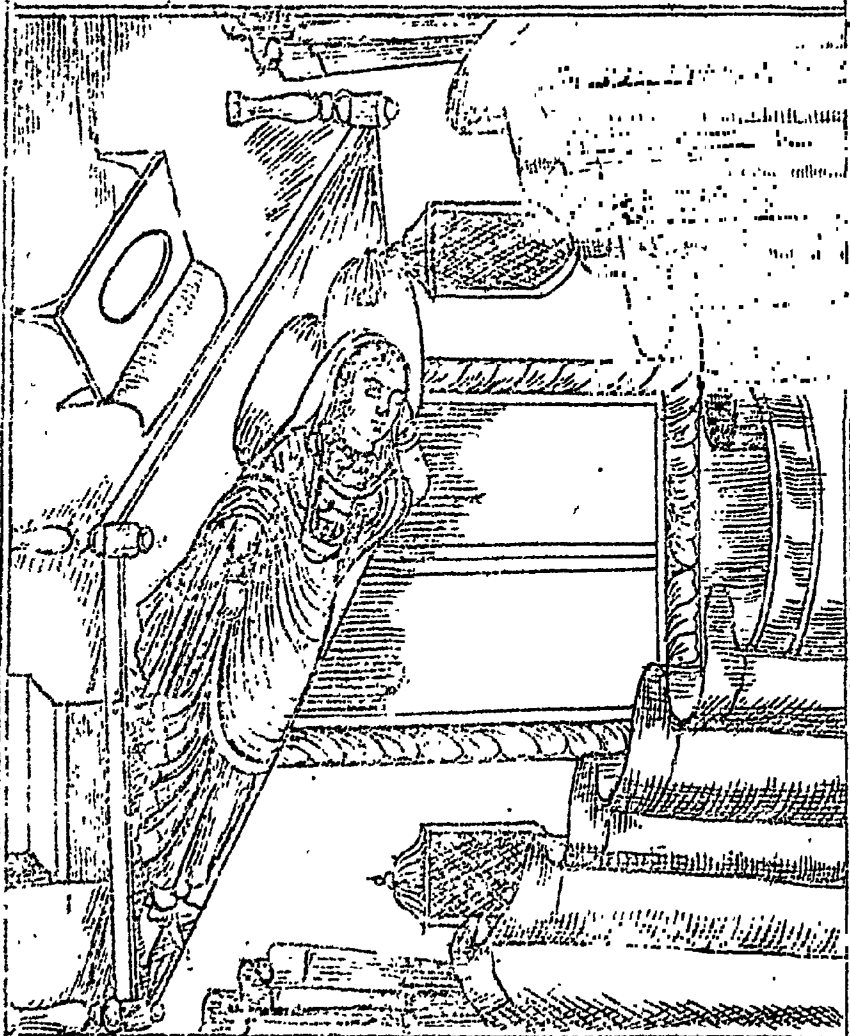
तथा। आवतमें सपने हरिको लखि नेसुक बाट सकोचनछोड़ी। आगे ह्वै आड़ेभये मतिराम महूंचितयो चित लालच ओढ़ी॥ ओंठनको रसलेनको आलिरी मेरीगही कर कांपत ठोढ़ी। और भई न सखी कछु बात गई इतनेही में नींद निगोड़ी २॥

तथा। व्याकुल काम सतावत मोहिं पियाबिननीक न लागत कोई। प्रीतम से सपने भई भेंट भली बिधिसों

देखो तसवीर नम्बर १४॥

हज़ारा तसवीर नं० १६ मुतअल्लिके सफ़ा ४६२

श्रीराधिका जी का शयन में श्रीकृष्ण चन्द्र को स्वप्न में देखना और सम्पूर्ण वृत्तान्त सखी सों कहना



लपटायकै सोई ॥ नैन उघारि पसारिकै देखौं चौंकि परी कितहूं नहिं कोई। एरी सखी दुख कासों कहौं मुसुक्याय हँसी हँसिकै फिरि रोई ३ ॥

तथा। पौढ़ी हती पलँगा पर मैं निशि ज्ञानरु ध्यान पिया मन लाये। लागि गईं पलकैं पलसों पल लागतहीं पलसें पिय आये॥ ज्योंहि उठी उनके मिलिबे को जागि परी पिय पास न पाये। मीरन और तो सोयकै खोवत हौं सखि प्रीतम जागि गँवाये ४ ॥

तथा। लै अपने सपने मनकी दुलही उलही छवि भाग भरीसी। अंक निशंकसों लै परयंक लला मुख चूमि सुचारु धरीसी॥ यों लपटी चपटी हिय सों यशवंत बिशाल प्रसून छरीसी। नैननके खुलतै वह मूरति पास परी उड़िजात परीसी ५ ॥

क०। आये कान्ह द्वार आली बेगि उठि देखौ धाय काहू यह बात कही आनँद सुधामई। केतिकौ दिना की हिय तलफ बुझायवे को हौंहू परसाद प्यारे देखन तहां गई॥ झूठो सुख सपनेमें करन न पायो कोऊ एहो निरदई ऐसी तुरत दगादई। जौलौं भरिनैन वह मूरति निहारि देखौं तौलौं नैन छोड़ि नींद बैरिनि बिदा भई ६ ॥

तथा। ओढ़े पटपीत शिर सजनी सपन बीच साँवरो सलोनो एक देख्यो आज रैनको। जानो नहिं कौन हो कहांते आयो मेरे ढिग लैगयो छबीलो छलि घेरे चित्त चैन को॥ कंजनसे करे मनरंजन करत आली अंजन लगायो मेरे खंजन से नैनको। कहौं करजोरि तोसों आलिरी

मिलाय मोसों मोहिं अफसोसै दै भरोसै निज बैनको ७॥

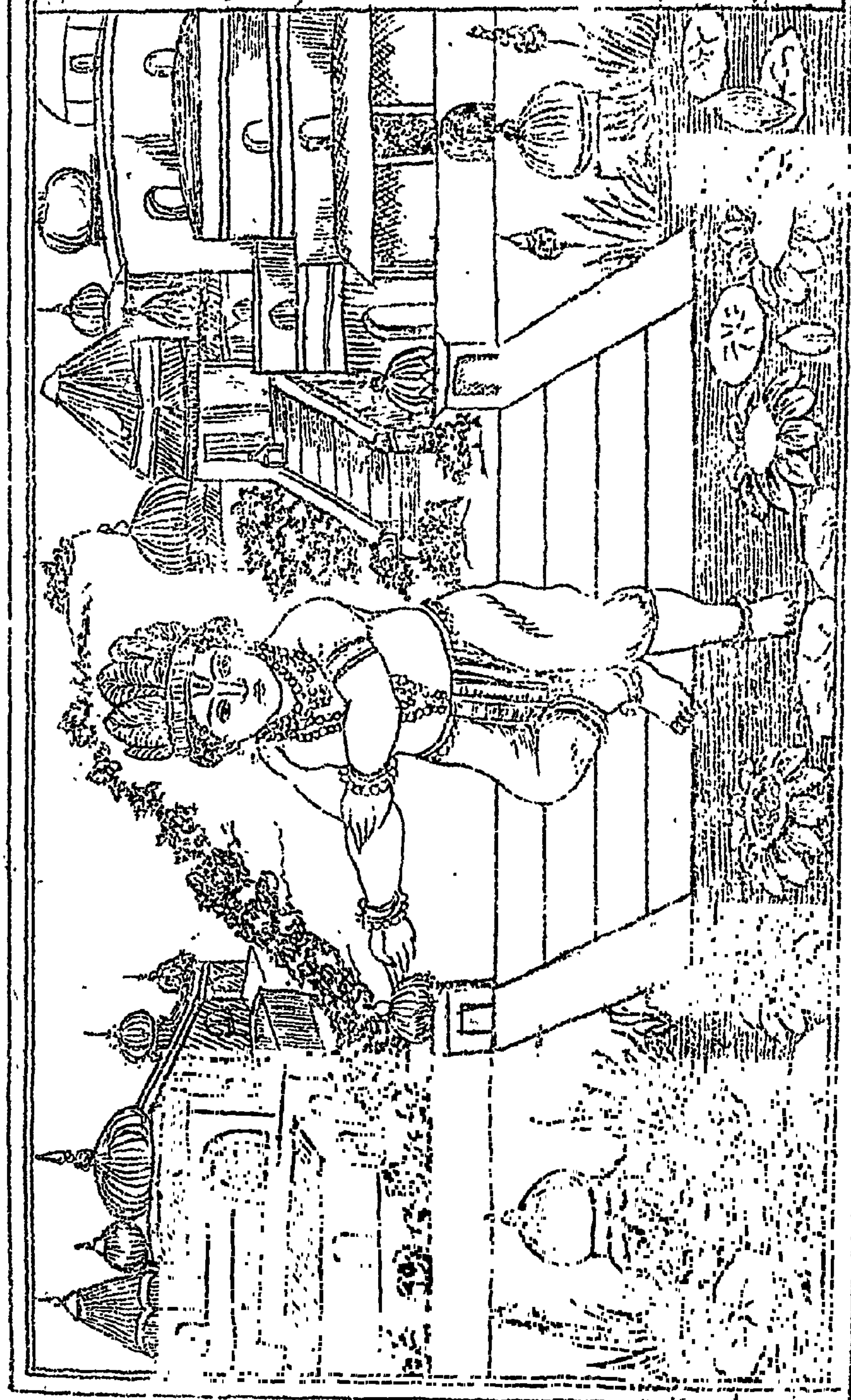
तथा। काहूकाहू भांति राति लागीली पलकतहां स-पनेमें आय केलि रीति उनठानीरी। आयदुरे जाय सम नैनन मुँदाय कछु होंहूं वजमारी ढूंढ़िबेको अकुलानीरी॥ एरी मेरी आली या निराली करताकी गति द्विजदेव नेक हूं न परत पिछानीरी। जौलौं उठि आपनो पथिक पिय ढूंढ़ौं तौलौं हाय इन आंखिनते नींदई हिरानीरी ८॥

तथा। प्यारे के वियोग वश व्याकुल निहारि अनुहारि पीकी लखी शोभा सरसनकी। भूषण वसन तन दीपति की सरसाई दरशाई बालको विनोद बरसनकी॥ अवधि बिताय तुम आय सुकवीन्द्र प्यारे परखी न वेदना हमारे तरसनकी। दैगई विरहनो गई न करी भई वाके अक्षन प्रतीत प्रतिक्षण दरशनकी ९॥

तथा। सोवति उचकिपरी लालहि बिलोकि बालस्व-पन कहानी कहि सानी मृदुबानीसों। सांवरे सो डावरी लकुट पट पीतवारो मेरो पट पकरि लपटि उर आनीसों॥ सकुचि सकुचि आली लाजन मरत कछु काजन सरत एरीबिना दधिदानीसों। शोचि शोचि मोरिहग बावरी फिरत ज्यों सफरी सी तलफत प्यारी बिन पानीसों १०॥

तथा। तड़ितकलासी रतिकासी अमलासी हासतारा सी दिपतितेरी मेरेउरपारिगई। कमलाकनक ज्योतित-लन तिलोत्तमासी घृताचीसी छरि छबिनेक चित गड़िग-ई॥ उरमें न आवै उरबशी यक्ष किन्नरीसी नरीरूप क्योंन लगै ताके मनहरि गई। मृदूल मृणालिकासी मल्लिकासी

इज़ाफ़ा तसवीर नं॰ २० मुताल्लिके सफ़ा ४६५



कलियुग का स्वरूप जो आजकल वर्तमान है ॥

मालिकासी ब्रालिकामरोरि मनसेहरसो करिगई ११ ॥
स०। आजअली बहुद्योसनिमें मनमोहनजू सपने में निहारे। बातेंकरी अनुरागभरी अरु केलिकलानि के पुंज उघारे ॥ जातकह्यो न लह्यो सुख सौतिन सो मनसों सबही दुखटारे। जागिपरी अकुलामि भई जब देखे नहीं ढिग प्राणपियारे १२ ॥
तथा। सुनिबातसखी सपनेकी जबै हरिकेढिगको अकुलाय चली। मनमाहिं विचारत आरतसी उरबालकी आय करौंगिरली ॥ मनमोहन कुंजमें जाय लखे जहँ सोहैं कदम्बन की अवली। नवनागरि बेदनि भेदनिको सबकीने निवेदन भांतिभली १३ ॥
कलियुग व कालगति वर्णन के कवित्त व सवैया। १५ ॥
क०। कालसों न बलवन्त कोई नहीं देखियत सबको करत अन्तकाल महाजोरहै। कालहीको डर सुनि भाज्यो मूसा पैगम्बर जहां जहांजाय तहां तहां वाको घोरहै ॥ कालहै भयानक भैभीत सबकिय लोक स्वर्ग मृत्यु पातालमें कालही को शोरहै। कालही को काल एक सुन्दर अखण्ड ब्रह्म वासों काल डरै जोई चल्यो वहि ओरहै १ ॥
तथा। झूठसों बँध्योहै जाल ताहीते ग्रसत काल काल विकराल व्याल सबहीको खातहै। नदीको प्रवाह चल्यो जातहै समुद्रमाहिं तैसे जग कालहीके मुखमें समातहै ॥ देहसों ममत्व ताते कालको भयमानतहै ज्ञान उपजेते वह

देखो तसवीर नम्बर २०॥

कालहू बिलालहै। सुन्दर कहत परब्रह्महै सदा अखण्ड आदि अंत मध्य एकसोंहीं रहातहै २॥

स०। कालउपावत कालखपावत कालमिलावतहै गहि माटी। काल हलावत काल चलावत काल सिखावत है सबआटी॥ कालबुलावत कालभुलावत कालडुलावत है घनघाटी। सुन्दर कालमिटै तबहीं पुनि ब्रह्म बिचारि पढ़ै जब पाटी ३॥

क०। मायतो पुकारि छाती कूटिकूटि रोवतहै बापहू कहत मेरोनन्दन कहांगयो। भाईहू कहत मेरी बांह आज दूरिभई बहिनिकहत मेरा बीर दुःखदैगयो॥ कामिनी कहत मेरो शीश शिरताजकहां उन तत्काल हाथ मीसि धोयहै लयो। सुन्दर कहत ताहि कोऊ नहीं जानि सकै बोलत हतो सु यह क्षणमें कहांगयो ४॥

तथा। राजनकीनीतिगई मित्रनकीप्रीतिगई नारीकी प्रतीति गई यार मनभायो है। शिष्यन को भावगयो पञ्चनको न्यावगयो सांचको प्रभावगयो झूठही सुहायोहै॥ मेघनकी बृष्टिगई भूमिशुद्धनष्टभई सर्व सृष्टिही में बिपरीत दरशायो है। कीजिये सहायजू कृपाल श्री गोबिंदलाल कठिनकराल कलिकाल चढ़िआयो है ५॥

तथा। गृहीजे दरिद्रीभये संग्रही संन्यासीभये योगी संयोगी मन माया में मिलायोहै। तपी रोजगारी ब्यभिचारी ब्रह्मचारीभये कपटको स्वांग बहुलोगन बनायो है॥ ज्ञानीजन मानीभये दानीभये दम्भी पुनि आरम्भी बिरक्त राग द्वेष उपजायो है। कीजिये सहायजू कृपाल

श्रीगोविंदलाल कठिनकराल कलिकालचढ़िआयोहै ६॥
तथा। छमी भये छोभी कबिजन भये लोभी जिन हरी रसछांड़ि यश मानस को गायो। सूम भये स्वामी पुनि सेवक हरामी भये कामी भये पण्डित जे मान ठहरायो है॥ हीन भये धरमी अधरमी यतीन भये चाकर सुलीन अकुलीन धन पायो है। कीजिये० ७॥
तथा। प्रभूचरणामृत प्रसाद को कहूं न नेम भांग और अफीम आफू सभीने खायोहै। व्यास बाल्मीकिसूर तुलसीकी बानीतजी आल्हा पृथ्वीराजको सुनत सुख पायो है॥ गादी बैठ शूद्र उपदेश करत बिप्रन को बिप्र हरदेव छांड़ और देव ध्यायो है। कीजिये० ८॥
तथा। ब्राह्मणन पढ़ेवेद गायत्री तर्पण संध्या चाकरी मजूरी हलजोतिबेको धायो है। क्षत्री जमींदार अन्ध निजपुत्री को मारडारें कुलवधू बिसारें चित चेरीसों लगायो है॥ बिप्रन सों बन्दगी करावें कही बैश्यशूद्र ब्राह्मण बनेंनिन सों करें मनचाह्यो है। कीजिये० ९॥
तथा। एक की सगाई करें ताको पुनि दोष धरें धन लेकै मौर शिर और के बँधायो है। सबलकी सबकहैं निबलको दूनोंदहैं बिना अपराधही गरीब को सतायो है॥ ऊँटनीसों नातो हांतोहूं न करें कौड़ी के काज नीच सों नातो भांति भांतिकर बनायो है। कीजिये० १०॥
तथा। भानजी भतीजी चेला चेलीसों लगावें लाग और को बिबेक भांति भांति समझायोहै। बहिनिभतीजी भानजीको न खावें प्यावें कुटनी कुराही दाम देत न

अघायो है ॥ ईश्वर के हेत न कवीश्वर को देत कछू कञ्चनी के काज उधार जो मँगायो है। कीजिये० ११ ॥

तथा। भाई किये न्यारे जवाई किये प्यारे सारे घर रखवारे किये कछु ना दुरायो है। मायसों लड़त पायँ सासुके पड़त निज नारी के कहे में फिरतहि अनुसायो है॥ पिताते लजावें बोल गुरुन ते पलट जावें ऐसे जन देख उर महाअकुलायो है। कीजिये० १२ ॥

तथा। भाईजे बटोही हैं पुरोहित जेलम्पटहैं तातमात बेटाबेटी बेंच धन खायो है। कुलबधू भूखमरैं कुलटा शृंगारकरैं कन्या कुवांरिनपै मन ललचायो है॥ पानी भरैं ननंद जिठानी सासु पीसैपवैं बहूबैठि आपनोई हुकम चलायो है। कीजिये० १३ ॥

तथा। हारीभये भूपति सभासब अनारी भई प्रजाही के लूटने को मंत्रलै उपायो है। बहुरा भिखारी व्योपारी लवारी भये मारें जमाले और को दिवालो ले दिखायो है॥ ज्वारी भये जौहरी इज़ारदार हाकिम जे चोर चौकीदार जमींदार देत दायो है। कीजिये० १४ ॥

तथा। कानूंगोय चौधरी गुमाश्ता मुसद्दी कोऊ माल मारखांय कोरो कागज़ही दिखायो है। फ़ौजदार नायब मुसाहब अकोरलैके झूठोकरें सांचो पुनि सांचेको झुठायो है॥ आठौयाम धावेजाके उलटोले लगावें दोष भडुवा औ मसखरे को नाके अपनायो है। कीजिये० १५ ॥

तथा। सुघरन की ना सँभार शूरखड़े दूरद्वार हीजड़े अधिकार भीतरजोबँ आयोहै। शाहनतेदण्डलेत चोरनके

छोड़ देत चुगुल को एतबार अधिक सव
न को पूजैं साधुको न पूछैं कोऊ भली बु
ऐसो अन्धकार छायो है। कीजिये० १६ ॥

तथा। पिता पुत्र बैर घनो गैरसे सनेह घ
दरिद्र द्रव्य मूढ़को दिखायो है। माता को भार पतनी
को बताशा पान पिता पौरि पातरी को बंगली छवायो
है॥ साधुगुरु बिप्र छोड़ कोलियन के पांय पड़ैं पूजैं भूत
प्रेत भगवन्त बिसरायो है। कीजिये० १७॥

तथा। गुरुकरै लंघन गुरन्दे खांय खीरखांड़ राजकरैं
नटनाच नृप को नचायो है। भांड़न को बुलावैं कवि कोई
विधि न जाने पावैं भली कथा नाहिं भावै विरही गँवायो
है॥ प्रमाणीको पांच नहीं प्रपञ्ची को पचास देत पंडित
पियादे पिथूपालकी चढ़ायो है। कीजिये० १८॥

तथा। सुघर सिपाही शूरवीर रणधीर केते चाकरी
को छोड़ बैठे मनको घटायो है। धुना जुलाहादिक फें-
टबांध फूलटांके चौहट में रोहट फिरैं गरब जनायो है॥
जंगजुरे डरैं उलटे फिरैं मरैं नाहिं घनी कहैं लरैं नाहिं
पिता कुल को लजायो है। कीजिये० १९॥

तथा। सूरताई आंधरे में दढ़ताई पाहन में नासिका
नचानि मध्य नौन रही हाटमें। धर्म रहो पोथिन बड़ाई
रही वृक्षनि बन्धेज परा पातिन में पानी रह्यो घाटमें॥
याहि कलिकालने बिहाल कियो सबजग नायक सुकबि
कैसी बनी है कुठाट में। रज रही पन्थनि रजाई रही
शीतकाल राई रही राईते रमाई रही भाट में २०॥

अन्य तथा। पृथु नल जनक ययाति मानधाता एसे एते भूप भये यश क्षितिपर छाइगे। कालचक्र परे शक्र सैकरन होतजात कहांलौं गनावौं विधिवासर बिताइगे॥ बेनी साज सम्पति समाज सजिसेना कहां पांयन पसारि हाथ खोलेमुंहबाइगे। छुद्रक्षितिपालन की गिनती गनावे कौन रावण से बली तेऊ बुल्ला से बिलाइगे २१॥

तथा। चोहिणी अठारादल बाजेबाजे रावण के पूत भूत नाती केते भूतन को खाइगे। नवलाख गाइ ब्याइ तासों कहै एकनन्द ऐसे नवनन्द उपनन्दहू हेराइगे॥ श्रीपति भनत माया गिरिधरलालजूकी लेतदेत बार ना बजार ऐसी लाइगे। सौभये तिमिर के सहस साठि सगर के छप्पन करोरि यादौ छिन में सिराइगे २२॥

स०। कोऊ बनावत ऊँचे अटा घनघोर घटा लगे तम्बू कनातै। तामस के इतमाम रचे बहु भूषण भौनजमाकी समातै॥ बंदि मृषा भवको यह ख्याल महाभ्रम जाल घने उतपातै। एक रकार मकार बिना धिरकार सबै दुनिआयँ की बातै २३॥

क०। कालकी न खबर कहां धौं होय मेरेमन खाल की है काया सब पौनभरी खालकी। पालकी में बैठि सतभूलै मढ़िनालकी मैं कढ़िकरि तीरथ सुमतिलै सुचालकी॥ मालकी जनावै जिनमालन पै ग्वालकवि करि सतसंग बेड़ी काटि मायाजालकी। बालकी बिलोकनि बिसारि हलाहलकी तू छबिदीनयालकी बिलोकि नन्दलालकी २४॥

तथा। तात मात बहिनि सुता औ सुत बनिताहू भानजे भतीजे साथ चलिहैं न खेवापै। हाथी हथियार हय ग्रामधाम धौरे धौरे भूषण बसन छूटिजैहैं एकठेवापै॥ ग्वाल सतसंगहीते करि शुद्ध अन्तरङ्ग राखि निज व्रत एक सांवरेकी सेवापै॥ कोऊ है न हित्त नित्त बित्तके लिवैया सबै भूलै मतिचित्त इहिकालके कलेवापै २५॥

तथा। चोवा चारुचन्दन कपूरचूर चाहि लैलै अतर गुलाबका लगावै तन घाटीमें। खासा तनजेब के बसन बेस धारि धारि भूषण सँवारि कहा सोवै सेजपाटी में॥ कोहै तू कहांते आयो कहां फेरिजानो तोहिं भूलिकेसरूप धस्यो मायाकी सुटाटीमें। मोहमयी ममताकी परी मजबूत बेरी मेरी मेरी करत मिलैगी अंत माटी में २६॥

तथा। कूरभये कुँवर मजूर भये मालकार शूरभये गुपत अशूर भये जबरे। दाता भये कृपण अदाताकहैं दाता हम धनी भये निधन निधन भये गबरे॥ सांचन की बात ना पत्यात कोऊ जगमांझ राजदरबारन बुलैये लोग लबरे। भनत प्रवीन अब छीन भई हिम्मति सो कलियुग अदलि बदलि डारे सिगरे २७॥

स०। बन्धु बिरोध करो सिगरो झगरो नित होत सुधारस चाटत। मित्र करै करणी रिपुकी घरणीधर देखि न न्याउ निपाटत॥ राम कहैं बिष होत सुधा घरनारि सती पतिसों चित फाटत। भा बिधिना प्रतिकूल जबै तब ऊंट चढ़ेपर कूकर काटत २८॥

क०। मेघाहोत फूहर कलपतरु थूहर परमहंस चू-

हरकी होत परिपाटी को। भूपति भँगैया होत ठाढ़काम गैया होत गैवर चुअत मदचेरो होत चाटी को॥ कहै शिवनाथ कवि पुण्य कीन्हे पाप होत बैरी निज बापहोत सांप होत सांटी को। स्यारसुत शेर होत निधन कुबेर होत दिनन को फेर होत मेरु होत माटी को २९॥

स०। बैठि समुद्र की ओट के कोटमें कञ्चन के घर जाइ भुलाना। बीसभुजा बलवन्त हुतो तब इन्द्र गयन्दहु से हमताना॥ लाख करोरि सुता सुत बन्धव सो गृह रावण जात न जाना। धराको प्रमाण यही तुलसी जो फरा सो झरा जो बरा सो बुताना ३०॥

तथा। बलि बिक्रम बेणु दधीचि गये औ गये पारथ जिन भारत ठाना। बालि गये बल रूप गये जिनकी कखरी दशकंठ दबाना॥ गये दुर्य्योधन जङ्ग जुरे जिन चौंसठि कोस में छत्र बिताना। धराको प्रमाण यही तुलसी जो फरा सो झरा जो बरा सो बुताना ३१॥

क०। केते भये यादव सगरसुत केते भये जातहू न जाने ज्यों तरैया परभातकी। बलिबेणु अम्बरीष मानधाता प्रह्लाद कहांलौं गनावों कथा रावण ययाति की॥ तेऊ न बचनपाये काल कौतुकी के हाथ भांति भांति सेनारची घने दुखघातकी। चारिचारि दिना को चबाउ चाहै सोकरै अंत लूटिजैहैं जैसे पूतरी बरात की ३२॥

तथा। कासोंकरों मोह मोहिं मोहींको परीहैदेव मोहन से मोही महामायामें बिलायगये। मीनसे मुनीश महा मन से मनुज मानधाता सम मानी महामद सों सिराय

गये ॥ वामनसेरावनमे रामजूमे खेलिखेलि खलनकीखो-
परी खिलौनासी खिलाय गये। काटे महाकालव्यालबली
बलिभद्रऐसेबालिऐसेबलिऐसेबुल्लासेबिलायगये ३३ ॥

दुष्टजन व सज्जन विषयके कबित्त व सवैया १६ ॥

सुराजा बर्णन ॥

क०। न्याव सम हेत सदा राखेरहैं चेत सुधि सांकरे में
लेत देत दानकृत काजाहैं। पापनसों न्यारे प्रजा प्राण सम
प्यारे बलदेव हितधारे द्विजसत्त शिरताजा हैं॥ शत्रुको
न लेश यशछायो देश देश बीरता में अतिबेश जे सदाही
सुख साजाहैं। छलसों न काज़ा शब्द सांचो छत्र साजा
लखि शोभ और लाजा एक ऐसे महाराजा हैं १ ॥

कुराजा बर्णन ॥

तथा। न्याव नहिं पोते लेत जाते कहैं काहेइथ सोते
दिन रात प्रजा रोते बिन नाजाहैं। कोह मठियारनको लो-
हलठियारनको भांड़ मठियारन को सैन होत आजाहैं ॥
कविसों न हेत रीझि दानदांत काढ़ै देत अयश निकेत
बधिकीहे केहि काजाहैं। पापकी न लाजा कहैं याचक सों
जाजा इहां तेरो काह काजा घेल ऐसे एक राजा हैं २ ॥

सुमंत्री बर्णन ॥

तथा। सुबुधि बताते बलदेव सुख छाते सत सीधे करि
जाते शङ्क आतेही न देरीते। भूप मनभावैं कुलशील दर-
शावैं यश जागो जग पावैं जोर जीते रहैं जेरीते ॥ मंत्रीमं-
त्र पूरे लोभ लोलुपसों दूरे हीनताई तरुते हैं विचार परे

मेरीते । नीतिके निकेत ज्वाबदेत हेत चेत करि राज काजनेत सुखिलेत सब केरीते ३ ॥

कुमंत्री वर्णन ॥

तथा। काहूको न दीजै कछु लीजै सीख मेरी मानि पीजै मद कीजै काज आन सुख चाखैंना। हीन कूलहीके परनीके मंत्र भाषतहैं फीके परे जीके रहिजाय अभिलाखैं ना॥ भूपसों बखानैं और लूटिबे न जानैं हम ऐसे ब्योंत ठानैं ज मे रैयतको राखैंना। वाके एक दारा सो निकारा चहैं काहू भांति करत इशारा आपके तो कछु आंखैंना ४॥

सुचाकर वर्णन ॥

तथा। आयसु न फेरे कबों रुचि रुखहेरे और काज ते सबेरे नेरे आय रहैं ताकरे। नृप सुख हेत ज्वाब देत जौन पूछौ कछु परमसचेत नेत निमक अदाकरे॥ नीके नोकदार बलदेव कृतकार यार सबल करार रार सांकरे में आंकरे। चौकस चपल चाहु चौगुनी चमक चिहूं चतुर चलाक चारु चोपधर चाकरे ५ ॥

कुचाकर वर्णन ॥

स०। जो सहजैं सब काज करैं सहमैं त्यहि हेरि हिये कहलाकर। नातो जवानकी नोकैं बसैं निरखे परे औगुनके अति आकर॥ लागैं नहीं सँग जागै न नौकरी भागे कहूं नृपको लखि सांकर। चोर चमारसे चूल्हे परे यहि भांति चण्डाल जे चूतिया चाकर ६ ॥

श्रेष्ठद्विज वर्णन ॥

क०। सुन्दर सन्तोष दूरि करतहैं दोष सब नेकहू

न शेष बेद शास्त्र पारगामी हैं। सुगम बनाते बलदेव यश छाते जग बोलें पर आते हरिध्याते हितनामी हैं॥ पूरण प्रतापमान मण्डित महीपन मैं मञ्जुल बदत बैन ऐन अभिरामी हैं। रञ्चत बिधान गति दयाके निधान अति ऐसे द्विजराजनको धन्यते नमामी हैं ७॥

दुष्टद्विज वर्णन॥

तथा। दानहठठानैं दोष औरके बखानैं रीति भांति नहींजानैं औ न मानैं खांड़पूरी से। बिद्याको न लेश त्यों न बेषरूपरेख कछु हुज्जतिहमेश बाजआवैं नाहिं कूरीसे॥ खीझि केशराखैं बिषखैहैं इमिभाखैं चट टेढ़ीकरि आंखैं चीरिडारैं तन छूरीसे। कलियुग काजनको साजैं तजि लाजनको ऐसे द्विजराजनको दण्डवत दूरी से ८॥

शूरक्षत्रिय वर्णन॥

तथा। गो द्विजको पालैं सन्तमारगमें चालैं निजशत्रु दलघालैं रणमैंते मनमोरैंना। सुखद सजीले बीरतामैं गरबीले कुलएकहन ढीले हीनताई के निहोरैंना॥ जाको सँगधारैं ताको पार निरवारैं दान दायाको सचारैं धर्म्म धारैं तौ न छोरैंना। युद्धनकी पत्री सुनि मोद लहैं अत्री अति ऐसे शूरक्षत्री समता में और जोरैंना ९॥

क्रूरक्षत्रिय वर्णन॥

तथा। गावैंगीत गैतलसे भेद दरशावैं कबौं कर चटकावैं मटकावैं मुखफेरते। बिप्रको न मानैं पांव लागिबो न जानैं कहा शास्त्रकी प्रमानैं सुनि वा दिशि न हेरते॥ लम्पट लबारी में लखात सब लायकहैं लोहे के लपेट

मुनि लूकिरहैं देखते । ऐसे क्षुद्रक्षत्री क्रूरकाहे करतार किये कुञ्जरेनकी ह्वै शिर मूलीधरि टेरते १० ॥

शूद्र वर्णन ॥

तथा । आलस बिहीने बैनबोलत अधीनदीने श्रममें नखीने छोंड़िदीन्हें छलक्षुद्रजे । परकाज खेवाकरैं द्विजनकी सेवाकरैं तिनहींको धेवाकरैं जानि जिय रुद्रजे ॥ रोष उरआनैं नहीं निजहठ ठानैं नहीं बढ़िकै बखानैं नहीं लघुतामें शुद्रजे । सांचे काज राचेरहैं खांचरीतिरेख सब यांचे बिनलहत सहज सुख शुद्रजे ११ ॥

दुष्टशूद्र वर्णन ॥

तथा । ऐंठे ऐंठे बोलैं अधिकार निजखोलैं कहे कामको न डोलैं समुझाय जब हारिये । द्विजकौन होते कुलचीकने न मोते इहिभांति भाषि सोते में मशाल एक बारिये ॥ तुरतजगाय ताके मुख में लगायदीजे जनन भगाय क्षण एकलौं न टारिये । जानो महाखोटा चट पकरिकै झोटा ताको ऐसो शूद्र सोंटा जोहि जूतन सुधारिये १२ ॥

प्रसन्नबदन वर्णन ॥

तथा । दायाको द्रवत नैन फूलसेझरतबैन सांचेसुषमाके ऐन सोनशीलसाजे हैं । बिहँसतबोलैं वलदेवगुण खोलैं प्रेमपथ सों न डोलैं मनमोलैं कृतकाजे हैं ॥ मान सुखभारी उपकारी धीरधारी सुखस्वच्छता सचारी रीति रोचकमें छाजे हैं । सिद्धि के सदन उर काहूसों कदन यहि भांति जगबदन प्रसन्नते बिराजे हैं १३ ॥

रोवनीसूरति वर्णन ॥

स०। दूरिदशा करतार करैं त्यहिं जो गुण छोड़िके औगुण जोवनी। नीचे किये दृग बैठि यकान्त में हेरत और को होतक रोवनी ॥ कोई कहूँको बिवाद करै अपनी समुझैंहैं सदा मुख धोवनी। खीझ में जैसी खुशीहू में तैसही शोकभरी रहै सूरति रोवनी १४ ॥

श्रेष्ठपञ्च वर्णन ॥

क०। न्याव नित सांचे बलदेव रँगराचे मामिलाको खूबजांचे हाल बांचेते बिशेखामैं। रुचतन रारी उपकारी श्रुतिभारी भाव वंश धन धारी कृतिकारी रीति रेखामैं ॥ जागो यशबेश त्यों बड़ाई देश देश काहू पक्षको न पेश औ न लेश लोभ लेखामैं। समरंक भूप झगरेको करैं कूप तेई ईश्वरके रूपहैं अनूप पंच देखा मैं १५ ॥

दुष्टपञ्च वर्णन ॥

तथा। भांड़नको भेंटे तिमि मेटे मरयाद दुष्ट लोभके लपेटे बेटे काके बने काजी हैं। न्याव मुख देखा कियोरोषन की रेखा कियो लुच्चनमें लेखा कियो कैसे मूढ़ माजी हैं ॥ लोकमें न माल परलोक त्यों न पाल कछु पूछते न हाल टये चाल जालसाजी हैं। देतो लाहि राजी करैं केतो कहो नाजी करैं चेतो दगाबाजी करैं येतो पंच पाजी हैं १६ ॥

श्रेष्ठवैद्य वर्णन ॥

तथा। सुन्दर शुभग तन सुखद मुदित मन आनँदके धन धन क्षण हित साजहैं। दाया दानधारी बलदेव उप-कारी जग भारी भीर टारी शुचि शील के समाज हैं ॥

देशकाल जानैं तिमि औषध विधानैं सबही को सनमानैं ठानैं गुण शिरताज हैं । बिशद बिचारैं त्यों अचारैं श्री सचारैं चारु सेई सिद्धि भेई लघुतेई बैद्यराज हैं १७ ॥

दुष्टबैद्य वर्णन ॥

तथा । नारी नाहिं जानत अनारी कहे गारी देत तारी दै हँसतहैं हजारन को मारामैं । झोली बीच गोली तौन गोलीसी लगत यह तोली कई बारगई प्रोढ़ नको पारामैं ॥ करणी यही है घर घरनी रिझैबे योग बसु बैतरणी मिलै हिये में बिचारा मैं । बैठे हैं बधिकसे बिसारे बकरूप बनि ऐसे बैद्यराज को बहावै बारिधारामैं १८ ॥

दाता बर्णन ॥

तथा । दाया के निधान बिधि जानत बिधान कहैं द्विज बलदेव दान मानमें न देरकी । देते दिन रात हित दीन दरशात बसुबेस बरसात बात बदत न फेरकी ॥ बेद यश जांचे रहैं सिद्धिकर सांचे रहैं रीतिरस राचे रहैं हरषित हेरकी । टेरकी जो ताकी बिपत्ता को गहि जेरकी हैं बेरसी लुटावैं बीर सम्पति कुबेरकी १९ ॥

सूम बर्णन ॥

तथा । दरशन दीजिये दीजिये अशीश आयसु जब नायो ताहि पुनि पढ़ि दीजिये । द्विज बलदेव कछुलीबे जो चहत इत तौ तौ दगाबाजी जालसाजी सुनि लीजिये ॥ खानेकी बदत बैठि रहैं तहखाने जाय खैहैं ना खवैहैं सांच चित्तमें यतीजिये । फरचा कहत जांच मरचासी लागतहै खरचाकी बात इत चरचा न कीजिये २० ॥

सन्मित्र वर्णन ॥

तथा। आठोंयाम रटत रहत नाम गुणग्राम अति अभिराम रूप दृगनसों पीवेको। द्विज बलदेव बात दूसरी बखानै नहीं बदत बुराई बीरतासों बैरकीबेको ॥ प्राणनते प्यारो मित्रपरखो परोक्षहमैं कपट विहीने दुखताको हरिलीबेको। समयामैं सौगुणों सनेह सरसावै शोभ सांचेते तयार तन धन मन दीबेको २१ ॥

कपटीमित्र वर्णन ॥

स०। बातबदैं दृगदाबि जितै तित झूठहीं नेह जनायकरैंबस। पातरी पाछे कहैं सबकी नितबेष धरेरहैं सन्तनको जस॥ आपने कामको सौंहैंधरे बहु काढ़त भीर परे सगरी गस। धर्मतजे तिन कर्मनसों किन जानि परैं इनके पितरौं अस २२ ॥

रोटिकरा वर्णन ॥

तथा। उज्ज्वल उत्तमहैं कुलके सब लायक नेकहू लोभको खोजन। बीरतामें कठिनो गनिये बलदेव भरे दृगशील सरोजन॥ पाचक मिष्टनितैं रुचि रोचक सिद्धि समय करैं चाहत योजन। स्वाद सुधामैं सराहिबे योग हैं षोड्श भांति बनावत भोजन २३ ॥

नष्टरोटिकरा वर्णन ॥

तथा। भातमें लोन पहीति में पाथर डारिकरैं सब छूतिही छूकर। मांगेहूं सों परसै न कछू खल मैले महा मलको मानों सूकर॥ व्यञ्जन याबिधिके हैं रचे मुखसौंह

किये मन आवत थूकर। ये कबहूं नहीं दूबर होत रसो
के बिप्र कसाई के कूकर २४ ॥

श्रेष्ठवकील वर्णन ॥

क०। न्याय रसराचे अति अन्तगति जांचे अप
सों सदा सांचे अंकबांचे बरकारमैं। द्विज बलदेव सुर
सिद्धिनको सेवत्छुपो क्षोभको न बेष औ न लोभ दरका
मैं ॥ रूपगुण फाब फैलि राखत हैं आब अतिहाज़ि
जवाब हैं न तावत रुकारमैं। अमित बिचार अधिका
हेत मालिक के करैं कार पारते वकील सरकार मैं २५।

नष्टवकील वर्णन ॥

तथा। पूछी भूलि जावैं समै कैसे को बुझावैं तिन्है
आप को न आवैंकछू येतीकहैं ऐंठहैं। मामिले को बेर भइ
देर कोऊ ठेर करैं बन्दरसे बोले आवैं अन्दर में पैठहैं।
जीते हारिमानी कबौं जीते जे न आजलग तीते गनिली
जै और कीजै कहा ठैंठे हैं। ढील ढील गात बात नीलमुख
कीन्हे लखौ भीलकी शकलके वकील बनि बैठे हैं २६।

पण्डित वर्णन ॥

स०। जानत भेद सतासतको अभिमान तजे गुण
ज्ञानसों मण्डित। वेद बिधान बदै बलदेव बिनोद भरे
भुवि भाव अखण्डित ॥ निन्दत औरनको न कबौं त्यो
कहैं गुण दोष बिहाय प्रचण्डित। राजसभा में उद
ण्डित बुद्धि के तेई कहावतहैं बर पण्डित २७ ॥

मूर्ख वर्णन ॥

तथा। गर्बभरे हठ ठानतहैं दुरबाद करैं सबसों रहैं

कूरुख। प्रोजनहीन की बातैं अनेक करैं न कवौं तिन सों मनतूरुख॥ जानै कछू नहिं पूंछे लरै रहिजात तिन्हैं लखिकै सतपूरुख। प्रीति विना सतसङ्ग तजे लजे तेई कहावतहैं जनमूरुख २८॥

सत्परोसी वर्णन॥

तथा। काज बनै सो भनै बलदेव सदा बलदायक श्रीवरकोसको। सांकरे में सबलेत सुधारि सराहत सज्जन पालन पोसको॥ शीलभरे सतत्यों कुलसंयुत सम्पति सिद्धि सँभारत होसको। कोई सरोष ह्वै काहकरै जिनके उरभारी भरोस परोस को २९॥

असत्परोसी वर्णन॥

तथा। उत्तमसों उपहास बढ़ावत गैतलज्ञानगवांर गसे हैं। व्यंगवतात बदो कपटी सतरीति विलोकिठठाय हँसे हैं॥ प्रीति विहीन तजे सतसंग निलज्ज महामद मोह फँसे हैं। पातकी बातकी कानिकरै नहीं पातरेपाजी परोस वसे हैं ३०॥

सपूत वर्णन॥

तथा। कोस उदार प्रभूहित त्यों सतरीति सदा बलदेव लहावत। नामप्रसिद्ध सभा अतिचातुर आतुरआनँद आनि गहावत॥ क्यों न करै कुलको अधिकार स्वरूपभरे दुख दूरि बहावत। धूतनको मत कूतत हैं नित ते मजबूत सपूत कहावत ३१॥

कपूत वर्णन॥

तथा। आयसु मात पिताको न मानत नीति तजे

कुल रीति बहावत। नाम त्यों रूपलजावनो है सतसंगि-नहूं को गरूर गहावत॥ एकहु काम सरो न कबौं निर-लाज अघीलघु लोभलहावत। कायरकाग कुमारग के कलिकाल ठये ते कपूत कहावत ३२॥

सत्स्त्री वर्णन॥

तथा। शील सुरूप सुलक्षण लाज मैं शुद्ध सुधावच हैं मनभायक। प्रेम पतिव्रतसों परिपूरण सम्पति साज सजै सब लायक॥ चातुरी चंचलताको तजे गतिमन्द निरालस श्रीगुणगायक। भागभरे पतिभाव सराहत ते युवती जगमें सुखदायक ३३॥

दुष्टस्त्री वर्णन॥

तथा। रोप अहारको रूपबनी परमन्दिर मांझ सदा सुतिया है। मन्द मलीन अलाज अलायक लोभ तजे त्यों छली छुतियाहै॥ देत सबै धिग जा सतसंगसों धा-यरहीं चहुंघा दुतियाहै। दूरि करौ भुतिया को भयानक ऐती तियाते भली कुतियाहै ३४॥

सतमुसलमान वर्णन॥

तथा। रोजनको व्रतव्याज तजे नहिंजानतहै जगमें फिरि जल्लम। ध्यानधरै दृगमूंदि पुकारत है निजईश बिचारिकै पल्लम॥ बातरिझावनी आपनी रीति सिखाय सचोप मिलावत गल्लम। खान औ पान में आन नहीं कछु मानबड़े तेईमान मुसल्लम ३५॥

असतमुसलमान वर्णन॥

तथा। बातन बीच बड़ीहै झलाझल पात्रकरैं घरघूर

केकल्ला। भौंहपै टोपीधरे तिमि बारन तेल लगाय कै डारत छल्ला॥ लाजबिचार नहीं तिनके कलुपूरितपातकके मनो गल्ला। मूरुख मालन मानै कोऊ अतिमूसर से मतिमन्द मुसल्ला ३६॥

भड़ौवा व हँसी आदिके कवित्त व सवैया १७॥

तथा। पेटसों नवेली जाके आगे सब हारिचले राव और रङ्क एक पेट जीति लिये हैं। कोऊ बाघमारत बिडारत हैं कुंजरको ऐसे शूरवीर पेटकाज प्राण दिये हैं॥ यन्त्र मन्त्र साधत अराधत मशान जाय पेटआगे डरत निडर ऐसे हिये हैं। देवता असुर भूत प्रेत तीनोंलोक सुनि सुन्दर कहत प्रभु पेट जेर किये हैं १॥

तथा। प्रातही उठत जब पेटही की चिन्ता तब सब कोऊ जात आय आपके अहारको। कोऊ अन्नखात पुनि आमिष भखत कोऊकोऊघास चरत चरतकोऊदारको॥ कोऊ मोतीफल कोऊ बासरस पयमान कोऊ पौन पीवत भरत पेट भारको। सुन्दर कहत प्रभुपेटही भ्रमाये सब पेट तुमदियो है जगत होन ख्वारको २॥

तथा। दामहीसों आठोयाम बुद्धि को प्रकाशहोत दामहीसों सबैठौर होत बड़ो नामहै। दामही सों भैया बन्धुआय सब रुजूहोत दामही सों बनहू में होत सबै कामहै॥ दामहीसों सभामांझ आदरको पावत है दामहीसों गृहमांझहोत बिसरामहै। कहैं कबिहेम यहनीकेकै बिचारि देख्यो मेरेभाये बीसोंबिस्वा दामहीमें रामहै ३॥

तथा। दामही सों पिता पर पुत्रहूको प्रेमहोत दाम

ही सों पुत्र पर हेत खामो खाम है। दामहीसों गयोकाम हाथ फिरि आवतहै दामहीसों सुयशपसाखो धामोधामहै॥ दामहीसों साहिब को सेवकहू आयमिलै दामही सों रोग दोष मिटत जुखामहै। कहै कबिहेम यहनीकेकै बिचारि देखो मेरेभाये बीसोंबिस्वा दामही में रामहै ४॥

तथा। दामहीसों देवता बिमान बैठे सोहत हैं दामही सों लोकपाल करैं घने काम हैं। दामहीसों पांडुसुत यज्ञ और दीनेदान दामहीसों धर्म अर्थ काम मोक्ष धाम हैं॥ दामहीसों करत मनोरथको नानाभांति दामहीसों चित्र औ बिचित्र बने धाम हैं। कहै कबि हेमयहनीकेकै बिचारि देख्यो मेरेभाये बीसोंबिस्वा दामही में रामहैं ५॥

तथा। दामहीते अश्व अरु हाथीपर बैठत हैं दामहीसों हिये सोहैं मोतिन के दामहैं। दामहीसों भूषण अमोल नानाभांतिन के निशिदिन मांगिबेको चाहत सबामहैं॥ दामहीसों दानदेत याचक औ बिप्रनको दामही सों बंदीयश बोलैं ठामोठामहैं। कहैं कबिहेम यह नीकेकै बिचारिदेख्यो मेरेभाये बीसोंबिस्वा दामहीमें रामहैं ६॥

तथा। दामहीसों बने रङ्ग शीश और हवा महल दामही सों ठौरठौर मोतिनकी झामहैं। दामहीसों नृप होय बैठत हैं सभाबीच दामहीसों तेजबाढ्यो मानो जैसे कामहैं॥ दामहीसों नटुवा नृत्यकरत नानाभांति दामही सों गणिकाहू करति सलामहैं। कहैं कबिहेम यहनीकेकै बिचारि देख्यो मेरेभाये बीसोंबिस्वा दामही में रामहैं ७॥

तथा। दामहीसों दलसाजि चढ़त लड़ाइनको दाम

हीसों शत्रुगण डरत तमामहैं। दामही सों शूरवीर करै पुरुषारथ को दामहीकी हिम्मतसों करैं कतलामहैं॥ दामही सों जीतको नगारा देत रण मांझ दामही सों बकसीस करे बहुगाम हैं। कहै कविहेम यह नीकेकै बिचारि देख्यो मेरे भाये बीसोंबिस्वा दामही में रामहैं ८॥

तथा। दामहीसों दखिनमें मन्दिरहू खूब बने किला चितौड़ रतनभोर एक ठामहैं। आगरा प्रयाग मंदराज कलकत्ता कोटाबूंदी और जूनागढ़ चरनाट गामहैं॥ जलमें बनी है चारु संगत अँवरसर जैपुर बड़ोदा जावो ग्वालियर नामहैं। कहैं रससिन्धु यह नीके कै बिचारि देख्यो मेरे भाये बीसोंबिस्वा दामही में रामहैं ९॥

तथा। दामही सों दिल्ली मांझ लाट एकु ऊंची बनी दामही सिकंदरा इमामदौला ठामहै। जलबीचबने जग मन्दिर जगनिवास काशीमें धुरेरा दोय कालिजमें काम है॥ जाओ लखनऊ चारु बंबई सो डीगभौन रौजाताजबीबीकोजू देखो सरनाम है। कहैं रससिन्धु यह नीके कै बिचारि देखो मेरे भाये बीसोंबिस्वा दामहीमें रामहै १०॥

तथा। पैसेही के तात मात पैसेही से बहिन भ्रात पैसेही के हितू जात पैसे की लुगैयाहै। पैसे से आदर सनमान होत पंचनमें पैसेसे चलीजाति पटपर में नैयाहै॥ पैसेही से जंगल में मन्दिर तयार होत पैसे बिन मुख काहू बात न पुछैयाहै। सन्त कहैं साधो तुम मन में बिचार देखो दैयाने बनायो जैसो जगमें रुपैयाहै ११॥

तथा। लावत अफ़ीम कोई घोय बैठ भांगछाने गा-

लवा चुनावे कोई पिये जल चम्बूहै। कहै रससिन्धु कोई सुरती औ चून मलै कोई जो धतूराबीज बांधे वहां तम्बू है ॥ कोई पीवे मदक बीड़ी कोई चर्स गांजाहू कोई खड़ोपीवे हुक्का ताड़ी पेड़ लम्बूहै। कोई बछनागखाय कोई हाथ सोमतले पीवत शराब कोई चहुँ ओर बम्बूहै १२॥

तथा। काको यह घोरा है जाके हम चाकरहैं चाकर तू काके कह्यो जाको यह घोराहै। नाम क्यों न लेतकह्यो तूही क्यों न लेत अरे लिख दिखराव लिखे सूजजात पोराहै॥ एक दिना ना नाम लियो आधीरात रोटी मिली सोऊ तो उधारभई देह भई शोरा है। लालाजू को नाम तो दिनाई ते सरस भैया चले क्यों न जाउ तुम्हैं और काम थोराहै १३॥

तथा। देन कह्यो घोरा ताहि अबहीं तू मांगतहै अ-बहीं तो घोरा जब घोरीसों लगाइये। तब जाय जनिहै महीना दशबारहमें यतन अनेक जगदीशजी जिवाइये॥ पाछे दूधप्याय पालि पोसिके खवायवाय मूंहदै लगाम असवारी को सिखाइये। आपुचढ़ि बेटाचढ़ि तिनहू के नाती चढ़ि तब जाय तोहिं कहूं धाइये तो धाइये १४॥

तथा। दमरीमें सेहराबनाया मियां शीशहूपै दमरी में फौजसजी नौबत निशानाकी। दमरीमें तेललैके चौसठ चिराग जोरे दमरी में आतश छोड़ाई आसमाना की॥ दमरी दिवाय बहिन भानजी निहाल कीनी आकरे-चघेला मांझ सौज सजी खानाकी। खरचका कहर है

खुदाराखै लाज तेरो कोटराके सैयद की शादी आध-आनाकी १५ ॥

तथा। आजु जो कहैं तो आठ मासलों न लागै ठीक कालिह जो कहैं तो मास सोरह चलावहीं। पांचदिन कहैं पांच बरष बिताय देहिं पांच बर्ष कहैं तो पचास पहुँचावहीं॥ भाषत प्रधान जोवे ताहूपै न त्यागै द्वार आपना लजात फेर वाहू को लजावहीं। ऐसे सत्यभाषी सरदारहैं देवैया जहां काहेको पवैया तहां जीवतलों पावहीं १६॥

स०। दामकी दाल छदामके चाउर घिउ अँगुरीन लै दूरिदिखायो। टोनोसो नोन धख्यो कछु आनि सबै तरकारी को नाम गनायो॥ बिप्र बुलाय पुरोहित को अपनी बिपती बहु भांति सुनायो। साहसी आज सराध कियो सो भली बिधिसों पुरुषा फुसलायो १७॥

क०। कारीगर कोई करामातते बनाय ल्यायो लीनी दाम थोरी जानि नई सुघरईहै। रायजू को रायजू रजाई दीन्हीं राजी ह्वैकै शहर मे ठौर ठौर शोहरत भईहै॥ बेनी कबि पायके अबाय रहे घरी दोय कहत बनै न कछू ऐसी गति ठईहै। सांस लेत उड़िगो उपरला औ भितरला दिना दूकी बाती हेतु रुई रहिगई है १८॥

स०। साल भरेपर पथ्य लियो षटमास उपास कियो फेर ऐंठ्यो। माधो कहे नितमद्दल छुड़ावत दांत तुराय दिये धौं कैठ्यो॥ कोऊ कहूंकजो देई खवाइ तो कै करडारत शोच में पैठ्यो। मूड़ घुटाय औ मूछ मुड़ाय त्यों फस्त खुलाय तुलाचढ़ि बैठ्यो १९॥

तथा। सूमके सुखौने में चिरैयाने चलाई चोंच आप उड़िगई प्रान वाहूको उड़ाय के। करै हाय हाय फिरै गिस्यो मुरझाय वासे कछू ना बिसाय वह नाका दाव्यो आयकै॥ वाके घर पस्यो शोर बाल सब उठे रोय चिरीमार आयदोयचिरील्यायधायके। धानगिनलीने श्रौमकाई गि-निलीनी सब गिनिली मसूर तब प्रानपैठे आयके २० ॥

तथा। भांड़न को भोज कलावतन को कर्ण जैसे बिश्वनको बेनुसे उरोज रस लेबेको। बेड़िनि के बिक्रम औ रामजनी जयचन्द चुगुल को चतुर्भुजभारी मौज कीबेको॥ कहै अवसेरी मसखरन को मग जैसे चलैं बिपरीत धिरकार ऐसे जीबेको। सूमन के रहत दुइबातन की तंगी एक ईश्वर निमित्त औ कबीश्वरके देबेको २१ ॥

स०। साल छसातकी दाल दराय के साह कह्यो यह लेहु नई है। फूंकिदई लकरी बहुतेरिक सांझते आधिक रात लई है॥ खायलयो अकुलाय के काचिही चाकर चूल्ह निहार गई है। खोय दियो मुजरा दरबार को दाल दधीचि की हाड़ भई है २२ ॥

तथा। चींटि न चाटत मूसे न सूंघत बासते माछी न आवत नेरे। आनिधरे जबते घर में तबते रहै हैज़ाप-रोसिन घेरे॥ माटिहि में कछू स्वाद मिलै इन्हैं खाय सो ढूँढ़त हर्र बहेरे। चौंकिपस्यो पितुलोक में बाप सो आप के देखि सराध के पेरे २३ ॥

तथा। आदिहीधोबीन धोबेकोलेत कि पानीते बूड़े में पाऊँ न पाऊँ। जोररहे खुलिठौरही ठौर औ तापर खोपैं

चलीहैं अगाऊं ॥ लौकी कहैं हम जाच्यो दिवानजू और मैं जायके काहि सताऊं। जोपै मयाकरि दीन्हों भगा तो सूचीतगा दोउ साथही पाऊं २४ ॥

क०। चूकसों लगत चाखे लूकसों लगावै कण्ठ ताप सरसावैहैं अपूरबअराम के। रसको न लेश चोप रेशाहै हमेश छांड़ि दीने सब देश पकुसाने परेघ मके॥ बुरेबद-सूरत बिलाने बदबोयदार बेनी कहै बकला बनाय मानो चामके। कौड़ी के न कामके सुआये बिनादामके हैं नि-पट निकामके ये आम दयारामके २५ ॥

तथा। छेदहैं हज़ारन हज़ारनलगीं हैं पाती मैलेगंधे चीकटे सुचीथरा लपेटे हैं। कारीकारी हांड़ीफूटे पुरुवा पतौवा दोना आपने सिराने बड़े यतन समेटे हैं ॥ कहैं अम्बादत्त कबि इनसों बचावैं ईश बाढ़े बार भालू ऐसे धूरसों धुरेटे हैं। गाड़्यो धन ज़मींमें बिछाय राखी तापै खाट तापै रहैं लेटे ऐसे सूमनके बेटे हैं २६ ॥

तथा। नमक को लोन कहैं छरीहू को लाठी कहैं लालाकहैं मुनशी जो मन हुलसाईतें। जगतको लोक कहैं कटिहू को लङ्ककहैं कबि अम्बादत्त लालीसुतकी लुगाईतें। अंकनका लम्बर त्यों सुन्दर ललामभाषै ला-लयशुदाकेकहैं कुँवर कन्हाईतें। लइबेके लोभनते बेटन को ललाकहैं देइबेके डरते ददा न कहैं भाईतें २७ ॥

स०। लोहेकि लेहर लोहेकि जहर लोहेकि पायल हैं पगभारी। कौड़िनहार औ कौड़िन बेसर कौड़िनके गजरा अतिभारी ॥ रूपकिबातकही न परै मनोलीलके

कुंडसोंऐंचके काढ़ी। ईंटलिये पियको मगदेखत भामि-नि भौनमें भूतसी ठाढ़ी २८॥

क०। सासुके बिलोके सिंहिनीसी जमुहाइलेइ ससुरकेदेखे बाघिनीसी मुँहबावती। ननँदकेदेखे नागिनीसी फुफकारेबैठि देवरकेदेखे डाकिनीसी डरपावती॥ मनत प्रभानमोछैं जारती परोसिनकी खसमकेदेखे खांवखांव करधावती। करकशा कसाइन कुबुद्धिनी कुलघ्नी ये कर्मके फूटे घर ऐसी नारि आवती २९॥

तथा। दानबिन दरबि निदान ठहरान कौन ज्ञान बिनयश अपयश करिकरिगे। कबिरायसन्तनि सुभाय सुने सूमनिके धरम बिहूनेधन धरा धरिधरिगे॥ काम आयेकाहूके न दामदुहू दीननके धामगाड़ेगाड़े सबगथ गरिगरिगे। बोरिबोरि बिरद बड़ाई बेशऊर केते जोरि जोरिकृपिन करोरि मरिमरिगे ३०॥

तथा। तेरीनारकाटूं तोयखोदिहींके गाड़िआऊं तेरी पिण्डतोरूं तोय अबहूं न चेतहै। भोरही को गयो अब आयोहै कपूतभूत तेरेकरों कतलातें लगायो कहांहितहै॥ तेरीपकोरी तोरूं खाऊं खाऊं करतआयो खायगो कहा मोहिंपै बोयो कहां खेतहै। तेरीदिनकरूं तू सुनरे खुदाई खवार ऐसी कूर नार गार बालकको देतहै ३१॥

तथा। एरीदारी रांड़तू गारी बिनबोलतनाहिं बड़ीही खुवार तैंने कहा पन लीनो है। सुनरीखरग्याई औवेहाई बेशरम लुच्ची आयगये पाहुनेको पानीहू न दीनोहै॥ बड़ीही चांडाली तू चुगली में चतुर बहु ब्याह काजबीच

तैंने कर्यो काम हीनोहै । हौंतो अब हार्यो औ निहार्यो तेरो नीचकर्म एरी सुन रांड़ तैंने भांड़घरकीनोहै ३२ ॥

स० । बोक सों बोलत तेली सों डोलत कूर कभी कपड़ा न धुवावे । कारी औ पियरी कुछ धोरी त्योंभूरी बुरी खोगीरसी डाढ़ीहलावे ॥ लीखगिंडार जुवां मकड़ी खटमल्ल अटक्कपड़े जु खुजावै । है यमदूतसों ऊतकपूत या भूतके संग सों राम छुड़ावै ३३ ॥

तथा । भातको मांड़करै नहिं रांड़ औ सौगुनीसांभर सागमेंडारै । मूलकै खांड़लै डारत दारमें हींगफुलायकै खीरबघारै ॥ चाकतें रोटीहू मोटीकरै औ काचीहीराखै कै जारहीडारै । भूतसी भौनमें ठाढ़ीरहै परमेश्वर ऐसी सों पालो न पारै ३४ ॥

क० । मोड़ो तो देख अपनो जूतिनसों पिट्यो आयो वृथाभयो रिष्टपुष्ट होतकागरमहै । रांड़नके पास जाय नितआय लड़्योकरै छोटीबड़ी देखे नहीं करै ये करमहै ॥ आवतहै घरमांझ देखे सबठौरनीच छिप्योकह्योबापतेरो मर्यो अधरम है । बोलैगो बोहोतआय मारूंगी मैंतोये लट्ठ नोंचिलई डाढ़ीदौरि ऐसी बेशरमहै ३५ ॥

तथा । दौर्यो एक लट्ठलेइ चल्योवह मारनको पकरै ह्वांजाय कोई हांहां जो करत है । छीनलई लाठी आय भीरजुरी देखनको मच्यो वहां शोर खूब दोऊ झगरतहै ॥ दोनोंई उठाय जूतामारैं फटाफट्ट माथे मूंछ जो उखाड़ीं नारिटारेना टरतहै । चोटी गहिलीनी हाथ बार तब नोंचिलीने गाल काटखायो रांड़ लाजन मरत है ३६ ॥

स०। पांय बिहीन के पांयपलोट्यो अकेले ह्वै जाइ घने बनरोयो। आरसी अंधके आगे धरयो बहिरेसोंमतोकरि उत्तरजोयो॥ ऊषरमें बरस्यो बहुबारि पषानके ऊपर पंकजबोयो। दास बृथा जिनसाहिब सूमकी सेवनि में अपने दिन खोयो ३७॥

क०। जैसे फलझरेको बिहङ्ग छांड़ि देत रूख सुवा देखि सुवाछोड़ै सेमरकी डारको। सुमन सुगंध बिन जैसे अलि छांड़ि देत मोती नर छांड़िदेत जैसे आबदारको॥ जैसेसूखेतालको कुरंगछांड़िदेत मग शिवदास चित्तफाटे छांड़िदेत यारको। जैसेचक्रबाक देशछांड़िदेत पावस में तैसे कबि छांड़िदेत ठाकुर लबारको ३८॥

स०। खायकेपान बिदोरत ओठहैं बैठि सभामें बने अलबेला। धोतीकिनारी की सारीसि ओढ़त पेटबढ़ाय कियेजसथैला॥ बंशगोपाल बखानिकहैं सुनो भूप कहाये बने फिरि छैला। शान करैं बड़िसाहिबीकी अरु दानमें देत ना एक अधेला ३९॥

क०। बारी औ खँगार नाऊ धीमर कुम्हार काछी खटिक दसौंधीये हज़ूरको सुहातहैं। कोल गोड़ गूजर अहीर तेली नीचसबै पासके रहेते महाऊंचे भये जातहैं॥ बुधसेन राजनके निकट हमेशबसैं कूकर बिलार कहा गुण अधिकात हैं। दूरही गयन्द बांधे दूरि गुणवान ठाढ़े गज औ गुणीको कहा मोल घटिजातहैं ४०॥

तथा। गुनकी न पूछै कोऊ औगुनकीबातपूछै कहा भवोदई कलियुग यों खरानोहै। पोथी औ पुरान ज्ञान

ठठ्ठन में डारदेत चुगुल चवाइन को मान ठहरानो है॥ कादर कहत जासों कछु कहिबेको नाहिं जगतकी रीति देखि चुपमनमानो है। खोलिदेखो हियो सबभांतिनसों भांति भाय गुणना हेरानो गुणगाहक हेरानो है ४१॥

तथा। देखत के नीके परिणाम बहुआदर के देखत भलाई सदा जीवमें जरेरहैं। भेद भेद पूछें मूछें टेवत न आवे लाज पाप के समूहसिन्धु आंखिन अरेरहैं॥ कादर कहत जे नटीन के तलाशबे को हाटबाटहू में दरबार में खड़ेरहैं। निन्दाको जु नेम जिन्हें चुगली अधार परस्वारथ मिटाइबेको खोजही परेरहैं ४२॥

तथा। सूरताई आंधरे में दृढ़ताई पाहन में नासिका चनानि मध्यनैनरही हाटमें। धर्मरहो पोथिन बड़ाईरही वृक्षन वँधेगपरा पातिनमें पानीरह्यो घाटमें॥ यह कलिकाल ने विहाल कियो सब जगनायक सुकवि कैसी बनी है कुठाट में। रज रही पंथन रजाईरही शीतकाल राई रही राई ते रनाईरही भाट में ४३॥

तथा। भोजभनै एतेहोत हलके हरामज़ादे होशही नहीं जनक हार्गिज़ हितैयेना। कलही कलंकीपीर कृपिन कुनामी काक कपटी कुकर्मी क्रोधीकिंचित हितैयेना॥ चूतिया चवाई चोर चंचल चलांक चित्त चोप चोपचख तिन तरफ़ चितैयेना। वदी वदराही बदनामी बदक़ौल वद वेदरद वेदिल सों बातहू बतैयेना ४४॥

तथा। राजारावराज बादशाह जे जहानजाने हुकुम नमान हुकुमनतरआनेहैं। शूरवीर संगनमें सुघरप्रसंगन

में रीतिरस रंगन में अतिही बखाने हैं ॥ श्यामलाल सुकबि जहान में न तोसे भूप खोजिहारे पात पात आजके ज़माने हैं । हममरदाने जान बिरद बखाने पर हारे चोपदार कहैं साहिब जनाने हैं ४५ ॥

तथा । माया के निशान जे निशान अपकीरति के जानत जहान कहूं कहूं उसरनसों । कुंजसी कुएही अंग ऐबी गुमराही गुनी देखि अनखाय पगेपापके कुरनसों ॥ हरजू सुकबि कहै बचन अमोलनके जाति कुरवातन बसाति असुरन सों । मांगत इनाम करतार पै पुकारि कहौं परै जनि काम ऐसे सूमससुरन सों ४६ ॥

तथा । शामिल में पीर में शरीर में न भेद राखैं हिम्मति कपटको उघारे तौ उघरिजाय । ऐसो ठान ठाने तो बिनाहू यन्त्र मन्त्र किये सांपके ज़हरको उतारे तो उतरिजाय ॥ ठाकुर कहत कछु कठिन न जानो अब हिम्मति कियेते कहौं कहा ना सुधरिजाय । चारिजने चारिहू दिशाने चारो कोनगहि मेरुको हलायकै उखारैं तौ उखरि जाय ४७ ॥

तथा । बैर प्रीति करिबे की मनमें न राखैं शंक राजा रंक देखिकै न छाती धक धाकरी । आपनी उमङ्ग की निबाहिबेकी चाह जिन्हैं एकसो दिखात तिन्हैं बाघ और बाकरी ॥ ठाकुर कहत मैं बिचार कै बिचार देख्यो यहै मरदाननकी टेक बात आकरी । गही तौन गही जौन छोड़ी तौन छोड़ि दई करी तौन करी बात ना करी सो ना करी ४८ ॥

स०। भूलि न दान करै दमरी रणमें न कबूं किरवान चलाइस। पोतगिनाय धरै घरमें करै भूठीसो पांचन में फुरसाइस॥ बातें बनायकै नोनीनई जिन याचक को जियरा भरमाइस॥ राम कहैं न रहै चिर चौकस चीकने ठाकुरकी ठकुराइस ४९॥

तथा। पीनसवारो प्रवीन मिलै तौ कहांलौं सुगन्धी सुगन्ध सुँघावै। कायर कोपि चढ़ै रणमें तौ कहांलगि चारन चावचढ़ावै॥ जैसे गुणीको मिलै निगुणी तो पुखी कहे क्योंकर ताहि रिझावै। जैसे नपुंसक नाह मिलै तो कहांलगि नारि शृङ्गार बनावै ५०॥

क०। कुपढ़नदेतहैं कवित्तबाजेभांड़नको बाजे चुप चापसुनि नीबिसी अँचैरहैं। बाजेदशबीस गूढ़पूंछि हश कूटनको मूढ़सतसाखिनको चरचा मचैरहैं॥ बाजे अफ- सोसकरैं बाजेहिये रोसधरैं बाजे देभरोस दरबार में नचै रहैं। बाजेसूमसूकादेत पाथर लगायछाती बाजे सुमुसा- हिब सुपारीसी अँचैरहैं ५१॥

तथा। ह्वैकै महाराज हयहाथीपै चढ़े तो कहा जोपै बाहुबल निज प्रजनि रखायोना। पढ़ि पढ़ि पण्डित प्र- वीणहुँ भये तो कहा बिनय बिबेकयुत जोपै ज्ञान गायो ना॥ अम्बुज कहत धनधनिक भयो तो कहा दानकरि जोपै निजहाथ यशछायोना। गरजिगरजि घनघोरनि कियोतो कहा चातकके चोंचमें जुरंचुनीरनायोना ५२॥

तथा। सारसके नादनको बादना सुनतकहूं नाहकही बकबाद दादुर महाकरै। श्रीपति सुकबि जहां ओज

ना सरोजनकी फूलना फजूल जाहि चित्तदै चहाकरै॥ बकनकी बानीकी बिराजतिहै राजधानी काईसो कलित पानी हेरत हहाकरै। घोंघनके जाल जामें नरई सेवार ब्याल ऐसे पापी तालको मरालले कहाकरै ५३॥

तथा। खात हैं हराम दाम करत हराम काम धाम धाम तिनही के अपयश छावैंगे। दोज़खमें जैहैं तबकाटि काटि कीराखैहैं खोपरीको गूद काक टोंटनि उड़ावैंगे॥ कहैं करनेश अब घुस्सनिते बाजतजे रोज़ा औ निमाज़ अन्त यम काढ़िलावैंगे। कबिनके मामिले में करै जौन खामी तौन नमकहरामी मरे क़फ़न न पावैंगे ५४॥

तथा। चूकिजात जौहरी जवाहिर परखजाने चूकि जात पण्डित पढ़ैया बेदचारी के। चूकिजात घोड़े को चढ़ैया असवारपूरो चूकिजात बाजे रोज़गार रोज़गारी के॥ चूकिजात मेघ मेघराजनकी बातहूमें लेखोचूकि जात या लिखैया लेखधारी के। बानकिरबानको घलैया पूरोचूकिजात एकनहींचूकैहैं चुगुल चूतिमारीके ५५॥

तथा। बाबूदेत सैकरों करोरों बादशाहदेत लाखोंदेत राजा राव हाथी घोड़ा सँड़िया। शाहूदेत सत्तर पचास ज़मींदारदेत तीसदेत फ़ौजदार बीसदेतबँड़िया॥ चौदह देत चौधरी सवाई सातसूमदेत पांचदेत कानोगोय चारि देत डँड़िया। तीनदेत तेली सुतमोली हमैं एकदेत अधम अधेली देत मूकादेत गँड़िया ५६॥

तथा। जामें दुअधेली चारपावली दुअन्नी आठतामें पुनि आन सखी सोरह समातहैं। बत्तिस अधन्नी जामें

चौंसठ पैसाहोत एकसौ अठाइस सुधेला गुनमान हैं॥ युग शतछप्पन्न छदाम तामें देखियत दमरी सुपांचशत बारह लखातहैं। कठिन समैया कलिकालको कुटिलदैया सलग रुपैया भैया कापै दियोज़ातहै ५७॥

तथा। पंडित काजेसीखे भागवत ज्ञानगीताश्रोताहेत सीखेसार वेदनकोबांचिबो। कविनके काजेसीखे पिंगल पुराण छन्द दोहागाह चौपाई कवित्तन को सांचिबो॥ कलांवत काजे रागमांझ सबसीखलीने आपमुखगावैं रागरागिनी रांचिबो। देवेकाज महासूम इतने कसब जाने कसर रही है इक ताताथेई नाचिबो ५८॥

तथा। दोहरा कवित्त बैतगजल सुनावै कोय छन्दकू सुनावै ताहिदेतना पसमहै। पाहुनोजोआवैताहिपानी-हून देत सब जानत जहान यह कुलकी रसमहै॥ मो-हर रुपैया कहां कौड़ीको चलावैकौन बाहर न जानपावै भौनकी भसमहै। लेइबे को होयतो हज़ारों पर हाथउड़ें वाजेवाजे लोगनको देबेकी कसमहै ५९॥

तथा। कबिकोनमानै औ न ज्ञानगुरु लोगनको हरि की न भक्तिहै न दान भिखियारी में। मानै अहमेव हम आय नरदेवमेरी करैं सबसेव ऐसेभूलेडोल भारीमें॥ क-हैं युगराज महाधर्मको न काजकछू बैठके समाज बातक-हैं ऐंड़दारी में। राजी न सिपाह और जंगकी उमाह ज-हां यशकी न चाह ऐसी थूक सरदारीमें ६०॥

तथा। चन्द्रमा पै दावा जिमि करत चकोरगण घन-नपै दावाकै मयूर हरषात हैं। भान पर दावाकर निक-

सत कञ्जपुञ्ज स्वातीबुन्द दावाकर चातकच चातहै॥सु-
कविनिहाल जैसे करीके कपोलनपै अलिन अवलिकरि
नितसड़रात है । ऐसे महाराजनपै दावा कविराजन को
धूतन के द्वारे कहूं मूतन न जातहै ६१ ॥

तथा। शाहुभये सूमड़ा सुवादशाह हीनहद खग्गे
खगरेटन दुशाला बेंचखाईहै । भोले भये भूपति कनौड़े
धनीवन्त सब मूरख महन्य अन्ध देत ना दिखाई है ॥
कायथ कपूत भय कूर रजपूत धूत बनियां वरूथ पेखि
पुञ्ज पछिताई है। काकेढिग जाई काहि कवित सुनाई
भाई अब कविताई रही फजिहतिताई है ६२ ॥

तथा। ऐसे ऐसे दानी पूरे प्रकटभे कलिबीच देवैंना
दिवावैं आप पाया करैं नोसहैं । सुने ना सुनावें दुखदीन-
ताकीबात कछू निपट अजान ह्वैके बैठत खमोसहैं॥ क-
हत न चीज बीज सेतसेत एकसार देखेंना दिखावें आप
आंखें नाहिं गोसहैं । सैलनको चलैं तब गढ़हीते शोर
होत बचोबचो हटोहटो फोर्को पोस पोसहैं ६३ ॥

तथा। पण्डित कबिन्दनकी बूझहै न कूरनके कथि-
क कलांवत फिरत तान गानेको। कहत उदेश देखिस-
मर सपूतनको घोड़ेके चढ़ैयन को चना ना चबानेको॥
आदर सों लेत ताहि जौन वाहियातबकै छोड़िके पुरा-
ण बेद धरमके बानेको । जुरिके गँवारगट्टा बैठचवट्टा
देत आल्हाके गवैयाको रुपैया रोज़खानेको ६४ ॥

स०। चरचाकुटनीनकी नीकीलगै भँडुआनकीखा-
तिर ताजीरहै । रँडियानकी लागें भली बतियां गँड़िया-

नकी त्यों शिरताजी रहैं ॥ नहिं जालहै बात गुनीकी सुनी कविकोविदते इतराजीरहैं। निशिवासर पास जो पाजी रहैं तौ महीप यां कालके राजीरहैं ६५॥

क०। दानी कोउनाहिंने गुलाबदानी पीकदानीगोंद-दानी घनी शोभा इनहींमें लहे हैं। मानतगुणीकोगुणही में प्रकटत देखो याते गुणीजन मन सावधानी गहे हैं॥ हयदान हेमदान गजदान भूमिदान सुकविसुनाथे औ पुराणनमेंकहेहैं। अबतो क़लमदान जुजदान जामदान खानदान पानदान कहिबेको रहेहैं ६६॥

तथा। पौरके किवांर देत घरे सबै गारिदेत साधुन को दोष देत प्रीति ना चहत हैं। मांगने को ज्वाब देत बात कहे रोयदेत लेत देत भांज देत ऐसे निबहत हैं॥ बागेहूके बंददेत बारनकी गांठदेत परदनकी कांछ देत काममें रहतहैं। एते पै सबैई कहैं लाला कछूदेत नाहीं लालाजू तो आठोयाम देतई रहत हैं ६७॥

तथा। माने सनमाने तेई माने सनमाने सनमाने सनमाने सनमान पाइयतुहै। कहैं कवि दूलह अजाने अपमाने अपमान सों सदन तिनहीं को छाइयतु है॥ जानतहैं जेऊतेऊ जातहैं बिरानेह्वार जानबूझ भूले तिन को सुनाइयतु है। काम बशपरे कोऊगहत गरूर तोभा आपनी जरूर जाजरूर जाइयतु है ६८॥

तथा। स्यारन के शादी बकबादी श्वान सिकरनगी-धनकी गादीबैठि देखेको कटत हैं। होड़ाहोड़ी हारबोटी बोटी बांटलेहैं हम ऐसेकहे चीलहनके मण्डफ मढ़तहैं॥

गाड़ेतें पैरत शोक साड़ापरे पांयनमें सभामें धंसत दु-
र्गन्धसों मढ़तहैं। जीवजन्तु जोर जहां तहां करैं शोरसब
साहिब के घोड़ा आज बाहिर कढ़त हैं ६९॥

तथा। कांकनको भाग अनुराग सब गीधनको चाहि
अंग अंगनमें स्यारनसतायो है। पूरोक्रमपुञ्जसों कलेवर
कलित जाको जुरि दश पांचयोधा जोमसों उठायो है॥
कहैं मिथिलेश लागे अनुज भुशुंडिकैसो लोहूको न लेश
वेश विधिना बनायो है। दीरघ दिननको सुज़ाहिर दि-
शान मांझ ऐसो बर बाज कबिराजको बतायो है ७०॥

तथा। महासिहीं जामापाय पायजामा गुलबदनका
शीश चारु बांधे तुर्राजरी के निसारे हैं। तकिया लगाये
बैठे हुक्का पेंचवानपियैं खिद्मत गुजारनते करत इशारे
हैं॥बेनी कबि कहैं आहिऊहिमें प्रवीणबड़े धरम न चीन्हे
लाजसरस बिसारे हैं। खायबे सखाने आयबैठे खसखाने
ऐसे लाखहूं जनाने लखनऊमें निहारे हैं ७१॥

तथा। दाताघरहोती तौ क़दर तेरी जानीजाती आई
है मलेघर बधाई बजवावरी। खानेतहखाननमें आनि के
बसेरोलेहु होहु न उदास चितचौगुनो बढ़ावरी॥ खैहौं
ना खवैहौं मरिजैहौं तौ सिखायजैहौं यहि पूतनातिनको
आपनो सुभावरी। दमरी न देहौं कबौं जानेमें भिखारि-
नको सूम कहैं सम्पति सों बैठी गीतगावरी ७२॥

तथा। अगन बचाये शुभचारो गणनाये अरु उक्त
उपजायकै बिसारो नाम हरिका। लोभके अजान में स-
यान सब भूलिगये कीवे परे ऐमई अधम ऐसे अरिका॥

कहैं कबि लोग हम दानकोकहांलौं कहैं मांगेसे न दियो जाय जासों ठेक खरिको। सूमके कवित्तकरि मन में ग्लानि होत परेपछिताय ओ छिनारि कैसो लरिका ७३॥

तथा। दम्भी दगाबाजनकी बाढ़ी है अधिक थाप ज्ञानध्यानधारिनकी बात बेप्रमानाहै। पूंछत न कोऊ कबिकोबिद्प्रवीणनको नकली हरामिनको हाजिर खजाना है॥ ठाकुर कहत कलिकालको प्रभाव देखो झूठी बात कहि कहि जनम सिरानाहै। बड़े बड़े सूबा तेऊ जात पापड़ूबायहृ देखि जिये ऊबा की अजूबा कारखाना है ७४॥

तथा। राजनकी नीतिगई मीतनकी प्रीतिगई नारिनप्रतीतिगई जार जिय भायोहै। शिष्यनको भावगयो पंचनको न्यावगयो सांचको प्रभावगयो झूठही सुहायो है॥ मघनकी बृष्टिगई भूमि सोतौ नष्टभई सृष्टिपै सकल बिपरीति दरशायो है। कीजिये सहाय हे कृपाकर गोबिन्दलाल कठिन कराल कलिकाल बनिआयो है ७५॥

स०। सूरजके रथलागे रहो याके आगेभयो कई बर कन्हैया। लोमशके लरिकाईके खेलको भूलिगयो जग को उपजैया॥ ऐसो तुरंग मँगायके भूपति दानको काढोदरिद्रको छैया। भुषडन काकलगे फिरें संग मनोयह काकभुशुंडि के भैया ७६॥

क०। बेदकेपढ़ैयाको अढ़ैयाको न योग लागे आल्हाके गवैयाको रुपैया रोज खानोहै। होती क्यों न होती गरे पोथी कुलनारिन को हारआर नारिन को बसन खजानोहै॥ माखन कहत गुरु पैसाको पसेरीभरि पैसहीको

पैसाभर माहुर बिकानोहै। यारो गुणमानो और गुणको न दोषदेहु गुण न हेरानो गुणग्राहक हेरानो है ७७॥

तथा। धर्मके न कर्मके कुकर्मिनके मूलमूढ़ महामति मन्दर हैं त्रिधम समीरके। हेलकहैं हितुके न पितुके न मित्र के चित्तके मलीनहैं अधीर दलगीरके॥ बानी वेदवानके न कलमा कुरान के न रामरहिमानके न अयशी गँभीर के। बिप्रके न ईशके न पण्डित कबीशके सो बाजे बाजे बेसहूर गुरू के न पीरके ७८॥

तथा। कृपण कंजूस बड़े गुणके मंजूसजेर देहै कन-नूस राखे नियत भिखारी में। दानको न जाने सनमान को न आने गुणवानको न माने रहैं शिषणबरदारी में॥ ठाकुरकहत भलीबुरी को न शोच नेक रातिदिन सदा चितराखे मारामारीमें। राजीना सिपाह औ न जंगकी उमाहजिन्हें यशकी न चाह ऐसी थूक सरदारीमें ७९॥

तथा। शौक शेर मारिबेको सभामें सुनावें सदा स्या-रहू न मार्‍यो कहूं भारेकी भरीनको। हाथमें न जाके जोर सेरके उठायबेको जिक्राते उठायो करें पुंज सिख-रीनको॥ ग्वालकवि कहैं श्री युधिष्ठिर सों सांचो बैन देतसबही को दम याम औ घरीनको। बाजे बाजे भूप ऐसे बेशरम होय जात राखलेत हाथी चारो डारत चिरी-नको ८०॥

तथा। पन्नाके पंडोरगढ़ झांके झबैया झारि झारू-दारझांसीके भबैया मानपुरके। कहैं कवि कुन्दन कसा-यूंके कुम्हार भांड़ दाउदके दरजी दमामा दानीपुरके॥

तेली तिलगानके तँबोली तेजगढ़वाले भावजके भांगड़ सोनार सानपुरके। येते मिलि मारैंजूती चुगुल चवाई शीश कालपी के कूंजड़े कसाई कानपुरके ८१ ॥

बिबिधभांतिके कबित्त व सवैया १८ ॥

यह कबित्त यदि फ़ारसीकी तरह दूसरीतरफ़ से भी पढ़ाजाय तो भी एक कबित्त होगा ॥

स०। नचमो दुखके नवदेव दयाल बसौनत याम जहौनकलौ। नचरोष सुचेतनतो बिछुरे कबहूं कलवाहि परैन पलौ ॥ नचमों बिनमानित बानितिहीं नतसोबस चार बिचार भलौ। नचलौ चितचैन नहीं चिरुचोप रसारसगैल ललान हलौ १ ॥

क०। बातनके ब्योंतमें नकीजिये कतरब्योंत दरज मिलायके मिटाय देहौंजिरहैं। सुधीहौ सुधेव औरबयूकी नजानूं कछू तैसेही बचन मोसोंकहौ किनमारि हैं ॥ अब की न जानों रीति नई ब्रजचली कैसे नैननकी सैननसों फारिडारौं जिरहैं। अरज हमारीमान हरि सों बिचार कहा मिलौ मनमोहन सों खोलि दिल गिरहैं २ ॥

गूढ़ अर्थवाले कबित्त व सवैया १६ ॥

क०। ऊंची सतखनीपै अटारी राधारानीजूकी तामें ठौरठौर सीसेजरे हैं खरेनये। सांझकी समयमें सूर पश्चिम दिशामें लूग्यो प्राची मुहचूम्यो चन्दचाहि चितकोदये ॥ दुहूंओर दोउनको पर्यो प्रतिबिम्बकांच भीति

में बिलोकैं सब अचरज सो लये। देखहु बिचित्र या च-
रित्र कैसो दीखपरै बीसरबि दशशशि संगहीउदैभये १॥
तथा। मोरके मुकुटकीहू तैसे पीतपटकीहू छूटी भई
लटलीहू छबिनै सबैजये। यातो राज राजही शृंगार मैं
सराह्योजाय आजकी बिचित्रता सुदेखो चितकोदये॥
पांचरंग मणिको पचास दानेहारगुह्यो कंठलह्यो हरिके
हजारन चितैगये। सातगुरु आठबुध पांचराहु जाने
परैं बीसरबि दशशशि संगही उदैभये २॥
तथा। मानवती मन्दोदरी ओढ़ेपट सूतीहुती रैनि
माहिं रावण मनाइबे तहांगये। सकलभुजा में रत्नबाजू
को बनाय सब शीश पै किरीट चमकाये मुकुतामये॥
चादर को खैंचत चमकि चपलासी उठी पतिके शृंगार
माहिं दोऊ नैन को दये। बोली सेजके समीप कैसे कै
घटामें यह बीसरबि दशशशि संगही उदैभये ३॥
तथा। आजुहौं गईही वृषभानजूके भौनमाहिं राधा
पलिकापै बैठी कर आरसीलये। दत्तकबि सोहैं कंठमो-
तिनकी माल जुगकुंडल कपोल बेंदीभाल छबिसों छये॥
पांच पांच हीरनते लसी दुहूं ओर पाटी ताते दूने रतन
नबेनी छोरलों दिये। शीश सारिटरैं दीसे भूषण निशा
में मानो बीसरबि दशशशि संगही उदैभये ४॥
तथा। आरसी सोहाई आजु सुषमा अँगारसी या
राधिका के करके अँगूठेमें सखीअये। बीचमाहिं शीशी
छबिशीशो शुभदीसो परैं पांचते सुदूने रत्नघेरि चहुँघा
दये॥ चोखी चटकीली चितचोरनी चमकदार देखतही

मोहिं जैहैं मोहन तहांगये। ऐसी दीसपरै जगदीश की सों मानो विस्वेबीस रबि दशशशि संगही उदैभये ५॥

तथा। बैठ्यो यज्ञ करिबे को रावण निकुम्भिला में अभिचार अग्निमाहिं होमेपशुहूहये। जानिकै बिभीषण तें बानर पठाये राम हनूमान अंगदादि किलकि तहां गये॥ दशशीशको सुअवरोध अवराध्यो तिन शत्रुहिं विलोकि चहुँओर घेरिकेठये। तिनहींकी संख्याको बतैबोयह जानो कीश बीसरबि दशशशि संगहीउदैभये ६॥

तथा। भक्तहे गणेशकेते भूखेरहे चौथि तिथि कछुरौ न गये क्षुधापीड़ामें जबै भये। सिद्धि बुद्धिके समेत निज नाथ झांकीचही चन्द्रको उदय चह्यो याही रंगमें रहे॥ दासनके झुण्डको बिलोकि वक्रतुण्ड दुखी तिन्हैं सुखदेन हेतु उभय प्रियालये। ताहि समय कृपालदत्त जासु चन्द्रभाल बीसरबि दशशशि संगही उदैभये ७॥

स०। क्यों लग्योचन्द बिधुन्तुद आयके क्यों अरविन्दन भृङ्ग छिपायो। क्यों भये श्वेतअश्वेत मरालवियोगिनी क्यों घिसि चन्दन लायो॥ क्यों मृगराज मृगीन कियो बश क्यों गजराज गजी शिरनायो। सांची कहौ पिय भेद लहौ रजनीपति के गृह क्यों रबि आयो ८॥

तथा। बाघ बछानको गाय ज्यवांवत बाघिनपै सुरभीसुत चोखैं। न्योरन को सहरावत सांप अहारन दै उन्हैं प्रतिपोखैं॥ व्याधिकथा नहिं मैं न सुनी अवलोकि बसे जहँ कुण्डल ओखैं। नैनन रागमयी पिकके मरु बिरही बैन शरीरके धोखैं ९॥

तथा। गंग नहीं मुक्ता भरी मांग है चन्द्र नहीं यह उद्यत भालहै। नील नहीं मखतूल की पुञ्जहै शेष नहीं शिर बेनी बिशाल है॥ भूति नहीं मलयागिरि है बिजयाहै नहीं बिरहा से बेहाल है। येरे मनोज सँभारि के मारियो ईश नहीं यह कोमल बालहै १०॥

तथा। सरितापतिकी तनया पति बोलत सात औ पांच कछूनहिं कीजै। पङ्कज पीतमको ऋतु बीतत मानिनी शैल सुता सुतकीजै॥ हेहरहार अहार सुबन्धन तारन केर समावत जीजै। तारन ईश बिमान थके नँदराम कहैं उठ बाम चलीजे ११॥

तथा। चन्द्र नहीं बिषकन्द है केशव राहु यही गुण लीलि न लीन्हों। कुम्भज पावन जानि अपावन भोरि पियो पचि जान न दीन्हों॥ यासों सुधाधर शेष बिषाधर नाम धस्यो बिधिहै बुधिहीनों। शूर सुभाय कहा कहिये जेहि पापीले पाप बराबर कीन्हों १२॥

तथा। जोत्रयमूरति केसुत को सुत तासुत कोसुत लेहु बिचारी। तासुनेवासके नामको जोसुत तासुत बाहनको भवकारी॥ ताअरिपुरकेहारबसैयकभूसुर तेजप्रतापहै भारी। तासुअहारबराबरदुःखभयोमोहिं उद्धवबिनगिरिधारी १३॥

तथा। जीवहैं द्वै रसना मुख एकहै तीनहैं नैनते रूप बिशेखैं॥ तीनि तिया विधिके रति एकहै ताके सपूत हैं शेष बिशेखैं॥ होय न कूट कहैं कबि भञ्जन चातुर होय हिये महँ लेखैं। बांझको पूतहै आनिकि आंखि अमावसके दिन पूर्णिमा देखैं १४॥

क०। प्रथम पचीसहूंके बैरको न्यवारति हौं छठयें अठारह औ पन्द्रह चढ़ायकै। चौबिस बतीसऔ सताइस सतावतिहैं तातेक्षितिसुतसों उठत अकुलायकै॥ भनै रामलाल प्यारी प्यारोको सँदेशो लिखि प्यारे मुखबैन कह्यो पथिक बुझायकै। जीवत जो चाहैं कान्ह तुरतमों मिलैंआनि नातो नाक जातीहौं भुवनऋतु खायकै १५॥

तथा। अजब पखेरू एक हाड़है न चाम जाके आप उड़ि जाय पर पंख न देखातहैं। ताके बार बीनिबीनिबसन वनावें लोग ओढ़ि तनुमेलैं दिव्य रोजही देखात हैं॥ जपतप योग वारे षटरस भोग वारे लालचन्द्र ओढ़ि ओढ़ि हिये हरषातहैं। सुर मुनि ईशनको पण्डित कवीशनको मत सब कोहै यहै वाको मांस खातहैं १६॥

स०। मंगल होत कहूं शिवराज कहो क्यहिके दुख होत बिशेखो। कौन सभा महँ बैठि न सोहत को नहिं जानत चित्त परेखो॥ कौननिशा शशि कौन उदोत भो का लखिकै बिरही दुख पेखो। बांझको पूत बिना अँखियान कुहू निशिमें शशि पूरण देखो १७॥

तथा। सिंहके सिंहके अंशमें जोगुरु होहिं तो भूल्यहु ब्याह न कीजै। मेषके सूरज होहिं तो कीजिये भाषत पण्डित सो सुनि लीजै॥ गोदावरी अरु गंगके बीच में मेषहूके रविमें न कहीजै। पंडित एक कहै गुण मंडित जी में विचारि जनौ मति दीजै १८॥

तथा। चन्द्रते श्याम कलंकते उज्ज्वल है निशिचन्द्र पै चन्द्र न होई। बर्षि सुधा सबको सुखदेत रहै जो महेश

के मस्तक सोई॥ है विपरीत नहीं विपरीत सो वेद पुराण कहै सब कोई। मासके मध्यमें हेम गोपाल बदौं नर ताहि कहै कवि जोई १९॥

तथा। कञ्जमरै रविके दरशे कबहूं न मरै वह चन्द्र दिखाये। मीनमरै जल के परशे कबहूंनमरै वहपावकपाये॥ नारिमरै पियके दरशे कबहूं न मरै परदेश सुनाये। संत जो पापकरैं तोतरैं कबहूं न तरैं हरिके गुण गाये २०॥

क०। सासु मेरी राधिका कि सौति सो न जानै कछू पांचै ज्ञान इन्द्रिन सों ज्ञान ना बताई है। देवकी नँदन कहैं सुनौहो बिहारीलाल पथिक तिहारे भागहीते रैनि आई है॥ तीनि मेरे दूती ते प्रवीनी परमेश्वरते रचीविधि एकै करि हमैं आठिनाई है। एक सूरदास दासी एकजगन्नाथ दासी एक भृगुदास दासी ताकी एक आईहै २१॥

तथा। पौढ़ी परयंक पर कोमल कनक लता लगाहै कनक गिरि बनक बिशालहै। कहैकवि दूलह सुअंगन सहित तामें तरुण तमाल छबि छलकत जालहै॥ कमलके नालपर राजत युगल रंभा रंभा पै कमल युग शोभित सनालहै। कमलपै कुरविन्द कुरविन्द पर चन्द्र चन्द्र पर चढ़े चारु बोलत मरालहै २२॥

दोअर्थी कवित्त व सवैया २०॥

जेवर॥

क०। लाई बीर तो हित बिशेषि बरबाक जौन द्विज बलदेव लैलै हरष हमेलेहैं। छल्ले मन भावैं तौ लखावौं सब सोन साज शोभित समाज मोपै कानफूल झेलेहैं॥

बेसरि छल्ली औ पायजेब सुख देती अति जानत बने बिशद जोसनकी रेखे हैं। लटकन लेरी फिर बांकी पहुँचीलकस वाला बेस भारी जानि सुंदरी पछेले हैं १॥

भोजन॥

क०। केती बीरहागे औटि लखिये कढ़ी ललित करत बराबरी सो शशि छवि धोई में। द्विज बलदेव तो त्रिलोक्यो कहिबे की कहा भाते भावसानी जगजानी सो कहोई में॥ पुरी लोरईते कछु शक्कर रहत ताहिखोवै काज राख्यो करि नीकी भांति लोई में। चलिये चतुर लाल परस समय बिचारि जोई जोई चाहौ सोई सोई है रसोई में २॥

पक्षी॥

क०। कस नई कीरति बिशेष द्विज बलदेव श्यामा चटकीली कुही काविधि जकत है। मैनाकर बोलैहै कबूतरी अटासों बनि गीधिमें न जानी कसलिकरे सकतहै॥ लाल तो चकोरै मोर मानत कहोना कछू कैसी करबानक तिलोरी तैं तकतहै। काली मतिसरस पपीहा करि जात बेमरा की बाज आवे तूतिया का बकत है ३॥

तथा। तूती है अमोल और कोकिला सोहाय बैन लख ततबीर करि श्यामहि सिखाई मैं। होतही तयार आई मन्दिर तिहारे आज मैना फिरि जानौं अतिहित सों पठाई मैं॥ आछे पर पक्षी है अनूप रूप पेखियत भनत अनन्द शोभा दृगन बसाई मैं। देखिये देवानी

गति लालकी न जानी अस बखत भुलानी तौ चकोर है चेताई मैं ४ ॥

तथा। मांग में तिलोरी तू बटेर मुनिआतौ लाल ती-तरके जायबेको अति अकुलात है। मोर कहा मानतै कबूतरको दीन्हो बाल क्षेमकरी शाम तूतिया भाग सर-सातहै ॥ कहैं नन्दराम मैना बकत पतैना रहै अबलौं कुहीहै बाज आइना लखातहै। आपही चकोरहै सो वाको हाल सारसहै सावनसों गीधहै महोका दरशातहै ५ ॥

ग्राम ॥

क०। कानपुर कौन रति मोर गति छोड़ि पाली मालवा की बर उरबासी नर धारेहै। काबिल दिली के गुण आगरे बिचारि देखो सूरति विलोको मैनपुरी सुन भारो है ॥ सौर कहि ध्वाई शक्तिपुरमें न कीजे धाम रूप यशवन्त सौम धन्य धारो है। सामके तरनि करो पटना उदयपुर जो बिजयपुर कीन्हो भाग नगर हमारोहै ६ ॥

तथा। तोहीसों बनारस बिहारकरा जौनपुर तेरोई सोहाग पुर पुरवा बखानिये। अवधि तिहारी करि बि-जयपुर आवतहै तेरो परनामें जोतिपुर अनुमानिये ॥ आवै बिजनौर वातें भावैतो दिलीके बीच आगरे गुणिन धनसिंह जवाजानिये। काशमीर डोलै बर उर पटनाहीं खोलै मानिये सलोनो मतिमैनपुर ठानिये ७ ॥

वस्त्र ॥

क०। नीकी जो न लागै तौ लखाऊं अतलस आज तूल तजि मौन मारकीन इम गायोहै। खासे चारखाने

चमलेट डोरिया सो लाय बलदेव बिशद बिचार ठह-
रायोहै ॥ गाढ़ा हेत राखो तौ गवनहू दरेस होत चिकन
को टारि सुख जारी मन भायोहै ।नैनसुख लीजै तनुजेब
ललि सारीलाल बिशद किनारी गुलबदनसोहायोहै ८॥

वृक्ष ॥

क० । पीउपै रिझायबे को सहज न जानै लाल
अमलीन जानै तैं अनारन रसालहै । बेलमति कीजेशिर
सावित लिहारे चूक बिसमैन पैहै और रतिसे बिहाल
है ॥ कहैं नन्दराम तूतौ सनकी रहत वासों मोसन
वकैना नीवी कसत न हालहै । रूस रूस तूनके साखू
व कमरख बेर दूर्वतिन कासनीय चन्दन तमाल है ६॥

तथा । अमिली रहति काहे बरसों हमेश आली
पीपरहैंढार गहे जीत नेम तेरोरी । साजनो बताऊं साख
जाकी आम नामा घनी येते परकरत करारजो घनेरोरी ॥
चोखे कहैं बार बार जामुनि न पावै पार महुवासों रिसात
ऊमर तरु हेरोरी । येरी कचनार तूतो बार बार कहर
करै माहुली लगाय जात आवरी बहेरोरी १० ॥

तथा । चतुर बिहारी पै मिलन आई बाला साथ
मांगतहै आजु कछु हम पै देवाइये । गोदलेहुफूल देहुनी-
के पहिराइ मोती पाननकी पातरी हुताशनलै आइये॥ऊंचे
से अवासके झरोखे चढ़ि बैठिये जू सेज श्याम चलिये
सुरति पति धाइये। ग्वाल समुझायबे को उत्तर जोदी-
न्हें एक उकति बिशेष भांति बारी नहीं पाइये ११ ॥

तथा । बासौबर उरके उदासी भये मोरगते पाली

गति अन्तही प्रीतम पियारमें । परमाण लीजे मो सुहाग-पुरदेवीदास काबिलके दिल्ली हो गुणागारे बिचारमें ॥ बि-जैपुर कीन्हे भाग नागर हमारे आज कशमीर तिलकमें ललित लिलारमें । असनीके लागे लालओंधिमें मिलै है मोहिं पटना समात उर उमँगि बिहारमें १२ ॥

समस्याके कबित्त व सवैया २१ ॥
आंगने खेलत नन्दको लाला ॥

स० । चौतनी सूहा सजी शिरपै सखि पीरो झगा उर मोतिन माला । लाल लटू चकई चटकीली लियेकर बोलत बोल रसाला ॥ धावत गावत मोद बढ़ावत ढं-ताजु घेरि रहीं ब्रजबाला । होंअबहीं लखि आवतहों नँ-दआंगने खेलत नन्दको लाला १ ॥

तथा । माखन चोरिबे कृष्णगये घरमें लखि लीनो गुवालकी बाला । आपत्यों बाहर ह्वै चुपचाप लगाय चली सुदुवार में ताला ॥ आजु यशोदहिं ल्याय दिखाय हों दाउँ भलो परिगो यहिकाला । योंकहिकै तहँ जाय लख्यो नँद आंगने खेलत नन्दको लाला २ ॥

तथा । प्राण चढ़ायके योगकरो कहा काहे करो ब्रत पुञ्ज बिशाला । देह तपाय तपाय पचागिन काहे सहो बनबैठि कसाला ॥ ब्रह्म बिचारत जो हियमें सोइ रूप धरे नरको यहि काला । जाय लखो किन वा नँदरायके आंगने खेलत नन्दको लाला ३ ॥

तथा । लिखिकै शुभ चित्रहि ल्यायोचितेरो बिलोकि

रहीं त्यहिको ब्रजबाला। निज आंगुरी दैदै बतावतहैं नँदभवनके भीतरको सबहाला॥ यह बैठीमथै दधिको यशुदा यहगाय दुहावतहै ब्रजबाला। यहदत्तअहैं बल बीर खड़े यह आँगने खेलत नन्दको लाला ४॥

तथा। जाहिंजितै तित प्यारोलखैं हमैंनाहीं बियोग अहै किहुँकाला। ऊधवकृष्ण बसैं चितमें नित नैनन आगेरहैं सबकाला॥ भाषहिं कृष्णसखा बनमाहिं बि-लोकहिं बेनु बजावैं गोपाला। नन्दके धाममें जाहिं जबै लखैं आँगने खेलत नन्दको लाला ५॥

तथा। भाषती हैं यशुदा की सखी सह्यो जाय न कृष्ण बियोग कसाला। ऊधोजू कैसी समय यह आय भयेब्रजव्याकुल गोप गुवाला॥ द्योस भले कितधौं वै गये करिकै हम श्याम शृँगार रसाला। लेतहीं नैनन के सुखको लखि आँगने खेलत नन्दको लाला ६॥

तथा। छांयच मण्डल को दिग मण्डल धूरिते पूरि दई त्यहि काला। लैगो अकाश में ज्यों हरिको त्योंट-णावरतै पटक्यो है गोपाला॥ खोज मच्यो इत कान्हर को सबै ढूंढैं गलीन गलीन गुवाला। देखो अबै वा गयो कितधौं हुतो आँगने खेलत नन्दको लाला ७॥

तथा। धूरि रमैं बिलसैं सब अंग मचावत जंगरहैं तिहुँ काला। छीनतहैं लटवा करते झकझोरिकै काहू कि तोरत माला॥ फेंट गहैं बिरुझाने रहैं घर जाने न देतहैं एको गुवाला। दत्तजू यों बहुभायन ते नँद आं-गने खेलत नन्दको लाला ८॥

छपै चन्द्रमा करै प्रकास॥

क०। कानन में मोतिन के झूमका सुझूमैं जामें नथ में अकथ मुकतानकी बन्यो बिकास। बेनी माहिं हीरा जगमग करि रहे ऐसी रानी राधिका को रह्यो आनन क्रिये उजास॥ तापै नीली सारी को सुघूंघुट फरफरात वायुते यों दत्तदीख्यो तासमयमें रूपखास। मेघमण्डलीते जैसे तारामण्डली समेत अम्बर के माहिं छपैचन्द्रमा करै प्रकास ९॥

तथा। कोयलिया कूकिकै सुकरति करेजे घाउ काम पस्यो पीछे बाधा देतुअहै ज्यों पिचास। दक्षिणकी पौन डाढ़ै देहको ततक्षणही हूलसी करति हिये फूलनहूं की सुवास॥ दत्तपीय विनादिनरैनि अकुलाईरहों ओधिलौं सखीरी कैसे बचिवेकीकरौंआस। मेरेप्राण लेइवेको विष कीकिरनिलियेएरीयाहुनाहिंछपैचन्द्रमाकरैप्रकास १०॥

तथा। कालिन्दी के कूलपै तमालन की कुंज माहिं कदमके बृक्षमें हिंडोरा को बन्यो अवास। दत्तजूदुहूंघा बेसरेशमकी डोरैलगीं रतनजराऊ चौकीझालरैं बनी हैं तास॥ गादी मखमलकी पै सादी श्यामसारी पैन्हिबैठी मध्यराधापैंगें सखीजुगैं आसपास। झूलतमें प्यारीछुत माहिंदुरैदीसैमानोघनमाहिंछपैचन्द्रमाकरैप्रकास ११॥

आजबिपरीत समय सबै बिपरीतहै॥

क०। शीशलै मुकुट धस्यो कुण्डल करन कस्यो तैसेही उतारि ओढ्यो उपरैना पीतहै। वेष धरि पीको नीको राधिका रही है राजि राधारौन त्योंहीलई राधिका

कीरीतहै ॥ रूप विपरीत रचि रति विपरीत रचि दोउन दुहूँनलखि वादीदत्त प्रीतहै। आलीजाय जालीरन्ध्रराह तैं निलोकिआजु आजुबिपरीतसमय सबैबिपरीतहै १२॥

तथा। श्यामने निहार्यो तोहिं तैंने मुखमोर्यो ताते तिनकरी प्रीत तैं विनाशी प्रीतरीतहै। तोहिं अंकमाहिं लेत तैंने झिझकारदयो सोऊगयोरूठिलखि तेरी या अनीतहै ॥ कलहविरंचि पछितातक्योंविरहभये तोहिंचन्द चांदनीके करत सभीतहै। कामहू जरावै बनवायु तोहिं तावैजानि आजु बिपरीत समय सबै बिपरीत है १३॥

तथा। मेरेप्राणप्यारे बारे बनको सिधारे सीय लषण समेतधारि मुनिन की रीतहै। दत्तकवि खानपान राग रंग भावैनाहिं भावैनाहिं सेज औ सिंहासन अजीतहै ॥ प्रेतके निवास सों अवास यहलागै मोहिं भोजन सुधासों लगै सुधातें अतीतहै। आनँद के कन्द रघुनन्दन बिनारी आली आजु बिपरीतसमय सबै बिपरीतहै १४॥

पेटसों और नहीं कोई पापी॥

स०। पेट के कारण जीवहते बहु पेटही मांस भखै औ सुरापी। पेटही लैकर चोरीकरावत पेटहीको गठरी गहिकापी॥ पेटही फांसि गलेमेंडारत पेटहिडारत कूपहिं बापी। सुन्दर काहेको पेटदियो प्रभु पेटसों और नहीं कोई पापी १५॥

पेटही के बश प्रभु सकल जहानहै॥

क०। पेटहीके वश रंक पेटहीके बशराव पेटहीकेबश और खान सुलतानहै। पेटही के वश योगी जंगम सं-

न्यासी शेष पेटही के बश बनबासी खातपानहै ॥ पेटही के बश ऋषिमुनि तपधारी सब पेटही के बश सिद्धसाधक सुजानहे । सुन्दर कहत नहिं काहूको गुमानरहै पेटही के बश प्रभु सकल जहानहै १६ ॥

मुरिमुसुकान को ककाकी सौंहखानकी ॥

क० । भूलै नाहिं भौंह वै कटीली खमदारखासी कीरतिनशाई जिन कामके कमानकी । हँसत मैं दीसीसोन भूलत बतीसीदंत भूलत न नैनसैन देन दधि दानकी ॥ अंतरंग सखातैं कहन हरिहीकी बात भूली नहिं जाति बारि मोरन गुमानकी । भूलत न गूजरीकी ऊजरी गहत भुजा छबिमुसुकानकी ककाकी सौंह खानकी १७ ॥

तथा । जादिन गईहोन्योते नन्दकेविनयबानी हरिने बखानी भटू तैंहूं ताकी कानकी । अंकमालिका की समय लीन्हो तैं शपथभोर मिलिहों किशोरसमय कुक्कुटके गान की ॥ दत्तगई नाहिं यादिकरैं मनमाहीं सोई भूलिगे सकलगति मुरलीके तानकी । चूभिसीगईहै छबि कान्हके करेजे तेरी मुरिमुसुकानकी ककाकी सौंह खानकी १८ ॥

तथा । छूटी लरिकाई आई सबै चतुराई अंग अंग में निकाई कामदेव प्रकटान की । नैन में लुनाई सुघराई सरसाई ताकी कोक की कलासी खासी मूरति बखान की ॥ जोबन जवाहिर सो चमक्यो सकल देह नेह की लगन हियेमाहिं हुलसान की । थोरेसे दिनाते भौंह को मरोरिलई बानि मुरि मुसुकान की ककाकी सौंह खानकी १९ ॥

तथा। माखन चोरावै मेरो दही ढरकावै कान्ह गारी मोहिंगावैकरै निज मनमानकी। अंगमाहिं लपटिकै अंगियाको नोचिलेत यशुदाजी सांची कहौं बात मैं प्रमानकी॥ यामैं झूठी है न सौं कक्काकि है दत्तमोहिं सुनि नँदरानी कह्योयारी बृषभानकी। मैं नहीं प्रतीतकरौं तेरीहै सहज बानि मुरि मुसुकानकी ककाकी सौंह खानकी २० ॥

तथा। दक्खिनकी गनिकाके गनेजात गाढ़ेकुच गुरुवे नितम्ब बानिरखैं तानगान की। बंगाली बरंगना के केशभले बेशहोत नैनऊबिशाल बानिघने पानखानकी॥ जैपुर की वेश्या भली भेषरचि जानैदत्त बरनी है बानि कांई कांई के बखानकी। बारबधू ब्रजकी देखियत बानि यहै मुरि मुसुकान की ककाकी सौंह खानकी २१ ॥

तथा। रतिरस रैनिमाहिं करि और ठौर श्याम भोर समय आय राधाकीरति बखानकी। सुनि उठि कीरति किशोरि त्यों लिवायल्याई क्रोध ना दिखायो कछू पूजा मैं सुजानकी॥ कान्हकरि सौगन्द कह्यो जूमैं घरेहीहुतो देखि मुसकात तिन्हैं बोली वृषभानकी। पूछे बिनबोलत सुबानि येपरी है कहा मुरि मुसुकान की कका की सौंह खानकी २२ ॥

तथा। घूंघट उठाय सतराय नैनको चलाय कुंजके मिलान में तैं शपथ प्रमानकी। तादिनते जाउ जाउ ल्याउ ल्याउ ताकीयहीबात तजि श्याम दूजी बातना बखानकी॥ चलै मतिचलैयहखुशीहैतिहारीसीखदै तिहौं मैं दत्तकवि सुनिलैसयानकी। भले बापकीहै तो सुआजुहीते

छोड़िबानि मुरि मुसुकानकी ककाकी सौंहखानकी २३ ॥

तथा। औचक निकुञ्ज मोहिं मिली आजुगोपिका या कालिहही मैं जाकी अति कीरति बखान की। भुज भरि चाह मैं चहीहे मनमानी कीवैं तौलौं ताने काहुकी पगाहटको कानकी॥ छपकि चली है छूटिदत्तजू छबीली गहिकह्यो मैं शपथ बोली फेरहू मिलानकी। बोलिछवि आपनी हिये मैं धरिगई मेरे मुरि मुसुकान की ककाकी सौंह खानकी २४ ॥

पायोभलो सेवती सुहागफलपूरो है॥

क०। गूंजत रहत बसुयाम मुखनाम तेरो देखत छबीलो जाको श्यामरंगरूरो है। चम्पादिक आपने शृ-ङ्गारको दिखावैं घनी दत्तसदातिनतैं रहत अतिदूरो है॥ सदाके संगाती जे कमल मकरन्द बारे मन्दके तिनहूं तेरो ह्वै रह्यो मजूरो है। चंचल भवँर को सुवश कीन्हों ताते तैंने पायो भलो सेवती सुहाग फल पूरो है २५ ॥

तथा। शीशपैजटाहै भालचन्द्रकी छटाहै जाके फूलन में जाके प्रिय आक औ धतूरो है। गङ्गऊ रहति सङ्ग भसम रमाये अङ्ग कण्ठमाहिं बिषपैन कहै बैन पूरो है॥ जाके तीनि नैन दत्त कविहूके चैन दैन नन्दीगण जाके नितरहत हजूरो है। तिनशिवके पदारविन्दनको गिरि-जा तैं पायो भलो सेवती सोहाग फल पूरो है २६ ॥

कैसी अद्भुत बरषाकी ऋतुआई जो संयोगिनि दुखद बिरहिनि सुखदाई है॥

क०। पावसके आवत इत सरवर माहिं हंस जल

माहिं होति देखीनित कलुषाई है। मानसर चलिबेकी सुरति लगाई निज हंसिनीसुबंशिहू हिये यादि आई है॥ तहांके निवासी पची पक्षिणी कहन लागे प्रीतिपरदेशीकी न हमहिं सुहाई है। कैसी अद्भुत वरषाकी ऋतु आई जो संयोगिनि दुखद बिरहिनि सुखदाई है २७॥

तथा। माताकी औ सासकी कछुक ईरषाई वश एक तियगेह एक नैहर बुलाई है। पतिने दुहूंतेप्रेमनेम निरवाहिवेको सासुरेके गांवमाहिं नौकरी लगाईहै॥ चार मास चौमासेकी छुट्टीलेइ ऐबै लग्यो तहांकी तियासों शिर धुनिपछिताई है। कैसी अद्भुतवरषाकी ऋतु आई जो संयोगिनि दुखद बिरहिनि सुखदाई है २८॥

तरवार वही तरवाके तरेलौं॥

स०। भोरते सांझलौं सूर्य्य चलै अरुशूर चलै हैं कबन्ध परेलौं। यही शिरताज गनीमन को प्रणतौन टरै दुहूंलोक टरेलौं॥ ऐसीवही अरबीगरबी शिवशंकरहू यमलोकडरेलौं। सो शिरकाटि गनीमन के तरवार वही तरवाके तरेलौं २९॥

तथा। लैप्रभुको वसुदेव चले सो बिचार कियो तब नन्दगृहेलौं। जाय कलिन्दी में ठाढ़े भयो बसुदेवडरेजल आयो गरेलौं॥ चरननको यमुनाउमहीं जलबाढ़ोजबै वसुदेव गरेलौं। छूंकतही यदुनन्दन के यमुनाजी वही तरवाके तरेलौं ३०॥

सांवरी सांपिनि सोइरही॥

स०। मृगनैनी की पीठपै बेणीलसै सुखसाजसनेह

समोइरही। सुचिचीकनीचारचुभी चितमें भरिभौनभरी सुख बोइ रही॥ कबिगंग जू या उपमा जो कियो लखि सूरति ता श्रुति गोइरही। मानो कंचनके कदली दलपै अति सांवरी सांपिनि सोइरही ३१ ॥

पांचरबि दश शशि संगही उदय भये॥

क०। सारीश्वेत प्यारी पैन्हि मोतिन किनारीदार बड़े स्वच्छमोती नाक नत्थ गुथिकोदये। बीचबीच बेंदी भाल केसरके वेसदेइ बन्दी छोरहीरा असदात सातको लये॥ शीशफूलशीशचौबुन्दाचरईगुरके हारदशदानेदेव नागमणिको धये। अमिततरैयन ऋषीशसातकविगुरु पांचरबि दशशशिसंगही उदय भये ३२॥

तथा। शीशफूल शीश छुटि मोतीलर मांगहुटिभालसे उचटि टीका बारबार फरकी। अंचलउड़तअंग घूंघुट खुलत संग कुचन उतंग आँगीबंदगयोतरकी॥ आय आय कागअनुरागबोलेआंगनमें हाथन उड़ावती झुमेल मधुकरकी। भनत दिवाकर पियाके आगमन जानि नीवी कटिबन्धन समेत प्यारी सरकी ३३॥

अमी निकस्यो बहि पूंछकी ओरन॥

स०। एकसमय वृषभानसुता सो प्रभातगई सरितान की खोरन। अंजनधोय अँगोछतदेह अरुबाहर बैठि कै बार निचोरन॥ ब्रह्मभनै त्यहिकी उपमा जलके कणका बहैं केशके छोरन। मानहु चन्दको चूसतनाग अमी निकस्यो बहि पूंछकी ओरन ३४॥

हमारी ओर हेरिये ॥

क०। तापनको तिमिर मिटायहित आपनदै थापन कोथापि पुंज पापनको पेरिये। द्विजबलदेव कहैं द्रौपदी पै दीन्हों डीठ दीन सुखदायक गयन्द गति गेरिये ॥ प्रीति घन आपने पगनको वसाय मन तन बचहूंसोघन आनँदको घेरिये। एहो गिरिधारी बनवारी श्री बिहारी लाल वारीको बिचारिकै हमारी ओर हेरिये ३५॥

कान्हके कलाकी कठिनाई है॥

तथा। कौतुक बिलोकन कलिन्दिजा के कूल कलि कालिहही कढ़ी थी गतिकैसीकरि लाई है। कबिबलदेव कहैं कलना परलनेक कौनढग कानन कहाधौं छबिछाईहै॥ भृकुटी मटक पर अलक लटक पर नैनकी नटक पर च-टक सोहाई है। कांटासी करेजे में कसक करिदीन्हों कह कुञ्जनमें कान्ह के कलाकी कठिनाई है ३६॥

चुचुवाती लटैं अरु मूड़मूंड़ाये॥

स०। शङ्कर श्रीगिरिजा अरधंगकै मज्जन तीरथ-राजमें आये। त्यागकियो शिरकेश वृषध्वज मुण्डनबार उमानहिं भाये॥ बीच सितासित छैनिकसे अवलोकि प्रभा बलदेव बताये। छातीछटाछबिकी क्षितिपै चुचु-वाती लटैं अरु मूड़ मुड़ाये ३७॥

नजरि सँभारे लाल डारियो॥

क०। उरज उतंगन पै जोर युग जंघनपै त्रिवली तरंगनपै भरि भरि ढारियो। लटकी चटकपर भृकुटी मटक पर आनन चटक पर पलक न पारियो॥ और गोरे

गातपर मनरुचि घातपर बलदेव बातपर नेकहू न टा-
रियो। शंकमानि प्यारीजूकी लंक लचकीली पर ढीली
ढीली नजरि सँभारे लाल डारियो ३८॥

त्यहिहेत सखी मुरझानी पड़ी॥

स०। जब ते मनमोहन मौन सुन्यो तबते बिरहागि
हिये में पड़ी। चहुंघा मुख हेरत दूतिन को भरि ऊरध
श्वास अनङ्ग जड़ी॥ अतिनीर प्रवाह चलै चख सों
मनों सूखीलता गति हेमछड़ी। कछु चेत नहीं मुख
श्वेत भयो त्यहिहेत सखी मुरझानी पड़ी ३९॥

लाजको जहाज आज डूबन चहत है॥

क०। कैसो ठानि बैठी हठ मेरी मन वा क्षणसों कोऊ
समझावै तासों बैर के रहत है। ह्वैहै कहा एहो बलदेव
दशा देखो यह नीरको प्रबाह दृगदूनों उमहतहै॥ कछु
तनधनके सँभारकी गिनावौं कहा प्राण तो निछावरे कर-
नको कहत है। तजि सब काज संग कीन्हो सुख साज
अब लाजको जहाज आज डूबन चहत है ४०॥

यहि लाज निगोड़ी पै गाजपरै॥

स०। बनशीरी समीर लगै तन तीरसों पीरमें क्यों
मनधीर धरै। अति ओज जनावत रोज सरोज मनोज
बिथा उर आनि अरै॥ हठि होयगो हाल जो भाल लि-
खो गुरु लोगनको शिषजाल जरै। मिलिहौं ब्रजराजको
आज अली यहिलाज निगोड़ी पै गाज परै ४१॥

मछरी जल छोड़ि चली बनको॥

तथा। हठि तू न फँसै ब्रजचन्द के फन्द बिनय करिहौं

बरजो मनको। अब बीन बजैलगी कानन सों सुनिपीर करै तन बेतनको॥ अँखियां दुखियां किमि धीर धरैं ढरैं नीर भरैं सिगरे तन को। मृगछौनन की छबि छीनी मनो मछरी जल छोड़ि चली बनको ४२॥

लोटिलोटि जात जैसे लोटन कबूतरी॥

क०। सम्पुट सरोजसे उरोज खोज चोजन को रोज रुचिरूरी श्रीमनोज कैसी पूतरी। कैधौं रूपराशि रति रम्भासी सराहै सब रतनजटित मानो अम्बरसे उतरी॥ प्रथम समागम नवोढ़ा त्यों नवल पति पानिप प्रकाशी करैबातैं मुखतूतरी। नखतन खोंटिखोंटि पटीपट जोटि जोटि लोटि लोटि जात जैसे लोटन कबूतरी ४३॥

दन्तदाबि आंगुरी हथेली दाबि छतियां॥

तथा। प्यारी के मिलन काज सांकरी गलीके बीच ठाढ़े नँदनन्द लसि जानि निज घतियां। अतिही समीप पाय फूलो गात आनँद सों भरिबे को अंक चह्यो दाँव भली भतियां॥ सिसकि सलोनि बाल भृकुटी नचायवर कछुक पछेलि कह्यो शंकित सी बतियां। उतही रहौजू पीछे आवति यशोमति है दन्तदाबि आंगुरी हथेली दाबि छतियां ४४॥

तथा। प्रेमवश धीरज को धारत न कौनौभांति उदित मयंक ऋतुराज रस रतियां। आतुर ह्वै सांकरी गली में नँदनन्द ठाढ़े प्यारीके मिलैकी सबभांति गनि घतियां॥ आवत समीप सिसकी सो सौंह हेरि हँसी भृकुटी नचाय कह्यो चौचँदकी बतियां। अन्तको चली सोतन्त कन्तको

बिचारिबाल दन्तदाबि आंगुरी हथेली दाबिछातियां ४५॥

भांगकेकबित्व व सवैया २२ ॥

क०। बैठे हैं अमली सब पीसत हैं भांग कोई छानत हैं कोई तहां पीवैं मनपूर पूर । कहैं रससिंधु फेर खात हैं अफीम कोई गालवां चुवावैं कोई ठाढ़े भये दूर दूर ॥ मलत तमाखू कोई पीवत हैं हुक्का ऐंठि चाटैं मुखश्वान आयभये वह सूरसूर । कोइनके चेहरा पर भिनकै हैं माखी आय भये सब नशों में जु देखो यह चूरचूर १॥

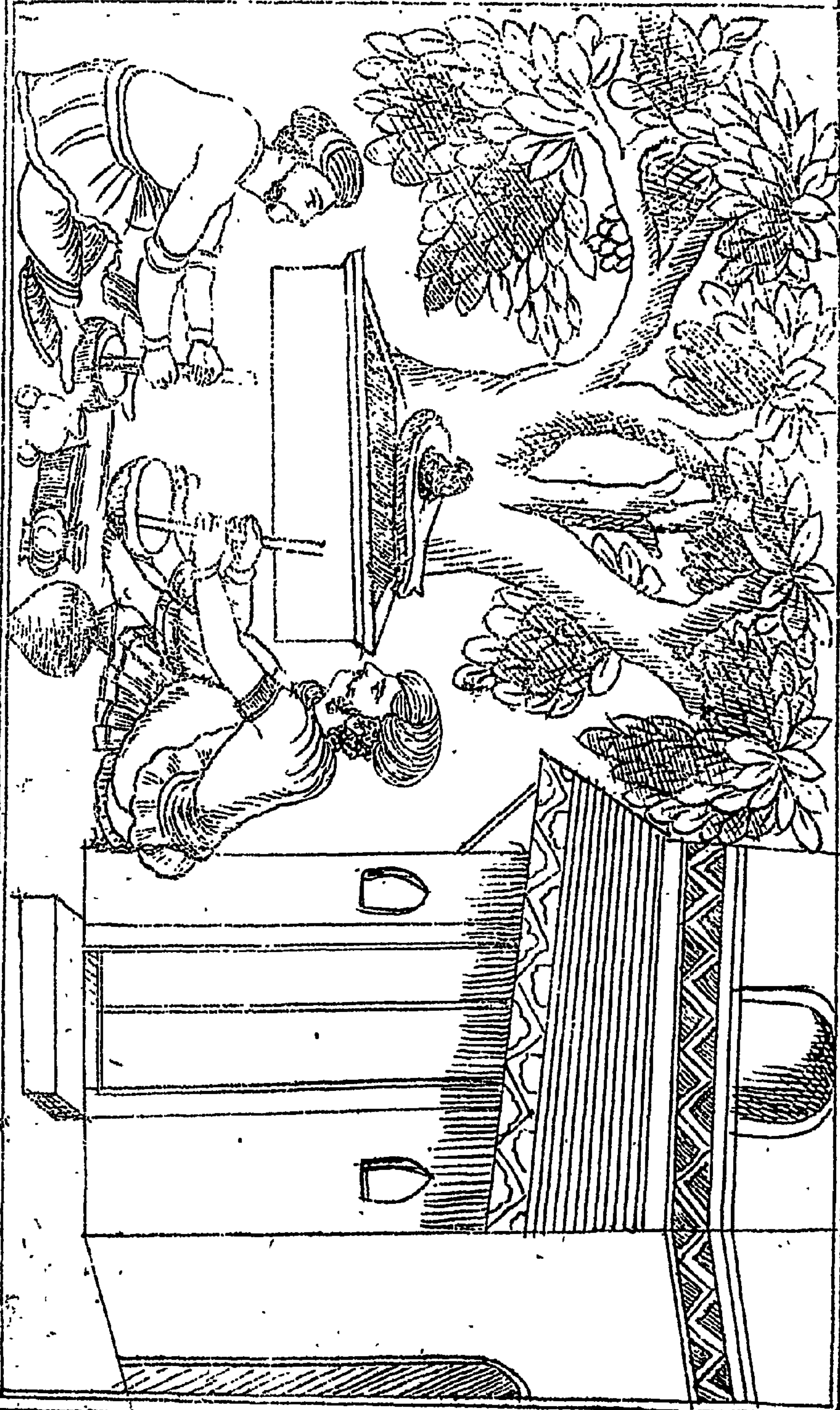
तथा। आयोफेर मूसा भांग साफीलेइ भाग चल्यो मारत हैं तीर कोई अंगुली देखावैं हैं। काढ़ैं तलवार कोई हाथ लिये बरछीहूं काढ़ि काढ़ि जूताकोई हाथ न बतावैं हैं॥ कमर कटारी खैंचि पिनिकले झूमि झूमि कोई लेय लाठी कूदि मारनको धावैं हैं । कोईले बंदूक तहां देखिकै निशाना खूब कोई दौरिढेलालेइ तापै यों चलावै हैं २॥

तथा। अरब के देशते जु आई यह हिन्दमांझ खात सब कोई यहि मनमें उमंगी है। देख मनचले फेर वाहि समय भांगलेत बांधत हैं फेंट याकी उपमा सुदंगी है॥ तुलसी के पत्रहू ते बाढ़्योहै प्रताप याको फैली देशदेशन में भांगकी उमंगी है। लागी जब अंगी गतचलत त्रिभंगी खूब तमाखू बहुरंगी गुणमेंहू यह जंगी है ३॥

तथा। जरकी है सासु दुष्ट दुलही हलाहल की बीछी की बहिन परपंच रूपसाजी है । नानी करियारे की धतूरे की ममानी पितियानी बच्छनाग की जहानमें बिराजी है

देखो तसवीर नम्बर २१ ॥

भांग घोटने वाले पुरुष की मूर्त्ति ॥



कहैं गंगादत्त वह पचावै धन्यप्रानी औ अफीमकी जेठा-
नी विषखोपरे कि आजी है। माहुर की मौसी महतारी
सिंगिया की यह तमाखू दइमारी को किन्ने उपराजीहै ४॥

तथा। बुद्धिको गणेश बलदेव की बिधाता जैसे चातु
री को वाक बानी थम्भन अफीम सी। योग जैसे रुद्र
औ वियोग जैसे रामचन्द्र भोगको कन्हैया और रोगन
को नीमसी॥ जागिवे को गोरख ध्यान धरिबे को ध्रुव
त्यों देइबे को चलि सब काज को अतीमसी। निपट
निरंजन सो विजया विचित्र जानि सोवे को कुम्भकर्ण
भोजन को भीमसी ५॥

स०। भीजतही सब रीझत हैं अब धोय धरी शिव
के मनमानी। मिर्च मसालो मिलाय दियो तब घोटि
करी वाकी रसघानी॥ साफी सुरपतिराय बनी यहि
ब्रह्म कमण्डल के जलछानी। गंगते दूनी तरंग उठैं जब
अंग में आवत भंग भवानी ६॥

क०। छूटी दुरवासना सुवासना चहूंघा घूंटी ऐसो
गुण सुनि सो सुकूटी योग ज्ञानकी। इन्द्रकी वधूटी रङ्ग
नैन छवि छूटी लूटी सम्पति कुबेर फूटी कलिमल कान
की॥ जूटी जस बेलिझूटी मायाको निकासि फूटी फिक्रि
फराक टूटी अमल अपान की। कूटी कामदेव की अनूठी
उक्त दान ऐसी बूटी देख टूटीहैं वधूटी देवतान की ७॥

स०। खाये ते ज्ञानकी खान खुलै बिन खाये खुशी
नहिं होतहै बानी। चाहत हैं सब योगीयती अरु देवन में
महदेवहु मानी॥ याके समान न आनकछू हमें जानपरी

यह मुक्ति निशानी । कोटिन रंग दिखावत है जब अंग में आवत भंग भवानी ८ ॥

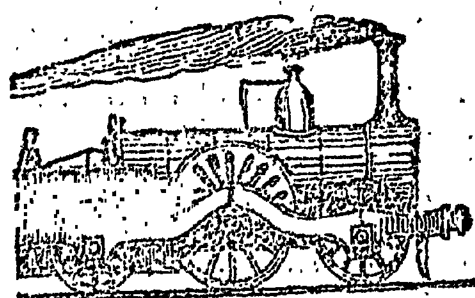
तथा । बिजया जो लई ऋषितापस ने सनकादि लई जिन है व्रत धारयो । नारद शारद दत्तदिगम्बर व्यास लई जिन वेद बिचारयो ॥ अंगद आप सुग्रीवलई हनुमान लई जिन लंक सुजारयो । बिजया सिद्ध अहै सब कारज रामलई जब रावण मारयो ९ ॥

क० । खाय देखे बीजवन्द असगन्ध आदि सब और खाय देख्यो मैंने सेमर को मूसरा । दिल्ली के हकीम वैद सब देखिडारे मैंने ताहूते उखरयो नाहिं खिष्टक को लफूसरा । दूध औ बताशे बहुपिये बंगडार डार ताहूते सरयो है नाहिं कारज को खूसरा । कहत मस्तान चौदह विद्याके निधान भैया भांगके भरोसे मैंने ब्याहु कियादूसरा १० ॥

तथा । देखत हरी है गुण अमित भरीहै सिद्ध साधन धरी है ज्ञान भरी समशेश की । ध्यानकी पुरीहै कवितान ईश्वरी है मतिदेत हरबरीहै बुद्धिकरत गणेशकी ॥ जिन्हों ने गहीहै तापै प्रभुताकरी है कविलाल वरणी है ये निकाई यह देशकी । सुर ईश्वरी है नर नागधीश्वरी है जल थल में भरी है यह लाड़िली महेश की ११ ॥

तथा । जबलौं न आवै रंग भंगको शरीर मांहिं तब लौं बजाय शंख कान ना सुनात है । लायघोट छानिकैल गाय भोग दाऊजू को तबै दुख द्वन्द्व सब दूरते परातहै ॥ औरई विचित्र गुण देखो एक याको जोई सिद्ध कियो चाहै बात सोई बनजात है । जानै गुणी जनपै मूरख न जानै

मेव बूटी. बिनछाने दुनिया लूटीसी दिखात है १२॥
तथा। चाहै चित्रकूटमें बिचित्रतेसुचित्रह्वैके नित्य हीं प्रबीनपढ़ै बेदऔपुरानको। चाहै यंत्रमंत्र औ अघोर घोर सिद्धकरै चाहैकरै कानन गोबिन्द गुणगानको॥ चाहै शिवराम गिरिनारके गुफामें बैठि करैयोगजपतप कोटिन बिधानको। ज्ञानको गणेश मन करिबेको प्रमा निधान बिना भांग भजन न भावै भगवानको १३॥
तथा। मिरचमसाला सौंफकासनी मिलायभंग खायेते अनेकरंग अंगको उबारती। जारती जलोदरकठोदरभंगदरको सन्निपात बवासीर बावन बिदारती॥ सो कवि शिवराम दाद खर्राको खराबकरै छई छीकछंजन नसूरको निकारती। पीनस प्रमेह बीस बावन तरहकी पीर कमर दरदको गरद करिडारती १४॥



रेलके कवित्त व सवैया २३॥

क०। भकभक भभकभभक ज्वालाझकझक धकधक धुवांहोत बमकलदानमें। आसमान छाये जात हवा

छितराये जात सन्मुखहो ताके वाके परे अँखियानमें॥ वचन भनत इक्कदरशि तमाशेदेखि खुशीहोत जातअपने मुसाफिरानमें। तड़ तड़ तड़ तड़ तड़ तड़होतजाते बात सुनिपरत न दूसरे कि कानमें १॥

तथा। हाथी है न घोड़ा है न बैल गैलजोड़ा है न हांकिबेको कोड़ाहै फकत एक कलहै। चारि चारि अँगुरीकेलोहनकी पटरीपै चारिचारिअँगुरीके पहिया प्रबलहै॥ हलचल चलिजात तनिकन बिचलिजात सीधी सीधी गलिजात अजब अकलहै। बेगमें प्रबलहै सवारीकी सकलहै बेवानकी नकलहै सोपालकीसकलहै २॥

तथा। भारीकारीगरनकी गतिमतिमारीगई किसने बनायो अरु काको यह ख्याल है। आगे आगे फरफर फूटत फुहारे जात मानो मतवारो गज कारो यह हाल है॥ वचन भनत एकरेलके अजबखेल काहूपै मुसाफिरान काहूपर मालहै। कोटिमन बोझको न समझै कहांलौं कहौं एक विकटोरियाको सिर्फ अकबालहै ३॥

तथा। घनसों घहरात औ उड़ात हाहाकार करि खातकाठपानी धुवां आसमान छायोहै। बैठक बहार देशदेशनकी भेंटहोत ऐसी फहरात मानो अर्जुनको बान है॥ माधवकबिकहै ऐसो पाइकै बखानकरै लाखन मन लादि लेत जानत जहानहै। धावे जो समान बात दूसरी न आनयार रेल मेरी जान तौ कुबेरको बिमानहै ४॥

तथा। पीनस मतंग गजसांड़िनी तुरङ्ग और बाहन नरिन्द तामझाम और रत्थहै। बग्घी औ किरांची

सुखपाल टमटमगाड़ी यक्काडाककाटमें लिये तेतो गरद है ॥ नाव मोरपंखी और बनी सब खूब खूब चलैं दरियावबीच अगिनबोटजल्दहै। सो कबिगजराज कहै हृदय में बिचारि देखो रेलकी सवारी से सवारी सब रद्दहै ५॥

तथा। फफकत फहरात औउड़ात धुन्धकार करि बाज ऐसी धावत प्रचण्ड की प्रमान है। ऐश की सवारी महसूल आध आना कोश सतन के करत काम माधव कबि बखान है॥ देखो तौ अजूबा चीनवाले की मन्सूबा पेंच के इशारे से चलत प्राण की प्रमान है। धावे ज्यों शशान बाज दूसरी न आनयार रेल मेरी जान तौ कुबेर को बिमान है ६॥

तथा। रथकी सवारी गज रथकी सवारी देखी तांगेकी सवारी देखी गाड़ी तक मदहै। पालकी सवारी और नालकी सवारी सुखपालकी सवारी देखी पीनस में गद है॥ बग्घीकी सवारी सेजगाड़ीकी सवारी बानगाड़ीकी सवारी देखी टमटम तक हदहै। किश्ती की सवारी धूवांकसकीसवारीभाई रेलकी सवारीसे सवारी सबरद्दहै ७॥

भाषा व फ़ारसी मिले हुये कबित्व व सवैया २४॥

क०। श्यामतनु जाकारचाहाथमें हिनाकारंग औरलबों कीलाली गुल्लालीसेदुचन्द है। काननकीबालीऔघुंघराली जुल्फ़जाली देख परी है जी आली बनमाली इस फन्दहै॥ सोहनीसीसूरतहै मोहनीसी मूरत है खासाखूब सूरतहै पूनोकासा चन्द है। हंसती पेशानी कबिबाल इस सानी यारो आनँदका कन्द देखा नन्दफ़रज़न्द है १॥

तथा । इश्क़ दरियावबीच पैरते फिरै हैं हम गरम न होहुहाथ अपना दियाकरो । जिगर औ जान दिलकीभी सब आनडूबी दामनसेलगा तिसे किश्ती में लियाकरो ॥ बेशक बिहारीकी कोशिश हरबारी हुई बाल कवि प्यारे तुम युग युग जिया करो । डालदो भरम जार नरम ग़रीबों पर छोड़के शरम टुक करम किया करो २ ॥

तथा । बनेदल्लान जिनके पड़दे बुलंदजान शहन कीशानके फ़रशबंद शसमें । लालोंके खरंजे रंगामेज़ रंगरेजेहीरा फटिककेखम्भे छज्जेछाजे छबिकासमें ॥ बादलों के सायबान डोरी मखतूलों की कलाबत्तून काम के हैं परदे परकाश में । जहांकोटि काम ऐसी अति अभिराम श्याम बैठे सरे आम घनश्याम आम ख़ास में ३ ॥

स० । सांझसमय घरसे निकसी सब सखियन साथ वह सांवरी मूरत । रम्ज़ो नाज़ नमूद सनम् बेताब शुदम् अफ़ज़ूद क़दूरत ॥ मुसक्यायके मोतन देखि दियो तिरछी अँखियां चितवनकी मरोरत । होशम् रफ़्त न मुन्द मदस्त शुदह दिल मस्त ज़िदीदने सूरत ४ ॥

तथा । कौन घड़ी करिहै बिधना जब रूये आंदिलदार बुबीनम् । आनँद होय तबै सजनी दर सोहबत यारे निगार नशीनम् ॥ प्राण पियारी मिलै जबहीं दर बाग़े वस्ल गुलैश बिचीनम् । सूरत मित्रकी चित्रबसी कविगंग कहैं चूंनक़्शनगीनम् ५ ॥

तथा । चेहरे नूर बयान करूं महताब न लावत ताबे शफ़ा है । अब्रू खूबबनी महेनौव ग़रूर जवानीका ज़ोरो

जफ़ाहै ॥ क़द्दकी हद्द कहांलौं कहौं कविराज कहैं सब देखि खफ़ा है। हुस्नकी यार वहार यही बसदीदनेयारे दिदार नफ़ाहै ६ ॥

तथा। तानसुनाय बजायके बांसुरी दिलकी बिथा इज़हारनुमायम्। चाहै अत्यंत हृदय मिलिबो क्यहिभांति नज़ारै यार नुमायम् ॥ लोग चवाई बसैं यहि गांव सो हाफ़िज़ मन नक़रार नुमायम्। चन्द्रमुखी मुख घूंघुट खोल कि ता अज़दूर दीदारनुमायम् ७ ॥

तथा। जादिन ते यमुना तट तोहिं बजावत बांसुरीनेक निहारो। होशमरफ्त न मुन्द बदस्त उर ध्यान रहै दिन रैन तिहारो ॥ हाफ़िज़ फ़िक्र कुदाम नुमायम् कोई उपाय चलै न हमारो। कौनसी ह्वैहै सखीरीघड़ी की जो भरि अंक मिलैगो पियारो ८ ॥

तथा। कासों कहौं यह बिथासजनी चूंबुर्द दिलम् अज़ जौरो सितम् । दर्श सुधारस प्याइयेजुज्ञे जुदाइये तो मनजां बलबम् ॥ ताप बुझाओ हिये कि मेरेतुम गाह बगाह नमूदः करम्। चैन नहीं दिन रैन परै अब हाफ़िज़ हाल बेहाल जेगम् ९ ॥

तथा। बंशी बजी बलबे यमुना चलो चलिये सखी सब मिलके वहम्। तान बसी चूंनक़शेनगीं अब चैन नहीं क्षणपलअदिलम् ॥ शर्मोहया कुलकी तजिकै करलो दर्शन चलि निज़देसनम्। हाफ़िज़ हाथसों हाथ मिलायके शीतकरैं हिरदै हम् तुम् १० ॥

तथा। क्यों इतनो बतरावत हौ मन शर्मो हयारा अ-

से मीदानम्। ऐसो उपाय करो मिलिकैकि क़रार बिगी-रद ईंदिलेज़ारम्॥ हाफ़िज यामें न लाभ कछू अज़ गुफ्तोशुनूनै मतलब दारम्। कासमुझावत को समुझै दिलेमारां बुबुर्दकि आं महेपारम् ११॥

तथा। कासों कहों मनकी ये बिथा अपनो तनु आप जरानो परो। खेशोबुज़ुर्ग अक़ारिब राहमें देखि अत्यन्त लजानो परो॥ तेरी मुहब्बतो उल्फ़त में हमैं हाफ़िज़ हाय बिकानोपरो। दिलरफ़्त ज़ेदस्त नमुन्द बदस्त अफ़सोस महापछितानोपरो १२॥

तथा। बदनामशुदम् दर कुवोंजवार अब कौनसी बातको शोचरहाहै। हाफ़िज़ खेशो बुज़ुर्गोअज़ीज़ अब मानो बुरो हमसोंऊ सहाहै॥ होनी हुती सोतो होयगई इनबातनमों अबलाभ कहाहै। मतलबेमन न बरा-मदहैक यह भागकी लाग हमारे महाहै १३॥

तथा। हरगिज़ लाग किसी कि नहीं सब हाफ़िज़ हैतक़सीर हमारी। वक्ते बिदा न किसी ने कहा हमसाथ चलैं कि रहैं बनवारी॥ सो कहते न बनी कछुहाय करैं अबका ब्रज नारी गँवारी। देखि चले सो सबै कहियो अबऊधव जी तुम्हरे बलिहारी १४॥

तथा। जोवत राहथकी अँखियां अरु आये नहीं ऊधव गिरिधारी। ज़ाहिर में तो ख़ता हमसे नहीं कोई हुई गाहेजुज्यारी॥ हाफ़िज़जातकही न बिथा कि भई है कहा गति हाय हमारी। सो मरिहैं बिषखाय सबै ऐहैं जो नहीं यहां कुंजबिहारी १५॥

फुटकर कवित्त व सवैया २५ ॥

स०। सुन्दररूप त्रिया मन जानकी लोक औ बेदकी सेड़त मेटी। अवधपुरी सुख सम्पति सों रजधानी सदा लछतासों लपेटी॥ कहैं सूर किशोर बनाय विरञ्चि सनेह कि बात न जातहै मेटी। कोटिक जो सुखहै ससुरारि तौ बापको भौन न भूलत बेटी १॥

क०। प्रेमकीदुकानमें विचारिमैन पैठियतु कामकी दुकान सों सयान सब हारा है। क्रोध कोतवाल जिन प्यादेको पकरि पाया दायाको दिवान जिन माया फांस डाराहै॥ मोह के गुमाशता जे सिले भले आदरसों मोह छविगाहक जोवचिकैबिचाराहै। ऐसेऐसेबनिजकोठादि हैं गोपाल लाल कंचन शहर परपंचन बिगारा है २॥

तथा। चन्द अरविन्द बिम्ब विद्रुम फनिन्द शुककुन्दन गयन्द कुन्दकली निदरतिहै। चम्पा सम्पा सम्पुट कदलि घनश्याम कहां कुंकुमको अङ्गराग अङ्गना करतिहै॥ केहरी कपोत पिक पल्लव कलिन्दी घन दर के निरखि दासी छतियांबरति है। मेरेइन अङ्गनकी नकल बनाई विधि नकल बिलोके सोहिं नकल परति है ३॥

तथा। वैरीप्रीति करिबेकी मनसें नशंकराखे राजारंक देखिकै न छाती धक धकरी। आपनी उमंगकी निबाहि कीहै चाहजिन्हैं एकसो दिखात तिन्हैं बाघ और बकरी॥ ठाकुर कहत मैं बिचारिकै विचारिदेख्यो यहै मरदानन की टेकबात अकरी। गही तौन गही फेरि छोड़ी तौ न छोड़ि दई करी तौन करी जौन न करी सो नकरी ४॥

तथा। जानतहौं ज्योतिष पुराण और बैद्यकको जोरि जोरि अक्षर कवित्तनको उच्चरौं। बैठि जानों सभा मांझ राजा को रिझाय जानों अस्त्र बांधि खेत मांझ शत्रुन सोंहौं लरौं॥ राग धरि गाऊं औ कुदाऊं घोड़े बागधरि कूप ताल बावरी नवारन में हौं तरौं। दीनबन्धु दीनानाथ येते गुण लिये फिरौं करम न यारी देत ताको मैं कहा करौं ५॥

तथा। दोऊ तिरभंगी दोऊ मुरली अधरधरे दूनोतनु एकसे निरंजन निरंजनी। दोऊ बनमाली दोऊ मोरके मुकुट दीन्हें दोनों दृगआंजन रीनौ खंजन औ रंजनी॥ दोऊ प्रेम पढ़े दोऊ मनहीं के सांचे गढ़े दोऊ कामरति मद भंजन औ भंजनी। भनै दलसिंह दोऊ वृन्दाबन के बिनोदी दुहूंन के दोऊ मन रंजन औ रंजनी ६॥

तथा। एरेगुणी गुणपाइ चातुरी निपुणपाइ कीजिये नमैलोमन काहूजो कछूकरी। बीरन बिराने द्वार गये को यही स्वभाव मन अपमान काहू रेकरी कि जूकरी॥ क्रूर और कबि चलेजातहैं सभाकेमध्य तोसों तौ हटाके देवीदास पलटूकरी। दरवाज गज ठाढ़े कूकरी सभा के मध्य कूकरीसों कूकरी औ तूकरी सों तूकरी ७॥

तथा। यशको सवाद जोपै सुनो कबि आनन सों रसको सवाद जोपै औरको पियाइये। जीभ को सवाद बुरो बोलिये न काहू काहूं देहको सवाद जो निरोग देह पाइये॥ घरको सवाद घरनी मन लियेरहै धनको सवाद शीश नीचे को नवाइये। कहे द्विज राम नर जानिकै

जान होत खैबेको सवाद जोपै और को खवाइये ८ ॥

स०। द्वारिका छाप लगै भुजमूल कह्योफल वेदपुराणन तौनहै। कागद ऊपर छाप सुनी जिहिको सिगरे जग जाहिर गौनहै॥ आपु लगाई जो कुंकुमको सो सुहाई लगै छवि सोउर भौनहै। छाती के छापको प्यारे पिया कहिये हँसि याको महातम कौनहै ९॥

तथा। पीनसवारो प्रवीन मिले तौ कहांलौं सुगन्धी सुगन्ध सुंघावै। कायर कोपि चढ़ै रणमें तौ कहांलगि चारन चाव वढ़ावै॥ जोपै गुणी को मिलै निगुणी तौ पुखीकहु क्योंकरि ताहि रिझावै। जैसे नपुंसक नाह मिलै तौ कहांलगि नारि शृंगार बनावै १०॥

क०। एकैलिये चौंरीकर छतुरीलिये एकैहाथ एकैलिये छांहगीर एकैदावन सकेलती। एकैलिये पानदान पीकदान सीसासीसी एकैलै गुलावनकी सीसीशीश मेलती॥ वोधाकवि कोऊवीन वांसुरी सितारलिये लाड़िली लड़ावै फूलगेंदनके झेलती। छोटे ब्रजराज छोटीरावटी रंगीन तामें छोटी छोटी छोहरी अहीरनकी खेलती ११॥

तथा। ढुवन दुशासन दुकूल गह्यो दीनवन्धु दीन ह्वै कै द्रुपद दुलारी यों पुकारी है। छांड़े पुरुषारथको ठाढ़े पिय पारथसे भीम महाभीम ग्रीव नीचेको निहारीहै॥ अम्बरलौ अम्बरअमर कियो वंशीधर भीषम करण द्रोण शोभा यों निहारी है। सारी मध्य नारीहै किनारी मध्य सारीहै किसारिही किनारी है किसारीहै किनारीहै १२॥

तथा। चाहके हैं चाकर गुलाम गोरे गातनके सेवक

हैं सांचे सुघराई सुखदान के। खानैजाद खासे खूब मूरतिके मोजमनै जोशावरदार तेरे कदम कलाम के॥ छोरा छांह छबिके पिछोरा पायँ पोछनके भौंरा खसबोई सुख मधुर बतानके। मोहके मुसाहिब मुसद्दी दृग फेरन के हेरनके हुकुमी हजूरी हांसे जानके १३॥

तथा। बंशीवारे प्यारे तेरी वाणी के प्रवाह वीच तरत सभाकी सभा प्रेमनीर छाकी है। बेणुकी अदाकी तान बांकी बेस कबिलाल चर थिरताकी थिर चरताहू थाकी है॥ अकथकथाकीकथाकहांलौंबखानौंतथाभवको व्यथाको नेक सुनत वृथाकीहै। पण्डित प्रथाकी मतिथाकीहेलथापथहै नइहिव्यथाकीयाकीकहनकथाकीहै १४॥

स०। कोऊ डरानी परानीकोऊ डरपै नहिंमेरो हियो मजबूतहै। बावरी ये घर बाहेर की सब जाहिर मोहिं तिहारो अकूतहै॥ लावों दिखावों मिटावों कलंक यहां ब्रजएक बड़ो अवधूतहै। तोहिंतो भाव भवानीको आवत गांवके लोग लगावत भूतहै १५॥

क०। जोरपरे जोर जात भारपरे भूमि जात झूमि जात योबन अनंग रंगरसहै। कहैं हेमनाथ सुख सम्पति बिपतिजात जातदु:खदारिद समूह रसबसहै॥ गढ़ गिरिजात गरुआई औ गरबजात जात सुख साहिबी समूह सरवसहै। बाग कटिजात कुंवा ताल पटिजात नदीनद घटिजात पै न जात जग यसहै १६॥

स०। पण्डित पण्डितसों खलमण्डित सायर सायर सों सुखमाने। सन्तहि सन्त भनन्तभले गुनवन्तहि को

गुणवंत बखाने ॥ जाकहँ जापर हेतनहीं कहिये सुकहा तिनकी गतिजाने। सूरको सूर सती को सती अरु दास यती को यती पहिचाने १७॥

क०। आई तुम कैसे हमें बांसुरी बुलाई श्याम कहो कौनकाम छबिधाम तो शरनको। तात मात भ्राततुम्हैं हैंसनेही किधौं नाहिं सांवरेसुनातो हमें रावरे चरनको॥ पति के तजेते गतिहोय न बड़ो है दोष श्रीपति भरोस अफसोस न तरनको। लोकबेद मरयादतजी क्योंप्रमाद परि जानै न बिवाद गह्यो प्रेम के परन को १८॥

पद्मिनी लक्षण ॥

तथा। कमलकेफूल कैसीबास अंगसुकुमार कमलसी योनि तहां जलतो न लहिये। चन्द्रसों बदन तनचम्पक सों कुन्दन सों बनी ठनी सब ठौर जैसी जहां चहिये॥ भावै देवपूजा श्वेतबसन सों रुचि हिय लिये लाजमान गति हंसकी सी गहिये। थोरोखात पिकबैनी बिचक्षण मृगनैनी जासें गुण सुन्दर ये पद्मिनी सो कहिये १९॥

चित्रिणी लक्षण ॥

तथा। खीनकटि पीनकुच मीनसे चपलनैन गजगौन कारे बार मोर कीसी बानी है। मधु कैसो गन्ध जाके सुरतके जलकोहै लांबीहै न ठैंगनी न पातरी मोटानी है॥ सुन्दरसलोन सुकुमार योनि सजैतासु जैसे फूल बटुरारो जामें भयो पानी है। रति सों न रति उपभोगहीसों रति चित्र संगीत सों भाव लिये चित्रिणी बखानी है २०॥

शंखिनी लक्षण ॥

तथा। मोटा लांबी राजैदेह तैसीऊंची मोटीकटि टेढ़ी चितवनकुच छोटेछोटीमनुहै। योनि में बिगन्धकामजल घन घनेबार उत्ताइलि चले चालि गाजत त्यों घनुहै। रातोपटभावै नखसुरतिमें लावै चारु ताते गात दयाहीन रोसहीं सो पनु है। दीरघहैं दांत हाथ पान त्यों बहुत खाइ ऐसे जाको चिह्न सोई शंखिनी को तन है २१ ॥

हस्तिनी लक्षण ॥

तथा। मोटी देह मोटे ओठ भूरेबार गोरी आप थोरे लाज पेटभरि खातिहै अघायकै। टेढ़ेपांयपांयनकी आं-गुरी हैं टेढ़ीसब ठेंगिनीसीकूरपुनि बोलै घहरायकै॥ काम जलकी है गन्ध मदके गयन्दकीसी सुरतन कियो जाय जासों सुख पायकै। चलै मन्द गति यहै कांधे जाके नये रहैं हस्तिनी के लक्षण ये दिये हैं दिखायकै २२ ॥

तथा। हौरे हौरे डोलती सुगन्ध सनी डारनते औरे औरे फूलनपै दुगुन फबोहै फाब। चोथते चकोरन सों भूले भये भौंरन सों चारोओर सम्पन पै चौगुनो चढ़ोहै आब॥ द्विजदेवकीसोंद्युति देखनभुलानो चित्त दशगुणी दीपति सों गह्वबगह्वेगुलाब। सौगुनोसमीरह्वै सहसगुने तीरभये लाखगुणीचांदनी करोरगुनो माहताब २३ ॥

तथा। सिद्धिश्री सकल गुणगणके निधान शुभ ज्ञान धन बुद्धिमान जाहिर जहान है। विद्या के अपार जग पावत न पार कोई सरिता समूह सहसिन्धुके समानहै॥ शीलवान धर्मवान दृढ़व्रत नेमवान जगमत इसलाम

साहब सुजानहै। बन्नापुर शालाकर पाठक सो रघुनाथ नाम श्रीमुहम्मद हफ़ीज़ुल्लाहख़ान है २४॥

तथा। सांडीशहरगर्रातट सुभगमहल्ला सोहै ऊंचा टीला नाम जाको जानत जहान है। ताही को निवासी सब जनन चरणसेव्य कृपा अभिलाषी नामहफ़ीज़ुल्ला ख़ानहै॥ अफ़सरमुदर्रिसी करत ग्राम बन्नापुर तहसीली ज़िलाहरदोई विद्यमानहै। निजशुभचिन्तक चरणअनुगामीजानि क्षमोअपराध ममजाहि कुछ न ज्ञानहै २५॥

तथा। मोहिं लखि सोवत विथरिगो सुबेनी बनी तोरिगो हियेको हार छोरिगो सुगैया को। कहै पदमाकर त्यों घोरिगो घनेरोदुःख वोरिगो बिसासी आजलाजही कि नैयाको॥ अहितअनैसो ऐसो कौन उपहास यहै शोचत खरी मैं परी जोवत जुन्हैयाको। बूझैंगे चवैया तब कैहौ कहा दैया इत पारिगो को मैया मेरी सेज पै कन्हैयाको २६॥

स०। लोकहि हेत परो जल में कोउ पावक पारि तपैतन तैसो। कोउ मयाधरै त्यागि दया कोउ भोगत ताकहँ छीनिकै जैसो॥ वोदर कोउ बड़ोकै टँगोरहै राति दिना चिमगोदर ऐसो। नाच सबै जगकी जगदीश नचावतहै कठपूतरी कैसो २७॥

इति॥

हज़ारा के चित्रों का सूचीपत्र ॥

४ महिपालसिंहसरोज ॥

यह भी अपने दो विद्यार्थियों के नामसे ३०१ कवित्व का बड़ा और संग्रह छपवाया है ॥ वहीं से मिलेगा ॥

५ प्रेमतरंगिणी ॥

ह भी छोटा चटपटा लहरदार संग्रह है यह मौलवी इब्राहीम-सेनसाहब थर्डमास्टर नार्मलस्कूल लखनऊ के द्वारा छपाहै ॥

६ रसिकसजीवनि ॥

यह सबसे बढ़कर उत्तम और मनहरण २१६ कवित्तों का आ मनभावन रसीला संग्रह है कि जिसके देखनेही से भूख प्यास ाती है भारतजीवन प्रेस बनारस में छपा है ॥

७ तालीमुल्मसाहतबेहल ॥

उर्दू में पैमायश की बड़ी उत्तम पुस्तकहै जो अवधके सरकारी दर्सों के मेडिल व दूसरे तीसरे क्लास में पढ़ाई जाती है ॥ वह शी रामप्रसाद साहब डिपुटी इन्स्पेक्टर मदारिस ज़िला हरदोई नामसे मैंने छपवाई है आदिसे अन्ततक सब मेरीही बनाई है ॥ शी नवलकिशोर साहब के मतबे में छपी है ॥

८ तालीमुल्मसाहतमैहल ॥

जिसमें कुछ सवालात व कायदे ज्यादा करके मय तसवीरात ायत उम्दा तरहसे मौलवी इब्राहीम हुसेन साहबके द्वारा छप-

वाई है जिसमें केवल हमारेही बनाये हुये १५५० बड़े उम्दा सवालात हैं ॥

१ गुल्दस्ते हफ़ीज़ुल्लाहखां ॥

उर्दू में है ॥ इसमें दो भाग हैं पहिले में गानेवाली उर्दू, फ़ारसी की ग़ज़लें, शेरें, मोखम्मस, रुबाई और दूसरे में सब राग दोहे, कवित्त आदि हैं हमारे कृपानिधान श्री मुन्शीनवलकिशोर साहबके यहां छपाहै ॥

आपका भवदीय कृपाकांक्षी

स्वर्गवासी हफ़ीज़ुल्लाहखां
मुदर्रिस मदर्सा बन्नापुर डाकखाना बघौली जिलाहरदोः
मुल्क अवध—